

# पुस्तक लताफ़ थान



८१७  
लती य



रूप इसका मरणा कारण नपपात डाकम  
का पाग जाकार रिपथन का  
नुपास्यनि क यात्रावृत्त विमगात्रया रु माय अक्षपर्ण  
मनुष्य रुगी \*

लताफ़ तामीन नाजूदा सम्मानक साहित्यिक  
गानातक नावन म उचल उरदुपनीआ का भाव जौ  
निष्ठा अकन कग द। स्वकारा तब म फैल भद्राचम म  
तकर मोहात्रिक इलाक म आप मुटबन्नी तक व्यग्रकर  
का निगाह गर्त है। उनक ज्यय टाखन म कथात्मक कवि  
ना गारत है। लेकिन जहाँ उहा व्यग्र विषय का माधी  
परुड है—लताफ़ पात्री न लपीन जगत्तना ना अउ  
पाग्वय दिख है।

लताफ़ पात्री को भीलकता यह है कि अपन  
कथ्य की परनुवि काला न उन्हन टगिशका परसाई का  
उहे नेचरगिक शिवबदला का महार राया है और न शरद  
नागी का नरु शैली के नग अवयव का निर्णयान किया  
है। खाननाथ लताफ़ का नरु घाघा का अय माकथ्य  
अन्यथा अक्षयवन को उद्वरणो नहा है। मुगलमर्षावेश  
का विरुध वाग्ताकताआ का उत्राग करन क बावजूद  
लताफ़ पात्री नरु पी भक्त्तना का नरु भायक चटखार  
नहा पशाकम है। इगलिया नरु अयो भ घटलआ और  
पात्री षडाभा और सुखा का माशुत्कार दुश्वार नहा  
गयता। इन स्थय रचनाआ म परभ्यरागते रीतिथी और उ  
अन्यथाआ क भिलाफ़ वा मयय कना गपा है। उनका  
माग सम्पाण हलग और व्याघ की साम्पत्तेन जमीन पर  
शुड है।

स्तकीलय

५५

हिन्दी व्याघ क प्रतिमान/डा ब्रह्मन्दुआखन तिवारी

मप ान्ना  
की आवरण  
नुपास्थान  
मलक करती  
ल

गजनामक १  
निर्णय अक  
मन्त्र साक्षा  
की निर्गत ग  
का वाहन्य  
यकृत २—२  
पान्दय लन  
६

कव्य का प  
तरह धर्मा  
नीमा की न  
ई रजान्त  
अभयत अ  
को र्वावि १  
लनाफ घा  
नहीं पशु वि  
पात्र पाड  
पाता न  
जैनाभ्य अ  
माग मन्त्र  
सक १

# यत्र-तत्र

यत्र-तत्र

ललीफ घोषी

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

तस्या

की लक्ष्य

अनुयायिनि

संग्रह कर्ता

८

गणनीय -

निश्चय अर्थ

लक्ष्य शीर्ष

का निश्चय

का साहस्य ।

पक्ष है -

परिचय तय

९

कर्म का प

नरि वचार

जाशो की न

० । एतान्न

अश्विन अ

का विधि

लक्ष्य शीर्ष

रहो पशु नि

पावा शीर्ष

लक्ष्य शीर्ष

अनाश्विन

साग शीर्ष

# यत्र-तत्र

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

लनीफ धोंधी

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

रूप  
अ  
ननपा  
मदुद ३  
राजनात  
नि टग  
भकर ३  
रा १११  
का वा  
पकड ३  
पगचय

© लताफ घोषी

ISBN 81-7056-115-4

कथ्य क  
पुष्प व  
जापो व  
है रवा  
अध्यय  
का वि  
लताफ  
नता प  
पात्रो  
लगत  
अनाम  
मारा  
खडा

दरनाशक

पञ्चशील प्रकाशन

फिल्म कॉलानां, जयपुर

मयकरग

प्रथम 19०6

मूहय

श्री रूपन मत्र

राष्ट्रमैटिंग

पञ्चशील कम्यूटम जयपुरा

मुहक

आगभना अफिसट, जयपुरा

---

YATRA-TATRA (Satire & Humour)

By Lata Ghosh

भाई श्रीलाल शुक्ल

को

स्मरण



का जाल  
अनपगत  
मलुक व  
गानादि  
निष्कल  
लंका मा  
का नगा  
का बाह  
पकट ह  
पगिया

© लतीफ़ घोषी

ISBN 81-7056-114-9

कथ्य क  
भाह वे  
जोषो क  
है स्वा  
अनपगत  
जोषो क  
ततान  
नहा पश  
नवा  
गगा  
अनपगत  
मारा म  
खडा व

प्रकाशक

पञ्चशील प्रकाशन  
फिल्म कॉलोनी, जयपुर

संस्करण

प्रथम, 1990

भूख

सौ रुपये मात्र

टाइपसेटिंग

पञ्चशील कम्प्यूटर्स जयपुर

मुद्रक

भागवता प्रिंटेर्स जयपुर

---

YATRA TATRA (Satire & Humour)

By Late Ghongi

भाइ श्रीलाल शुक्ल

को

सादा

© लतीफ़ घाधी

ISBN 81-7050-115-9

प्रकाशक	पंचशील प्रकाशन फिल्म कलातीर्ता, जयपुर
संस्करण	प्रथम, 1990
मूल्य	मौ रुपये मात्र
टाइपसेटिंग	पंचशील कम्प्यूटर्स, जयपुर
मुद्रक	आराधना इन्फ़ोमेट, जयपुर

---

FAIRA TAIRA (Satre & Humour)

By Lati Ghongli

भाई श्रीलाल शुक्ल

को

सादा

---

Price  
Rs 100

○ लतीफ घोषी

ISBN 81-7056-115-0

पकाशक

पञ्चशील प्रकाशन  
फिल्म कॉलोनी जयपुर

सम्बरण

प्रथम १००६

मूल्य

तीं रुपय मात्र

टाइपसेटिंग

पञ्चशील कम्प्युटर्स, जयपुर

मुद्रक

आराधना ऑफिसट, जयपुर

---

YATRA-TATRA (Salute & Homage)

By Late Ghungu

माई श्रीलाल शुक्ल

को

मादर





## अनुक्रम

1	सभावाता का गणित	1-4
2	पापी छट में परशान हूँ	5-9
3	मरुभारी जम्पवाण आपका स्वागत करना है	10-14
4	इसे विद्वान् है	15-19
5	सातव के जूते	20-24
6	शिक्षागत-वर्ग की रुधा	25-28
7	एक पत्रकार चाता— फापर डिग्रेड पर	29-33
8	आँख क्या गर मटा होता?	34-38
9	आँखों में गिरते पानदाय मृन्ध	39-41
10	एक धार्मिक जम की रुधा	42-50
11	राज्य परिवर्तन का बंधन	51-54
12	आर्शावाद की मुद्रा में	55-59
13	भक्त जी पसल ह	60-63
14	व्यथायक का र्द फिल्म तज पर	64-66
15	भताजी की बैठक में बराम	67-70
16	सावधान! अभी खतरनाक महशुस है!	71-75
17	एक उनी छप जग	76-78
18	नारादन केमर हा गई है	79-83
19	शकुन्त्या का भाडी	84-92
20	खल साहब—क्रिकेट वाले	93-96
21	आदर्शवादी	97-101
22	गधा का बन्क	102-104
23	गोता बोला—गधश्याम	105-108
24	महाँ हो मुर्गाचार!	109-111





## अनुक्रम

1	संभावना का गणित	1-2
2	पापा पेठ में परमान हूँ	5-2
3	संस्कृत अभ्युत्थान आधुनिक स्वागत करना है	10-14
4	हम लिफाफे हैं	15-19
5	साहब के जूत	20-24
6	शिकायत-बार की कथा	25-28
7	एक पत्रकार वार्ता—फ़ायर त्रिगोड पर	29-33
8	ख़ैश्व कपोत ने कहा जाना?	34-38
9	सा/चा से विद्युत् भूतलोक मूल्य	39-44
10	एक धार्मिक ब्रह्म का रुध	45-50
11	गल्प परिवर्तन की व्रम में	51-54
12	आशीर्वाद की मूल्य व	55-59
13	मना जी धमन् है	60-65
14	लिखायक का दर्द (फिल्म वर्ज पर	64-68
15	मनानी को वैठक में बधरम	67-70
16	साधना आगे छातराफ्त मतदान है	71-75
17	एक नानी छाप व्यंग	76-78
18	श्रीगंडन बीमार हा गड ?	79-83
19	शकुन्तला की साडी	84-92
20	खान मोहब्ब—क्रिकेट वाले	93-96
21	आदर्शण्य	97-101
22	राधा का बंधन	102-104
23	ताना बाला—गणेशनाम	105-108
24	कहाँ हा मुगाचारः	109-111

गोखला का कुत्त

एव कुत्त में मोक्षोत्कार

छूटे हुए अक्षर

रूप मात्र	28	नवाजी—बंदर वाल	110	24
को अक्षर	29	राष्ट्रीय हजमत निगम	125	28
अनुप्रास	30	गणपति दिवस में पूर्व मध्या	129	30
अनुप्रास	31	इमानदारी की शान्ति	134	3
शतमेत	32	इस इमानदार हैं	138	44
निरुद्ध	33	छात्र खरीद विद्या में मकाम बनने क लिए	145	39
सका सा	34	बन जा है उनको नकाम	150	46
में विद्या	35	पागल क मानिष्य में	157	7
को माह	36	भय क अक्षर पत्र	162	67
अक्षर	37	अनादिता ही योनेतर माहव	168	70
पाठ्य	38	गान्ध्यान्तर की अर्जकथा	171-	73
काध्य	39	बलिहारी गुन आषको	174-	76
तरा	40	भयानक क ज्ञान	177-	3
जाशा	41	अपराधी चक्रक में	182-	86
र रूप	42	सौनियर का व्रमन	187-	191
अक्षर	43	सूखे होने का व्रमन-पत्र	192-	195
को वि	44	धमा काजिगम	196-	200
व्रमन	45	चौर-घर	201-	204
क्या प	46	बिचली बाने का बारात में	205-	209
पाठ्य	47	बगानी शादी में अक्षर	210-	215
नगर	48	फाटो बाला नेटर-पेड	216-	220
-नाम	49	सूँह को दर्शन हो रहेगी	221-	228
	50	कृतियों क बहाने	226-	229
	51	नैतार्थी क ज्ञान में	230-	234
			235-	240

## सम्भावना का गणित

आसका यह भ्रमण है कि वे सम्भावनापरी जादमा हैं। आदमी इसलि कि वेखका हैं भीर राखका माने भले कुछ वे नको, आदमी को कता हा है। आदमी इसलि कि वेर कोमा पता है और मरकोर सम्भलि कोर है। अ नपे इसलि कि वेर गजन की मडा म खच कोर है। आदमी इसलि कि वेर अरनादी नकोने म अपना माकम आगदान देता है। ये लगे गुण गुणम है। आदमी कोर न विष इमपे मंत्रिक गुण कोर वरुण भी नकी पता आन यही।

पुनः 140 एक कविपत्र का मर पडा था। अम्भलाम म भरती भी ता मय। कविपत्र के ल - भी सम्भावना गुडी है यम मडा अम मय फता चरता का, अत्र कल्पका जोका कात्र मय 'शहर - अत्र भी सम्भवता है' एर शित दुःख था। यम मय मय ही था कि एर मरह कवन के कात्र हा म कवि मिय वीमर हुए। म साहस्य में मकिय वच व। अम्भलाम मे अठ - बैठ ही अनेक सर्गिक मर्मिकों को एर शित दिा, कि मुरमणो म मयान करा कि मने इतान के लिए पैम डे। अया यहा के कविपत्रों में कम से कम पडे मभावना ता वाकी है कि न कोमर पटने मर कवि का आत्र को अत्र म देवते हैं। अडा एड एर पहुँचन लम मुरमणों को के का। मक मयान मया फता दिया मुम्भलाम न राहन कोर म। कवि मिय अच्छे हा मय अर भिड मय मकियन क पाछ।

इम एक एकर की सम्भवता म मुझे वरुण आविष। कि म नकिन यर ता हिन्दी चर प सभिय और मरा दुःख था, कि म कोमर नकी पच। कठ दोर म म पुडा - अर, नोमर पदने का कोई नमीका बताओ। कि म कवि वे मकीय कवितायें

नहीं लिखीं, वह एक हजार ले गया और हम यहाँ लिख-लिख कर मर गये और कुछ भी नहीं मिला।

मैंने बान—दश्री घी और सुदु घी मिलाकर पिना ता तुम्हें बाजार ले जायागे।

मैंने पूछा—कहाँ मिलेगा भइया ?

वे बोले—अपने दश में मिलना ता मुश्किल हो है। जित्त म मँगवा ता

मुझ निगशा टाई कि ल्याटी—छाटा चीजों के लिए भी हमें विदेश पर आश्रित रहना पड़ता है। दामारी के लिए भा शब्द मान चनों नहीं मिलता। अपनी आत्म निर्भरता का दवा किताब खाकरा है। अब बेचारा लिखक कैसे एक हजार रुपया पाव कर।

मुखामरी ता सनी साहित्यकार को अर्मावत कर रह है—“ बीमार पडा और हमारा सहायता काथ स रुपया भुजा गा।” जितका पडता है वे जामार पट रह है और साहित्य मूजा भी कर रह है। यह-ताभकी सम्भावना साहित्यकार को साहित्य से चोटकर रखनी है। मेरा तर्क अनेक लखक है, जो केवल हमीगा लिख रह है कि कभी वे बीमार पडगे ता हजार-दो-हजार रुपया पा जायगे।

जब मैं घर में जाता कि आजकल आत प्रवेश में लखकी की दजत बढ़ रह है तो घर ताल बहुत खुल हुए। प्रीयती जग कडा—जब तुम्हें हजार रुपया मिलेगा तब मैं पांच फकीरा का खाना खिवांगा। खुदा कर तुम्हें जल्दी रुपया मिल जाय।

लकिन मुझ लगता है कि मर बीमार हाँ की सम्भावना नहीं है। आपको याद होगा कि मेरा एक व्यंग्य संग्रह 'बीमार न होने का दुख' प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह के पाछे भा मेरा मूल भावना यहाँ थी। यह बान मैंने किताने की भूमिका मिला लिखी, क्योंकि यह मेरे देश के व्यंग्यकारों की दजत का मताव था। लिखक को लोग समझते कि हम लखक हजार-दो-हजार रुपया के लिए मर जा रहे हैं। कुछ भा ता हिन्दी साहित्य में अपना उम्का कम नहा जना चाहिए।

यह किम्मा उन्हा सघष के दिना का है जब मैं बीमार हान के लिए जा ताई मघष कर रहा था। धजिया अल्लुगुदा, ममामा, सब खा रहा था। बाजार जाता

दी की आसपास कौन है? बिसे डी बी होता मैं ठमक साथ कई पढ़ रहा। लेकिन दुर्भाग्य ने मुझे पीटा नहीं छोड़ा। निम्नका किन्मा म मुख्यमंत्री कोष का पैसा तिखा जाता है उस ही भि वता है। अब तो ज्ञान यह भी कि माहिलका मिन में पैर पर खुदका नाम। सहेन — शामन बना आती, मारिद्वय सवा कर रह ह्य। व्यवस्था का गाने देत ना आर कलत हो जग्य निरु रहे हा? देश का गजाली को बदनाम करते तो? अब पढी ना माल बोमार और ल ना बजा-दो-इडर। कौन गेकता है तुम्हें?

दीक्षा इस एन हजार का सम्भवना ने पूछा आहित्य म कितना जलाल किया।

एक दिन थोड़ा बुझा भाग, म पथन हो गया। सीता—एक गया एक बजार। मोध भाग मरकरी अम्भान। बँकट में बोना—मझे भगता बर ना डीकट। म्महय मरी इका का सवान है।

इन्टर ने मुझ देखे। उर पकती बार पया जला कि इस देश म जयकी की ग इकाव होती है। ज्महान पूरा— इकाव का मजाल कम।

मन कहा—एम सीध मुख्यमन्त्री म जुड़े है।

मरा यहा क्कता में निष् प्राक सिद्ध हो गया। मुख्यमन्त्री का आदर्श म मज्जर उ हान म्मह अपनी पाइवट बैग म रख एक इकाव्यन भो मफा में रागा दिना। कपलु भा द ली और कहा—जिना की वाइ बात गही, मामूनी हरगत है। दो घंटे में आप कि-के-त स्वस्थ हो जाईगे। मग्ना होन को कि-कूल नाकत गती आणगा।

मरा गम्मान मुहंशिककांग। कता—जामरपाल आप होपियारी गिखा अपनी ।

काने का मतगत यह कि अब डीकरा के मत का भी वाइ सम्भवना तरा रही। मेरी गजद दूसरा कोई बोना ना मन्त्राय का एक जोर फक्क टना, और भार गे न जाना अस्पताल मे। आठ ती मौ रुपया क फरेवद मे ना रहता।

मरी शिरमत म हजार रुपया नहा था। मुझ आज तक नहीं मिला।

पिनरद सी। सार्दी म परम सरकार न एक बड़ी सम्भवना फन की नखकी के सामने। इकाव-दो-इडर बोना सम्भवना की एक मुख्य मन्त्र

श्रीश्री बाल-वचन गुण रहेंगे, फिर यह कहना कि सरकार ने लेखक के लिए कुछ नहीं किया।

उन सम्भावना का मनाग शीघ्र गूना रूप उठ गया। कई दशक स्वाम रहे हैं लेकिन बामार नहीं यह है और ना ही मर गई है। उनको गंग निरक्षक शक्ति लगता है यह है। इस साल गंगा देखने के कि इस का उनका नाम श्री आगगा शिखर सम्मान के लिए। श्री सम्मान म विरह है। सम्भावना का विगणित दशक साहित्य का जीवन श्रद्धा है। मये गंग निरक्षक शक्ति तो खम भी बहुत अच्छी है निम्नका उत्तरण मने जीपका बला दिशा ५। इस सम्मान के गोरे जी काई शक्ति तो व न ही साहित्यका बाधन श्रद्धा का धारणता है इस बाल सङ्कोच गंगा किया जा सकत

मैंने फिर घरतारा का बंधन कि जर लेखक का इज्जत अधिक बल गई है जो सम्मान को भी पत्रपत्र हजार मध्य मिन सकता है। तुम रदाग मुझे गंग अच्छे खाना खिगाओ कसकि भइ अभी कुछ साता तक जाना पडगा। सम्मानों ने कता जोरुका-सम्मान पर भिलता है उस खेकर जीता है ता जिया श्री तुम्हारे मजा

सम्भावना जादमा न। जीवन गङ्गी है और जसा कि मन पर न क। है कि मैं अक्षम है इसानि, आज तक जा रहा हूँ। मेरी गंग निरक्षक शक्ति चाहें मया तो लेकिन पच्चीस दशक का सम्भावना का हमसे पूरा गंगान है, और इसे गङ्गा ना भारतीय व्यय साहित्य का वक्रान होगा।

□

## घापी पेट से परेशान हूँ

अप्रशय मे पचिस के समाचार पढकर बहुत दु खी हा रहा हूँ। कमबख्त मरा पेट हे का काई ट्रासपोर्ट जम्पनी का गादाम। न खाओ, जगम करक पर देता है। हमारे गहाँ इन चायुकमिजात्र लोग है कि कवल भ्रमचर पढकर ही उन्हे त्ज मोशन हा रहा है, और हरु में बर्दानकम्भन नादमी हूँ कि मज पर काई जमर ही नहीं होता।

गाद्री का मौजन लगा हुआ है। प्रीति-भाज क विमाफ धन है कि जमहा मे नहीं अहा कि कहीं जाओ और क्या खाजा। मे एक गा शीनिभोज नहीं छोडता हूँ। सब जगह घम-धूमवग खाता हूँ और सब हजम कर जाता हूँ। वह ग आदमी। माफ न राक्षस है राक्षस। जम प्रतिभोज मे खाना खाकर जाग भलास-धन्वीम बाटल ग्लुकोब चढवा रहे है वहाँ देर पेट मे एक मगेष तक नहीं अता। तुज गिदा की सब्जी देग तीं उसे भी नू हजम कर लायेगा। अवे, कुल तां शरम का देखि किन्ने लोग अप्पताम मे पडै है और नू है कि नकट-जैसा बगफां जाग गुराब्लामुन खाना हुआ वून रहा है। भग वा खल चुल्ल-भग पानी मे डबकर।

कत नगरपालिका वाता जा माइक घूम रहा था कि "मड-गले फल और सखी न खाएँ। पानी नबालकर पिय। हुंजे और पंचिस स बमने के लिए अप्पताम मे कनार्गेन का गानिर्चा गकर अपन घरो के पानी में गिराएँ, सावधान रह।" मे न भस्मगाल गया और न ह मने पाना उबनावाया। वही पली पी रहा हूँ। सरतां सब्जी लख हूँ और सरस फल लख हूँ कुल भी लख हूँ इन सब घुंफा नहा लखे। कम अपन ही छोकर कि इतने अरुह दु खे नहीं ऐसे जे सब लोग



नहा लिखी, वह एक हजार ले गया और हम फर्मा लिख-लिख के मर गए और कुछ भी नहीं मिला।

मित्र बोले—दुखी हो और शुद्ध हो मिताकर पिरो तो तुम्हारा बीमार हो जायेगा।

मैंने पूछा—कहाँ मिलेगा नईया?

वो बोले—अपने देश में मिलता ही है। विश्व में संभवता ही।

मुझे निराशा हुई कि टाटी-टोटी चीजों के लिए भी हम विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। बांग्लादेश के लिए भी शुद्ध माल यहाँ नहीं मिलता। अपनी आत्मनिर्भरता का दावा किताब खोलना है। अब जवाग रोटाक कैम एक हजार रुपये का कर।

मुख्यमंत्री तो सभी साहित्यकारों को आमंत्रित कर रहे हैं—“आमार पबो और हमार महात्म्य काय से रूपया भुनवा लो।” गिनका पत्रिका है, जो बीमार पड़ रहे हैं और साहित्य सृजन भा कर रहे हैं। नई-राजकी सम्भारना पारित्य और की साहित्य में जोड़ कर रखना है। मेरी तरह अनक लेखक हैं जो केवल इस्तिफ लिख रहे हैं कि कभी ज जामार पड़ने तो हजार-दो-हजार रूपया पा जायेंगे।

जब मैंने पत्र में बताया कि आनक अचल प्रदेश में लाखों ही टकत बढ़ गई हैं, तो घर वाले बहुत खुश हुए। श्रीमती जी ने कहा—जब तुम्हें हजार रूपया मिलेगा तो मैं पौन फकीरों को खाना खिलाऊँगी। खुश कर मुझे कन्डी रूपया मिल जाय।

लेकिन मुझे लगता है कि मर बीमार होने की सम्भावना नहीं है। आपका शायद याद होगा कि मेरा एक व्यंग्य सपने ‘आमार न होने का दुख’ प्रकाशित हुआ था। हम सपने के पीछे भी मेरी मूल भावना यही थी। यह बात मैंने किताब की भूमिका में नहीं लिखी, क्योंकि यह मर देश के व्यंग्यकारों की इज्जत का भवाल था। लिख देता तो लोग समझते कि हम लेखक हजार-दो-हजार रूपया के लिए मर जा रहे हैं चाहे कुछ भी हो, हिन्दी साहित्य में अपना तस्का कम ज़ी होना चाहिये।

यह किस्सा कन्डी संघर्ष के दिनों का है, जब मैं आमार होने के लिए जो तोड़ संघर्ष कर रहा था। भजिया श्रीनृगुडा, समासा, मर खा रहा था। बाजार जाता और मुझे हुई सन्धी लख-रमा — खय अमरुतम नय और पूरुव कि

की का का मरीज था? जिस का भी होती है तब के साथ कर्म पत्र रहता लेकिन दुर्भाग्यवश मेरा जीवन नहीं छाया। निम्नकी किम्मत में मुख्यमन्त्री कोष का पैसा निकाला जाता है उस हा पिता का है। अत्र जो वस्तु यह था कि स्थितिदार मित्र में मुँह का धुँस गया। कहते—अपने नती जाती साहित्य में का रहे ज। व्यवस्था का पत्रा देते हैं और कहते हैं स्वयं मिलता है ही। दश की सम्मति का बन्धन करते तो अब पत्र का पाले लेखक और वे ता हवा-दी-संसार का रास्ता है तुम्हें?

दीर्घ, हम एक-दूसरे की सम्मति में मुझे साहित्य में कितना जलील किया

एक दिन की का दुर्भाग्य था, मैं जगन्नाथ था गया। साधु-पत्र का एक हुआ। साधु भाग रास्तेगी सम्पत्ति। दूँ-दूँ से बात—मुझे भय है कि जो ऊँचे मान्य मने इच्छा का सत्ता है।

दुर्भाग्य की मुझे दया। एक भागी काम का काम कि एक दश में लेखकों का न खोजे जाती है उच्छाद मुञ्ज-इच्छा का सन्तान कैसे

मन रहा हम मीच गृह्यणकी में मुझे है।

मग दती कर्म में निरु घातक मित्र ही गया। मुख्यमन्त्री का सत्यो सम्भवतः गहने मुख अपनी पड़वे में मरणा एक नौकरी भी भक्त स लया दिया। सम्मत्त भी ले ही आर कर्म-चिन्ता का काव जाता नहीं सम्पत्ती इच्छा है? दो दृष्टि में आप विवेकता-स्वयं का ज्ञान। अपने मन का वि कुट शानत रूप आणी।

मेरी आत्मा में मुझे विनम्रता। बहो—जगन्नाथ और शिवाजी दिशा अपनी ।

कर्म का मततब यह कि अत्र शिवाजी के लेख में जो कई सम्भवता था गयी। मेरा जगत दुःख का जाता, ता पचास का एक मोट फक का और भक्तों का जगत अत्यन्त है। साधु जो मो कर्मों का फल में जो पत्र।

मग सम्मत्त में पत्रा उपवा गयी। मुझे जान तक गयी विनम्र।

विदले जगन्नाथ पर सम्भवतः दे एक बड़ा सम्भावना फक ही सम्भवतः है सम्मत्त। जगन्नाथ का हवा-दी-संसार का पत्रा-संसार का एक मुञ्ज। शिवाजी सम्भवतः का

नही लिखा, वह एक हजार ले गया और हम यहाँ निख-निख कर मर गए और कुछ भी नहा मिला।

मान वाला—दशा धी आर शुद्ध धी मिलाकर पिगा ता तुम्हें बेमार ना भासोगे।

मने पहा—कहाँ मरना भया?

ने वाला—अपने देश में मिलना तो मुश्किल ही है। विदेश में मंगवा ना

मुझे निराला हुई कि छात्र-बट्टी चीजा क गिग भी कम विदेशी पर आश्रित पना पड़ता है। कामगो क गिग धी शुद्ध मान यहाँ नवर मिलाता। अपनी अल्प निर्भरता को राधा किताना खोखला है। अब बचाव लड़क केमे एक हजार रुपया प्राप्त करे।

भारतमन्त्री तो मन्त्री साहित्यकारों को आमंत्रित कर रहे हैं—“आमार पडा और आमार सहायता कोष में रुपया भुनका लो। जिनका पत्रवा है वे आमार पत्रवा रहे हैं और साहित्य सज्जन भी कर रहे हैं। अथ-लाय को सम्भावना साहित्यकार का साहित्य से बाहकन गवता है। मरी तरह जनक लखक है जा कवन टर्मिनर लिख रहे हैं कि कमा व बीमार पड़ग ती आजार-दा-हजार रुपया पा जाएंगे।

जब मैंने घर में बताया कि जानकल अपन पदश में नंगको को इज्जत बढ़ गई है तो पर आने बहुत खुश हुए। श्रीमता जी ने कहा—नब तुम्हें हजार रुपया मिलेगा, तब मैं पौंच फकीगे को खाना खिलाऊंगी। खुदा कर तुम्हें अच्छी रचना मिले जाए।

लेकिन मझे लगता है कि मैं बीमार होने को सम्भावना नहीं है। आपका शायद पाद हाया कि मरा एक व्यंग्य मयह 'आमार न हान क दु ख' पकशिगि हुआ था। इस मयह क पाल भी मेरी मूल भावना फली थी। यह बाल में किताब की भूमिका में नहीं निगड़ी, क्योंकि यह मर देश के व्यंग्यकारों की इज्जत का खान था। लिख देता ता भाग ममझने कि हम लखक हजार-दा-हजार रुपया के लिए मर जा रहे हैं जैसे कुछ धी हों, हिन्दी साहित्य में अपना ठरका कम नहीं लोना चाहिए।

यह किस्ता उन्हा सपर्ष के दिने का है जब मैं बीमार होने क लिए जी तोड़ मयध कर रहा था। भोजिया अलागुडा समाभा सब खा रहा था। आजा जाता और कदा ही उन्ही लका तदा — — — कदा और कदा कि

दो वीजा भरा है। जिन दो वीजा हानों में उसमें साथ कई घंटों रहने लेकिन दुभाग्य ने मंगी पोषण नहीं छोड़ा, जिन्हींको अकस्मत् मे मृत्युमंश काय का पसा लियेला नाला है नये ही। प्रतापी है। अब ना हालत यह थी कि अर्थात्कृत्य मय मर भुंज व भुंजना। उदने—शरम नहीं ज्यगी, सन्तानिय यंग र गये तादे व्यक्तम का गली उर ना ही कहत ही प्रथम लिख के हा देना का राजनीति को बनेनाम फरश का नब पवा ना माने बसाए और ल ना हगए-दे-हवार। वीज गेकता ? वृक्ष?

द्विषय, इन गन जगए ही सन्धानना न मने सानिधय मे जिहिन राजनीति किना।

एक दिन गाँव बुझाए शरय, ९ जन न क गया। सान्ना—पक गन एक जगए। संधे भगा भंरकार जल्पकन। डॉक्टर गं वांश—मुद्रा भरा फेन ना डॉक्टर सानिधय मंगे रज्जव को मधील है।

डॉक्टर नं मुद्रा देखा। नर्त गहती बस पना चिता कि इस देश म न प्रको को भी वलन इती है। नदीन ५०-६०० म पनाम कंगे

मै न कला—उम साथ मुख्यामत्रा व बुझे है।

मय बदा कहना येर लण वातक मित ही गण। मुख्यमत्रा का आदमा समझकर न्दान मुद्रा अपनी प्रायश्चित्त ने रजि एर इनेकशन ही मुपन न रण दिया। कफाल भो व टी गन कहत। चिन्ता ना कोई बात नही पापुनी नतन है। दो घने ये साथ बिल्कुल सन्धय नर जाणग। धरती हीन ही बिल्कुल तगत नही श्रमण।

मये आदय नं मुझे धिक्कण। कंगे—नामर माल और हाजियारी दिख जगता ।

कंगे का मत नव यह कि अब डॉक्टरों के रनेद को भी कोह मन्धान नर्त है। मंगी जसाह उमरा जीह होत तो पवाइ का एक नोट कक दला और भागी क जग मन्धता न य। साडे नी मौ रपण क कंगे मे ती उछन।

मंगी डिमरत मे हजार मन्ध नही था। मुद्रा आप तक नहीं गता।

पिकती गीन भाजों मे प्रदश यकता ने एक बही सम्भानना कैक दी लखका के माधम। हजार-र-रजल जाटी गच्छीस ह गार ली एक धरत। शिखर समान पा

ता १ अज्ञान वल्लि कुल गाय फिर मने कहत कि 'तुका त बाबका के लिये कु  
श्री क्रिया।

अब मन्नासय का रस पचीये गुल जय' शत गोसा। वदु लावक लोसि हो  
हैं लोफने बाघार जहाँ पड़ गये हैं। शाय (। हो भर रहे हैं।) सखी योग रि। रत्न शक्ति  
भाटी हर गद ग, त' नाल शक्ती लयुगो हैं कि हम बा' उभक। नाम जी जयगा शिव  
सुधारा क लिये। इसी भाभावना में जी भू है। सम्भावना के य' अशिक्षित शैवक साहित्य  
को वर्णित रहते हैं। यथा यः निरोधक शक्ति वा संवे भी बलत' प'खी है, जियेना  
अज्ञान्य मने आपका देना दिसा है। 'इस सम्पन्न व' पो'ले आ' फ' भावना हा' ता' व  
हा' सूर्यय का र्शिक' र'छ' को अर्थका तो है इस जादू रं' क' को न' प' जयाजा भयंता

धेते पितर परना।। ३। बनावि फि' अत्र नोबको क' ककर अधिक बह गद  
हे शाय' सखी म' र' शैवस्य देना' शयस्य मिन' सतता है। तुम तया गुण ज' अछा  
छाना खिल्लिया क्यानि मुझे अथा क'उ माला तर' जाना प'रय'। धरनाला ने क'रा—  
जो रुग्ण-मच्छ'य फ' प'प्य' र'त, उस' स्वाकर जीना है ना' गया' अगे तुम्हाय म' ता।

सम्भावना ॥१६मी को नीवत सवृता ५ ८ पूर' जैसा' ता' मने पहल' कह' है  
कि म' अन्तों तू इसीकाए जाव तक बा' र'हा है। म'गी होय। योगन है शक्ति चा'र' प्र'मा  
श' लेक'ता प'चोम ह'याक' मन्नावना का' स'सम' परा अहादा'र है, जैत' इय' तुम्हाय ॥  
भागीश' अ'र' स'गिन्य को नकाला र'गा।

D

१-  
क-  
५-  
म-  
गहन  
लक्षण  
वदु  
करी।  
क' उ  
वकर  
गतिर  
क'ष्य  
शय  
ज'।  
ह' ३  
अ'म  
की।  
च'।  
न'र  
पा'र  
नग'।  
अ'र  
शय  
व'ग।



## पापी पेट से परेशान हूँ

अरबबाग मे रनिआ क समाधान पहकर बहुत दु ग्या जोग्या हूँ। कथय ज राग पेट मे ना काई दानपाई जवना फल गोशामे जा जाओ, उजम जवके धर देता है। हमसे यहाँ बच्चे नाजूकबिजाज लाग हैं कि केवन समाधान पहकर ही उन्क जूब मोशन हा र्ना दे और एक मे क्या फलमन भादमो ह कि कुछ पर फलम असर ली नहीं जोगा।

शरीर का माता जोगा हुआ हूँ। पौन-पोज के फलमरय जोगे हैं कि मधुह मे नही गलर कि कडा जोगे ? और क्या खाओ। मे एक भी पोसधाज नह। लौकता हूँ। अब जगल धुम-धुमलर गता हूँ और अब हजम का जाला हूँ। जगल मे अलमरी। पाल, कू राधम है रापस। जिम परिशाल मे ग्या। खालर ली। पश्चिम-गधवास जारल रजकाल चहये। मे है वहाँ तेरे पेट मे एक मराह तक नहीं जानी। कुछ गिष्टी ही मरकी दरी हो। जोगे भा तु जलम कर जोगेगा। मरे, कुछ जो शाम का दख कितीन लाग अरपगत मे पल है और तू हें कि नकट-तसा बगल और गुनीबोगामुन जोगी। हुआ धुम ग्या है। मे ना साने जोगल-धर पापी मे दुक्कन।

तुन नायालीका नाली का माफुक धुम गता था कि मरे-गता फल और सकना न खारें, फलके उअनरनर पिपें; जेज अरि वेन्ज से उरर क नितर जमलकन मे जमेरन की गीनखीं जकर थपने घोगे क पा रा मे महारां सारधान रे।" मे न अरपगत मधा जोर ना रे मेने पाना उअलवाग। चउर प्रली रे रहा हूँ, रसनी ररकी नाह हूँ और मभे फल जोगा हूँ। कुछ कि राता मज। हव तक धुपिग ली होली। जग जोगे मे सोधिइ कि रसने अरुपी दु खो धी होके नह होगे।

मां मर्धे मित्र पेचिश म निष्पन्न चक्रे। कुत्र भिन तोगारा मे ह। चात्र कर्मते हं  
 और गर्भ मे कर्मते हं "थार, जहज सुबह सुबह लूज भोजन हा गया मै ता पावा  
 उबलजाकर ही पीरता हूँ अपनी ही चका ध्यान रखना चाहिए, तुम्हारा क्या हाल  
 हूँ?"

गम्मे मन्प पर से झूठ बाल देता है कि म दिन में लग बार जा रहा है। यिवा  
 के माघत अपनी प्रतिश का मयात है। ने कर्मते हं "थार, अजीब भाउमां हा इस  
 बार म ता आदमी पार हा जाता है और तुम जो कि विरकुल म्मस्य लग रहे हा

मैं कर रहा हूँ, "योगात्मा कर रहा हूँ ना?"

ध पूछते है, "क्या तुज पागत के लिए भी कोई आमन हाता है। तमा  
 ही यो पर 'योग फार हर्ष' म तो आज तक नही देखा। कहां म साख लिया तुमो  
 यह उममन?"

कुल भिनाकर इस अिह म मरी पाल खुल जाती है और उन्हे पक्ष लग  
 जाता है कि मुझ कुछ नही हुआ। मीद पर तो व कुछ नही कर्मते लकिर मा-ही मत  
 माचते हागे कि मैं कितना मटिया आदमी हू। यदि उम साजत म आपको एक भी लूज  
 योगन नहीं हुआ हागा तो अध मेरी म्मिति मभक्ष सकते हैं। पूरे शहर म लाग कवन  
 पेचिश का ही चर्चा कर रहे हैं। गव माहव ने जो म्मामांडा बनाया उमके बारे म  
 कोई कुछ नहा कहता। लो कवन इम मे गांध हा ग है कि कौन मर रहा है और  
 कौन जम्भान मे पडा है।

चार तागो क बोच वे उना मुश्किल हो गया है। तहाँ बैठो वहाँ कवल पीचर  
 बाल लाग हा हाते हैं। अपन-अपन अनुभव बताते हैं कि उन्हो पहल माशा म क्या  
 किया। वे कितनी बार उलझौन न रहे ह, और कौन-कौनसा गोलिया म्या रहे ह। न  
 भाजपा को बात और न जाता त्त का बान। भागो लक्ष कवन लूज मोजत नो है

म्वास्य नि भाग मकक हो गया है। म्मभरंज का पहल लूज माशन की गाली  
 खिलार के वाट हे उमम पूजा जाता है एक क्या शिकायत है एक एजाजा का मराज  
 भी अम्यताम मे भर्ती हो गया है। लग्य पुजते ह, "तुम कैसे आ गए मइया?"

तुम कहता है "घरों बदल गये। मेरा लक्षका मल्हम लकर चला गया और  
 तुमो खबरत - कर्मदस्ती कर्मदस्ती - लो पर दिव है -"

पापा पेट में परेशान हूँ

“तुम्हें डॉक्टर का बतव्या नहीं?”

‘बताया था’ लेकिन वे मानते ही नहीं। मैं कहना हूँ कि साहब, मैं केवल एक बार ही जाता हूँ, शोफन से कहते हैं कि मरी इन्हीं में तो चार चार लिखा है पर बतव्या में क्या कहें?

“डॉक्टर से कहा कि तुम्हें अस्पताल में झुटी दे दो।”

‘कहा था लेकिन डॉक्टर कहते हैं कि पचिश और हैजा का भीजन चल रहा है। कल कुछ बो गया था पूरी त्रिमंदाग उन पर आ जायेगा, इमरालिया व स्पर्क डाकर इजाजत कर रहे हैं।’

मैं साच रहा हूँ कि अस्पताल में किना की पत्त बदनकर मैं भी अपने परागा कलक था डाले ताकि योगा का पता लग जाए कि एम्मा आत्मी तहाँ हूँ कि मुझे कुछ था न ही। दश में पचिश हा और इमम में भागादार न बनूँ एम्मा ही ही नगी रखना इच्छा है। मरलियाका ताप है, लेकिन हम पेट का कारण सब बजाते जाँची है। सब खा रहा हूँ लेकिन कुछ नहीं होता। हम कहते हैं दुर्भाग्य।

कुछ नाग बैठे बाने कर रहे थे। जिसवि नाग रहे थे कि तिनन लागे जाँ हा न गम्भीर बतार्डे गड़े ह। मरकीर गंधधाम के लिए क्या उपान कर गयी है। अखबार में जुडे एक मरालिया इमलिया जुग हा गण। कि ले नाग नस्पताल में अथहिन्द हा गए थे, तीसरे का हास्त गम्भीर थी। व इमक पाउ लग थे कि कब फर हा नीर वे फोन गगाकर गीद ले ल। उनका मरुबाग टाप दे कि तीन लाग पेनिश में मरे बाकी मरुबाग में दो ही रहे। इमरालिया सखम अधिक उन्मादित वे लग रहे थे।

मैं मधी का नमस्कार किया। एक न मुझमें पड़ा “और सुनाओ क्या हाल है”

मैं कहा ‘बड़ा गरी मत्रिनणदरा बना है। बाबाजाँ को ना कम-से-कम ला भाण्ड ॥’

दूसरे मजान नागज हा गण बाल, “तम अनीब आदमा हो यहाँ लाग पचिश में मर रहे हैं और तुम्हें का मजी की पडा है।”

इसके बाद उन-दोनों की ओर बाध नहीं हुई मैं किन्हीं मरी की कद ३३३



१०  
११  
१२  
१३

शेकसप इत तता। पर पहले घाम उपचार की बात शुरू का दोने थे। स्थिति यह थी  
ति इकताति अलग-अलग पल रह था। वहाँ तक कि जो मजबूत अस्थिभार से मुँह व  
त्र था जोर परिणत न बड़ गढ़ था। बीन मनी आ गण है, बीन जो गण है। काह चिवा  
दने। अम्पकत म काल का गत है और वान पा ताता है के सिवाय कुछ गोचने  
की कपार ता रहा था।

१४  
१५  
१६  
१७  
१८  
१९

ता आता था ताग भुछने, 'आर सुतामी, क्या हात है?'

जगद ककना, 'अर मुकल से पर कोषि ता है।'

तुगा दमश पछता 'कितना दार ताए। - जी बड़े?'

अगना बनीता था जोर प्रमत्त सीता था कि वह भंछे नहीं है। अपनी बीमारी  
के कारण का सख भी अजीब गढ़ा है। 'अ' यह ब्रह्मकार बनने तबि है कि उगत म  
किमत ताग कितनी बार ता गढ़ है। सीता का यह तता में मुख हा था था कि उगत म  
किमत तपनी की देवाई खरादकर धर म गड़ी है।

एक मजबूत गर्म म यता रहे थे कि उक्त गन्धोप जेटा गन्धोप के तप  
पैकडा सपवा की टाएँ ता गर्म, ता हात पैमा यागी की तरह बलाया कायता जो मुस  
पैम दिता। वे परिश क वनपव और अगना के सम्मरण मुना रह ग और ताग उक्त  
बकर तैरे था।

२०  
२१  
२२  
२३  
२४  
२५  
२६  
२७

इया बरह येने कुछ सीत थी श्री जो उमकित निरगत म कि अस्थितान से  
उरत के बाद ही दिता पर व एक ब्रा भी गली गए। डॉक्टरों से कहते हैं बुतात ती  
गोली द दे, लाकन अकिट डर हुए है कि, पा ताते पर फिर कहीं तक अस्थितान म  
भगी कानान पड़ गीर। बल है ता बरह कहते थे। पर ये कुछ नसा है इसलिए निरगतवा  
कहते से अकिट भी तप का सनीपपद जार दकर गति देता है।

वातावरण लुज था। ता गन्धोप मतक मर गकिन म उरी उरह जे रहा था।  
टाअगना गोवा को कुछ नहीं जाता। नोवा भा है जो पता नश चलता। कुछ दिन। पहल  
एक गोवा अदपी को मुह ब्रा बज इत तागे शुरू हुए जात वह एक धम में चल  
बस। किमी न पर कोशित। गी को। के उमे अस्थितान ल ज्ञाय श्राए। जहाँ तक पडा  
वा वहाँ सीत गत-धर काम करते थे। अस्थितान भी बिल्कत पंम ही था। लेकिन  
किमी को किता नहीं थी उस गीत की। मैं हम कौन बरहनी श्री बरह मर कप दे



जाता है। अतीव भारी आदमी था क्या हुआ जो नरसिंग बा। किम्बो का फल नहीं चना कि वह कुरंगे नर गया। किसी ने यह जाना जो नशिवा भी नहीं की।

शायद एक सप्ताह पहले जो बड़े नरियाँ हमें में भरती हो गये हैं। ऐसा फलन को एक बहाव है। अकारण अस्पताल के डाक्टर भरी ग को छान्दर 'वॉलर' नरियाँ नरियाँ और जो बड़े अकारण से चिन्तित हो रहे हैं। एक कामों में यह 'वाटर' पथान ली करके न।, किमर के वा ली, बन्द चक कर रहे हैं। 'होइ डी' अरु नरियाँ 'अबन' 'दंडा' जो कोई काम नरियाँ न हो चला। अन्ततः तब कि ले भी पैय लगे।

यों आचता हूँ कि यदि मुझ पाचन डा गड न मंग क्यु हाय 'शव' अकारण मुझ कुछ भी नहीं हो रहा है। अकारण में एक मुझे इस बात का स ख जरूर हो रहा है कि मुझे कुछ नहीं होगा लेकिन अभा-पाथी साधता हू जो अकारण 'फर' जला अंतरयन है। अकारण मुझे इतना है कि मैं मर न जान कर जाता हूँ।

मैं लेट न जा रहा हूँ। मुझे 'नर' म जाना है। मैं जब न जान करता हूँ कि मुझे कुछ नहीं होगा। जिस पेट न शिवा अकारण सारा ग मिलावती चीज हो खाई है। इस पेट में कभी कोई मगड न हो जायगा। पचिस पर कुछ नहा बिटन सकनी। यह बात और है कि मैं हाल अकारण न मर रहा हूँ। बीमार लोगों के अर्थ अपन-आपका धिक्कार रहा हूँ। मुझे अब भुग्न पान नहीं हो रहा है कि लोग से कहूँ कि 'ये' छोटी सा बीमारी में इतना मगड डौंस्टरी का र दिना।

मुझे पचिस हुई तो मैं आपका मोचन कहूँगा।

अब शायद धन मरने न अपा अँडर 'एडवाय' में फल पेट रखा है। अतः और किम्बो को प्रसन्न न था। उन्हें जरूर देना। किन्ती नेछु की 'अन्त' शक्ति पान हो अगा, इसमें बड़ा 'अन्त' और क्या हो सकता है। वैसे अन्त तो मरी न हारी है कि अस्पताल में जाता हो जाऊँ लेकिन इस फायी पेट का क्या करे जो साथ ही नहीं दे रहा है।

१०८  
 हा  
 न  
 १०

१२  
 नि  
 म  
 १३  
 का  
 १४  
 प्र  
 १५  
 वा  
 १६  
 न  
 १७  
 १८  
 १९  
 २०  
 २१  
 २२  
 २३  
 २४  
 २५  
 २६  
 २७  
 २८  
 २९  
 ३०  
 ३१  
 ३२  
 ३३  
 ३४  
 ३५  
 ३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०

## सरकारी अस्पताल आपका स्वागत करता है

अस्पताल यह स्थान है, जहाँ भारतीय प्रगति का ज्ञान और प्रयत्न स्वयंसेवकों के सहयोग से प्रयत्नरत रहता है। इसमें अनेकौट लाभकारी योजनाएँ चलायी जाती हैं। अस्पतालों का मुख्य उद्देश्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक सहायता मिले। इसमें सर्वोपरि ध्यान दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया जा सके। इसमें सर्वोपरि ध्यान दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया जा सके। इसमें सर्वोपरि ध्यान दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया जा सके।

अब सरकारें यह समझना चाहती हैं कि वे एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं। एक ही दिशा में काम कर रही हैं।

जिन लाभों में सरकारी अस्पतालों को अधिक लाभ मिलेगा, वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। वे भी इस दिशा में काम कर रहे हैं।

सरकारों सम्पत्तियों को बाँटना है

सम्पत्तियों को बाँटना है। अब तो स्थिति यह है कि डॉक्टर माइकल मुझे  
 से देखकर ही यह सोचता है कि आज मुझे ज़िन्दगी बाँटनी है। वे बेचारता से  
 कहते हैं कि मुझे तभी तो जीवितों में एक भाग छुटकारा मिल जाए, लेकिन मैं ही  
 कुछ देता अधिक बेअसर है कि उन्हें यह सोचना पड़ेगा कि वे माइकल ज्यूराल  
 का नाम पढ़ेंगे या नहीं, तो यह लिए समुचित सिद्ध हो जाता है। मैं उन पता है और  
 बच जाता हूँ। नाग मुझे देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि मैं आज तक क्यों जन्म  
 हुआ हूँ, मैं क्यों कहता हूँ—सरकारी अस्पताल का हाजिर करवाओ, तो मुझे  
 नहीं तो अच्छी प्रॉस्टिथिस का चाओगी। जीवितों में कौनों ही सरकारों सम्पत्तियों को  
 बाँटनी नभूना पाकविशेषज्ञ बहाक के लेट्टर का मत है। ज्यूराली बाँटनी में  
 ज़िन्दगी बचाना है ना आर्थोपेडियाम को कौनों ही सम्पत्तियों सम्पत्तियों में भाग  
 बाँट आकर देखो कि मुझसे गण-निर्वाचक भी अधिक किया गया है। जकारों  
 अस्पतालों में डॉक्टर के पदों में हमें शक्ति की जन्म शक्ति पर कौनों ही भावनात्मक नहीं  
 हस्त बाँटनी है। (देखना खुद, यीज) नाकि माइकल को भी हम बात पर मुझे कि  
 कि वह अपने कार्यालय में मुझे दर घटा कर है।

यह माइकल अपने अस्पताल में है, इसलिए मैं जन्म हूँ। मुझे अपने लिए—  
 निर्वाचक शक्ति पर प्रतिक्रिया है, और मैं यह विस्तारित जन्म अंतर्गत में सरकारी  
 सम्पत्तियों में ही निर्जित किया। जन्म पर तब का रोज़ डॉक्टर मुझे यह शक्ति है मुझे  
 देखकर ही जन्म का बड़े क्षितिज जाती है 'जा गया जन्म पर एक जन्म दिनों की  
 पुस्तक है।'

दुभाग से मैं मुझे पढ़ने दिना में एक जगह में भीमा ही पढ़ा। मुझे भी  
 उन जगह की भीमा थी। मैं जिना माइकल सम्पत्तियों का था होगा? वास्तव में कि का  
 मेला करण? पर लिए जो माइकली इकाइय का स्टैंड ठन्डोने पर रखा है। उस तहाँ  
 वेरगे? स्फकार था कहेंगे कि क्या इमो जिन करि (५ जन्म मुझे शहर में अस्पताल  
 खोजा था? जन्म नहीं आते, मुझे ही होना वृत्त रहे तो? हम मुझे लिए बतना पैसा  
 खर्च कर रहे हैं डॉक्टर का पीठ नीचे पुन हो कि नये भाव है नहीं दे रहे।-12 क्या  
 जन्म है मुझका तबिक धम? क्या था? इ माइकली माइकल के रोज़ आस्था? थिक्कर  
 है मुझे। जीवितों बाँटकर सरकारों जन्मता न नहीं जा सकत ना किमी कुर्ण, बाँटनी में  
 इकाइय पर जाती।

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12

भाग से लगे हुए गुरुवाली रात को  
 अस्पताल के लिए अपने लिए इन्होंने भी नहीं कहा था

उस रात काम में लिया बहुत अधिक चुनौती भरी थी। अपने बहन पल्लव जैसा कि फाड़ें गैर-आधिकारिक रूप से जाने भी नहीं बने। गनीज बक में भी जाती चारित्र्य। और मैं  
 रहा था कि कहा गिनाज तुम्हें था मैं पोलिस पड जाऊँ। जैसे गी मैं मारो जाता  
 ग दुम्ना ट। गग नाम कहा इस क्रिया में छप गया तो सरकार कहीं यह न सफ़्त ल  
 कि अपा यहाँ अस्पताल की जरूरत ही नहीं है। एखाहु आता बट। अन्तर्गत जागगा  
 मने अगत्या पुनः निवर्तना मा अलग।

ग मटक पर चक्का आर हर भुजा माटम्भरिजिन थाता की देखकर नितनन  
 करता—आ मा देएकताकर आर ताडउमा पर की टका मैं पत्रां दिन मस्यकारी  
 अस्पताल नहीं गया हूँ। आ कुकना मन्वात्मक कार्य कर न मरना प्रधानमंत्रा को  
 इस युवा शक्ति पर डगा भरोसा है और तु दे कि एक उअर भी नहीं पर रहा है क्या  
 वो गया है भा तुझे हर माटरमाइकिल चीता शब्द माकर निकल जाता। यहाँ  
 न्यूनमिता फिर पन्द्रह दिनों न ह चला। काई दुर्घटना नहीं हुई। म राज घर रो यही  
 मंचकर निकलाता एक मुझ सडन स लोग आधे मरकारा अम्मशाल ल जायें। गैर  
 डॉक्टर महव पसन् होकर करग—कहा 'ग इनने दिना 'क' तुम्हारा वियोग में इस  
 अस्पताल का हर काना श्रमू बहा रहा है हमारे बलि मचन रहा है। हमारे 'ग' न  
 फडफडा रहे हैं भूत छ रण में हम-

अपने दश में दजानु 'ग' की कमा नहीं है। एक युवा का भुक्त पर दया आ  
 गई और उसने अपना राजदूत लका दी मुझ पर। नाग नम गानन अड स मर्न करा-- इस  
 नत मागे, इसी क नभ पर गण का परिवन्ध है मैं तो इस मच शतमक काई की धनीक्षा  
 एक महाने म कर रहा था उनने मेन आत्मा का आधाज सुनी है न महान है ऐसे  
 जाग का सरकारी अस्पताल का अन्ध्रा योगदान रहता है मझे मरकारा अस्पताल ल  
 नलो एक महीन में आकुल हैं मैं देश का युवा शक्ति का नमा करता हूँ।

फिर मने उस युवा को नन्यवाद दन का गरज में कहा—भाड, मने टाँग की  
 चिन्ता तु मन कर मरकारा अस्पताल हम जैसे लोगों की टाँग जोड़ने के लिए ह  
 एकरा कोन है एक देक ले कि वेरी उअरुत नहीं वे विकसि ले को है ली

सरकारी अस्पताल आपको स्वागत करता है

ता मुझसे फ्लू-सीस-पचाम रुपया और ल ल और दा-बाग मजान में मुझे अस्पताल जान का सीधाग्य पढान करता रह ।

लागा ने मेरी उदारता की सराहना की। बाले—मम भारतीय लागगा ने पर हम गर्व है तम जैसे दस-बीस लोग मम शहर में हा ता भा नों कमर गुला धरा की एक रच अत्मक दिश मिलेगा ।

इसके बाद कुछ लोगो ने मुझे सरकारी अस्पताल में लाकर डाल दिया। पा चरु कि चरु म र ल डॉक्टर नसबदा कैम्य स बाहर गए । ठीक है । शब्दों की कम कम्ब ज्यादा जरूरी है । अर्थात् हड्डी नहीं भी जुड़गी तो दश का विकास नही भक जायगा। एक डॉक्टर जो बचा था वह पास्टमाटम करने गया था। अब बचा एक ना मके मसो मरजा की दती लम्बी भौंड थी, कि मुझे लया इस शौड को पिपटान तक तो नही हड्डी अपने आप जुड जायगी। लोगो ने इसमें पिचदन किया कि कम सीरियस है और वे मुझे ब्रन्दा देख में ।

मैं जानता हूँ कि वे बेचार फर्ली बार सरकारी अस्पताल में आए थे। सब कुछ जानते हैं लकिया मराज रखन में सरकारी अस्पताल में काई जन्दबाजी नहीं जाती । कम आगम में जाना है जोर पर अन्वविश्वास के साथ जाता है कि मरीज नावित होय। मुझे लोगो ने सरकारी अस्पताल में रखी एक बकड़ी को बच पर लाना दिया था। मैंने जाना सक्ता मर लिए सुन्द मान पाठक के कोई मामूली उपचार का दा करण माहब जमी व्यस्त हैं मन्त्र डिस्टर्ब मन करा ।

लागा ने ऐसा ही किया। मराज भई की बुक स्टाल से ते एक उपचार्य मोंकर ल आए। मैंने कहा—अब आप लोग बर जाइए मुझे सरकारी अस्पताल का अच्छा अनुभव है । हई मेरे घर रख कर दीक्षण कि वे किसी बल का चिन्ता न कर, मैं सरकारी अस्पताल में हूँ ।

आ ने म अधिक उपचार्य पूरा करेगेने के बाद डॉक्टर सादर में पास आए । मुझे पला चोट करा लगा है ।

मैंने दाहिने पैर की आर इशाग किया । उन्हान कहा - लगता है हड्डी टट गई है आप ममा कोत्रण कि किम्ता राइ ग्ट डॉक्टर के पास एकसर करना सीजिए

तो हमने ना टूट में हम रु। योगा एक्सपर्ट हम यहाँ फोटो लोकन  
गहन दिन में फिल्म पसल हो ग।

। नरा— डॉक्टर साहब, मैं नरिजानी भरपत्तरी पर जायथा अक्षर वाला  
जादमी ब। शेषता बिना अक्षर लिख ले मंगे हड्डी जाइ जा अण यही जाणा कि गनत  
तुड नाणा मुझ इस बात को चिन्तित किया गया है मैं इस सी.ए. अख्यान फिर  
अस्पताल में जाऊँगा या फिर आप कहें ता मैं कुछ दिना तक फिल्म को इतना  
करूँ मुझे ऐसा कोई अरुची नहीं है एक टाग के अक्षर भी तो नाग जो कह है इस  
दश ग।

डॉक्टर साहब मैं मंगे बार देखा। मैं जामुना उपन्यास पूरा करने में लग  
ना। मुझ विश्वास था कि स्टूडेंट जान तक मैं उपन्यास पूरा कर लूँगा। सरकार अस्पताल  
को अनुभव पर साध था। पैर कर लूँ जब तुझे गा तब जुड़गी। मैं सरकार अस्पताल  
म हूँ वहीं पर निरप योग्य को बात प्रा। जीवन और मृत्यु में भय कम्ना ता मुझ जाता  
ही था।



## हम लिफाफे हैं

अब इससे बड़ी प्रयत्नता की बात और कहा जा सकता है कि सम्बन्धों को पहचान लिफाफा से जान लगी है। मुझे कभी-कभी लगता है कि मैं भी केवल एक लिफाफा ही रह गया हूँ जिसमें दस का एक नाट्य और एक रुपये वाला सड़क हुआ नाट है जो मरी कीपत का अर्पण है। हर आशीर्वात समारोह में अपनी स्कूल की गोब में एक लम्बा लिफाफा लेकर जाता हूँ और उस-वधु का आशीर्वात के साथ-साथ एक सड़ा हुआ नोट दस रुपये वाले नाट में लपेटकर दे जाता हूँ। आगे तुम्हारा दम्पत्य जीवन सुखा रहे या न रहे, मरी जिम्मेदारी नहीं है। क्या तुमो खुलासा और हम चने आण हमारे आशीर्वात के भरोसे मत रहना। अब हम आदमा नहीं लिफाफा है जिसमें बन्द सम्बन्ध व्याज्र थाल हैं। अपा पिवाजो में कहना कि चने लिफाफा दिया है और केवल मुँह मीना हो किया है। और का तरह भकास कर नहीं खाया है। क्या

मुहन-समारोह से लेकर जन्म-दिन और विवाह-समारोह तक न्याय सम्बन्ध के बीच कहता यह लिफाफा है। बचा है जिस तरह हम गौरवान्वित हो लते हैं। या इस तरह कहें कि हम लिफाफा में गौरवान्वित जान जाने लागे हैं, ता भी काट फर्क नहीं पडता। क्या आपने निमनग धज्रा है ता कुछ सान-समझकर ही धारा होगा। अब बिना सान-समझे निमनग धेजन क दिन लद था। गणमान्य नागो की सूचियाँ बदल गई है और गणमान्य भी बदल गए हैं। जान स आने है, नबापन में खाते हैं और हाथ हिलाने हुए चने जान है। और लिफाफा खने दादा लोको से लिफाफा माँगते है। वेज्र, तुम्हारे समारोह का सत्यानास कर देगे। कहा तो दा-चार लोगों को टुन करके भिजवाएँ वो हैगमा हागा कि लिफाफा चना भूल जाओगे। क्या?



तबसला से तपस करना है कि मैं ऐसा जानना चाहूँ कि  
 सिर्फ़ लिए किसी मझगोहे सल का एक टुकड़ा खाना में लि मिट्टी खाने  
 क थर जा मुझ बुलाना चाहे, नफि तबखिर बुला, उभक विमरण खाली नह  
 जायस। क्य य बात आ है कि उन लिफाफों का कारण मग डगमा का बजट मंडलडा  
 गया है। मर म राज (अर-रिफल होता है। लेकिन का .र क्या? मपात्र ई नौना ह  
 ना मधन्धे ता मनाकर रखना ही पडगा। अर म हूठ शानतम लच्छा को बतता लेंगे  
 लेकिन जनी नाम ता। लिफाफा तो देना ही पडगा। तथा म प्रत भा अच्छा तम  
 जानता है। क ममाराह के मव जव गिला-पत्र लिफाफे मगान म तो कर्मो बनि करन  
 व। म्मा का परि सारा है—

—पापा ये थर लिफाफे बरला कौं है / लेंगा यर

—वेना न्यग्यकार है। बडा मंडक मः।

—बहुत फर्स्ट आदमी है कपा दग्गे घौं हफा निरना है लिफाफे  
 मे म ठग रहा था बहुत ख्या है पापा इस आदमी म प्राप एम लोगो को बुलान  
 क्य न पगा।

—सा हम कर्मो म ध्वनि क लागे बसगा ना भिमरगो को बौटन  
 पडता है मर म म्छा है ना-चार एमे लागे क पट म चला जाण।

—आर थ मारव कौन है? देखिए ता महा लिफाफा इनना राम्बा तौर  
 अन्ट बुल नही।

—दिखाया म्छ।

(पापा लिफाफा देखे ह नाम पहन को जोरिया करत है लेकिन नाम इस  
 तम लिखा गया है कि मधु म नहा आता। पापा लिफाफा डेजड-पलट कर देखा  
 है खाना है। लिफाफे माला।)

—नोगे का जनां भी मरत नही है कि किसी समाने म खाली हाथ रहा  
 पना कहिए। मन्धे चनाले का आते करते हैं मले मपात्र म म्छ।

/ पापा गुम्मे से लिफाफे क टुकड का डालन हैं।

—पापा, नाम लिफाफे पर अपना नाम माफ क्यों नहीं लिखते?

रुम लिफाफे

—अबे चुप इतना बड़ा था गया, शायी ही गई लेकिन इतना भी नहीं जानता

—पापा, मुझे तो यह किमा बुद्धिवादी का लिफाफा लगा है।

—छात्र में गया बुद्धिवादी दूसरा लिफाफा खोलो।

। जय राम लिफाफा फाड़ता है। ग्यारह रुपए का एकनाट और एक नाना सडा हुआ टाट)

—जय मुझे दिखा सब मतलबों का गणकें उसका बड़ा की शादी में मैं इत्काम दे भाई। धी चूना गया लिया माले न चतनी है उस। जय सामाजिक सम्मन्धों का वस्तु करता है। गणकें विभाषा जाता है मन्वन्ध?

आपको विनम्रतापूर्वक बताना चाहता हूँ कि पिँच रुपए का लिफाफा मेरा भी था। भूत मुझसे थक ही गई कि मैंने अपना नाम टाइपराइटर में स्पष्ट लिख लिया आदत है। साथ में गिँची रचना जास हो जाती है। इसके बाद मैंने अपनी टैंगिया में परिश्रम बँटा टा। सब गया उमस कुछ अधिक। पिँच को जगह ग्यारह रुपए लिफाफे का कीमत पचास पैसा आया। याने कि एक आपीवादी का मूल्य महज ग्यारह टाफाफे—खर्च सहित। मेरा ग्यारह है 'अरे रूट चल गह ह' मध्यमवर्गीय समाज में। जयन कोई लज्जपति या करोड़पति तो हैं नहीं। ग्यारह में ही बजट खराब हो गया है क्योंकि इस बार शादीसँ अधिक है। अब तो चडना हो पा सडकी, सब बराबर हैं। ग्यारह में कम में कोई नहीं छूटता। क्या।

जयत लोगों का पना लग गया है कि मैं ग्यारह टाफा लिफाफा दे। कई लोग समाज के बाद मेरा लिफाफा आले ही कहते हैं, 'अरे मन खाला इसे यह तो ग्यारह चूना है।'

मन कहते हैं। ग्यारह रुपए में आना क्या है? श्रद्धमक्रीम खाओगे तो ठगम भी एक रुपया मिताता पडेगा यदि दो राग हुए, तो। किसी जडे होटल में बँक सान्ट लोग नम वीस राग में कम का श्रिल नहीं। यद्यपि। इन नज गति में हम आगे बढ़ते रह ता वह इस भी दूर नहीं जब भिखारी भी आपस ग्यारह से कम को आपा रखेंगे। क्या?



समन्वित फल हैं

--जिहवां-भर गेहूँ का द्रिगा है तुमने अपने बच्चा का प्रिय-पक्ष्य ही समझते हो।

--जरा लिफाफा खाना एक और सुना ।

--सया /

--मुझे जग पल्लोस रूप दे देता तुम लोग जो जाना मे जग देख स  
सर्वेणः।

अपना का हाल यह है कि धन विभाके पर 'आदिक शुभकामलाजी मलित'  
दृष्टि किया फिर एक कोने में अपना नाम टाँप कर के बाद साचने लगा फिर एक  
बाला गोट मिल जाता तो अच्छा जाया। गीस का नया नोट देना अच्छा नही नगण।  
जब मैं अपने सामाजिक सम्बन्धों का उपा उपा हूँ। अब मा कहते कि जीवन  
यहाँ के सम्बन्ध नगे है लिफाफा खाकर रख लेता भीमान कदां घर इक्कीम हैं,  
विकास। या

तभी छोटी मुलत जा गई। उसको आँखों में एक फॉव, तेर रहा था। वह मुझे  
दखतर था। यम लिफाफा लेख मे डाले लिया। उसे प्यर करण तुम कहा, 'जाओ वर  
खेलो हम चिल्ला जाएग, सब तुम्हारे लिए बहिया प्रीक ला दरो।'

□

ये बड़ी निरालसा से निश्चयन करना हैं कि मैं क्या आदमी नहीं हूँ। बिना लिफाफा दिए किसी समाज में सम्मेलन का पत्र दुकड़ा खाना भाग्य शिष्टा मिट्टा खाने के बराबर है। जो कुछ तुम्हारा चाह, बंधक राकर बुतार उसका लिफाफा खाली नहीं जायगा। और य बात और है कि इन लिफाफा के कक्षण में इस साल कुछ बजट गडबडी गयी है। और मैं राज किन-किन हामी है। लेकिन क्या भा क्या समाज में जाना है या गावन्ध तो बनाकर रखना ही पड़ेगा। घर में झूठ खानकर अच्छा तो बनना क्या। लेकिन जहाँ चार गंगा ही लिफाफा नाटना ही पड़ेगा। क्या मैं यह वा अच्छा गण जनता हैं कि समाज के चार जब पिता पुत्र तापीके खालत है तो कैसा बात करने है। गण का प्रति सराफ है—

—गाफ, ये भरे लिफाफे खाना कौन है? देखिए जरा

—वेदा कर्षकार है। बड़ा लखल है।

—बहुत फार आदमी है पापा दखा पाच रुपया निकता है लिफाफे में सट्टा गण था इहेन खाय है पापा इस आदमी ने, आप जैसे गांगे का बुलाने करा है पापा

—अरे, हम पर्यास्ता पत्रनि के लाग है। बचेगा तो। भस्मगा का बौटना पडता है, इसमें शच्छा है दा-दाए एमे जोगा क पर में चला जाए।

—और ये साहज कौन है? देखिए तो सही लिफाफा इतना गम्बा और शन्दर कुत गती।

—टिग्या भा मुझ।

। पापा लिफाफा देखते हैं, नाम पडते का कोशिश करते हैं तांका लभ इस गण लिया गया है कि समझ में नहीं आता। पापा लिफाफा उगाट-गलट कर देखते हैं खाना है। (मिलकुन खाली।)

—लांगे का इतनी भा समझ नहीं है कि किसी समाज में खाली हाथ जा जाना चाहिए। सम्बन्ध जान की बात करते हैं साल समाज में कैह।

(पापा गम्मे में लिफाफे के दुकड़ कर डालते है।)

—पापा गांग लिफाफो पर अपना नाम साफ कगो नहीं लिखते।

हम लिफाफे हैं

—अब चप डगना बंद हो गया शरीर ही गड़ लेकिन इतना 'गे नहीं जानता

—पापा मुझे तो यह किरी बुद्धिजंजी का लिफाफा लगाना है

—भाड में बाधा बुद्धिजाजा दूसरा लिफाफा खोल।

। बंदत दुभंग लिफाफे फाटना है। ग्यारह रुपय। उस का एक ताट और एक वाला मंडा टआ नाट।

—जग मुझे दिखा सब मरती हो गए है उसकी बेटों की शादी में म दुबकांम दे आया था चना पापा दिवा माले न जानता हूँ उस। बड़ मयालिक मध्वन्धा की बात करता है। मेम निभाया जाता है मय्यन्धः

आपका विनमतापुत्रक जलाना चाहना हूँ कि पाँच रुपए वाला लिफाफा मंगा हा था। धुत मुझसे यह हो गड़ कि मैंने अपना नाम टाइपराइटर से स्पष्ट निरा दिया। आदत है। हा ' में लिखी चना पापास ना जाता है। इसक बाद मैंने अपना हैमिप्यत का भतिशत जडा दी। मैं स्या, मयम कुछ अधिक। पाँच का जण्ड ग्यारह रुपए। लिफाफे का कीमत पचास पैसा अलग। जान कि एक आशीर्वाद का भुल्य मादें ग्याह, लिफाफे-खर्च मरित। मरा खाल है यहा गट चल मरा है मय्यन्धवर्गीय मय्याज में। अपने कोर्त मन्वपति का कगोटपनि ना है नही। ग्यारह में ही बगुट खराब हो गया है ज्योकि इय बाग गाटिगों अभिक बई। सब तो मडका हा च लडका, मख अगबर है। प्य लि में कम म कई नहीं डूटना। जग।

ऋतु सागो को पना लग गया है कि मैं ग्याह वाला लिफाफा हूँ। कड लोग ममारह के बाद मंग लिफाफे आते ही कहते हैं, 'जर पत खालो इमे यह ली ग्यारह वाला है।'

मम कहते हैं। ग्यारह रुपय में आगे क्या है? आहमक्रीम खाओंग तो उमधे धा एक रुपया मिलाना पडंग। यदि दो लोग हुए ना। मिनी बड हॉटल में बंकफास्ट लोग भी दोस रुपय में कम का बिरत नहीं आंगा। इम तेज यति में इम आगे अदने रह ना बरत दिन था दर नही जब भिखारी धी जापने ग्याह में कम का आशा नहीं रखंगा। क्या।

भाचता हूँ पिताजी का तागत होने का स्वाभाविक है। गम्बदा लन्वार्ड का खल काटकर यदि इजाजत-पाँव लौं न बचता तब पत्नीभाल में क्या फायदा? कम-में कम जितना खा रहा हो उतना तो देत जाओ पर बाप। मालूम है बाजार में दा रूपण प्लेट में कम कुछ नहीं मिलता। अफिरन समझदार अफमी रहे कहाँ / पहले जमा में लाग अपनी ईसघत में देत थे आर अपनी ईसियत में हा ग्यात थे। खाने में ना ईमिषत बढ़ा दी लेकिन दान में क्या टुकड़े होते हैं गुन्हाग आर पाईगी अफान ता भी तो ख्याल रखो। कबल खिलाने के लिए आर्मात्रन नहीं किया है उसन। अरती हुई वीमत्त का ध्यान रखो नाइ साहज। गुन्हाग क्या है, खाजोगे और निकलन दोगे। अफिरन समाज में सम्बन्ध खाने और निकालन से नाना, लिफाफा में बनते हैं। क्या?

अब मैं गम्भीरता से विचार कर रहा हूँ कि ग्यारह का जगह में इक्कीस का हो अरु है। यह मैं इसनिध कर रहा हूँ कि तब में नगर में बहुचर्चित हा गया तो मुझ शर्म आने लगी। मन कहने लगा—अब देब आ किना बावली में खाने से कोई अच्छा-सा कुर्मा खड़ा लेखक बना फिरना है। माल गौत में पैसे नहीं छूटत तो बड़े लेखक होने का मोह क्या पालता है। कोई जिदद फकार जोरना तो उम्ह इक्कीस रूपण दे देगा, लेकिन समाज में सम्बन्ध जनान के लिए इक्कीस देन में जान पर आता है? दैनिक अखबार का ना पारिव्रमिक बहा दिया, लेकिन तू अभी तक ग्यारह का अँकड़ा ही भाड रहा है? अब कुछ तो शरम कर। क्यों गखको को - - । फरजा रहा है?

आज राम मुझ रिसेप्शन का आमरण है। घर पर अट्टी मनी फाक नान की जिद कर रही है। जब मैं गक पत्रिका का पचास रूपण का मनीआर्डर आता है तबने शुरू हा गण हैं। नमून की प्रति भ्रमण है—

—बम दोस्ता में बड़ा दाग कभी घर की फरवाह की हो तब ना मुन्ना पास हा गई। तुमने कहा था कि पास खान पर गइ फॉक दो दाग। लेकिन मुझे तो केवल बच्चे पैदा करना है। यं नहीं कि बन्ना का शौक भी पूरा करें। न जाओ उरी और खरीद दो अच्छी-सा फॉक।

—लेकिन साठ-सत्तर में कम में अच्छी फॉक कहाँ आता है। खान दो कोई सगडा मनीआर्डर फिर न देगे।

ब्रह्मालंकार हैं

- -जिदगी-भर प्रसा दी किया है तुमन अपन बच्चा का मिट्टी-पत्थर का समझते हो।

—नग लिफाफा गाता एक और पना ।

—क्या ?

मुझे नग पच्चीस रुपय दे देना तुम लोग खाना में जग दर स आऊंगा।

अगर का हाग यह है कि मैंने लिफाफे पर 'हार्दिक शुभकामनाया सहित' लिखा किया। फिर एक पाने में अपना नाम लिख करन के जाकर। वन गगा कि एक बागा नाउ मिल जाता वा अच्छा होता। बीस का नग पाट दना अच्छा नहीं लगता। आप में अपने सामाजिक सम्बन्धों का अगर उदा रहा हूँ। अब मन करता कि अपने उदा के देखकर नग ई लिफाफा खोलकर देखना भीमत क्या 'पुंग इन्तोन' है इककास। क्या?

तथा गटी सुनीं आ गड। उसकी आखों में एक फासतर रहा जा। वह मुझे खबना रही। मन में लिफाफा बर म खल लिपा। ठम प्यार करते एण कता, "जाआ चेट खलनी हम दिहन्ते जागेंगे, एव तुम्हारे लिए बढिया फ्रॉक ना दगा।"

□

# साहब के जूते

दिस दिवस है। यह एक गरीब साहब के कोमल जूते खोना हुआ है। साहब इस प्रकार अनागत के बन्दी जाते हैं। उनमें ही साहब बड़ी बालू के चबूतरे पर बैठ गये हैं, वे शिवाय खोज साहेब के कुछ ही जा गये। जब साहब का खोजा नहीं देनी सोने के बालू का खोजा है। यथा मानते हैं कि इसके बाद लूटा तो जाये है। साहब इन्होंने साक्षात् कि न्याय विभाग के पास है उनमें एक श्रद्धा-सुनने तो आपका काम ही होगा।

अखबार में समाचार छपा था कि एक नया साहब का जूता था। जूता तो गला खोना, यह अखबार में नहीं आया। साहब ने पूछा मैं। आपका जूता कि उनके जूते खोदी हो गए। पुलिस वालों ने गिरोहों के कार्यों में सम्मिलित हैं। एक पुलिस विभाग की अखबार के अन्तर्गत में साहबान्वित होने का कारण। उन्हीं में जूते खोने जूते खोने होते हैं, लेकिन मैंने आज तक ऐसा कोई समाचार नहीं मिला कि पुलिस जूते में कोई बुरा-बुरा करेगा है। लेकिन उस जूते एक दिन खोया। साहब की खोज का मजहज है। जूते खोने का कारण कि पुलिस वालों के लाक्षण भी नहीं रहे।

जन्म अखबार में बोले "हट जाई जूतील साहब का जूता। साहब का जूता।"

उसके बाद साहब बन्दे गेब यह कहना चाहते थे कि लण कहां जा रहा है और चारा का स्तर बिजना गिर गया है। लेकिन तभी उन्हें याद आया कि बीड़ी पी लें। उन्होंने जूते से खोड़ी का बण्डल निकाला और मन्त का अंत में साहब का लक्षण था। यह वही मन्त मिला। वे मन्तपटास लगे।





मैंने कहा "क्या ही गया बच्चा बाबू" वह बोले, "माँ अच्छे बन्हास है बच्चा मैं माँचिस ही नहीं टूटन दन।"

मैंने मजाक में पूछा "क्या इगला है बच्ची बाबू मुझसे खुदक कहीं कडाहा मनेने जे निक्कर है।"

बन्दी बाबू जग झप गये काडा भागन का बलननन वं मन्वक गे भे। पिछले कट मन्व के अदालत से थ। किमन हीनगो के खिलाफ नन-बाण्ट कराए थे। बिमन तरे गने बाबू काहा है, लाग उहे मन्दी बाबू का कला थ। वे सुकडा तरह अनन थ। एक कारी नन पौं कलें मारी जाती है वह कुल सोनकर बोने ' तो बात नर्वी है व हीन माहक ' आपने जान का पेर थला '

मैंने कहा "ब्याउ रसा फिर आज किसी रना की ताया हा गू?"

बन्दी बाबू, भाष न तुमहे हुण आठभा से माँचिस भोग ओं बन्दी मुनगाका भव केन लगाने के बाद ओं। " तो यत नटा ह वकीन माकर जयने माहक के जून हीरी ही गय।"

मैंने पूछा, "कौन माहक ' नटे साहब वा काउ रहकब '

बन्दी बाबू बोले, "नहा भई कार्ड मलिनट्ट माहक देन म ना रहे थे कि थक चा न मनक जन चुरा दिवें। एव अप ( ? ) बन्दी म्वा बचा ' नव साहबो के जून से नहा बध दे है तो बाबूभा का नचा होगा?

मैंने बन्दी बाबू को बा का मजा लेन हुए पूछा "क्यो हा बन्दी बाबू जह वा बन्दाओ कसे चारी दूध हामे जून?"

बन्दी बाबू बोले ' दही ना तब स में भी सोन रहा हूँ मैं ना बच भी टूट मैं बलला हूँ अपनी जुते मरहलन मन्वकर भी सोन हूँ कम परोस देन मे कडें लाग, के लाग मन्वक जने हैं। ना सकता ह माहक ने सोन समय जुते बध के नन्व हा मन्व दिग हो '

मैंने कहा, "अब आपरवाही के लग नहीं हैं बन्दी बाबू। अपना भागन को वा लेनी करोगे वा नहीं होगा।"

बन्दी बाबू वरि बोडी थाम तरु बल गड थी। उन्हन बाउ को अप देखा।

शब्द रहना चाहते थे कि एकाध कदम की मुझदृष्टि पर न आता। बद्री बाबू किसी भी वस्तु को पूर्ण रूपसे ही विन्यास नहीं करते हैं। आशियर तक निचाब दो। जब तक थोड़ा था धुआ निकलना लाया था, उसे मन छोड़ो।

बन्दी बाबू बोले, "तुम कहते हैं बकांग माहल, मैं तो अपनी चप्पल बदलाकर मैं भी वहीं नहाराऊँ कड़ा खोलना कोई पार होना।"

मैत्र-कहा "आपका चप्पल की चीज कागडबन्दी बाबू जो चुपचाप वहाँ यातायात पर आनंद ही कि आप बल-चारण्ट फारत ही। अदानी के बन्दी बाबू हो। कान मरगा?"

अपने नारीक मनकर से मुसकुराए फिर अपने पैर की चप्पलको जो शब्द देलकर बोले "डीक करने को कहारा पाइए। बन्दी शब्द को चप्पल किये को हवा नहर्त होय, आर-पार निकल जागगी।"

उसके बाद न दो जगड़ फिर मैं नग।

मैं आहत के तूलों का छोरे, कडो हूए कला, 'क्यों ही अन्दो बाध यह रा जगजा कि जग पुलिम वास्तु जता-चार का पकड हो लग?"

बन्दी शब्द मैं आ शब्द। जाल पकडना दो पडेगा कोई मानूँ। आदिमी का जग जाता है। न्यायिक गुणवत्ता की का खवाल है दबोलेन माहल। पुलिम चाल कही से ही शब्द रूपद करजायग और उधर का चालान भा पेश करेग मुलापि म करुण करवापनी और जमाना जागा देख यय। आई मकड की जग नहीं किहा उल माहल का तुरत च जाग।"

शब्द अपने बाद बन्दी शब्द जहता चाले थे कि जब पुलिम हा मतयो नहीं कोयी हो देग म जानून और व्यवस्था बन्दी शब्दी के खिले दिना प्रार शक्तिपूर्व मे मजा मनाए जान पर जूए उतरा निरा था। पुलिम वालों ने एकदल नम पर जुग जगम कर दिया। कुन जा ने विधान मध म जता चलाने रिकरडे कायम किया है। अब दो बने चलना यम बल दो गई है। 'कोई भी किसी को जुता भार नरा है। मरला गी कहीं' कौन कब आगकी पकडकर सदायद गिन होगा, कड नहीं ज, समता।

Digitized by srujanika@gmail.com

बैठे धरती, "ज्या भी पत्नी बाप, आप भी इनमें सालों से पूँछाया मारना टपक रहा, मुझ पर सम्भव नहीं आता कि साहब के जेबों की गिनती करूँ कि सचोटी, बर्तमान जेबों के सिद्ध करवा। एक जेब जेबों जूत धरती हैं जो साहब के हैं।"

बन्दी बाबू फिर तेशम आ गये बाल "अब इस जेब में क्या धन है बकीर साहब आप पाकड़ मसला में बकवास कर रहे हैं। अभी तो दालें हैं कि तुमने सबाने एक आर्य और से भिन्न करके ही मसाले में मूला निकालवाएँ और इसकी आँधुन से जेबों बतका चाली पेट-अप करग तबकर।"

'तबकि कोइ न कोई पहचान तो होना चाहिए न? भव तब तो एक जैसे था दिखते हैं।' तब बाबू ने कि प्रशासन के जूतों पर कोई स्पष्टता मोताजम होता है।"

बन्दी बाबू मुस्कराकर बाल, "न्याय विभाग का जेब है बकरी मसला जेबों बतका चाली न किनी दे न गले में। जेबों उठवा हम बाप साय मिलवाया।"

मैं और पत्नी बाबू कचहरी के पास जाकर बाल में आ गए। मैं बन्दी बाबू में आतृणा जेबों का जगह किया किसे बन्दी बाबू ने तत्काल स्वीकार कर लिया। फिर नाव के बाद मैं बन्दी बाबू के साथ पनामा सिगरेट पीकर। मैं जाना था कि खास मौका पर न तजाम और मध्यम उंगलियों के बीच कुर्तों में सिगरेट उबाकर प्रस से आचन है और घुटका बधापर साय जेबों है।

बन्दी बाबू फिर तेशम आ गये बोले "तब करवा हूँ बकीर साहब चार मुझे मिल जाय ता चमे दा जूत लगाऊँगा और पूँछाया—क्यों ये हाथ पूरे हिन्दुस्तान में श्री कोइ तारा मिला? हमने साहब के जूतें चुगाते हैं? जेबों साल पार—उ मराने के तब नन्दर।"

बन्दी बाबू ने मुटकी बतकर सिगरेट की साय जेबों और बाल "जेबों बकरी साहब पुराने जेबों की बत से भिन्न जेबों तपरास में आप भी पड़ गे त आजका म बतका जूत-साय है।"

पुराने बालों की कार्रकाल का विचार बन्दी बाबू के मुँह में सुनकर मैंने कहा "आप नतले ने तो माता जेबों हूँ सेवन मिलने दिनें अपने बर्तों को हवा तब

का धारा हूँ मैं उमम तो पुनिम वातो न आत्र तंक् निम्नो तार का मित्रप्रणय वही किछा।।

बन्दी बाधू बोले "तु वात और ते बन्धोत साए। तुम-परायण तो होते न दूर है, लेकिन मुनिम वान्तो को विनयना पडना है कि समान श्ला कोन है ज्य चार्गे का आग भामना वास भन समझना यकाल यमत्र इत्यम व्यन्मश पं योष्टा का म वणत है। मत्र माए हों योने कि जब माहवा को वंग ममान को सुरक्ष पुनिम मही तर सकतो ता दुमरा को क्या जरेगी नोरो का आश्रय पुनिम ये उउ जायगा और चोग-तु-फ-चादि-वर्धि मत्र जायगी। प्रया र-परायण ज्यो वर सारो। मकोन आश्रय चाने विनाय म"।

मने फिर म-सक क चलज य पूछा, "ज्या ही बन्दी बाधू, ये तो जनाया कि पांड-नग गुता क्या चार्गे न-ग्या और मने परमम ये रिपोटे की न क्या भूषण करे जना तोर को फकटकर बालान पेश करण?"

बन्दी वात बाल "ज्यो यन्मक-कछु जो बन्दीत मत्रम) आदरर क्या कमी है? विम प्रवन्मि-र मत्र बोलण-गरी मका देगा। मना तो जम शीरा का है क्या गुता खरीतने क भाल पन्मम बार सचिना पछुत है।।"

मत्र-मत्र का समय हो रहा था। अचानक मं चला-परम शुरू हो गई था। बन्दी शीबू चम्मल फटकारत आग बंद गण। सादेब-म-गुता ही चिन्दा-किम उन्नक चहुर पर बालकन्वे-कम दी।

□

मन्दी बाधू बोले

मन्दी बाधू बोले

## शिकायत-वीर की कथा

जब भी मुझे जयवात का पेश भफभोस जाता है तब मैंने अपना पूरा जवाब देकर ही कहा, "धोरेस तूने बिबिध कर्म गँवाये" मैं यही कि दिया जीवन अकारण। न कभी किसी की शिकायत का और न कभी किसी की पुरा कथा। शिकायत के सामने जाकर बर्बरता ही बर रहते हैं, जहाँ जहाँ मैं पूरा भ्रमण कर रहा हूँ, जहाँ जहाँ मैं मार-काट चल रहा हूँ, वहाँ हा रहे हैं, योग अर्थन शत्रु का लिए हम को शत्रुवाच्य वातावरण बन-सजा कर ही हमें उड़ रहे हैं। वास्तव अपना उचाड़ना वास्तव ही हमें उचाड़ना का साक्ष्य है। वास्तव ही लेकिन मुझे कभी किसी से शिकायत नहीं रहे। जब किसी शत्रुता भी किसी काम से बिबिध किसी की शिकायत ही न को ही? पर जो शत्रुता किसी का ही नहीं लड़कर। वृ आरभी नहीं मूढता है। जो शत्रुता शत्रु और शत्रुता परकडने का शिकार्य जहाँ किसी तूने इस जगत् में।

श्रेय इस मायामें मुझे अन्धे रागा का सा निश्चयमिन्ना लोकर्य जस आदरा का कुछ साखा ही न हा इससे कसे ही कुल कहना बंधन है। न एक के मे सनन को कर्त्तव्य अथवा पूरा साखन शिकार्य करने में ही कहा दिया। यहाँ पर कथत करने में किसी पुरस्कार की घोषणा नहीं है। शत्रुता के दुष्कर्य विनेश और 'शिकायत-वीर' ही उपाधि से उक्त जकर सम्मानित किया जाएगा, तब तब तब एक ही शिकायती विदेशवाँतर्ही भेजता है, उल्लेखना है कि उनका जीवन व्यर्थ है। बिना फल का साजरी की तब उपादान रहते हैं। कुंड दिदी शत्रुता है, जहाँ तब शिकार्य विनेश में बीमता का नहीं। शत्रुता का जार में शत्रुता के भाव ही गण और कई लोग गेडू, कताल, पूरुड और पढी साखा-खाकर बिबिध ही गण। शिकार्य में बीमार शिकारियाँ में शत्रुता की शिकार्य ही शत्रुता ही नाहीं उनका। दाना-पाना ह्य धरती पर बंधन था वे रह गए। मेरा दाना व्यर्थ

सड़ की दुकान में बाकी था। प्रेम पेट में भ्रम सम्बन्ध अच्छे थे। सुरेश सड़ को मूक क विजय कृपा जी। गंधाम डाल, चाना। गहूँ सब मिले जान था। मेरा किम्मतपे रखे जनना दकाल को दादा जमा बाकी था, उमराप में बच गया।

वे कुछ दिनों तक उठपड़ते 'तुम कि इसका शिक्षापत्र में से बनाए? अतः वे दो-चार मछली-तकालो को। खानाफ एक शिक्षापत्र रमानमा को गान दो कि तकेदार ? अपने लान क लिए चानापो में गहर मिला दिया। कोई 'जान बीमार था। इस तरह जन-हानि हुई। मछली-तकदार के विरुद्ध नन्काल समयवाला का प्रवेशन का रक्षा को जाए।

नन्का आदल ही कि वे हर शिक्षापत्र के बाद यह जरूर लिखते थे कि शिक्षापत्र का 'तक' का 'प्रजापत्र की रक्षा को जाए।' प्रजापत्र का 'तक' का जितनी विनम्र को शायद और किना का नहा जाया। 'उने दिया। पद्यापत्रों का प्रस्ताविक दिनांक और आत्मकथादाताकनामे प्रशासन से। फिर भा 'तक' प्रजापत्र की रक्षा को बचाने रखकर शिक्षापत्र पत्रों के मुख्यमंत्री को भिजवा दो। मुख्यमंत्री - उस स्वास्थ्य-विभाग को भेज दिया और स्वास्थ्य-विभाग ने उस जिले के एमिनि सर्वेक्षण भेज दिया। वह भिजवा सर्वेक्षण कुछ समय में नहीं आया तो उमने इसे पुनिस-विभाग का भेज दिया। पुनिस काली को तकेदार समझ में आ गया कि तकेदार से जना आवरण करना है। या, पुनिस काली ने तकेदार से पत्रपूर्वक सम्बन्ध कालीं हुए अपना काम किया और प्रजापत्र को रक्षा में अपना योगदान दिया।

फिर न प्रतलज यह है कि शिक्षापत्र न हा ठा पूरा प्रशासन, पूरी व्यवस्था बकाश को जाए। न मर्चियों के पास कोई फाइल रहे और न अधिकारियों का पास कुछ काम हो। इमलिए जनकी भूमिका महत्वपूर्ण है कि वे अपनी शक्तियों के कारण प्रशासन का दुस्ता और ग्यदम्या को फुर्ती को बनाए हुए हैं। दूसरे चरण में उन्होंने एक माहब का शिक्षापत्र का दो शिक्षापत्र करना ही उनका जीवन का मन्थ था। नानात्र अच्छे थे, तागा का 'नसे कोई शिक्षापत्र नहीं था, लेकिन अपने शिक्षापत्र-वाग को कीन समझाए 'प दो-तीन दिनों तक माहब के ऑफिस का धक्कर लगाते रहे। यदि उन्होंने इस माहब का शिक्षापत्र नही की तो उनका जीवन खरब हो जाया। काफ़ी साब-निचाग का बाद उन्होंने प्रधानमंत्री को शिक्षापत्र लिख दी कि साहब का नवरें देश को बच्चे-बचिग पर त्यक नका है।

अब आप ही माँचिए, क्या यह भी कोई शिकायत हुई। दसग को बह-  
 बतियों पर नजर रखते हैं तो तुम्हारे साथ क्या जाता है? तुम्हारा बह-  
 बतियों तो नहीं है ना? ना फिर चाहे का शिकायत? गंज मैकडो और जंगल की ताजद में बहते जल  
 रहा है बाँटियों में जा रही है, नसकी चिन्ता नहीं तुम्हें? अब यदि गहब को जबर  
 जबर से कहीं प्लिय जा गई, तो इसमें क्या मतलब क्या फेरेंगे। एजेंट का क्या मतलब  
 पैदा हो जाएगा। लेकिन यह मान समझाए, ना तो शिकायत। कल के दिन कलाग  
 कि साहब दास पाता है। मैं कहता हूँ कि कानि गरु नहीं जाता। अरु मे पञ्जात का  
 क्या खाना पेशी में जाएगा। दास में पाकर का कितना, और पेशी जाती है जनत में  
 कगडा रूपसे आते हैं। आपकी दास देना में शिकायत के काम करता है, पुन जमाही  
 है। सच कहवानी है। और तुम कहते हो साहब दास पाता है। साहब दास तो यह  
 पञ्जात का टिका है। अब यदि जहाँ आदता की शिकारगल प्रधानमंत्री में करोगे तो  
 प्रधानमंत्री क्या करोगे।

शाम को उनमें भुलाकात हुई। ते पसल। हर शिकारगल के जाते वे बरक  
 हो जान और उन्हें जगता जैसे उन्होंने प्रजात में अपना सागोन्दरी मिभाही में समझ  
 गया कि उन्होंने इस तरह साहब का निपटा दिया है। गीते नमस्कार किया तो उन्होंने  
 दीन हाथ जोड़ दिए। अल्लुल जिम्मे हो गए। इस मुद्दे में वे इतने पौध लग रहे थे  
 कि कोई भी यह नहीं कह सकता कि इस आदमी का किसी से भी शिकायत होगी।

मने कहा 'बड़े पभल लग रहे हो।'

वह खल, 'हाँ, आज का काम निपट गया। भेरी सादत है कि इसके बाद  
 में रिरीजम करता हूँ। कल भी कल लेखग.'

य जानना है कि व कल क्या देखेंगे। लोग उनमें डरते हैं। सादत कुर्सी पर  
 घिटाते हैं। यथी का मतलब है कि यह आदमी साध प्रधानमंत्री वाला है। उसमें नाच  
 बात नहीं करता। जान किस्तक बार में क्या शिकायत कर दे इमतिष चाय पिलाआ  
 अरु खिम्का दो भाग। पञ्जात की शिकायत के लिए यह क्रिय जन्मों को नपट देगा  
 कथा तहाँ जा सकता है।

वोड़ा ने बाद यह जाने, "तुम्हें किसी से शिकायत हो तो बताना।"

मने कहा: 'तुम्हें किसी से शिकायत नहीं है। पर इस साहबों में जान का  
 मन्दी हो गया है वो फल लाई है।'

क्या कसब देन ता कर मरा तुम्हारा एक खोट से पजानत्र पर फाई आफत जाने

बलगभग जाग जा गय थ। सल, अख बन्द करक जान से ता मर जाना बहार है। क्या तुम्हें एम्मा कुठ भी गरी लिखना जिम्मे ही शिकारपन नृश करनी चाहिये?"

मैन कहा "शिकारपन कवन से जाना शक है? कौन ध्यान दता है इयाग शिकारपना पर? सरकार का फुसल नरई अगिस्तार का को फुसल जाना है? एस्तलिष्ट में मानता है कि जैसा चल रहा है ठीक है। नर सरकार देखना नय रोग देख लिये या शिकारपन पुरही परकार भे थी, उममे ज्याल नई सरकार से है। जा जाया, बनी करग।"

"आर तुम अखि बन्द करक कवल उखत राग 'चार मूम आदमी नही न। नुमसे ता जानवर मन्डे है। तैस बुद्धिजीवी का जिय बुद्धिजीवी का किमा से शिकारपनी नता नर काहे का बुद्धिजीवी? कुठ दिा मेर साथ रहा। मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि कैसे जीव है और कैसे अपने जीवन का सार्थक बनाता है। पजानत्र म अपना निम्मेपरी का भयम्हा।"

अज्ञानक चलने-चलने उनका पाँव फिसल गया और वे गिर गए। मैन उन्हें सहाय्य देकर उठाया। बर बारी 'मुख अम्पताल ले चानो मर पैर म फेक कर लगत है।

मन कहा "लेकिन आप अज्ञानक चलने-चलने गिर कैसे गए?"

नर बोले "भयने यहाँ की नगरपालिका की कृपा स। सडके ही गयी है अब मुझे अस्पताल ले चलने जल्दी।"

मैं जानता हूँ इस धार पजानत्र का रक्षा के लिए उन्हें काफी सामग्री मिल गई है। वे नगरपालिका और अस्पताल उ दोनों का एक-साथ नियत्यो के यूड स आ गए थ।



## एक पत्रकार वार्ता-फायर ब्रिगेड पर

हम लोग दूरा उम महापुरुष का कहते हैं जो हमारा नगरपालिका क सचिव है। वैसे तो कर्ट आप और चरी गधू लेकिन रात जा हं पं नगरपालिका न सम गण हं। बड़ भक्ति भवन न नगरपालिका का बर काम करत हं। कभी-कभी हा आप खुद भा नहीं पहचान पाएँगे कि गवा कान डे और नगरपालिका जोन है। हम ना यही कहते हैं। रु भक्ति आपको हमारे नगरपालिका देखना ना तो दादा का देख लो भती का नका देखना है ना दादा को देख लो आर 'नगरपालिका स्वगत करती है' का बाड देखना है ना दादा का देख ला। कुउ और देखन को जरूरत नहीं। बाजार में पदम नकाने है तो लगता है जैम प्रदश प्रशासन की नगरपालिका बन गई है। बाज भी न नगरपालिका स्तर का है। करते हैं।

भक्त दिा हमसे बोले—आर सर्वा क पत्रकार तट पड हैं क्या मैंने पूछ क्या ना वे बोलो—नगरपालिका में दो लाख का फायर-ब्रिगेड में सैंगल किया और कांडे न्यून नहीं भा रहो है। विज्ञापन लेना होता है ता दोड़ क आत है। साथे जैगा फायर ब्रिगेड नगरपालिका में खडा न थीर इनको कुछ दिख हो नहीं रहा है।

मैंने मन्नाह दी—दादा, भरी मानो ना इसी बहाने एक पत्रकार वार्ता बुला ला

न बोल—यह क्या हानी है?

मैंने समझाया कि पत्रकार वार्ता बुलाने पर हर अखबार का सवादनार आदेश और आप जा जमकारी देना चाहते हैं वह आपसे लगे। फिर कुछ सवाल करेंगे और अखबार में स्वयं देंगे।

वह बोला 'फिर तबो जी यह जानस धरना पर? अपना जीना व्यर्थ गँवात मे क्या लाभ? किमी गैर तल ऊपर मरी। तुम्हारे गुरु वाट से प्रजातन पर कोई आफत शक्ति बनना नहीं है।'

व नगरधरा नागत्र हा गम् ॥ बोले '। ऑत्र बढ करके जान मे ता मर जाना बहतर है। क्या तुम्ह पैसा कट भी नहर दिखना जिसकी शिकायत तुम्ह करनी चाहिए।'

यमे कहा ' शिकायत जान स होत क्या है? कौन ध्यान देता है हमारे शिकायत पर सफाई को पुरस्त नहर है अधिकारिया को गुलाम नहीं है। इसगिना मे सोचना है कि जया चला गत है पीक है। नई सरकार देख लो नये नाग देख लिय। ना शिकायत पुनात सरकार स हो, उम्मे ज्यादा नई सरकार से है। ना आगगा तना करता।'

' और तुम जाधे बन्द करके केजन देखने रहार? यार तुम जादमा नला हो। तुमसे ता जानवर अच्छे ह। रुसे बुद्धजीवी हो ' जिस बुद्धिजीवी को किमी से शिकायत ही न हो। क कह के बुद्धिजीवी? कल दिन मर साव रहा। ये तुम्ह सिखाउँगा कि कैसे जीना है और कैसे अपन जीवन को साथक बनाना है। प्रजातन मे अपना जिम्मेदारी का मन्ता।'

अनातक चलन-चलन उनका पाँव किमी गया और बेगिर मर। मैं-उन्के म्माटेकर उठाना। वह बोला ' मुझे अम्पनातन करग। मे परम केकरव गता है।'

मैंने कहा ' नौकन आप अचानक चलने अन्तु गिा कस गत?'

वह बोला, 'अपन यहाँ की नगरपालिका का कृपा से। शहर भी मसी है अब मुझे अम्पनातन चला जन्दी।'

मे जानता है हम जार प्रजातन की रक्षा के लिए उन्हें काफी सामग्री मिल गई है। न नगरपालिका और अम्पनातन दाना का एक-सा न निपटान के भूड मे आ गत दे।

## एक पत्रकार वार्ता-फायर ब्रिगेड पर

रम लोग दादा रम मनापुत्र को कहते हैं, जो हमारा नगरपालिका में अध्यक्ष हैं। वम तो कर आण और चल गए, लेकिन दादा तो हैं वे नगरपालिका में रम गए हैं। बड़े भक्तिभाव में नगरपालिका का घर काम करते हैं। कभी-कभी तो आप खुद भी नहीं देखते पाएंगे कि दादा कौन हैं और नगरपालिका कौन हैं। रम तो गरी कहते हैं जिन्होंने आपको हमारा नगरपालिका देखा है तो दादा का देख लें। पापा का टक देखा है तो दादा का देख लें और 'नगरपालिका स्वागत करती है' का बोर्ड देख लें तो दादा को देख लें। कुछ और देखने का जरूरत नहीं। बाजार में पैदल चलाए हैं तो लगेगा कि नैरो प्रवेश प्रशासन की नगरपालिका चल रही है। बाद में नगरपालिका घर का भी करते हैं।

एक दिन ब्रमम बालू—गार यहाँ के पत्रकार ठंडे पड़े हैं क्या मैं पूछा क्यों तो वे बताते—नगरपालिका में दा लम्बे को फायर-ब्रिगेड में भेजा दिया और काउन्सिल नहीं आ रही है। रिजल्ट लंबा होता है तो टैंक के आते हैं हाथ में मा फायर ब्रिगेड नगरपालिका में खड़ा है और इनकी कुछ दिख ही नहीं रहा है।

मैंने सलाह दी—दादा मेरी पत्नी तो इसी अर्थ में एक पत्रकार वार्ता बुला लें

मैं बोला—यह क्या जानती है?

मैंने समझाया कि पत्रकार वार्ता बुलाने पर हर अखबार का मन्दाइरा आया और आप जो जानकारी देना चाहते हैं वह आपसे लेगा। फिर कुछ मन्दाइरा मैंने समझाया मैं समझ रहा हूँ।

न खोल—गिर

मैंने कहा—मित्र क्या चम चाय पागो और नाचने का उत्साह कर प  
पहेल्य आणकर गइरुम क मिय अन्धो मित्रो मिया वी इ हो न्युन था अन्धो नाइ  
कइरेक हो जाणगो।

उ टहाज लोकर गे। ~अरे इमी को कअन ई पत्रका जाता ये ता  
कउ और हा चमला था। बुका ला भई खिला एगे पत्रकाग हो भा। पत्रकामेक म  
इलेई चाम रेक ग हे ता इक। ग रे की निपट दोएव नगरपालका कर की मितार  
पर गार हम भी एके चम पत्रका वारी।

दुसर दिन सभी पत्रकाग का पत्रकार पागो क मिय राइ। अचरित क  
लिपा। अरेक अन्धो गइ। भगपोलका का हर्ता खगने करवाकर उम्स कुरीगो।  
गइरेई गइ। मार ? ~। कुमो रेक्या थो। गइ इमिपी गिकलास थी। दाम मुहेम डकल  
माला पात गइ ह्य गइ। आज चात उनकी अन्धो थी। लगेत गइ इम कोई पाय  
दियइ एण कुवने कं लाम मथर रि वे गार की सबक पर आग तव रेक।

पारस शर्मा रा का एक छोटे से मंते जावन टाउन रहता—जात तुम समझल  
नगे म हा मरी मुमम चमत्त कि नह।

इमो जो ने उके दोभर दिनाकर—मक अथगो दादा गय भाप वो गथइक  
उकर वा ने पर जान प करार आम्का मुमान को कौ। गश करेग इन्दिन आण न  
बस अपनो वात पर अउ गइना कि गण के अथकार के निर असय बय और वाइ मशान  
मिया नो नरी खकता।

दादा माम्मे की कुरी पर असे गइ। बोल—कअरि भाप मोगो का क्या  
करना है।

पन रुहा—गकत बारांगो आपन बुनाइ रे। भापका आ कहना हा जाणग।  
न बोले—क्या कसे ये ला माम्म इगरी बडी भापर—अगोड कौ पाई  
खडर के तह जोप लगेरो कइ दिखाइ नह। देता क्या?

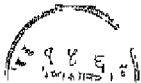
गक परकार न कटा—दिखती है।

दादा बोल—दिखती है ता अण जय कअर बाकी है अम ममस गो

Handwritten notes in the left margin, including a vertical line of text and some illegible scribbles.



एक प्रकार की फायर ब्रिगेड पर



आगे बाग सब लोग तो समझदार थे। आप लोगों का कुछ पूछना है तो पूछो। हम बताएंगे। हम था जानते हैं प्रकार वाली क्या होता है। हाँ।

—पहले यह बताइए कि अपने फायर-ब्रिगेड क्या भंगवाया है।

—ना देखा यह था कोई पहने की बात है हम तो समझते हैं कि प्रकार क्या हाशियार होते हैं भई क्या नहीं जानते कि आप बुझने के लिए आया है और क्या?

—हमारा मतलब है कि अपने वहाँ तो आग लगती ही नहीं फिर इसाफ जूल खान की क्या आवश्यकता थी।

अब दादा समझ गए कि प्रकार नहीं था वह हैं। ज सतक था गए। बहुत लभारना यह विचार फरस लगे कि क्या जवाब लिखा जाए। उक्ताने शर्मा जी का ओर नुस जग सम्हाला यार' वाली मुना से देखा। एसा जी भाग के नकश का आर दख रहे हैं। दादा बुद्धि समझ गए कि क्या कहना है पूरा ताकत पबोत — पूरे देश में आग लगी है फज्जत जल रहा है बगाल में मुझी उठ रहा है और हम इस फिजल खर्ची कहते हैं मैं कहता हूँ विष्कु न ठोक है। दो लाख रुपये का तो क्या आप बुझान का भक्षण तो आ गई और मुझे?

—हमारा मतलब यह नहीं था। हम अपने नगर की बात कर रहे हैं। आप बताए कि जब वहाँ कर्ट मासो से कोई आग नहीं लगी तो फायर-ब्रिगेड खगदन की क्या जरूरत थी

दादा ने शर्मा की ओर देखा। शर्मा जी ने फिर भारा के नकश का आर दृष्टा और दादा समझ गए कि क्या जवाब देना है। सोच — हम दिल्ली वाले हैं उधर जाग लगी इसका मतलब है इधर भी लगेगा आज नहीं तो कल लगेगी फिर क्या करोग आया? हमन जो किया है, ठीक किया है। हम इसा बात पर अडे रहेंगे। और एजा।

—दिल्ली को आग का हम नगर से क्या बना देता?

—जाना-दना कैसे मठा है विद्या भइया ने तो मेसा-रन पड़ेगा ही लेना-देना कैसे मठा रहेगा नगर की इज्जत का सवाल है। और पूछा?

—अच्छा मान लीजिए दिल्ली में आग लग गई। अब बताइए वहाँ कैसे आएगी?

दादा समझ गए कि पत्रकार फिर उन्हें घेरने की कोशिश कर रहे हैं। उनका अर्माजी की तरफ देखा। अर्माजी भारत के नरेश का तर्फ देख रहे थे। दादा तुल्य मन्त्र गये कि पत्रकारों द्वारा पहले राष्ट्र एगन का क्या उतर देना है। बाले—कारण म कन्धाकुमार तक भारत एक है। हम एकता और अखण्डता में बिचित्रान रखना : और पूजा?

—फाइन-ब्रिगेड के साथ एकता और अखण्डता केम आ गे?

—अजीब सवाल करते हो यार। जैसे जब एकता और अखण्डता है तो उस आता ही पड़ेगा। जगदी ठम नहीं। और पूजा?

—फाइन-ब्रिगेड की मशीन खरीदने की पैरवा आपका कैम मिया?

दादा ने फिर अर्माजी की तरफ देखा। अर्माजी ने भारत के नरेश की आ देखा। ता दादा तुल्य समझ गए कि इस मन्त्रान का क्या उतर देना है। बाले— हमारे एनामारी जो ने आह किसम मिलेगा। चलो आ पूजा?

—यार कि आप हर काम प्रधानमंत्री की प्रेरणा से हा कान है?

—बिचकुरा कहते हैं जी। और पूजा?

—क्या आप बताएंगे कि यह प्रेरणा आपको किस प्रकार मिलता?

इस बार दादा डामगा गए। उन्हें याद आया कि अर्माजी ने उन्हें समझाया था कि जब कोई बात 'सचका' वाना में समझ में न आया तो कहना चाहिए कि 'अनहित' में वे इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हैं या कहना चाहें कि मुझे नरेशों को जनकाग नका है। मैं जाकारी नका जबकि दूंगा। जाति-भक्ति।

दादा ने एक बार फिर जनकागी 'गेन' का म्वाहन म अर्माजी का आर देखा। अर्माजी अभी भी भारत के नरेशों का और ही देख रहे थे। इशाग से ही दादा ने कन्ध— चालू हा ज्वाहा डटे रहा पीके मन हटना।

दादा इस बार तबकर बैठ गए बाले— गहरो आप ता जाने हा है क भारत एक 'रुपि' एनाम देश है। इस साल एना नहा आया है आर किमना के खत मुख रहे हैं किमान भाग-भारी फिल रह हैं और और अपना समझ बचा रहे हैं। फमा अच गई ता अखंड है नहीं ता सब चीफ इ कएग्य बलन-बलन भूख क

1. 10/11/2024  
 2. 10/11/2024  
 3. 10/11/2024  
 4. 10/11/2024  
 5. 10/11/2024  
 6. 10/11/2024  
 7. 10/11/2024  
 8. 10/11/2024  
 9. 10/11/2024  
 10. 10/11/2024

## एक प्रकार का फायर

नाम्य पानी ही सब कुछ है एक कवि ने कहा है क्या था उस कवि का ही  
तो कहा है कि पाणी के बिना सब सना है चरित्रा

एक प्रकार के बाल से कुछ कहना चाहता था दादाजी।—पान में जान  
दूरी मन लीजिए। पत्रकार जाता मैं बुलाई है ता मरी बात पत्र में मुनिए बाद में ता  
पूछाग गया कि 'उना में दूँग' त्तों ता में कत रहा था कि क्या एकना और अखण्डता  
को प्राप्त करना है इस तरह से कार्यक्रम का अर्थ बनाना है 'कहाँ पाय' में उस  
बुझा है 'क्या बिन्द'

पत्रकार जागा और भातस्य चलती गोकुल इमी बीच नाश्त जो गया दादा  
सम्पन्नकर प्रेस गंग। भद्र-भद्र मुम्कुगने लग बैसा कि एक सफल पत्रकार बाला क ताद  
टाता है उन्हें पूरा विश्वास है। गया कि पत्रकार बाता में बिल्कुल नहीं डर हैं और अब  
आगगा लिखा कि 'भातस्य' की गीत को चला रखनी में होगी ता ल्याग जा गत चल  
आएगा कि उनका कार्यकाल में इस तरह से एक बहुत बड़ा काम है। गया है।

दूसरे दिन अत्रवार में फायर-ब्रिग दक फाटा उता दादा फायर-ब्रिगड  
की स्वरि। 'ए चठे थे और पौल उपशान्तिधर का एक उपमस। भातस्य का लका लका  
खड़ा था।

□

## आँख क्यों तर नहीं होती?

यह तो मुश्किल है। अपनी आँख ही कुछ समी है कि तर होना का नाम ही नहीं लगा। हमने तो हमें लाग भी देख है जो पैदा हो कर आँखा के साथ होने है लेकिन अपनी फिल्ममें म चर सुख सिखा हो नहीं है। किन्तु कोर्वाज करता है कि कम-से-कम जाना नहीं तो एक हा जाय बोट मौका टयकर तर हो जाय। लेकिन जान किम् अशुभ घडी म बन औरता कर मेयूफलचरिंग हर्ट है कि तर जाना जाना ही हों। का७ नोगा का कहना है कि बसाम इन आँखा का पानी भर गया है। जब हम लाख मिर परककर मर जय, लेकिन जब आँखा में पानी बसा ही नहीं होगा तो तर कम हायते तो नवाला हम बात का ना है जि परती ध भी कभा बभग आँखाम

हम याद जाना है कि हमारे पदाम म एक सजन रतन थे। सजन उभातर भी कि उनकी आँखा में हमारा पानी होगा। मा जब देखो, आस तर हो शोभ और नया आँख थी उनका। चरका भी गया हते फिर भी आँखा में तरावट लयम म बाहर निकला का काशिश करती रहता। 'नोगा वुन भी उर हम माना है कि आँख तर जगन का उनका परकिस बडी अच्छी था। फन्नी वेन का भाव बत गया तो मुहल्ले में सबस पहल उनकी ही आँख तर उठा। जगत म रते किराया कर गया तो जगन तर। कोर नया उतम लग गया तो आँख तर। कहीं गाता चल गइ तो उनकी आँख तर। और कोइ दुर्पटना हो गइ तो सबस पहला उनका आँख तर। और कभी-कभी म ऐसा होता है कि कोइ पटना बाद म हाती उनका आँख पहल तर तो जवों। उनका पानादार आँखे देखकर हम जलन होती लोग कय।—'भर, कितना मजदुरशील आदमी है।'



अजिता भी तब तक थी कि तबकाल जगत्पातरणके साथ ताका जीवा भी यह मतदाता ही मंत्रित हो लयी थी कि उनको इस दण्डभक्ति पूर्ण शासना के लिए कर लागू उन्हे फाइ अन्वेष-सा प्रस्कार देने की सा चरह पालना न चर्गा ब्रह्ममो मे पथां वित हाकर इनस कहा— 'यार एक जोदमी जो भारत शिरपठ गुम जो। एव अद्वयहालावय भी नुष्काण जॉंवे तर नहीं हातां। इय भरी चु नु सर पातीं म।'

पाठक दिन बंध हा कर लिया कि या तो खुद मगि या फिर भक्तान म पातछा क साथ जाना ता। तो अखि तर काने का कोड़े पाय ता। श करग। उकि उया दिन एक पत मान्य ही ग्ये कि हभये एक लम्ब का बुवासा जा पय करप या। वट ता नयी जडा नान नय चाते थ। गहन काम जाया थ। बहुत लोग से टपूशन के दैय के थ उय पतद दिन म एशियस का रकम शामिलन करा। ते। कान दिन म साफल मेह प्रन न जो सोच गइ थे वा भी नहीं बनस सक थ। और कई क्लम थे नमिन भौत और यादक का कर्ज भरना नही हाता। ए छटा भी दुकान पर पात्रम का कपटा गरद गइ थे और उमा भी गइ कि विना मिललाय न कपडा न पन सा ल पय। मबने यात किय। लेकिन अखि। कसी का गन नये दु। एक सज्जन ऐसे पनादण निकन कपण दु खन समान्दर ही उन्हान काला के बरले अखी म नुता। कमाल के भावन ये और कमाल की थी उनको पौख। अ बुगि कण तर दुई तक एक बर तक तर डी हों न्या उनसे बहुत पनां तत हुए। हमन उनसे पूछा कि अखि तर काने का यह दुनर उन्हाने कर्न म सीखा? वह बोले— 'मने जाला दा दिन पहतं मुझसे न थी रूपन उभा ले गया था।'

अब जम्का भमझ म आया कि रूपय म कितनी ताकत हातीं है। आज ता लख रूपया चाह ता पूर आदमी को तर कर द। जब तमने न आल तक किनां को एक रूपय भी उभा नही दिता और चाहत हैं कि अखि तर वा पाय। ते ना हम एक पात्रक भूर्त अर कइथा, अखि तर करता सोचना हा ता पहनो तांगो को रूपय उभाय रता म खा। रूपये का दर्द समझोगे नब ता हाग जाँखे तर कि एमी ही रो जायेगी। नय रूपय डूब जायेगा तो ऑटोमेटिक अँखे तर हा जायेगी गुम्हारी। ता रूपये साचा कि चना तजान-पाँच मी रूपय रिगाडकर देख लते हैं। बाद म किसी को कहने का मौका तो नहीं रह जायेगा कि हमारी अँखि तर हा नहा हातां। यह कतलगी भिट जायगा कि हमारी अँखी का कण क रूप है

अब ये मर्णा तैका निकला त्रक कोई मिन बने उ भर ली लाल। जान  
तो बहुत मिनने शैका पधी कमत धे एक बंधा उल्ल व्यथन कोर दगा। तरे म्मर खाल  
नम से तो दुःखत अंतिर निःस्पृह धर चर पक्षी शोच। कहीं कानिशी फ्र जाद भन सान  
मर्गोस मने कि बहुत प्रमाण अथवा तुल्य ही देगे। ना हमन उन करिखे वला से 'पथ्या उत्रा  
दृष्ट्या। मर कदम त्या—' अत्रिजेवकूप हा। इधर लेने धानि साधु पा का दुई  
हे ओर वृत्त कि केल फ अथश देन कौल उमत मर जात त के मृत्यु हे उ मज्ज  
तलोश उत छ।'

इस काल क्या समझाने, हमारा इत पर मर्णा समुदाय गऊता वै विपका जैरे  
कमने पौर्या जेसा ह को किसै रकार ना अरुवमपा, अयावार, मुखमरी, गरीयो  
अत्याचार उलाचार और पाखड यै चकर भाता नारा कता मरेकन क वरु अथयकत  
हम धिल म, हमर अ नान है। हमने साधा का सुदे दिवा जो मरत है। मर्या कषण नीर  
दुखने पाणा की इतगी पाँटेज जो गर ही चाद से धक चना के तपाश उरु हम अगदर  
म नई न गे हे कि मंगा का लखु लक्ष्मी पर अरु मर्या हा नो गया है। वैजा से मर्या  
उपार लेने म अतना ज्यादा अमनताय चर्या नी लगा है, तो हम श्रेय लाती की श्रु  
ता हान के ता सायेस ही न ई म। अब हम ता सय नैरु आसन के आभासा में जिनो  
नैक म एकर नीने न यल हद मर्या का मौक दिवा। हम इस गुभ श्रेयता का प्रताप  
कर मर से कि एक माय बाद नह आकर कहंगर—' मर्या धखा बैन तथा प्रा-यल  
भूत मर मई ई। अपकर ताजा ही धापस नना कर सकता। आप वाह तो अउरानम  
का नउर मर ३।'

मेस कला पुते के बान हा परी मरनना जागग और मंग यँहे पर हो  
गावग। फिर इम भी मध म बंधरो—भरुसाइव, हय गग पाकिर अतमी ही और हमारा  
पौर्य नी नह परतती है। लोकिय मनों का बान एतल मरुना है। मरु गह गल चर  
आत्म अथवा और मर्यो ईमानदारी के साथ कपय नर पुका। ईमानदारी इतगी बहुत  
बादल हो ऊधै। मरु हायी हमारा यँह। आप हो मौचिगे। हमने मरुग आर्धना की—  
"भरुसाइव हमने यह कपय आभक्त दुखने के निराल निरु म। सारु मरुग के निर  
गई। इसक पीछे अरुई नर मने का इयात एक मिषान था जिसे आपने नरा सभझा।  
अधम साथ लाकिर कोई बददी नहो न।'



उसने कहा—“श्रीमान्, आपकी स्वयं कितनी का नती फलना। जिन दिन आपम ल गया था एक भय मर गई। दुम्प हस्ते पत्नी का लक्ष्मण्डल ही गया। फिर हफ्त भकरी इट म मर पी जो उड्डी गिस्सक गी। चौथ हफ्त मेरा लडका मर-मरते वचा। ताग कवन ह किस मन्मस फ पत्ता तं जा कष्ट पर ऊट लता ज मर दे। ना मैंने सोचा म तुरन्त आपका वापस कर दे। नीतिह ये पैसा और मुझे वि नि स बचाया।”

एक १६ औंथ वान दामो को किम्पा गी गद आ गता थे। उ। का अर्थ तो बन्कल माल्टा पान जो था और ग्याइ तारीफ करे जो हिंमाम्बर तिम था। और दुपटना यह दूरे कि मुहारा की एक पाभोता जीवन मे जत भाभ्यर पीम लच्छर हो ता उ तो वैचार राइट माइड पर थ वो कगकछे पाग हो गय साइड ज मी जी। इस माहस, एक इफ्त क बाद ये उाथी औंथ गति-गत मर नर हन लगी। मने एक ता कन्नन रागे—“गण। शर्म उतनी जल्दी हो जादगी गृथ बन्दीद नहीं थी।” यह सामानिक परिणाम थी जिम्मे उनक। औंथे तर की थी। आख गर करने म समाप्त जा इगा वडा योगदान लेता हे यह मुहम्मद वागो न सिद्ध कर लिज था। वह तो दमदास दी ल गार। धान भरे करन ल ओंछे ह गार। कगके म बदलन ना औंथे तर होती। और खाता गी जाते ल औंथे तर हकी। किनो मोटेनशील थ क्क। इस घटना का इतना न्याया प्रभाव हम पा म आ कि हमन भी मान गिना कि हम भी दबदम बनेग गभा मफत हगे। एक गारे भी हमारे किम्पत म मिन यह लावन फिर भी हम। ओंछे तर लडा बुई। पार जा ने कर।—“मैं जादीसुदा हूँ। लेकिन गहनान्द विचार कर हूँ। आपका इतनी अकर्म गह। हमारे वा भी बहुत ऊँच विचारग वाल हूँ।”

एक भीजा दिन था वा गी गथा हाथ म। ममान म कब वैचारिकता उम कैचा एर पट्टैच गारगे ता म पाग की औंछे तर रागे और न गणना।

उस दिन एक मुशायर म गाना हुआ, तब अहममम हुआ कि उदु साहित्य मे भी औंछे तर कर्म की जड़ी ताकत होती है। मच पर एक शायर गजल का एक ग ग पढत और पाँच मिनट तक अपना आख खमाता से पाठत। उनको सुनने जाते हर होय की नो लीखे एर ह ली की ही पाँच पर कर कम्पी औंथे कर्त सुनने कर्ते

को जॉर्जिया में तब करके के लिए काफी थी। यह देश के हालातों पर हमिले गजब का पड़त और आँखें तर करत रहे। नोट एक कम है कि दूज के बार में पीकहा पक्षी का साहित्य चोट जाना है। फिर भी य ऊँच रहत नौख तर नी नई होती। ज्योत ना ज्यो शायुक चीता है। क शर कहन से लम्बे आवाज के से निपका फानने तत पर भाव उचर आँख तर हर बाते है। ऐस साहित्य-सर्माजा ने हो ना आँखा कर तात बचाइ है। अब हम ना उभी नही के पर एहँसे ही कि तट आँख ही ज्यो ना तर न वा। इमार जैसी रणम आँख हो। सी हा अच्छा है, सखाम हो जाना ताकि न गइगा बॉम आर न गइगी जैसुत

ना अरत जो य आँख के कि न तस तस गुना की दुर्घ म देखते न और इसका ज्ञान न न व यहाँ है कि मरी जॉर्जिया तर नहीं हता। उन्हे जणा मे देखने का बाधक भी है। जब करीबी आँख गइगा न, एक इस्ट के न, हर गेल, हर क्षण और नर मौक पर तर हो गये है और मरी इन आँखों का पानी ली मर गया है तब बाफक हमस धणा करने का नैतिक अधिकार है।

## ऑखों से गिरते मानवीय मूल्य

वन दिना वे गिरते हुए मानवीय मूल्य के पीछे लगे हैं।

तीन चित्र मरे साधन रखते हुए जाने "देखा इतने लोचने देख रहे हो? कम यहाँ है आज का गिरता हुआ मानवाच्य मूल्य।"

मैंने कहा, "ऑखों से कैसे गिर गया मानवीय मूल्य? मानवीय मूल्य आदमी के चरित्र में गिरता है।"

वह जाने, "ऑखों से लोचने लोचने यहाँ लोचने देख रहे हो? जादी-गिरती पत्ती ऊपर जाती नीचे। पत्ता है आदमी का चरित्र लोचने लोचने में मरती दिव्य पर धारें कि ऑखों से यदि केवल मानवाच्य चरित्र न समझ आसन्नम हो तुम्हें मर भूच्य गिरते नजर आएंगे, यह चित्र मैंने उमा कल्पना में बनाया है मैंने बल्युग का डिप्लोमेट करने में जाए रेखाओं की सहायता लिये है डिप्लोमेट का नाम 'रामदा'?"

मैंने कहा, "डार्क फ्रंट। क्या गता है यह? मैंने डार्क फ्रंट मना है। कार्ड अकस्मात् पाटी का नाम है।"

वै चरित्र का गण। चरित्र तथा जन्म में उनका सम्बन्ध-प्रतिभा का उदल्लस्युत्पन्न कर रहा है। उदल्लस्युत्पन्न मुझ अमूर्त चित्रे जहाँ भी सम्बन्ध में रही आए। पिछले चरित्र-अधन गथा था। एक बड़ा पेंटिंग लीज पर गथा था—परीसफेद कुछ भावना या फर्ती भी कोई चित्र नहीं आया। बीच एक धातु का गीता चिपका दिया गया था लोग खड़ी तारीफ कर रहे थे। मैं भी बड़ी दूर तक देखता रहा उस शीतल का। गेट जैसा था। मैं पास एक अनाम लडका और एक जवान लडका बहुत दूर से छोट कम चित्र के देख रहे थे। चरित्र-मूल्य में चरित्र के अन्तर्गत के चरित्र के चरित्र

न अगो हूँ नरा बह रह थ। लडकी गोला देखती रही और लडका लडकी का देखा रहा। दोनों बस परान पीटिंग के चारों ओर अन्दर जो अन्दर भावने रहे।

ये लडकी से भवती दिया के काण जनाए यहाँ जगन खडा हो गया था। म मुझ लडकी गौर लोहे का गानक लोना भाए-साफ गिज ह। लडके का बोल भी सुनाई दे रही था, नानो इस परिया मे दूब हुए रे इगलिये पन्ने म लडा दिखता जा में नरा को। भी रहा लिख रहा था। पली कारण भा कि कंगोय बाध पर तक कई गेग इस पीटिंग का देखकर प्रियमक चरम। लेकिन इन लो ॥ का देखना अभा तम चले हा रहा था।

लडका जेगा में शान रहा था और लडकी रिश्या चरु भाप्रवा की हर बाल रही थी मुन गारा कि मॉडर्न आर्ट कपाठ लोना पागल थे। य पर भी हो सकता था कि गल्फा मॉडर्न आर्ट क साथ और किमा क पाठ पागल हा। लडके के कथ पर एक कैमरा भी लटक रहा था। लडका न टी-शर्ट और जाम्प का पत्र पत्रन रखा था। बस इगले अल्लावा और जो कउ उाके पास था लड लोके पापर थिफिंग था जा वे अगली म एन-ड्रूम पर नाद रहे थ। गकों बान्बवा के रिजने अश मुझ समझ म आम उनका हिन्दी अनुवाद भी आइक्योण रहा हूँ। मगे अभा म हा रेमा ही है। आधा समझता हूँ, आधा लडकी को देखकर अदाना लगा जाता हूँ कि लडके में क्या रहता होगा।

—यह गोगल मान संयथा का धा सुकरष है, जिस जलाकार न वीश्यावाच उमलिये रखा है कि हम समझ सके कि इन्सान यदि धातु का ही बना वा उसके चारों ओर केवल सरुद कैमवास के अलावा और कुछ बाकी नहीं रहेगा। तुम ज्या साचा हा ?

—हूँ लकि। धातुनिष्ठ-विचार तुम्हारे मन में क्यों आए? यदि तुम इस तरह धातु-वादी हो जाओगे तो इन कैमवास का क्या होगा?

—वह अपना जगत्त है। जहाँ तो जलाकार की धृष्टि भी है, जिससे वह हम गोरी का स्टर्बाविसा करना चाहता है। मचुमच यह कान्यकसि अहं ही विचारवान है।

—विचारवान म तुम्हारे मंचा इवरे

कहाँ कि हम रोई यो ५०-५० देर से देखे यो ई लेकिन इमरी समझ

में गलत है। गलत है कि इनमें मानवीय मृत्यु कहाँ है? क्या उस धातु के बलते में कदम गलत मृत्यु है?

—जानकरता है। आरिज इस धातु की धाँपना एक आईडेंटिटी है तुम में क्या भूलते हो? मुझे देखो ५५ तरह में विनता देना है। बिन्कुत इसी लक्षण है। आरिज भेदिक दृष्टि से देखो तुम्हें लगाता जैसे

—आरिज की गिरी। मुझे विश्वास है कि तुम इनमें सबलमान हो। को छोड़ आरिज आता गलत कल भाँटा है। जो इनमें वाच है। वाक्य कि हम जाना के बीच है। यह कहूँ कि हमारे विचारों के बीच है। इस बात के गान को अंगिकार जो इस कनवास में। फिर क्या चर्चा? जानता है।

—हाँ एक फन नवेगी जिनमें कुछ नवाँ जागा।

—देख राइट। मरा भी गलत निचर है। कलाकार न इसी रूप का जो संतर पाइत माना है। अपन क्रिएशन के लिए कनवास तो मिथेट्रिटी है। यदि कनवास न हो तो किसी गाल की फाँट गार्थक्य नहीं है। संतर उच्च मंडल आफ्टर ज्ञान हमें स्पष्टन नहीं होता, लाइफ नहीं होती। कनवी आश्चर्यजनक कल्पना है कलाकार को! बहरफुल।

लडकी शमा गई। उसके चेहर पर शमा का भव था। वह मुझे पता लगा कि धाकट मेरी अर्थजी कमजोर है। नडके ने अन्तर फुट पता लगा। जिसे मैं नहीं समझ सक। मुझे याद है कि दोनों बहुत देर तक इस पॉइंट के समान खंड हाकर कला की चर्चा करती रहे। कला को समझते रहे और हर बार उस धनु के गोल को देखते रहे। मुझे लगा कि भेरी तरह से भी नहीं समझ पा रहे हैं कि यह भाला गाना बोले में कर्ना में आ गया?

बात मानवाय मृत्यु पर चल रही थी।

वह फिर बोले "औंछा कनाचे प्रा.जी मेवला दिया देखो यह गेला अरुखा स गिरकर भीष गलत में जा गई। यहाँ इस चित्र का बाराका है। जत्र रेखाएँ गिरती हैं तब यह समझता कि भावीय गलत गिरत है। मैं इन दिनों अपन हर चित्र को यह देखता हूँ।"

मेरी हस लोकिन कपडे से लीने कपडे है। वह मुझे मनेवाँ मेरी लपटी

हम नहीं हैं। भूत किमो आदमो को भौंखतनी। बड़ा हा-मकनी है? पू। परम केवल  
आख हो है। गाक, कान, होंठ कुछ भी नहीं है।”

वह बालू “यही तो उस चित्र का खाम जात है। तब नवाओ कि तब  
अन किमक पाय है। मैं पृथ्वी हूँ क्या? न केवल तुम्हारा अपन है। तब क्या है। इसे  
जिलाआग तो इनमे प्रकृति बनेगे। क्या? तुम्हारे शब्द है? और यह नाह? इस नाक  
कान दा? इतना जम्बो नाक लफ्फ इत दुनिया में जी रहे ना। लेकिन कभी माघो  
कि लम्बाई ही अंगित नहीं होता। तबथ को डिफरन्स करना मुश्किल है। इसागए म  
कहता हूँ कि मानवीय मूल्य का रहे है। जिन दिन तुम्हारे हा जायेंगे सिविल्लुण्डन  
का इगडा हो खत्म हो जाएगा। इसागए मैं आँखों पर कासट्रेट कर रहा हूँ। आद  
२५ की शोभना सिवला गेट टिफाइन्स दि भाववाचि मूल्य। यकी है जिन्दगी का सदा  
फट।”

वह थोड़ी दूर तक और दूसरा नम्बरा हाथ में लेकर बोले, “अब बसकी  
जोखे देखा। हमें वृत्तना है। मॉटर फाइल से दोनो आँखें बंद डिप्टी का फगल तब  
नाच गिर रही है। हम चित्र का शीर्षक मैंने दिया है ‘दि पालिस्टिकल आई।’

मैंने दोनो चित्रों को आँखें उन्ना। बिम तब मन कला-भवन की पेटिंग का  
जिक्र किया। श्रीक जमी तरह उनक चित्र में आँखों के अलगना कुछ भी नहीं था। उधर  
घानू का एक गाना। त और इतर एक आँख था जिसे उन्होंने गकड रखा था।

मैंने पूछा “कितने दिनों में इस आँख के पीछे पड़े हा?”

तब गम्भीर हो गए। बोले ‘इट इन ईजी टो से कहना आमाम है। मैं  
तो समझता हूँ कि पनी जिन्दगी यदि मैं अपने रखकरन में केवल अन्ध हो बनाना रहा  
ता भी मैं अन्ध हो रहूँगा। आँख को समझना मुश्किल काम है और यस्म में भी मुश्किल  
काम है आँखों के माध्यम से। गणत हुए मानवीय मूल्यों को चित्रों में दिखाना। अभा  
तो मैं माख रहा हूँ। अच्छा यह बताओ तुमने काइ गेम्पी आँख देखी है। त दिखने में  
ता आँख ही हो लेकिन धातु का गाने का तरह। तब यह आइ मान में मजबूत है कि  
बिल्कुल स्पदन-हानि देह मजक अवा केयूज में हुए मानवीय रिश्तों तागा  
आँखें।”



उसके पल्ल कि मैं कउ करता उहाँने अपनी सामग तस्वीर निकाली जा  
 बा। उन जाखा का दया उपर की और नका हुई है जना जना हा और ऊपर  
 कर चखता है ?

मैंने कहा, "जब एम-ग्रुप क पाठ शुरू हो जाते हैं।"

वह जाल 'यह तुम्हारा न्यू व पत्रिका है। हम करता है। हम स्थान य  
 ऊपर गकर ही हम आम पादमा से अपनी अहा गहवा बनाने। मरी हुई आँखों का  
 मूर्च्छित करन का चर्च है पत्ता ताशाली विचार का जन्मदा। २५ अणुवादा तो।  
 ह मानवी मूल्यो पर अग्या रखा बाल इनपर हैं हम। मरी हाशिश है कि हमारा  
 अज्ञाता मनी चनागने। येकर चला हई और हम भाद्रवायिका और आनकतव का  
 आनकरा गई है। इस लिए क बैकपाण्ड में तुम्हें एक दगिया नजर आए।"

मैंने पूछा "कहाँ है दगिया?"

वह बाल "इन आँखों से लाइन्टा डियी की और तुम्हें जा पाता सा बिन्दु  
 दिखता नहीं है दगिया। इन आँखों से बहुत उदा नयिन डगिया में इन आँखों से  
 क कई गुना बदा हमारे कगडा और अररा अँग ममा जागी। यह मनन का  
 भमजन करगी है। इस परिशापित कानी है इतरा करना। यहाँ है एक मन्त्रे कन्का  
 का सधना।"

मैंने फिर पूछा "क्यों आप मागपाय रिक्ता बाना आँखों की कत कर रहे  
 हैं? क्या आप मुझे बताएंगे कि आपके चित्र में क्या करत है?"

वह नगभर उदास हा गा। बाल, "जाखा मुझ विचरित कर दिया। रिखली  
 गह एम मालख। आपके इस पशन का क्या उत्तर है?" मुझ तो आज हर आँख ऐसी  
 नादख। यह जिमम रिप्त ज्युन जान है। मैं ममद नर्ता पाता कि इन आँखों को अपन  
 चित्रों में किस तरह प्रदर्शन करूँ। मुझ गाद आता है कि कुछ दिना पहल मैंने कल-  
 पवा में एक खिन्न दशा था। एक नैतानाम के अन्दा धातु का गाना। मैं कई दिन  
 तक सोचता रहता कि यह धातु का गोला कदा आदमी को नौख ना सता दे? मुझे लगता  
 कि इससे अच्छा प्रतीक इस तरह की आँखें कतिप और कोई दुमग नर्ता करेगा।  
 अथ कभी कलना-भवन जाँ हो कर तस्वीर जाकर देखें। गेल्स हुए मानवीय मूल्य  
 की हमसे अन्त। मैंने खून का निधी देना करी देवी

य समझ रहा था कि वह गिरने का मानवीय मूल्यांकन पाठ लग है। वह कबल अर्थात् क माध्यम से लोड पर उतारने के क्रम में मूला-सैम आर्या के गिरा प्रकार है जो वास्तु-गोला और अर्ध-गोला के अंतर तक अंतर की जान सकता। अर्ध-गोला का ही प्रकृति है। मैंने पहली बार इसका ज्ञान था। ये कालकाल है। मानवीय मूल्यांकन का काल गिरने का उभरना था।

इसका अर्थान्तर्गत समझ ली थी।

गिरने का मानवीय मूल्यांकन अर्थात् क माध्यम से उठाने का मकसद ही जा रहा था गहरा होने लगा। यह मूल्य इस बात है कि मैं आज तक किसी मूल्य का गाला पसन्दाना था यह अर्ध-गोला। हम जैसे लोग क्या उठ पाएंगे उन गिरने मानवीय मूल्यांकन का जिनके अर्ध-गोला का गाला है दिवसाई-दूरी है।

## एक धार्मिक बस की कथा

गुप्तानां जो बस बड़ी जिद्दा है। जहाँ बस\* हा जाती है वहाँ से हटने का तम नहीं लेती। गुप्ताजी का धार्मिक पवृत्ति\* उन्हे निगाड\* देना है। इस इलाके में गुप्ताजी का बस\* दर्शन का भ्रमण है कि तमाम\* गनी भयो पाण\* का धान\* के लिए उनकी बस\* का सभाग\* लेते हैं। हर बस\* में एक जोड़ लगा जाता है— एक-गया में मनवाला व्यक्ति साथे स्वयं जाता है। इस रात्रि\* में भी कई लोग गुप्ताजी का बस\* में बैठ जाते हैं।

मगर पापा का उद्वा\* भर गया तो गुप्ताजी\* मुझमें कहा—भरो\* जाना\* के तीर्थ कर आशा। कदा\* एक\* स्मरण\* यम\* जा रहा है। कहा\* के गुप्ताजी\* नीट\* लेक\* कर\* हैं।

मैंने गुप्ताजी की ओर इस तरह देखा जैसे उन्हे\* आखिरा\* बाण\* देव\* रहा हूँ। मगर पचास\* के आगपाम\* तर्किन\* वेसिम\* लिलकुल\* माना। इड\* लाइट\* ज। फन\* का\* नकिन\* स्मिग\*—पट्टा\* अभा\* भी\* सही था। डैनी\* कुरसी\* पर था। रगना\* का\* तैम\* नीने\* बंक\* गया हा।

मैंने कहा—प्यास\* लगा\* है\* दा\* लौट\* पानी\* पेट\* में डाला\* दा\* गय।

गुप्ताजी बोलने—तम\* टारका\* के साथ\* यकी\* तो दिक्कत\* है। अपना\* गडि\* टैट\* बंक\* का\* ला। कितन\* दिनों\* में\* सचिंसिग\* भी\* ले\* नहीं\* हुई\* है\* गुप्ताजी?

गुप्ताजी बस\* जानू\* हैं। उनकी\* ज्ञान\* अच्छा\* माझा\* देना\* है। बान\* तो\* बान\* उन्हे\* ने\* भुजे\* फौर\* गिगा। बांग\*—त्रिन्दगी\* कान्ना\* भरासा\* तम\* भा\* भा\* ट\* ड\* बिम। काम\* धाम\* और\* पाम\*—पुण्य\* जो\* लगा\* ही\* गइता\* है।

मैंने सोचा क्या पता गुप्ताजी के कर्मों से ही मुझे जन्मत मिल जाये। मैंने कहा—पापियों की लिस्ट तो बता दीजिये।

उन्होंने यात्रा करने वाले सज्जनों की फेहरिस्त मेरे सामने रख दी। जानकर मुझे अच्छा लगा कि सबसे पहला नाम चूड़ी वाले बाबा का था जो बड़े नेक नमाजी थे। गुप्ताजी बोले—बाबा को हम अपने खर्च से ले जा रहे हैं....इनके बिना तो आपके समाज का कोई क्रिया-कर्म निपटता भी नहीं है ना।

सुबह सात बजे बस रवाना होने वाली थी। यात्रियों ने दुआ माँगी—या परवरदिगार हम तेरे गुनहार बंदे हैं... हमारे गुनाहों को माफ कर दे....हम गुप्ताजी की बस में जा रहे हैं... हमें तमाम बलाओं से महफूज रख... आमीन।

बस स्टैंड पर गुप्ताजी की अनुभवी बस खड़ी थी जो कई तीर्थयात्रियों को पार लगा चुकी थी। उसके बदन पर अनुभव की झुर्रियाँ साफ-साफ दिखायी दे रही थीं। बस का दाहिना भाग बिल्कुल गुप्ताजी की दाहिनी टाँग की तरह झुका हुआ था। आगे के दोनों टायर जवान थे लेकिन पिछले चारों टायर देखकर किसी घुटे हुए महंत की याद आती थी। ड्राइवर ने मस्ताना दरबार बत्ती की दो सीकें जलाकर उसे स्टेयरिंग पर घुमाया, सर झुकाकर आधे सिजदे की हालत में एंजिन के पास इस तरह झुका जैसे किसी मजार का बोसा लेने की मुद्रा में हो। फिर उदबत्ती की सीकों को बड़ी श्रद्धा के साथ वाइपर के पास, जहाँ 786 लिखा था, लगा दिया और चाय पीने नीचे उतर गया।

गुप्ताजी यात्रियों का स्वागत कर रहे थे आखिरी बार। मुझसे कहा—तीर्थयात्रा के लिए हम स्पेशल ड्राइवर ही रखते हैं जो घरम-करम में आस्था रखता हो। आपके लिए सबसे सामने की सीट है....बिलकुल ड्राइवर से लगी हुई....कलीम मियाँ बड़े बंत्तूनी हैं आपका सफर अच्छा कटेगा।

देखते-ही-देखते नवाब मियाँ, निजाम भाई प्रेस वाले, अब्दुल भाई लोहे वाले, बब्बू मियाँ, याकूब दादा और सभी जाने-पहचाने सज्जन आ गये। मुझे विश्वास हो गया कि अब डकैत भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

गुप्ताजी यात्रियों को दिलासा दिला रहे थे कि खुदा बड़ा रहम वाला है वही सबको सही-सलामत पहुँचायेगा।

मैंने कहा—गुप्ताजी ऐसे अवसरों के लिए आप जरा उर्दू बोलना सीख लेते तो मौके पर काम आती। वे बोले—बस इतना बता दो कि तीर्थ का उर्दू में क्या कहते हैं। मैंने कहा—जियारत। वह बोले—ईश्वर आपकी जियारत सफल करें....आप सब उसका नाम लेकर बस में बैठ जायें। चलाचली की वेला में आप सबको नमस्कार।

हम सब गुप्ताजी की बस में बैठ गये।

ड्राइवर ने सेल्फ दबाया लेकिन बस बिसमिल्लाह करने के मूड में नहीं थी। करीब पन्द्रह मिनट तक वह सेल्फ को मनाता रहा। अंत में निराश होकर उसने अर्पील की—चालीस साल से कम उम्र वाले मेहरबानी करके नीचे उतर जायें। बस की आदत खराब है। बिना धक्का लगाये आगे नहीं बढ़ेगी।

गुप्ताजी अलविदा करके अनारकली की स्ट्राइल में 'अपने घर में' छिप गये थे। अब तो बस हम थे और उनकी यह बुजुर्ग बस थी। दीखने में मैं कम उम्र का था लेकिन मेरा भी पचास चल रहा था। इस चोर बदन के कमाल से धोखा खाकर कलीम मियाँ बोले—आप तो हट्टे-कट्टे हैं। नीचे आ जाइए। धक्का लगा देंगे तो आपके हाथ नहीं घिस जायेंगे। मैंने कहा—मुझे पता होता तो मैं नगरपालिका से अपनी जन्मतिथि निकलवा कर आता, मुझे नहीं मालूम था कि गुप्ताजी की बस सर्विस में चालीस साल से कम उम्र वालों को विशेष सुविधा दी जाती है।

करीब दो फलाँग तक बस को धक्का देने वालों ने अपना पसीना पौँछा और

बीड़ियाँ सुलगा लीं लेकिन बस नहीं मान रही थी। जाने कितने करकमलों में लाली आ गयी थी।

बस में बैठे चूड़ी वाले बाबा अचानक नीचे आ गये। मुसल्ला बिछाकर दो रक़ात नमाज़ शुकराना अदा की और बोले—अब लगाओ धक्का।

बस काले रंग का धुआँ छोड़ती हुई चालू हो गयी। मैंने सोचा कितनी धार्मिक प्रवृत्ति की है गुस्ताजी की यह बस। ड्राइवर ने बुलंद आवाज़ में कलमा पढ़ा और गाड़ी गेयर में डाल दी। तीन-चार हिचकियाँ लेकर गाड़ी चाल में आ गयी। लोगों ने अपनी-अपनी तसबियाँ निकाल लीं और हमारा सफर शुरू हो गया।

मैं बिलकुल ड्राइवर कलीम मियाँ के पास वाली सीट पर था। सामने लिखा था—‘ख़ुदा बचाये हसीनों की तेज चालों से—हकीम-वेश्या-वकील के दलालों से।’ अपनी पच्चीस साल की बकालत का निचोड़ गुस्ताजी की सूझ-बूझ के सामने फीका लग रहा था। इंजिन की आवाज़ आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले लोकगीतों की धुनों से काफी मिलती थी। मैंने कलीम मियाँ से कहा—इतनी तेज़ रफ़्तार से चलोगे तो एक महीना तो पहुँचने में ही लग जायेगा।

मेरे और कलीम मियाँ के बीच इंजिन की आवाज़ की मोटी परतें थीं जिसे पार करने के बाद कलीम मियाँ ने मेरे सवाल का जवाब दिया—तीन बीड़ियाँ और दो लड़के हैं। बड़ा लड़का कमरुद्दीन भाई के यहाँ ट्रक का काम सीख रहा है।

कलीम मियाँ ने आगे बीड़ियों की रफ़्तार का भी जिक्र किया। अब मुझे समझ में आया कि चलती बसों में ड्राइवर से बातें करने की क्यों मनाही होती है।

तभी एक जोर का धमाका हुआ। सब चौंक गये। बस डगमगा गयी। कलीम मियाँ के अनुभवी पैर ब्रेक पर जम गये। उन्होंने गाड़ी और हमें न्यूट्रल में डालकर सड़क के किनारे खड़ा कर दिया। बोले—डरने की बात नहीं, पिछला चक्का बैठ गया है।

खुदा का लाख-लाख शुक्र है—अगला बैठता तो जाने कितने जनार्जों की नमाज आज सड़क पर ही हो जाती।

मेरी नजर गाड़ी में रखे फर्स्ट-एड बॉक्स की ओर गयी। मैंने कलीम मियाँ से पूछा—इस डिब्बे में कुछ है भी या खाली है?

कलीम मियाँ बोले—जनाबे आला ये गुस्ताजी की सर्विस है। एक बार डीजल कम हो सकता है लेकिन टिंचर आयडीन नहीं। गुस्ताजी का उसूल है कि गाड़ी में पहले मरहम-पट्टी का सामान रखो और बाद में डीजल भरवाओ।

मैंने कहा—ये खिड़कियों के काँच बड़े तेज हैं। मेरा ख्याल है इतने तेज काँच गुस्ताजी ने विशेष रूप से तीर्थ-यात्रियों के लिए लगाये होंगे।

कलीम मियाँ बात को बदलते हुए बोले—फर्स्ट-एड बॉक्स जरा छोटा पड़ता है।

मैंने कहा—ठीक कहते हो। जरा बड़ा होता तो दो जोड़े कफनके भी आ जाते।

गुस्ताजी की जख्मी स्टेपनी देखकर कई लोगों की हालत गंभीर हो गयी। एक ट्रांजिस्टर पर आकाशवाणी से गीत आ रहा था—‘दिल में छिपा के प्यार का तूफान ले चले...हम आज अपनी यौत का सामान ले चले।’ आकाशवाणी वालों में यही बात तो होती है कि वे बड़े समसामयिक गीत बजाते हैं। हमारे एक मंत्री मित्र जब चुनाव हारे और अपना रेडियो खोला तो गीत आ रहा था—‘सबरे वाली गाड़ी से चले जायेंगे।’

गाड़ी चलने लगी तो मैंने कलीम मियाँ से कहा—जरा साइड दे दो।

कलीम मियाँ ने साइड-ग्लास से देखा और बोले—जनाब पीछे तो कुछ नहीं है।

मैंने कहा—साइकिल वाला आ रहा है ना। आगे हो जाने दो बेचारे को। रिस्क लेना ठीक नहीं है।

कलीम मियाँ को मेरी बात से जोश आ गया। आखिर ड्राइवर थे। उन्होंने एक्सीलेटर इतनी जोर से दबाया कि हम सब डर गये। गाड़ी के ढीले पुरजों ने विद्रोह कर दिया। ढीले नट-बोल्टों की आवाज सुनकर मेरी बगल में बैठे कुरेशी साहब ने कहा—बस ऐसी ही आवाज कयामत के दिन आयेगी....आसमान लोहे का हो जायेगा....सूरज बहुत करीब आ जायेगा।

मैंने कहा—चलिये इसी बहाने कयामत झेलने की प्रेक्टिस तो हो रही है।

सात घंटों में हम केवल तीस किलोमीटर पहुँचे थे। वैसे इससे ज्यादा भी चल सकते थे लेकिन लगता था कि कोई जिन्न हमारी बस में बैठा हमें परेशान कर रहा था। हर वार कोई-न-कोई बला आ जाती है। हाँस पाइप फट गया, ऑयल सील कट गयी, गेयर फँस गया। कोई एक मर्ज हो तो कोई झाड़फूँक भी करते, तमाम बलायें मँडरा रही थीं बस पर। कलीम मियाँ बेचारे परेशान थे। एक नाले के पास बस रोककर बोले—जिन साहेबानों के वजू टूट गये हों नाले के पानी से बना लें।

नाले में काफी तेज बहाव था।

मैंने कहा—नाले का पानी पाक है कलीम मियाँ। बस को गुस्ल दे दीजिये।

कलीम मियाँ हमारा सफर कजा करते हुए बोले—बस आगे नहीं जायेगी। मैं किसी ट्रक वाले के साथ गुप्ताजी को खबर कर देता हूँ। दूसरी बस आ जायेगी।

शाम को सात बजे दूसरी बस आयी। आगे का हाल मत पूछिये।

एक माह के लंबे सफर के बाद अपने पापों को धोकर लौटा हूँ। हम पचास लोग गये थे। अड़तालीस वापस आये। दो वहीं रुक गये।

गुप्ताजी की बस सर्विस का एवरेज घुरा नहीं है।



## राज्य परिवहन की बस में

जब मैं इस भौतिक जीवन से निराश हो गया, तब कुछ भले आदमियों ने सलाह दी—“अरे पगले, इस तरह निराश होने से क्या होगा? हमारी मान और राज्य परिवहन की बस में बैठ जा!”

काका बोले—“जब कभी तुम्हारी काकी हमसे लड़ती है तब हम ऐसा ही करते हैं, तू भी ऐसा कर। माया-मोह से मुक्त हो जा।”

मैंने कहा—“काका, टैक्सी में बैठूँगा तो नहीं चलेगा?”

वह बोले—“चलेगा और बिलकुल चलेगा। आजकल टैक्सी-जीप वालों और राज्य परिवहन वालों में तगड़ा कंपटीशन चल रहा है। इस का लाभ उठा ले बच्चा। आना-जाना तो लगा ही रहता है।”

मैं घर गया। साफ धुला हुआ कुरता-पाजामा पहनने के बाद मैंने बच्चों को अंतिम रूप से प्यार किया। बीवी से कहा—“मैं जा रहा हूँ।”

मेरा दुर्भाग्य तो देखिए, बीवी ने यह तक नहीं पूछा कि कहाँ जा रहे हो। अपने देश में हम जैसे आदर्श पतियों की क्या दुर्गति हो रही है, देखा आपने? उसकी जगह दूसरी होती तो पूछती—“कब तक लौटोगे.... सुबह उठकर मंजन और ब्रश करने के बाद ही नाश्ता करना.... नौ बजे सो जाना.... अपनी सेहत का ख्याल रखना.... मेरे लिए कोई अच्छी-सी चौड़े बॉर्डर वाली साड़ी लेते आना।”

लेकिन इस वीरांगना ने कोई सवाल नहीं किया। नल पर गयी और पटक-पटककर कपड़े धोने लगी। लगा, जैसे पूरी अर्थ-व्यवस्था को निचोड़ कर रख देगी।

मैं इस भारतीय नारी को तीस सालों से जानता हूँ। मैं यदि उससे कहता कि मैं परिवहन निगम की बस में बैठने जा रहा हूँ तो आप यकीन कीजिए वह कहती—“अच्छी सीट पर बैठना ताकि जल्दी पहुँच जाओ।”

घर से अपना यह छोटा-सा विदाई-समारोह सम्पन्न कर मैं बस स्टैंड पर आ गया। यहाँ मेरे स्वागत के लिए परिवहन निगम की तीन आरामदेह गाड़ियाँ खड़ी थीं। नंगे रेडियेटर वाली बोली—“आओ हो ...कहाँ थे इत्ते दिन, बैठोगे नहीं क्या?”

मैंने कहा—“बैठूँगा क्यों नहीं? बैठने ही तो आया हूँ। मेरी वैतरणी पर कर देना मैया। अब तो तेरा ही सहारा है।”

राज्य-परिवहन में बैठने का प्रमाण-पत्र लेने मैं बुकिंग ऑफिस गया तो बताया गया कि होटल की परछी पर टूटी टेबल और कुरसी पर बैठा शर्मा नामक परिवहन-जीव पैसे लेकर प्रमाण-पत्र दे रहा है।

मैंने इस जीव के दर्शन किये। पूछा—“दादा, यह गाड़ी कहाँ जायेगी?”

शर्माजी ने मेरी ओर करुणामयी दृष्टि से देखा। फिर उन्होंने अपना दाहिना हाथ पाजामे की जेब में डालकर छोटे राजा बीड़ी का बंडल निकाला। सामने की जेब टटोलकर मिट्टी के तेल वाला लाइटर निकालकर उसे जलाने का धुआँधार प्रयास करने लगे लेकिन आग पकड़ ही नहीं रही थी। उन्होंने लाइटर का सिर नीचा किया और तीन-चार जोरदार झटके लगाकर दाहिने हाथ के अँगूठे की पूरी ताकत से लाइटर सुलगा ही लिया। फिर उस लाइटर से बीड़ी सुलगाई। एक लंबा कश लिया, धुआँ बाहर बस स्टैंड की तरफ फेंका और बोले—“हाँ...अब कहिए श्रीमान!”

शर्माजी के इस शिष्ट व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनके लाइटर से तो पहले ही प्रभावित था। मैंने पूछा—“यह लाइटर राज्य परिवहन निगम का है क्या?”

वह बोले—“क्यों?”

मैंने कहा—“बिना धक्का खाये कमबख्त चालू ही नहीं होता।”

वह बोले—“परिवहन में काम करने वाले इसी स्तर का लाइटर रखते हैं ताकि यदि कभी उन्हें राज्य परिवहन निगम की बसों पर गुस्सा आये तो लाइटर के असहयोग से ही उनका मूड आफ हो जाये।”

मैंने कहा—“एक टिकिट दे दीजिएगा।”

शर्माजी ने पूछा—“कहाँ का दूँ श्रीमान्?”

मैंने कहा—“जहाँ का आप उचित समझें। हम तो बस, आज आपकी बस में बैठने के मूड से ही घर से निकले हैं।”

वह बोले—“चलती बस में कूदने की प्रैक्टिस है?”

मैंने कहा—“नहीं।”

वह बोले—“काँच तोड़कर बस से बाहर निकलना आता है?”

मैंने कहा—“नहीं।”

वह बोले—“फिर क्यों राज्य परिवहन को यात्रा का श्रेय देने पर तुले हों। ट्रेन एक घंटा लेट है....उसी से चले जाओ; खामोखां एक झटके में ही टें बोल दोगे।”

मैंने कहा—“बहुत सोच-समझकर घर से निकला हूँ दादा आपकी बस में बैठने। आप तो बस प्रमाण-पत्र दे दीजिए ताकि मुझे कोई अफसोस न रहे कि मैंने अंतिम क्षणों में कोई गलत काम कर डाला।”

पास खड़े कंडक्टर महोदय ने मुझे याचना-भरी नजरों से देखा। जैसे कहना चाहता हो—“टिकिट लेकर गरीब के पेट पर क्यों लात मार रहे हैं आप?”

शर्माजी ने मेरा टिकिट काट दिया।

मैंने अपने कुरते की जेब से पाँच हजार के बीमे की पॉलिसी के कागज निकाले और परिवहन-निगम का प्रमाण-पत्र पॉलिसी के कागजातों के बीच सम्हालकर रख दिया। मैंने प्रताप भैया को मन ही मन धन्यवाद दिया कि जिन्होंने एक हफ्ते पहले मुझे अपनी जिन्दगी का बीमा करवाने पर राजी कर लिया था। उन्हें क्या पता था कि एक हफ्ते बाद ही मैं राज्य परिवहन की बस में बैठ जाऊँगा।

थोड़ी देर में नगर के गणमान्य नागरिक आकर बस में बैठने लगे तो मुझे अच्छा लगा। मैं यह सोचकर आश्वस्त हुआ कि चलो, मैं अकेला ही नहीं हूँ इस सफर में।

अचानक मेरी नजर गुमान सेठ पर पड़ी। उन्होंने भी शर्माजी से प्रमाण-पत्र लिया और मेरी सीट पर आकर बैठ गये।

मैंने कहा—“गुमान भाई, आप तो अपनी जीप से आते-जाते हैं। आज बस में कैसे?”

वह बोले—“बस समझ लो, आज राज्य परिवहन की बस में बैठने का मूड बन गया।”

डाइवर की सीट के सामने लिखा था—“सबका मालिक एक। ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।”



## आशीर्वाद की मुद्रा में

उनके जिस्म में एक कीड़ा है। वह चुप नहीं बैठता। रेंगता है। वे आशीर्वाद की मुद्रा में आ जाते हैं।

कवियों को देते हैं, लेखकों को देते हैं और शादी के मौसम में वर और वधु को देते हैं। जब कभी देते हैं, सशक्त आशीर्वाद ही देते हैं। पिछली बार जिस वर को दिया था वह शादी के दो माह बाद एक लड़की के साथ भाग गया। बाद में वधु को भी दिया। वह बैंक लोन से सिलाई क्लास चला रही है।

सुबह मुर्गा बोलते ही कीड़ा उठता है। वे अपने बच्चों को आशीर्वाद देते तब कहीं जाकर प्रेशर आता है। फिर बड़े घर से लौटने के बाद मुहल्ले के बच्चों को आशीर्वाद देते हैं। बच्चे सफल नागरिक बन रहे हैं। सुबह-सुबह एक मोटर-साइकिल का टायर ब्लेड से काटकर क्रांतिकारी वातावरण बना रहे हैं। ऑनर परेशान हुए। ऐसी क्रांति वे पहली बार महसूस कर रहे थे। उनके पास पहुँचे। बोले, “आपके मुहल्ले के बच्चों ने मेरा टायर साफ़ कर दिया।”

वे मौन रहे। सोचने लगे, इसे आशीर्वाद कैसे दूँ। बोले, “मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आपको मुहल्ले में पहली बार देखा है और वह भी बिना किसी खरोंचे के।”

सज्जन बोले, “आपकी कृपा है।”

वे आशीर्वाद देने की मुद्रा में स्थापित हो गये। बोले, “मुझे देखो। बच्चों ने तीस सालों में मेरे टायर-ट्यूब दोनों खराब कर दिये। चैन उतार डाली। हवा खोल

दी। मैं फिर भी युवा प्रगति के प्रति आशावान हूँ।”

सज्जन ने देखा, उनके चेहरे पर संतोष था। जैसे कोई बहुत बड़ी पीड़ा के स्खलन के बाद होता है।

सज्जन निरुत्तर हो गये। उनकी ओर देखने लगे। वे जाते-जाते बोले, “मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।”

सुबह ठीक ढंग से शुरू हुई थी। वे ताजगी फील कर रहे थे। कीड़ा सांत बैठ गया था। उन्होंने धोती ऊपर उठाई और साइकिल पर बैठ गये।

रास्ते में सबसे पहले नीम का पेड़ मिला। वे रुक गये। बोले, “प्रसन्न रहो। इस वर्ष निबौरियाँ मीठी हों।”

नीम के दरख्त ने अपनी शाखें हिलाकर अभिवादन किया। सामने से डाकिया आ रहा था। उसने भी अभिवादन किया लेकिन खेद सहित।

आशीर्वाद का कीड़ा रेंगकर बाहर आया। बोला, “डूब मरो। तुम कवि हो या भड़भूँजे। दो कौड़ी की जगह पर भी कामयाब नहीं हो सके।”

उन्हें आत्म-ग्लानि नहीं हुई। वे सीजण्ड थे। साइकिल पर बैठ गये। सीट उनका बोझ एक लंबे अर्से से ढो रही थी—एक साँत की तरह।

चौक पर पहुँचे। एक लेखक दिख गया। नहीं, वह युवा कवि था। बाहर से लेखक की तरह दिखता था। उन्होंने सोचा—तीस साल से एक ही चश्मा लग रहा है। अब उसे बदल देना चाहिए। बुद्धिजीवी भी पहचान में नहीं आया।

कवि पैदल आ रहा था। उन्हें देखकर रुका; झुका नहीं। उनका कीड़ा तेजी से रेंगने लगा। वे बोले, “नई कविता छोड़कर आजकल तुम गजलें लिख रहे हो। अच्छी बात नहीं है।”

कवि ने उनकी ओर देखा। गला साफ़ किया और जमीन पर थूककर उन्हें देखने लगा। वे बोले, “कुंठा के शिकार हो। लेखन के फेफड़े साफ़ रखो। स्थापितों को स्वीकार करना आखिर कब सीखोगे। बलगम नुकसान देता है।”

उसके अंदर रेंगते कीड़े ने कहा, “तुम बेवकूफ़ हो। गहक कोशिश कर रहे हो। वह आशीर्वाद नहीं लेना चाहता और तुम हो कि देने के लिए मरें जा रहे हो।”

वे बोले, “हमने जब कविताएँ लिखनी शुरू कीं तब बड़े लोगों के चरण भी स्पर्श किये थे।”

युवा कवि बोला, “उन दिनों बड़े कवि अपने चरण दिन में तीन बार धोते थे।”

वे बोले, “साहित्य गंदगी से नहीं गंदी विचारधारा से घृणा करता है।”

युवा कवि बोला, “मैं केवल आपसे घृणा करता हूँ। समझे?”

वे आगे बढ़े। कीड़ा जोरों से रेंग रहा था।

एक लेखक सामने आ गया। व्यंग्यकार था लेकिन लेखक का रुतबा रखता था। वे रुक गये। बोले, “आपका नया व्यंग्य-संग्रह आया है।”

कीड़ा बोला, “अपनी हैसियत देखो। जिंदगी-भर बिन पेंदी के लोटे की तरह लुढ़कते रहे। आगे बढ़ो। यह गेयर में नहीं आयेगा।”

वे बोले, “चुप रहो। मेरे सामने बच्चा है। मैं प्रतिबद्ध साहित्यकार हूँ।”

लेखक बोला, “बहुत दिनों बाद दिखे। धंधा कैसा चल रहा है?”

वे बोले, “सीज़न ज़रा डल है। सुना है आपकी किताब का विमोचन ग्वालियर में हो रहा है। यहाँ होता तो हमें लाभ मिलता।”

लेखक ने कहा, “दरअसल यहाँ आशीर्वाद का रेट जरा ज्यादा है। जब से आप फील्ड में आये हैं भाव बढ़ गये हैं।”

वे बोले, “कोई बात नहीं। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।”

लेखक बोला, “आप अपनी शुभकामनाएँ वी.पी. से भिजवा दीजिएगा।”

कीड़ा ठहाका मारकर हँसा। बोला, “बेटा, अपने आशीर्वाद की पोंगली बना लो। कभी काम आयेगी।”

एक कुत्ता तीन टॉग से घिसटता हुआ पास आया। उनके चरणों पर गिरकर बोला, “आपके आशीर्वाद की जरूरत है। मुझे कम्पनसेशन दिलाइये।”

उन्होंने पूछा, “तुम्हारी यह हालत किसने बनायी?”

कुत्ता बोला, “एक टॉग उठाकर ट्रक पर पेशाब कर रहा था, उसी का परिणाम है।”

वे तुरन्त ट्रक ऑनर के पास गये। कुत्ता साइकिल के केरियर पर बैठा था। ट्रक ऑनर ने उन्हें देखा। वे अपनी गद्दी से उतरकर नीचे आये। उनके चरणों पर झुकते हुए बोले, “बहुत दिनों से आप नहीं दिखे। आपके आशीर्वाद के बिना किसी आखबार में मेरा नाम ही नहीं आ रहा है।”

वे आशीर्वाद देने की मुद्रा में आ गये।

कीड़ा बोला, “अक्ल से काम लो। बिको मत।”

कुत्ते ने कहा, “मेरी टॉग का क्या होगा?”

वे बोले, “कुत्ते की जात ही न आखिर। बीच में मुँह मारने की आदत नहीं गयी।”



कुत्ता बोला, “आप ही हमारे मार्गदर्शक हैं। सर्वहारा के रक्षक हैं। सामतवादी विचारधारा कैसे नष्ट होगी?”

वे बोले, “ये मेरा प्राइवेट मामला है। तुम चुप रहो। जानता हूँ गलती तुम्हारी है। तुम्हें पेशाब करने की तमीज नहीं। किसने कहा था इनकी ट्रक पर पेशाब करो। खुद ही गलती करोगे और मेरे आशीर्वाद के सहारे कम्पनसेशन माँगोगे।”

पास खड़ी ट्रक मुस्कराने लगी। वह सीना ताने खड़ी थी। सीने पर लिखा था—बुरी नजर वाले तेरा मुँह काला।

ट्रक ऑनर ने कॉफी का प्याला आगे बढ़ाते हुए कहा, “लीजिए। ठंडी हो रही है। ऐसी छोटी-मोटी घटनाएँ तो रोज ही होती रहती हैं।”

अबकी बार कीड़ा दुबककर बैठ गया था। इस बार वे उस गुरीब पर हावी हो चुके थे।



## मंत्री जी प्रसन्न हैं

इधर सरकार ने नस्ल सुधार कार्यक्रम के अधीन साडों की नियुक्ति के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये और उधर मंत्री जो ने पशुचिकित्सक को बुलाकर कहा "जरा हमारा भी ध्यान रखना।"

पब्लिक सर्विस कमीशन में विभिन्न विज्ञापन जारी किये गए, लोगो ने अपनी-अपनी सिफारिशें जमाईं, कमीशन के मेम्बरो से सम्पर्क माधे, इन्टरव्यू हुए और याग्य उम्मीदवारा का चयन करने के बाद हर पशुचिकित्सालय में नस्ल सुधार के लिए एक सरकारी साड एंपाइट कर दिया।

क्योंकि मंत्री जी स्वयं इस नियुक्ति में रुचि रखत थे इसलिए उनके क्षेत्र में जो अस्पताल था, वहाँ प्रथम वरीयता क्रम में साड आ गया। मंत्री जी ने पशुचिकित्सालय में 'साड स्वागत समारोह' आयोजित करवाया और उसकी अध्यक्षता करते हुए कहा, "बहुत दिनों से हम अपने क्षेत्र के लिए साड की आवश्यकता महसूस कर रहे थे। इस वर्ष केन्द्र से हमें नस्ल सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत अच्छा अनुदान प्राप्त हुआ है और इसलिए हमने पूरे प्रदेश में सरकारी साड नियुक्त कर दिये हैं। आप सबसे अनुरोध है कि इस योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाईं। आपकी सेवा के लिए यह साड पशु चिकित्सालय में हमेशा उपलब्ध रहेगा।"

आभार प्रदर्शन करते हुए पशुचिकित्सक ने कहा, "यह हमारा मंत्री जी का ही प्रयास है कि आज हम साड के मामले में आत्मनिर्भर हुए हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रुचि लेकर इस पशु-चिकित्सालय में निःशुल्क साड सेवा उपलब्ध कराई, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमारे मंत्री जी नस्ल-सुधार में बराबर रुचि लेवे रहेंगे तथा हमें मार्गदर्शन देगे।"

कार्यक्रम तो ठीक-ठीक निपट गया लेकिन स्वागत समारोह के ठीक दूसरे दिन हा एक दुर्घटना यह हो गई कि इस सरकारी जानवर ने एक काश्तकार की भैंस को बल-प्रयोग से अपाहिज कर दिया। व्यवस्था पञ्जातांत्रिक थी, इसलिए काश्तकार शिकायत लेकर मन्त्री जी के पास आया। नस्ल मुद्धार कार्यक्रम को मफल बनाना था और जनता को इस कार्यक्रम क प्रति आकर्षित करना था, इसलिए मन्त्री जी ने इस शिकायत पर तुरन्त जाँच का आदेश पारित कर दिया और शिकायत पर टीप लिख दी—

पशुचिकित्सक साइड सहित मुझसे सम्पर्क करें। मैं उनसे चर्चा करूँगा।”

गोधुली बला में पशुचिकित्सक आए। उन्होंने साइड को मन्त्री जी के दरवाजे पर बाँध दिया और बाहर लॉन में गयी कुर्सी पर बैठ कर मन्त्री जी के आदेश की प्रतीक्षा करने रहे। फिर मन्त्री जी ने उन्हें अन्दर बुलाया और कहा, “आपके खिलाफ बड़ी शिकायत है। आपने एक गरीब काश्तकार की भैंस को अपाहिज कर दिया। मैं चाहूँ ता आपको अभी सस्पेंड कर सकता हूँ। बोलिए, आपका क्या कहना है? आप अपने अधीन कर्मचारियों पर कंट्रोल भी नहीं रख सकते। एक मन्त्री के इत्ताक में यह धौधली लौ चलेंगी। जवाब दीजिए।”

पशु-चिकित्सक ने दिनप्रतापूर्वक कहा, “सर, दरअसल अभी यह जानवर अपने डिपार्टमेंट में नया है। फ्रेश क्रेडिट है। मैं उसे ट्रेनिंग दे रहा हूँ। धीरे-धीरे ट्रेड हो जायेगा। मैं उसकी ओर से क्षमा माँगता हूँ। उसे सस्पेंड कर देंगे तो उसका कैरियर खराब हो जायेगा। नयी नौकरी है, इसलिए आपसे निवेदन है कि आप इस पर मद्भावनापूर्वक विचार करें।”

मन्त्री जी गरम हो गए, बोले, “अडर ट्रेनिंग है तो क्या दूसरो की वनू-बेटियो की टॉग तोड़ना फिरंगा? देश के लिए पशु-धन कितना आवश्यक है, आप जानते हैं? सरकार की यह पायनोट स्कीम है और इसमें अनुशासनहीनता चिन्कुल बर्दाश्त नहीं होगी। मैं तत्काल प्रभाव से सस्पेंशन आर्डर देता हूँ। आप तीन दिन की अवधि में घटना की पूरी जाँच कर मुझ अपना प्रतिवेदन दीजिए।”

पूरे क्षेत्र में मन्त्री जी की वाहवाही हो गई। जनता भी आश्चर्य ही हो गई कि इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन सही ढंग में होगा। जाँच होती रही और सस्पेंशन पीरियड में साइड मन्त्री जी के दरवाजे पर बँधा रहा।

प्रतिवेदन आ गया और जैसा होता आया है, रिपोर्ट सरकारी कर्मचारियों के हित में थी और साश दास किसान की भैंस का ही पाया गया। प्रतिवेदन में भैंस के चरित्र पर भी सदेह व्यक्त किया गया था तथा प्रशासनिक व्यवस्था ने शासकीय कर्मचारियों को उचित संरक्षण प्रदान किये जाने पर जोर दिया गया था।

मंत्री जी ने प्रतिवेदन देखा और उस पर अपनी आदन के अनुसार फिंगर टीप लगा दी—“मैं सांड के मनोवैज्ञानिक क्रियाकलापों पर ज्वाइंट डायरेक्टर पशु-पालन विभाग तथा प्राचार्य पशु चिकित्सा महाविद्यालय में व्यक्तिगत चर्चा करना चाहता हूँ। इस बीच में सांड की गतिविधियों का प्रत्यक्ष अध्ययन भी करना चाहता हूँ, इसलिए सांड को मेरे निवास पर एक हफ्ते के लिए शासकीय खर्च पर रखा जाए।”

खूब अखबारों बाजी हुई। विरोधी पक्ष सक्रिय हो गया। अखबारों में जो समाचार छपे, उनकी बेनर लाइने इस प्रकार थी—

—सरकारी सांड के आतक से जनता त्रस्त।

—सरकारी संपत्ति का मंत्री जी द्वारा दुरुपयोग।

—सत्ता के दरवाजे पर बंधा प्रशासन का सांड।

—मंत्री जी द्वारा सांड-सेवा का अनुचित लाभ।

अनेक अखबारों ने इस पर सम्पादकीय भी छापा और प्रजातांत्रिक पणाली के गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त की। इस सन्दर्भ में तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ का एक प्रतिनिधि मंडल भी मंत्री जी से मिला और प्रतिनिधि मंडल ने सांड के पक्ष में मंत्री जी को एक जापान भी दिया।

विपक्ष के नेताओं ने माँग की—‘मंत्री जी अपना वक्तव्य दें।’

लेकिन मंत्री जी ने एक अनौपचारिक भेट में प्रेस को जानकारी दी कि यह एक नीति निर्धारण का प्रश्न है तथा मुख्यमंत्री से चर्चा किए बिना वे किसी प्रकार का वक्तव्य देना नहीं चाहते। अभी पूरी स्थिति जाँच प्रक्रिया से गुजर रही है, इसलिए भी कोई वक्तव्य देकर वे विवाद की स्थिति पैदा नहीं करना चाहते। यह पूछे जाने पर कि विपक्ष की भूमिका को वे किम नजर में देखते हैं, उन्होंने कहा, “पजातंत्र में विपक्ष को आरोप लगाने की पूरी छूट है। मैं कौशिश करूँगा कि वस्तुस्थिति शीघ्र ही जनता के सामने आ जाए।”

विधानसभा का बजट कारीन सत्र प्रारम्भ हुआ।

एक विपक्ष के सदस्य ने सदन में सवाल किया, "क्या मंत्री जी यह बतायेंगे कि उनके निवास स्थान पर सरकारी साड़ क्यों बँधा है? और यदि बँधा है तो क्या वह मंत्रीजी के व्यक्तिगत उपयोग के लिए है?"

मंत्री जी ने जवाब दिया, "विपक्ष ने जो आरोप लगाया है, वह चरित्रहिन के उद्देश्य से प्रेरित है। बिना जाँच किये यह बताना मेरे लिए सम्भव नहीं है कि मैं दरवाजे पर कोई साड़ बँधा हूँ। इस सम्बन्ध में विस्तृत रूप से जाँच कर मैं सदन में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करूँगा क्योंकि यह आरोप ब केवल दुर्भावनापूर्ण है बल्कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पद की प्रतिष्ठा से जुड़ा है, इसलिए मैं जाँच कमीशन बित्तीय चाने की घोषणा करता हूँ ताकि वस्तुस्थिति की सही जानकारी हो। जाँच कमीशन तीन बरिष्ठ यशुचिकित्सकों का होगा जो अपनी रिपोर्ट सदन का तीन माह की अवधि में प्रस्तुत करेंगे।"

अब मामला प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अनुसार जाँच कमीशन के अधीन था। जाँच कमीशन ने नोटिस जारी कर दिया था कि जे गवाह इस सम्बन्ध में जानकारी रखते हों, अपने हलरुनामे जाँच कमीशन के समक्ष प्रस्तुत कर।

यह तो प्रारम्भिक चरण था। इसके बाद गवाहों के पनीक्षण और पतिपरीक्षण का दौर चलेगा। वैसे सदन ने तीन माह की अवधि निर्धारित की थी लेकिन लोग जानते थे कि यदि तीन माह में जाँच कमीशन ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी तो यह जाँच कमीशन की गरिमा के अनुरूप नहीं होगा।

मंत्री जी वापस लौट रहे थे।

हवाई अड्डे पर उनके स्वागत के लिए भीड़ जमा थी। एक कोने में पशुचिकित्सक भी पुष्पहार लिये खड़े थे। मंत्री जी ने उनको ओर देखा और मुस्करा कर आगे बढ़ गए।

## विधायक का दर्द : फिल्म तर्ज पर

मन्त्रिभाण्डन के विस्तार के बाद उनकी स्थिति लगभग यही थी कि "पिछे के पछी रे, तेरा दरद न जर्मि कोय।" इसके बाद मुझे याद नहीं आ रहा है कि कवि परदीप ने क्या कहा है लेकिन इतना अवश्य है कि उन्होंने यह बात कही है कि "कह न सके तू अपनी कहानी" और "भीतर भीतर नोय रे।" कुल मिलाकर इस प्रजातंत्र के पिजरे में व विस्तार के बाद में दु:खी है।

उन्हे देख कर कई स्थितियों में मजाने आती हैं। चेहरा देखता हूँ तो लगता है जैसे बेजनीमाला मधुमति बन कर खड़ी है और आह्वान दे रही है, "आजा रे, मैं तो कव से खड़ी इम पाग ये अँखियों थक गई पथ निहार।"

व भी पथ निहार रहे थे कि सज्जनवा उन्हे इम चार कोई कैबिनेट नहीं तो राज्य-मंत्री का पद जम्बर देगा। सज्जनवा जब चडीगढ से दिल्ली होता हुआ इस प्रदेश में आया तब उनकी स्थिति यह थी कि "घर आया भेग परदेर्मा, प्यास बुझी मेरी अँखियन की।" लेकिन केवल अँखियन की प्यास बुझने में काम नहीं चलता, लाल बत्तो वाली गाड़ी की प्यास, हरी लॉन वाले वगले की प्यास, स्क्वल पर डेर गरी फाइला की प्यास, कौटा और परमित देने की प्यास, बड़े अधिकारिया और व्यापारियों के काम निपटाने की प्यास, यान कि इम तरह कई टाइप की प्यास थी जो उनके अन्दर थी उम्मीद थी कि इम बार बुझेगी, लेकिन नहीं बुझी। सज्जनवा बैरी हो गया बिल्कुल। गेढडो की तरह कई विभाग नये विधायकों को बाँट दिए और वे कवल विधायक के विधायक रह गए। अब ऐसी हालत में उन्हे पिजरे का पछी न कहे तो क्या कहे।

आगे लिखना समाचार यह है कि उनकी स्थिति "हमारा नै गोपाल बाँचन जी" वाली हो गई है। मोचा था कुछ और हो गया कुछ। क्या कर, उनके भाग्य में विगह का दु:ख था। चार साल तो काट दिए जैसे-तैसे। अब मुख्यमंत्री न थोडा-मा

बिस्तार करने की घोषणा की थी तो उनके मुँह में पानी आ गया था। साहित्यकार इसे कहते हैं जिजीविषा का मागुन हाँ माना। अचानक यह जिजीविषा अर्थ जागृत हो गई थी और वे कूदने लगे थे अपने विधानसभा क्षेत्र में। अब आप कहेंगे कि इस घर भी फिल्मों की फिट फरें नहीं तो दंत है तुमको जनी। जब पूरा वाम किन्हीं गीतों में रुक रहे हो तो ब्रह्म भी कहेंगे! कोई फल्लूमी गीतकार होता और दानवेन्दर उसमें कबल तो वह पाँच गीत इत्यादि स्थिति पर लिख देना। आपने अजब बालग देखी होगी। उसमें गौरी कहती है— "मोहे भूल गये सौँवरिया।" बस समझ लीजिए कि यही हालत थी हमारे विधायक की। बेचारा ने अपने विधानसभा क्षेत्र में स्वागत हुए बतवा दिया थे, घी का दिया जला दिया था। कार्यक्रमों का आयोजन कर चुक थे, बिल्कुल इसी तरह जैसे स्वर्गीय श्री रज आत्मा ने गाया था, "मैं यों का दिया जलाकर घर आया।" मधु मध्याह्नक का गण। बड़ी मुश्किल से देहात से शुद्ध भ्रम का घी भिड़वाया और वे जिस ड्रेम में रानधनी गए थे उम्मा ड्रेम में वापस आ गए। उनके चाहने चलते घर क्या खीनी होगी हमें बात की कायना आय नहीं कर सकता।

सारे अरवान टिल के टिल भर गये।" बहानों फूल बरसाओ मेरा महबूब आवा है।" गान के लिए कायकता तय्यार खड़े थे लेकिन जब महबूब बिना मंत्रिपद लिये वापस लौट आया तो जो फूल मतदाताओं का टोंकनों में रखे थे वे वही के वही सड़ गए। जब महबूब ही फूल बरसान के लायक नहीं हुआ तो क्या फूल बरसाए। देखा आपने कितनी दुःखद स्थिति निर्मित कर दी थी सजना ने।

उपर विधायकजी की हालत यह थी कि "जो मे गेला जाननी प्रीत किए दुःख होय, नगर छिड़ोर पीटनी, प्रान्त न करिया कोय"। याने कि फालतु गया र तुम्हारे घुट में। इधरे और आनेक प्रभावशाली हैंग से मुकेश की आवाज ये कहते तो जगता कि 'सोत लगा के मैंने ये फल पाया, सुध-बुध छोड़ सेन गँवाया।' बेचारा छटपटा रहा है। कभी इस कबड ता कर्मी उभर करबट। कहीं भी वैन नहीं मिल रहा है। डाकबंगला खान का दौड़ता है। तो ये हालत है भइया हमारे विधायकजी की। जिस पर सुजरती है चणो जानता है।

अब फिर नौट आइए सजना पर। निर्दयी ने क्या हालत कर दी हमारे फूल जैसे विधायक की। मन्त्रकुमारी का प्रसिद्ध गीत है जिसका बीच की यकियाँ ऐसी हैं कि 'कोई जग जाके बड़द बुलाओं। आपके धरे सोगी जारी, नजरिया की मारी, मरी मोई गुईया।' अब हमारी इम गुईया की हालत भी देखिए। बैदराज जी उनकी नाडी

धर के बैठे हैं और ममझा रहे हैं, "जायेगा जब यहाँ से कोई न साथ देगा। लोग कफन का टुकड़ा, तेरा निवास होगा।" इसका भावार्थ इस प्रकार है कि ये तो चला चली का मेला है। वही पाँ चले गए, वही भी चले गए। अरुण गए, आरिफ गए। लेकिन पाँच साल बाद की स्थिति का वर्णन इस गीत में है जो वैदराज जी विधायक जी को नाड़ी पकड़ कर उन्हें समझा रहे हैं और भावना भी दे रहे हैं कि "कोई लाख का चतुर्गई, करम का लेख मिते नारे भाई।" इस गीत का भावार्थ वैदराज जी के अनुसार यह है कि "नेरी किस्मत में मंत्री होना नहीं लिखा है बच्चा, "तू चतुर्गई करेगा लेकिन तेरे करम का लेख नहीं मितेगा और पाँच साल बाद तुझे टिकट भी नहीं मिलेगी तब तेरे पास दो मीटर का कुरता ही होगा।" अब आप हमसे यह मत पूछना कि ये काम का लेख क्या है। यह काम का लेख आप हमारे विधायक जी से ही पूछें जो उनसे चुनाव जीतने के चार साल बाद तैयार किया है। भावार्थ ममझाने में हम कामजोर हैं इसलिए आपको जैसा-तैसा ममझा दिया है। आगे आप खुद समझदात हैं क्योंकि इ पाँच साल बाद आप इसी तरह के विधायक चुनकर कई सालों से विधानसभा में भले रहे हैं।

यह मैंने एक बहुत ही घरेलू पारिवारिक किस्म का चित्र आपके सामने रखा जो केवल हमारे सज्जनवा के कारण ही बना है। अब देखिए वैदराज जी की सातवाँ पर अपने विधायक जी क्या विचार व्यक्त करते हैं। व कहते हैं, "सूनी सेज, गोद परी सूनी, भरम न जाने कोय छट-पट तड़पे प्रीत बेचागी, ममता आँसू रोय ना कोइ इम पार हमारा ना कोई उम पार।" और इसके बाद फिर इस गीत के म्थायी अंग पर आ जाइए "सज्जनवा बैंगी हा गए हमारा।" उनके कहने का मतलब यह है कि मंत्री पद नहीं मिलने से उनके राजनीतिक जीवन में सूखा पड़ गया है, नहीं तो उनकी गाद भी हरी हो जाती। एक बार सज्जनवा उनकी गोद भर देने तो बेड़ा पार हो जाता अब तो हालत यह है कि इस पार मंत्री बनने की उम्मीद नहीं है और उम पार हाईकमान से दुबारा टिकट मिलने की उम्मीद नहीं है। समझ में आया आपके?

हमारा मतलब फिल्मी गीत नहीं है, हमारा उद्देश्य है विधायक जी के दु खो का वर्णन करना, इसलिए यदि आप असली बात को पकड़ कर रखेंगे तो पूरा गीत भी समझ में आएगा और यदि केवल सज्जनवा और बैरी शब्द को ही पकड़ कर बैठें गहोगे तो हम क्या कर सकते हैं।



## नेताजी की बैठक में बेशरम

उनकी बैठक में उनके अलावा जिस वस्तु ने मुझे प्रभावित किया था, वह गुरु बेशरम का पौधा था, जिसे उन्होंने एक दशमि मिट्टी के गमले में स्थापित कर कमरे के एक कोने में सजा रखा था। मेरे विचार में देश के व पहले आदमी थे जिन्होंने बेशरम को सम्मान का यह दर्जा दिया था। गमला तो व स्टेनलम स्टील का भी खरीदने की हसियत रखते थे, लेकिन उन्होंने यह सोचकर मिट्टी के गमले को प्राथमिकता दी थी कि बेशरम जैसे सदाबहार पौधे को सार्थकता केवल इस देश की मिट्टी ही प्रदान कर सकती है।

उनकी आदत लगभग इसी तरह का काम करने की थी। पिछली बार वे बजर जमीन में एक युवा पौधा ले आए थे, और रचनात्मक कार्यों के महाने उसे उपयोगी भी बना चुके थे, दिखने में तो वह अभी भी पौधा ही था। लेकिन उसके दाहिने हाथ के रूप में उन्हें हवाई अड्डे से लेकर मार्केट हाऊस और आम सभाओं तक पहुँचाकर अपना सार्थकता का परिचय देता था, सरकारी दफ्तरो के वे मागे काम, जो उनके इशारे पर सम्पन्न होने की स्थिति में आते इसी पौधे के माध्यम से होते थे। उस पौधा कहना मुझे क्लर्क अच्छा नहीं लग रहा है, लेकिन मेरी विवशता है और इसका कारण यह है कि उनकी बैठक में अगर उक्त दोनों वस्तुओं के बाद कोई तीसरा महत्वपूर्ण वस्तु थी तो यह पौधा ही था।

मिट्टी से यह पौधा सीधे तो नहीं जुड़ा था, लेकिन एक लाल रंग की कार के टायर के माध्यम से वह देश की मिट्टी को टच जरूर करता था। किसी देहान की धूल भरी कच्ची सड़क पर जब टेसुओ-सी लाल यह गाड़ी चलती थी, तो खगता था

जैसे बमन्त लगन ही हरी आश्रमों के बीच कोई राजनीति का सुख पलाश तबीयत में खिला गया है।

कुछ डमी तरह का काम्बीनेशन उन्होंने अपनी बैठक में रखे इस बेशरम के पीछे के आसपास निर्मित कर रखा था। बैठक में लगी खिडकी पर उन्होंने सुर्ख लाल परदे लगा रखे थे, जो पलाश का भ्रम पैदा करते थे।

उनका अधिक समय बैठक में ही बिताना। या मैं कहूँ कि बेशरम क इस गमले के आमपाम ही वे अपनी दिनचर्या निर्मित करते थे। वे इसलिए भी प्रमत्त थे कि आधिजात्य वर्ग की उनकी इस बैठक में बिना धूप और पानी के बढने वाला वह सदाबहार पौधा भी था, जिसे लोग हिकारत की नजर से देखते हैं।

यह खबर लगभग पूरे शहर में फैल गई कि दादाजी ने इस बेशरम क पीछे की किली राजनीतिक चाल की तरह ही कुछ खाम मतलब से अपने करीब रखा है। यह खबर कुछ लोगों ने दिल्ली तक भी पहुँचा दी। जैसी कुछ लोगों की आदत होती है पधानमंत्री को भी लम्बे पत्र लिखें गए कि दादाजी की गतिविधियाँ इन दिनों पार्टी के हित में नजर नहीं आ रही हैं तथा उनकी बैठक में अवाञ्छित तत्व हमेशा पाए जाते हैं। यदि आलाकमान का यकीन न हो तो किसी पर्यवेक्षक को भेजकर इस बात की सतुष्टि कर ल। उनकी बैठक बेशरम का एक अड्डा बन गई है।

दुमरे प्रकार के लोग भी थे, जिन्होंने यह पत्र भी लिखे कि दादाजी हरियाली का बजर जमीन में उठाकर आम आदमी के कमरों तक पहुँचाने की विकासशील गतिविधियों में सक्रिय भूमिका अदा कर रहे हैं।

बहरहाल, दोनों तरह के पत्र दिल्ली पहुँचते लगे थे।

मैंने इस बेशरम की चर्चा लोगों से सुन ही ली थी और यहाँ सोचकर आया था कि इस बात का पता लगाऊँ कि दादाजी के इस गमले के पीछे आखिर किस बात का चक्कर है?

थोड़ी दूर देश की विदेश नीति, काश्मीर में बिगड़ते हालात आदि पर चर्चा करन के बाद मे बेशरम पर आ गया। मैंने कहा—दादाजी, बाकी सब तो ठीक है, लेकिन इन दिनों आपके कमरे में लगे इस बेशरम पर लोग तरह-तरह की अटकलें लगा रहे हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि आप जो भी कदम उठाते हैं, बहुत सोच-समझकर ही

उठाने हैं, इसलिए बेशरम का आपकी बैठक में होना जरूर कोई खाम अर्थ रखता है मैं आपके विचार जानना चाहूँगा।

उनके त्रोट और कनपटी के बीच गालों पर एक हल्की-सी लकीर उभरी, जिससे मेने अदाजा लगाया कि वे मुसकुम रह हैं। बड़े आदमी तो ये ही, इसलिए अपनी प्रमन्नता के कुछ इसी तरह प्रकट करते थे। इसे भी लोग दो तरह से ही लेते थे। एक खेमा कहता था वे प्रमन्न हैं और दूसरा खेमा कहता था, उनके चेहरे पर कुटिल मुस्कान है।

बहुत धीमे स्वर से उन्होंने बात शुरू की—लोगों की तो आदत होती है अटकते लगाने की। मैं तो एक बात जानता हूँ कि मेरे जहाँ कुछ कहेगा, उसके पीछे जनहित की भावना जरूर होगी और मैं यह पूछता हूँ कि आखिर इस बेशरम ने क्या बिगाड़ा है लोगों का। इसे किसी बैठक में रहने के अधिकार से क्यों वंचित किया जाए? यह कोई गुलाब तो नहीं कि शेखवानों में लगकर यह महसूस कर ल्या कि वह स्वतंत्र भारत में जी रहा है। बजा जमीन में डोकरें खाते इस पौधे की भी आजादों का एहसास दिलाना हमारी नतिक जिम्मेदारी है और मैं पूछता हूँ कि यदि मैं उनके अधिकारों की लड़ाई में शामिल हूँ तो उससे लोग को पीड़ा क्या हाती है? और भाषण और भीधी बात तो यह है कि देश की गजनीति में उनके अस्तित्व को नकारने का कोई औचित्य मुझे नजर नहीं आता हम आज स्थितियों को हरियाली के आधार पर हा कैलकुलेट करते हैं, और यह गुण तो इस बेशरम में है फिर क्यों इस प्रकार का विवाद पैदा किया जाए।

मैंने कहा—मैंने सुना है कि प्रतिपक्ष विधानसभा में यह प्रश्न भी डम बार रखने वाला है।

वे बोले—मुझे मालूम है डम क्षेत्र को हरियाली देने का टायित्व हम पर है प्रतिपक्ष पर नहीं। हम तो बस अपना काम कर रहे हैं हमने अपने कार्यकर्ताओं को निर्देश दे रखे हैं कि हर गाँव की सीमा पर वे बेशरम लगायें कई मरपचा का सहयोग भी हमें मिल रहा है। प्रतिपक्ष का जवाब तो हम आँकड़ों से दे देंगे।

मैंने पूछा—वह कैसे?

वे बोले—प्रतिपक्ष को यही प्रश्न होगा कि आजादी के बाद गाँव की

हरियाली भूख गई है ज़मे ही यह अमेम्बली व्वेश्चन आया, हम तत्काल अधिकारियों को हर् दिग्बने वाले पेडो की जानकारी देन का मेमो इशू कर देगे औः जैस ही जानकारी मिली, हम उमे प्रतिपक्ष के मुँह पर मार देगे और कहेगे—अधे हो तुम्हें गाँवों मे हरियाली नही दिखती तो देख लो यह आँकड़े गाँवों मे भिवाय हने रूँडाँ के कुछ भी नही है । हम गाँव का भीमा पर यह हरियाली रोपने म जो खर्च कर रह हैं, वह उसी दिन के लिए है कि कोई हम पर उँगली न उठाये।

मुझे लगा कि उनके विचारों को तह तक पहुँच पाना मुश्किल काम है। इस बेशरम को उन्होने कक्षों से कहाँ तक पहुँचा दिया। मैं तो यही समझ रहा था, कि बेशरम उनकी बठक तक ही है, लेकिन नही वह तो पूर अचल मे फैल गया है, और इस पवित्र उद्देश्य के साथ फैला है कि उमे देश को विकासशील और हरा-भग साबित करना है।

उन्होने लगभग अपनी बात का समापन की ओर ले जाते हुए कहा: और यदि आप मुझमे व्यक्तिगत रूप से भी मेरे राय जानना चाहगे तो मैं चही कहूँगा कि बेशरम ही एक ऐसा पौधा है, जिसने तमाम मौसम की विपरीत परिस्थितियों क बाद भी अपना विकास नहीं रोका—बिलकुल हमारी तरह—चाहे भले सब कुछ रुक जाए लेकिन देश का विकास किसी कीमत पर नहीं रुकगा और इसकी प्रेरणा मुझे अपनी बैठक मे लगे इसे बेशरम मे ही मिली है—तुम तो देख ही रहे हो कि हम निरन्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहे है।

तभी लाल रंग की गाड़ी उनकी बैठक के सामने आकर रुकी। उसमे बेशरम के तीन पोधे थे। गाड़ी से निकलकर वे उनकी बैठक के जेथ तीनों कोनों मे स्थापित हो गए थे। उनकी बठक मे हरियाली का प्रतिशत अब बढ़ गया था।

## सावधान : आगे खतरनाक मतदाता है !

मैं डेज़रम मतदाता हूँ लेकिन मुझे देखते ही चुनाव-प्रत्याशियों के मुँह में पानी आने लगता है। चर्बीदार बकर को तरह मर्ग साथ मेरे अपन 15 वोट हैं जो केवल मेरे इशारे पर ही मुहर लगात ह। दुर्भाग्य यह है कि आजादी के बाद नगरपालिका-चुनाव स लेकर लोकसभा-चुनाव तक मने और मेरे परिवार के लोगों ने जिसे भी वोट दिया या तो उसकी जमानत जख्त हो गई या फिर वह सम्मानजनक ढंग से चुनाव हारा है। इसलिए अनुभवी चुनाव नडने वाले जानते हैं कि वोटो क मामल में मैं और मेरा परिवार झूत-ग्रस्त है। मुझ पर किसी चीर-फकीर या महात्मा का कोप ह कि जा बंटा, तू जिम पर मुहर लगायगा उसके पिताश्री भी चुनाव मे नहीं जीत सकते।

जो लोग इस क्षेत्र से अनेको बार चुनाव लड चुके हैं वे अच्छी तरह जानत हैं कि मेरा मुँह देखना बेकार है। लेकिन निर्दलीय प्रत्याशी या फिर नये प्रत्याशी जब भी वोटर-लिस्ट का अध्ययन करते हैं उनकी नजरें मुझ पर टिक जाती हैं आर वे सबसे पत्रले मुझसे जन-सम्पर्क करत हैं और मेरा वोट माँगते हैं। जब भी इस तरह का कोई उम्मीदवार मेरे दरवाजे पर आता है, मैं मन-ही-मन ऊपर वाले से प्रार्थना करता हूँ कि उसकी जमानत बची रहे। उसे माफ कर। वह नही जानता कि वह क्या कर रहा है। मेरे दरवाजे पर आकर उसने जो गुनाह किया है, मेरे मालिक, उमे इम गुनाह से तौबा करने की तौफीक अला फरमा, आमीन।

मेरा दावा है कि यह वह दरवाजा है जिससे कोई भी चुनाव-प्रत्याशी अपनी मुराद पूरी नहीं कर सका। शह दरवाजा मौत का दरवाजा है जहाँ सैकडो चुनाव-प्रत्याशियों की लाश जिखी हैं। वे इस दरवाजे पर प्रसन्नचिन आते हैं और चुनाव-परिणाम के बाद जिन्दगी-भर रोत हैं।

मे जिस मकान में रहना हूँ वह प्रजातंत्र का द्यूत-प्रश्न मकान है। इस मकान के सौ गज का क्षेत्र चुनाव-प्रत्याशियों के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र है। जो मेरा मकान कसा गज का क्षेत्र में गुजर गया समझ लीजिए कि उसके दो-चार हजार वोट टूट गए। मुझे अच्छी तरह याद है कि पिछला लोकसभा-चुनाव में भैयाजी मेरे पड़ोस का एक सज्जन के यहाँ डिनर के लिए आये थे। उनके कार्यकर्ताओं ने भैयाजी को आगाह कर दिया था कि मेरे घर की तरफ बिन्कुल न देखे। लेकिन विवशता यह थी कि जिस सज्जन के यहाँ भैयाजी का डिनर था, उसका घर जानने के लिए मेरे घर के सामने न गुजरने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। मैं तो उम्मीद धण समझ गया कि भैयाजी डिनर खाने नहीं, अपनी राजनैतिक भोत को आमंत्रित करने मेरे मुहल्ले में आयें हैं आने वाला समय ही बतायेगा कि भैयाजी की क्या दुर्गति होती है।

और फिर वही हुआ जो हर चुनाव में होता आया है। पार हो गये भैयाजी और आजो हमारे मुहल्ले में डिनर खाने। देखा हमारा प्रभाव? जमानत कबल इसलिए बच गई क्योंकि आपने हमसे नहीं कहा कि हम आपको अपना वोट दे। यदि इतनी सी बात आपके मुँह में निकल जाती तो हमारा दावा है कि कोई माई का लाल आपको जमानत नहीं बचा सकता था।

चुनाव-प्रचार-अभियान तेजी पर है, लेकिन अभी तक किसी ने हमसे नहीं कहा कि हम उनके प्रत्याशी को अपना बहुमूल्य वोट दे। इस क्षेत्र के सभी कार्यकर्ता चाहें वे भाजपा वाले हों, जदवाले हों या कांग्रेस वाले हों, अच्छी तरह हमारा बोट का मूल्य जानते हैं। शहर में जब भी कोई नया चुनाव-प्रचार-कार्यालय खुलता है हमारे चाहने वाले अपने प्रत्याशी को बता देते हैं कि इस आदमी से बचक रहना और फलाने वार्ड में अपने कटम मत रखना। हमने बता दिया, आगे आगे जानो। फिर यह नहीं कहना कि हमने एक ईमानदार कार्यकर्ता का फर्ज नहीं निभाया।

इस बार हमारे यहाँ लोकसभा के लिए एक नया प्रत्याशी को खड़ा किया गया है जिसके जीतने की पूरी उम्मीद है। दुर्भाग्य से प्रत्याशीजी हमारे मित्र भी हैं। वे हमारे विधान सभा क्षेत्र के निवासी नहीं हैं इसलिए उन पर पहला आरोप मनदलात्रो ने यह लगाया है कि वे थोपे हुए प्रत्याशी हैं। मैं कहता हूँ मेरे लिए थोप क्या और बिना थोपे क्या इस गली से नो गुजरेगा वह इतने किन्त नहीं जायेगा। नो ले हमारी तरफ

से जिसे थोपना हो इस लोकसभा में। लेकिन उस भले आदर्श को बताना कि हमसे बचके रहे, वना जावेगा धारो-धार। ऐसे थोपे हुए प्रत्याशी हमने कई देखे हैं। कोई नहीं बच सका तो ये क्या बचेंगे। हमारे पास आए, और गये समझो।

इस लोकसभा-चुनाव-प्रचार का पारम्भ तो मैं आज मही मानता हूँ क्योंकि आज मुबह-मुबह एक प्रत्याशी आ गए हमारे दरवाजे पर। हम शेर-छाप मज्जन घिस रहे थे और प्रत्याशी जी अपने दा-तीन कार्यकर्ताओं के साथ हाथ जोड़े हमारे सामने खड़े थे। मैंने बैठक का दरवाजा खोलकर उन्हें बिठाया। यह माँचकर बिठाया कि अब भविष्य में उनकी किम्मत में केवल बैठना-ही-बैठना लिखा है। पातःकाल लगभग सधा छः बजे उनका मेरे दरवाजे पर आना और मेरी बैठक में बैठ जाना ही पर्याप्त है। आगे उनका मालिक ही जिम्मेदार है।

मैंने कुल्ला किया और पंखे से मुँह पोंछन हुए उनसे पूछा, “मुबह-मुबह आप लोगो का आना कैसा हुआ?”

एक मरिखल-सा व्यक्ति बोला, “तापमान 45 डिग्री चल रहा है। दिन में चुनाव प्रचार होता नहीं, इसलिए हमने गय किया है कि मुबह के पहले पहर में ही लागा को निपटा द।”

यह तो मैं और मग मालिक बेहतर जानता ह कि कौन किसे निपटायेगा। लेकिन मेरी आदत यह है कि मैं किसी चुनाव-प्रत्याशी को निराश नहीं करना। वचारे बड़ी उम्मीद से चुनाव में खड होने हैं कि कुछ सपनि बना लेंगे, समाज में कुछ प्रतिष्ठा अर्जित कर लेंगे।

मैंने कहा, “कहिए, पर लायक क्या सेवा है?”

एक जाकेट वाले मज्जन बोले, “इस बार मैं शेर-छाप से लोकसभा का प्रत्याशी हूँ आपसे वोट माँगने आया था मैं इस क्षेत्र का विकास करूँगा, पानी की समस्या हल करूँगा, बेरोजगारी दूर करूँगा, भूँगाई कम करूँगा.. पिछडे वर्ग को ऊपर उठाऊँगा इसलिए ”

मैंने बीच में ही कहा, “कौन किसे उठायेगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। आप लोकसभा-चुनाव लड रहे है यह जानकर प्रसन्नता हुई मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ अदरत दीनिए”

इतना विनम्र मतदाता आपने नहीं देखा होगा। मुझ-जैसे मतदाता के लिए विनम्र होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। मैं अपनी ओकांत जानता हूँ, अप्रपच भावें जनिता हूँ।

वह बोले, "आपका परिवार मे 15 वोट हैं . मेरा आपसे निवेदन है कि इस बार आप मुझे वोट दे, .. आपन इमानी पार्टी की ईमानदारी देखी है हमनी पार्टी को परखा है, जोचा है मैं स्वयं मिद्धान्त वाला आदमी हूँ मैं आपको विष्काम दिलाता हूँ कि हमारी सरकार इस देश का स्वर्ग बना देगी . आप वादा कोरिअए कि इस बार आप और आपका परिवार मुझे वोट देगर।"

इतना कहने के बाद वह आँखें मिचमिचाने लगे। मैं समझ रहा था। यह मेरी बैठक में बैठने का प्रभाव है। उनके नेक इरादे और दृष्टि बनी रहे तो भी बहुत है। ऊपरवाला उन्हें अंधत्व से बचाए।

मैंने कहा, "अवश्य मिलेगे मेरे वोट आपको लेकिन "

उनका एक कार्यकर्ता बोला, "लेकिन-वेकिन कुछ नहीं हम आपकी पोडा समझत है दश गरीबी की सीमा-रेखा पर ह आग गरीबी से लड रहे ह हम जानते हैं , हमारा भइया यदि चुनाव जीत गय तो आपकी यह समस्या दूर हा जागगी भइया ने गरीबी मिटाने का मकल्प लिया है। फिर भी आप यदि चाहें तो भइया आपकी मदद कर सकते हैं।"

मैं समझ रहा था उनका इशारा। चुनाव के दौरान ऐसे मददगार पैदा होते हैं और मतदाताओं की मदद भी करते हैं। चाहे आप पलोभन से कितना भी बचने की हिदायत दे, हम बच नहीं सकते। हमारे खून में यह सब नहीं है। हम टुकड़ों पर झपटन वाले लोग हैं। जिससे टुकड़ा फेका, हम उसके गुणगान करते हैं, उसके सिद्धान्तों की तारीफ करते हैं, उसकी नीतियों का बखान करते हैं। चुनाव लड़ने वाले भी अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी क्या कीमत है। हम चाणक देश के वणिक लोग हैं। सौदा करना जानते हैं, अपना नफा-नुकसान समझते हैं. जो भी काम करते हैं, अपने लाभ के लिए करते हैं।

मैं जानता हूँ कि मेरे 15 वोट अभूल्य हैं। जिसकी झोली में जायेंगे, उसे बर्बाद कर देंगे। सब रही मदद की बात। यह मुझे तय करना है कि मैं मदद लूँ या नहीं।



मैं अपने विवेक को खगालता हूँ—बेटा, मत माना किसी प्रलोभन में अपने वोट का सदा मत करना प्रजातंत्र की नींव तुम्हारे वोटों पर है।

इस तरह की अनको कल्पनाएँ आती हैं।

भडिया जी उठने लगे, बोले, “आपका वोट निश्चिन्त रूप से मुझे मिल रहा है . क्या आप इससे सहमत होंगे?”

मैंने यह साचकर सहमति में मिग हिला दिया कि अपने देश का मतदाता किसी प्रत्याशी को निगण नहीं करता। वे पेर दरवाजे पर आए, मेरा सौभाग्य है। उनका क्या होगा, वे जानें। मैं अपने वोट का मुख्य जानता हूँ। आप जान लें तो अच्छा है और नहीं जानेगे तो मैं आपका क्या कर लूँगा!



## एक धोती छाप व्यंग्य

आदमी न जिस दिन से धोती लपेटना प्रारम्भ किया ठीक उसके दूसरे दिन में धोती में फंस कर गिरने का प्रथम अपने देश में शुरू हुई। उसी दिन से ही धोती बाँधने के बाद पीछे मुड़ कर देखने की राजनीतिक और सामाजिक आदतों का भा सुत्रपात हुआ। पाछे मुड़ कर देखने के पीछे जो सायबान्नाजा काम करते हैं वह है कि आदमी डभ बात में सतृष्ट हो जाए कि पीछे से धोती खींचने का काम नहा हा रहा है। अपनी नगई को छिपाना गण रह गया और देखा-देखी की यह आदत प्रधान हो गई। इस आदत से प्रेरित होकर कई लोग 'प्रधान' हो गए। बहरहाल धोती और आदमी का सम्बन्ध जो विकसित होना शुरू हुआ तो आज तक विकसित हो रहा है।

हमारे एक मित्र आदमी भी हैं और धोती भी पहनते हैं। पहले वे हाफ धोती पहनते थे। इसमें सुविधा यह होता थी कि उनकी टाँगों का धोती में फँसने का काम बहुत कम रहता था। वे कमीबेश धुटना छाप थे इसलिए अपने धुटने धोती के बाहर रखना ही पसन्द करते थे ताकि सन्द रहे और वक्त जरूरत पर काम आए। लेकिन जब भारतवर्ष में विकास करना प्रारम्भ किया, तब उनकी धोती की लम्बाई भी सिचाई प्रयोजना की तरह लम्बी हो गई। अब तो वे पूरा तरह आभिजात्य वर्ग से जुड़ गए हैं। इसलिए उन्हें छोटी धोती पहन कर धुटना दिखाने में शर्म आती है। लम्बी धोती में वे कद और पद से काफी सम्पन्न होने का भ्रम पैदा कर लेते हैं। धोती की लम्बाई के साथ उनकी सम्भल कर चलने की आदत भी बन गई है।

लेकिन धोती को टालना अपने देश में बहुत मुश्किल काम होता है। अब स्थिति यह है कि नगर के कई सम्मान्य पंडित लोगों की नजर उनकी धोती पर है और

## एक धोती छाप व्यंग्य

इसके पहले कि वे खुद इस दुर्घटना का सामना करें, उन्होंने पार्ट टाइम धोती खींचने की जोचिंग क्लासिस अपने घर पर प्रारम्भ कर दी है। वे कुछ युवा धोती कर्मी भी तैयार कर रहे हैं। कुल मिलाकर उनकी ट्रेनिंग की प्रक्रिया यह है कि सबसे पहले धोती की पारकमा करो और देखो कि किम एगल से झटका देने पर धोती नीचे आ जाएगी। फिर त्रागीकी से इस बात का अध्ययन करो कि किस स्थल पर धोती खींचने पर सामने वाला व्यक्ति आकर्षक लगेगा। वे कभी-कभी भोपाल और दिल्ली का चक्कर लगाकर अपने बरिष्ठों का मलाह भी ले लेंगे हैं। इस मिश्रान्त क पीछे मूलमंत्र यह है कि अगले का आपकी नीयत का पता न चले। यदि पता चल जाए तो आप तुरन्त उनके चरणों पर गिरकर कहिए—श्रीमान्, मैं आपकी धोती खींचने नहीं आया था। मैं तो आपका चरण स्पर्श करना चाहता था, दुर्भाग्य से धोती का छोर मेरे हाथ में आ गया।

धोती पहनने वाला हर आदमी जानता है कि उसकी धोती के साथ खिचाई की सम्भावना त्रमशा जुड़ी है। इसलिए समझदार किस्म का धोतीधारी आदमी अपना धोती की गठान मजबूत बंधता है। कई लोग ता धोती अपने विधानसभा क्षेत्र में पहनते हैं और गठान बंधवाने दिल्ली चले जाते हैं। यानों कि धोती का लगेपदार गठान पर है। जिस आदमी को राजनीति में गठान मारने का तमोज आ गई समझ ला उसकी धोती भी सुरक्षित हो गई। खींचा बेटा, कितनी खींचते हो। ये भैया जी की गठान व, आसानी से नहीं खुलेगी।

बिना गठान वाली धोती केवल रूपडा होती है। यही रूपडा जब ढंग से चुन्ट डालकर सही गठान के साथ किसी विधायक प्रेड के आदमी की कमर में लपेट दिया जाता है तब कहा जाता है कि अब इस आदमी को राजनीति में धोती लपटने की तमोज आ गई है।

पिछले दिनों एक अजीब दुर्घटना हो गई। हमार एक मित्र दूसर की धोती में फँस कर गिर गए। मैंने दूसर की धोती में फँस कर गिरने वाला पहला आदमी देखा था। जब मैंने उनसे यह सवाल किया कि यह सब हुआ कैसे तो मित्र न कहा—बड़े लोगो की धोती में फँस कर गिरना भी गौरव की बात होती है। मैंन पूछा—मो कैसे? वे बोले—जब गिरने वाले का जिक्र होता है तो उसके साथ उस आदमी का भी जिक्र होता है जिसकी वह धोती होती है।

—आपको दूसरों की धोती में फेंस कर गिराने की प्रेरणा कहाँ से मिली

—प्रेरणा गई भाड़ में, मैं गिरा नहीं था, मुझे गिराया गया है। गजनीति में ऐसा ही होता है।

—इसके पीछे दर्शन?

—दर्शन यही है कि धाती इसलिए पहनी जाती है कि या तो खुद फेंस कर गिरे या दूसरों को गिराओ।

मैंने सोचा कि दूसरों को गिराने वाली प्रथा ही हमारे पञ्चानत्र की पहचान है। जब तक देश में धोनियाँ रहेगी, ऐसा ही होता रहेगा। हर पाँच साल बाद हम अपना एक आदमी तैयार करेंगे और उसमें कहेंगे—जा भड़िया, तू ऊपर चला जा और अपना धोती की लम्बाई बढ़ा। तेरा धाती की लम्बाई में ही हम अपने क्षेत्र का विकास नाम लेगे, धोती पहन और सरकारी गाड़ी में घूम। जा, तेरा गम रखवाला।

हमें विश्वास है कि वह पाँच साल में अपनी धोती में गठान बाँधने में प्रयास हा जाएगा। लोग उमकी धोती खींचेंगे लेकिन वह नगा नहीं होगा। सच्चा पञ्चानत्र का सुख यही है। रहमन होते तो कहते—रहिमन धोती गच्छिए, बिन धोती म्ब मून

## हीरोइन बीमार हो गई है

फिल्म के लिए लेखक की बट पट्टी कहानी थी। डायरेक्टर ने लेखक से कहा—अब फिल्म में तुम्हारा हीरोइन को बीमार करने का है उसको बीमार करा . समझा?

लेखक ने हीरोइन से निवेदन किया—अब समय आ गया है कि तुम बीमार पड़ जाओ चलो, जल्दी से बीमार हो जाओ।

हीरोइन बोली—बीमार पड़ मेरे दुश्मन. मे भी देखती हूँ, कौन माटीमिला मुझे बीमार करता है।

लेखक ने समझाया—देओ, तुम बीमार नहीं पड़ोगी ता हीरो तुम्हें खून कैसे देगा? तुम तो जानती हो हो कि सिवाय हीरो के तुम्हारा ब्लड ग्रुप किसी स नहीं मिलता। थकीन न हो तो डॉक्टर कापमे से पूछ लो।

हीरोइन तुनककर बोली—कौन कापसे? मैं नहीं जानती किसी कापसे-बापमे को। किस फिल्म में था?

फिर वह हिरनी की तरह उछलती हुई लेखक की पकड़ स बाहर हो गई। लेखक जानता था कि कहाना में यह नायिक-हठ है। वह यह भी जानता था कि उसकी नायिका जरा चुलचुली भी है. और जिदो भी है। वह जानता था कि जब फिल्म में नायिका जिद पर आ जाती है, तो बड़े-बड़ लेखक की हालत पतला कर देती है। वह उसे मनाता रहा, लेकिन हीरोइन माने तब ना। वह स्वीमिंग पूल में विकनी पहने कूद-कूदकर नहाती रही और लेखक मुखर्जी की तरह देखता रहा।

डायरेक्टर ने लेखक का बुलाकर कहा— ये क्या तमाश

अभी तक बीमार नहीं पड़ी?

लेखक ने कहा— वह बीमार नहीं हो सकती। दिन भर

तो बीमारी का कोई कीटाणु उसका पाप नहीं आ सकता। फिर

उसकी गेग हांगंधक जक्ति इतनी जड़ गई है, कि उसे बीमार कर

बीमार नहीं होगी।

डायरेक्टर चिल्लाया— बीमार कैसे नहीं होगी। उसके

इलाज पड़ेगा। तुम एक काम करो। उस कसर की बीमारी लग

सकवाली फिल्म बड़ी हिट हो रही है।

लेखक बोला— लेकिन उसे कैमरा हो जायेगा तो मह म

हानी में हाराइन मग्नी नहीं, और आप उसे भारत पर तुल्य है।

डायरेक्टर ने कहा— एग्गी कैसे? हम जो चले हैं। उन कि

ने नहीं दरो। तुम उसका समझाओ कि हम इलाज के लिए

उधर जाने से फिल्म में एक बहिय केबरे और डिस्को मिन

तो बस जल्दी बीमार करो। समझा?

लेखक ने अपनी बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा— लेकिन आप

मास्म कि विदेशों में भी कैमरा का इलाज नहीं होता। जिसे एक बार

उसी मग्ना ही पड़ना है।

डायरेक्टर निश्चित होकर बोला— नहीं होगा तो वापस आ जा

यहाँ भी एक से एक हकीम—वैद्य है। देखना एक पता खिलवाकर उमक

कर देंगे। अपने इधर की जड़ी-बूटी में बहुत ताकत है। हाराइन मग्ना

भी इलाज में। समझा?

सीन तयार हो गया।

होगइन बिस्तर पर लेटी है। लेखक बोला— ठाक स लेटा।

इस तरह लटे-लटे हलवा मत खाओ। बीमारी में तुम्हें हलवा नहीं

है। कैमरा है।

हीरोइन बोली—शरम नहीं आती तुम्हें लेखक होकर डायरेक्टर के जाने पर नाचते हो? तुम तो कहानियाँ लिखने के बदले टलाली करो।

लेखक के आत्मसम्मान को हीरोइन ने ललकार दिया। लेखक तिलमिला या घोला—चुप रहो शरम तो तुम्हें आनी चाहिये पहले तो बहुत अकड़ रही एक बामार नहीं पडोगी। अब क्या हो गया? डायरेक्टर के ह्शारे पर तो तुम भी नाचती हो

हीरोइन बोली—अभी तुम फिल्म लाइन में नये हो। मैं इतना नखरा नहीं रहूंगी तो मुझे हीरोइन कौन मानेगा? एक्स्ट्रा और हीरोइन में कुछ तो फर्क होना चाहिए मुझे तो तुम पर तरस आता है कहाँ फैस गय फिल्मों में। आत्मसम्मान को भी ही चिंता थी तो किसी चौगहे पर पान की दुकान खोल लेते, लेखक होकर टालती

और बात पूरी करने के पहले ही हीरोइन कूदकर घोड़े की पीठ पर बैठ गई।

फिल्म में हीरोइन बीमार थी और डायरेक्टर लेखक को समझा रहा था कि कहानी में अब उसके हीरो का क्या करना है।

□



डायग्नोस्टर ने लेखक को बुलाकर कहा—ये क्या तमाशा है? तुम्हारी हींगइन अभी तक बीमार नहीं पड़ी?

लेखक ने कहा—वह बीमार नहीं हो सकती दिन भर उभे रहलाते रहाने में बीमारी का कोई शीटाणु उसके ग्रास नहीं आ सकता फिल्म में नहा-नहाकर उसकी गेब निगोधक शक्ति इतनी बढ़ गई है, कि उस बीमार करना मुश्किल है। वह बीमार नहीं होगी।

डायग्नोस्टर धिरल्लाया—बीमार कैसे नहीं होगी उसका ब्राप को भी बीमार पडना पडेगा। तुम एक काम करो उसे कैसर की बीमारी लगा दो आजकल कैसावाली फिल्में बड़ी हिट हो रही हैं।

लेखक वाला—लेकिन उस कैसर हो जायेगा तो मह मर जायेगी मेरी कहानी में हींगइन मरती नहीं, आर आप उसे मरने पर तुले हैं।

डायग्नोस्टर ने कहा—मरगी कैसे? हम जो बेटे हैं। उस किसी भी हालत में मरने नहीं देगे। तुम उसको समझाओ कि हम इलाज का रिफ सिवट्जरलैण्ड भेजेगे उधर जाने में फिल्म में एक बढिया कबरे आर डिस्का मिल जायेगा . तुम ता बस जल्दी बीमार करो। समझा?

लेखक ने अपनी बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा लेकिन आपको शायद नहीं मालूम कि विदेशो में भी केसर का इलाज नहीं होता। जिसे एक बार कैसर हो गया उस मरना ही पडता है।

डायग्नोस्टर निश्चित होकर बाला—नही होगा तो आपस आ जायग अपने यहाँ भी एक से एक हकीम—वेद्व है देखना एक पत्नी खिलाकर उसका कैसर खत्म कर देग अपने उधर की जडी-बूटी में बहुत ताकत है। हीरोइन मरेगी नहीं किसी भी हालत में। समझा?

सीन तैयार हो गया।

हीरोइन विस्तर पर लेटी है। लेखक बाला—ठीक से लेटो। तुम्हे केसर है इस तरह लेटे-लेटे हलवा मत खाओ। बीमारी में तुम्हें हलवा नहीं पचना। तुम्हे केसर है।



हीरोइन बोली: चुप रहो डिस्टर्ब मत करो मुझे किसने कह दिया कि मुझे कैंसर है?

डायरेक्टर बोला—डॉक्टर को बुलाओ।

डॉक्टर आ गया। उसके हाथ में बैग था। बैग खाली था। चेहर से वह जल्लाद दिखता था। दरअमल वह फिल्मों में जल्लाद का रोल ही करना था। इस बार फिल्म में डॉक्टर बना था। जल्लाद में डॉक्टर बना था, इसलिए वह अकड़कर चलता था। उसने हीरोइन की ओर देखा। कैमरा उमका आँखों पर था। उमका आँखें चमक रही थीं। फिर एक लांग शाट हुआ। बेड के पीछे एक नर्स खड़ी है। वह बहुत तन्दुरुस्त है। पहले फिल्म में नौकरानी का काम करती थी। इस बार नर्स बनी थी। उसे कौन पकड़कर लाया था, यह लेखक को भी नहीं मालूम था।

लेखक ने डॉक्टर से पूछा—कहाँ का कैंसर है?

डॉक्टर बोला—हमें नहीं मालूम। लेकिन कैंसर है, यह पक्का है। कहीं का भी हो, कैंसर चहा तो हमें कहना।

लेखक ने फिर बुद्धिमानी बताई। कहा—कैंसर नहीं हो सकता कैंसर होने के बाद कोई औगम इतनी लगड़ी कैसे हो सकती है?

डॉक्टर पहली बार डॉक्टर बना था। गमन हो गया। बोला—हम डॉक्टर हैं। कह दिया कि कैंसर है तो बस कैंसर है। आगे कुछ नहीं हो सकता। फिल्म में हीरोइन को खूबसी-खाँसी नहीं होती, इतना हम जानते हैं। सेंट-फ्रमेंट कैंसर है।

लेखक बोला—वायप्सी करवा लेने हैं। बाद में किसी को क्या शक रहें।

डायरेक्टर बोला—तुम्हारी वायप्सी की ऐसी-तैसी जब डॉक्टर ने कह दिया तो तुम लेखक को बौन हाते हो बहम करने वाले। मैं भी मान गया और तुम भी मान जाओ। तुम्हें और भी फिल्मों के लिए कहानी लिखना है। तुम्हारे कैरियर का सवाल है। समझा?

लेखक मान गया लेकिन हीरोइन मानने को तैयार नहीं थी। बोली—मैं इस डॉक्टर के बच्चे को कच्चा खा जाऊँगी, कैंसर होगा उसकी माँ को। मेरे खानदान में किसी को कैंसर नहीं है, तो मुझे कैसे कैंसर हो सकता है।

हीरोइन की बात सुनकर डायरेक्टर नग्न पड़ गया। बाला—ठीक है मेंडम कैमरा नहीं हागा तो ब्रेन ट्यूमर हागा; फिल्मों में आजकल ये भी चला रहा है। हम ट्यूमर डॉक्टर को बुलाकर दिखा देते हैं।

फिर शॉट तैयार हुआ।

दूसरा डॉक्टर आया। पहले वह फिल्मों में जज का रोल करता था। इस बार डॉक्टर बना था। कैमरा क्लोज अप म था। पहले वह हीरोइन की टाँगों से होता हुआ उसके गले तक आया। फिर हीरोइन के चेहरे पर रुक गया। कल्याण जी—आनंद जी पीछे से स्पनिश पर सेंड सिचुएशन का टन कर रहे थे। फिर एक लाग शाट हुआ। इस बार दो हट्टी-कट्टी नर्तकी थीं। ब्रेन ट्यूमर में हीरोइन को पकड़ना भी पड़ सकता है, शायद इसलिए डायरेक्टर ने सावधानी बरती थी।

डॉक्टर पहले 'आर्डर-आर्डर' बोल गया तो सीन कट हो गया। फिर दुबारा कैमरा डॉक्टर पर आया। डॉक्टर गम्भीर होकर बोला—हालात को मद्देनजर रखते हुए मैं इस नर्तकी पर पहुँचा हूँ कि, हीरोइन को ब्रेन ट्यूमर है।

लेखक ने कहा—ब्रेन ट्यूमर हागा तो हीरोइन पागल हो जायेगी। मेरी कहानी का सन्धानाश हो जायेगा। पागल लडकी में शादी कौन करेगा?

डायरेक्टर चिल्लाया—भाई मैं जाये नुम्हारी कहानी। तुम्हें शादी की पड़ी है और उधर फायनेमर हमारी छाती छीन रहा है कि फिल्म जल्दी पूरी करो इसीलिए हम कह देते हैं कि अब हीरोइन को ट्यूमर बीमारी नहीं हो सकती। उसे ब्रेन ट्यूमर है। समझा?

हीरोइन मुस्कराई अब तो वह भी मान गई कि वह बीमार है। उसने डायरेक्टर से पूछा—ब्रेन ट्यूमर होने से मेरा फिगर तो खराब नहीं होगा?

डायरेक्टर बाला—ओह नो, सर्गेनली नॉट। टैट इज नाईस। माई गुड गर्ल!

अब फिल्म में हीरोइन बीमार थी। लेखक खुश था कि उसकी इज्जत बच गई।

दुबारा लेखक जब हीरोइन से मिला, तो हीरोइन हाफ पैंट पहने घोड़े पर बैठी थी। लेखक बोला—तुमको ब्रेन ट्यूमर है और तुम घोड़े पर बैठी हो। गिर जाओगी तो फ्रेक्चर हो जायेगा, और तुम्हारी खूबसूरत टाँग पर प्लास्टर बाँधना पड़ जायेगा।

हीरोइन बोली—शरम नहीं आती तुम्हें लेखक होकर डायरेक्टर के इशारे पर नाचने हो? तुम तो कहानियाँ लिखने के बदले दलाली करो!

लेखक के आत्मसम्मान को हीरोइन ने ललकार दिया। लेखक तिलमिला गया। बोला—चुप रहो शरम तो तुम्हें अभी चाहिये पहल तो बहुत अकड़ रही थी कि बीमार नहीं पडोगी। अब क्या हो गया? डायरेक्टर के इशारे पर तो तुम भी नाच रही हो।

हीरोइन बोली—अभी तुम फिल्म लाइन में नये हो। मैं इतना नखरा नहीं करूँगी तो मुझे हीरोइन कौन मानेगा? एकसूत्र और हीरोइन में कुछ तो फर्क होना चाहिए। मुझे तो तुम पर तरस आना है, कहीं फँस गये फिल्मों में। आत्मसम्मान की इतनी ही चिन्ता थी ता किसी चौराहे पर पान की दुकान खोल लेते लेखक होकर दलाली

और बात पूरी करने के पहले ही हीरोइन कूदकर घोंडे की पीठ पर बैठ गई।

फिल्म में हीरोइन बीमार थी और डायरेक्टर लेखक का समझा रहा था कि कहानी में अब उसके हीरो को क्या करना है।



## शकुन्तला की साड़ी

ऋषि के आश्रम में बेठी शकुन्तला जासूसी उपन्यास पढ़ रही थी। ऋषि दौरे पर आश्रम के लिये चन्द्रा बसुल करने गये थे। एक स्कूटर आश्रम के गेट पर रुकता है। गेट पर एक साधुनुमा गोरखा खड़ा है। स्कूटर वाला सज्जन गजेश खन्ना टाइप आइसी है। अपनी जेब से अठन्नी निकालकर गोरख के सामने फेंककर कहता है—जाआ गाजा पी लेना। उसने बेडौल बुशर्ट पहनी है। उसके बायें हाथ पर गजकुमार दुष्यन्त लिखा है जो कैमरा सामने होने की वजह से दर्शकों का स्फोट दिखाई पड़ता है। वह शकुन्तला को देखता है और उसके प्यार में एक तरफा घायल हो जाता है।

दुष्यन्त ने कहा—देवी आप कौन हैं और यह घटिष्ठा किसका उपन्यास बयो पढ़ रही हैं? पढ़ना ही है तो भगवान रजनीश की कोई किताब पढ़ा। आश्रम में रहकर ऐसी किताबें पढ़ने से बुद्धि नाश होती है।

शकुन्तला गुस्से में उठकर खड़ी हो जाती है। उसकी साँस तेज चलने लगती है। वह मटकती हुई दुष्यन्त के पास आती है। थोड़ी देर उसकी ओर देखती है और उसके गाल पर एक तमाचा मारकर कहती है—आवारा, बदमाश आश्रम में अकेली देखकर भुझे छेड़ता है। दुष्यन्त दूसरा गाल उसके सामने प्रस्तुत करने हुए कहा है—यह गाल भी हाजिर है, तमाचा मारकर मुझे अनुगृहीत कीजिये देवी। यह एक गाँधीवाद सीन है। बीच में डाइरेक्टर ने कहा—तमाचा जोर से मारो। ऐसा लगता है तुम तमाचा नहीं मार रही हो बल्कि दुष्यन्त की दाढ़ी पर साबुन लगा रही हो।

दुष्यन्त ने पाँच-सात तमाचें खाये अब कहीं जाकर शॉट ओके हुआ। जाते समय दुष्यन्त ने कहा—प्रिय, तुम्हारे गर्भागर्भ तमाचें खाकर जी भर गया है अब मुझे आज्ञा दो, जब भूख लगेगी तो फिर हाजिर हो जाऊँगा।

शकुन्तला आश्रम में उकड़ू बैठी चटनी पीस रही है। ऋषि कण्व आश्रम में एकाउन्ट पर लीपा पीती कर रहे हैं। शकुन्तला ने अपना गिरा हुआ पल्लू ठीक किया और बोली—बाबा, आपकी गैरहाजिरी में कल एक लफंग स्कूटर पर यहाँ आया था। मैंने उसे तमाचे मारकर रखाना कर दिया है।

बाबा बोले—बेटा तुमने यह ठीक नहीं किया। वे तो राजकुमार दुष्यन्त थे।

—आप उसे कैसे पहचानते हैं बाबा।

—पिछली बार आर.टी.ओ. न उसका चालान कर दिया था तब मैंने उसे छोड़ा था और तभी से मैं उस पहचानता हूँ।

—अब क्या होगा बाबा।

—कुछ नहीं बेटा तुम डरो नहीं, ऐसे लोगों को भिडाकर रखना चाहिये। कहीं राम्पे में मिल जाय तो उसमें अच्छी बत्ते करना। मारना-पीटना नहीं। ऐसे दिलर लोगो के सहारे भी यह आश्रम चल रहा है।

शकुन्तला आश्रम के बाहर खड़ी टाऊन बस की प्रतीक्षा कर रही है। उधर से राजकुमार दुष्यन्त स्कूटर पर मीठी बजाता हुआ निकलता है। शकुन्तला उसे देखती है देखकर जीनत अमान की तरह हाथ-पाँव हिलानी हुई उसमें माफी माँगता है। दुष्यन्त उसकी ओर ललचायी नज़रों से देखता है। इमी बीच वह कहती है—मुझे स्कूटर पर मार्केट पहुँचा दोगे। वह आगे कहती है—टाऊन बस के पैसे बच जायेंगे और उन पैसे से बाबा के लिये मोहनलाल हरगोबिन्द डाम की पहलवान छाप बीडी खरीद लूँगी।

दुष्यन्त स्कूटर घुमा लेता है। शकुन्तला उस पर कूदकर बैठती है जिससे स्कूटर स्लिप होने-होते बचता है। दुष्यन्त अपना स्कूटर जंगल की ओर ले जाता है।

रुकु-उसा पूछी है यहाँ ले जा रहे हो मुझे

—मुझे नहीं मालूम। डायरेक्टर ने मुझ इस जगह का नाम नहीं बताया है।  
डायरेक्टर चिल्लाया—तुम कैसे हीरो है? हमारा नाम लेता है। हम खुद इस  
एरिया में नया आदमी है। कुछ भा नाम ले दो, मजबूत चलेगा। ये तो फिल्म का जगल है।

एक चट्टान पर शकुन्तला घायल चीते की तरह लेटी है। दुष्यन्त बीमर  
गिद्ध-मा पास बैठा है। डायलाग शुरू होने हैं—शकुन्तला प्रिये, तुम्हारे रेशमी बाल  
कितने अच्छे हैं। मेरी इच्छा होती है कि इसे कटवा कर रस्सी बनवा लूँ ताकि फिल्म  
रिलीज होने पर आत्महत्या के काम आये।

डायरेक्टर फिर चिल्लाया।

शकुन्तला बोली—लकिन ये तो नकली बाल हैं। मजबूत रस्सी बनाना हो  
और मजबूत आत्महत्या करना हा तो बाबा में मिलो, उनके बाल मजबूत हैं और  
टिकाऊ भी है। लोमा लगा-लगाकर उन्होंने अपने बाल मजबूत किये हैं।

दूसरा डायलाग

—तुम्हारी आँखें जैसे एक शान झील। बहुत गहरी, अथाह सागर की तरह  
जिसमें डूब जाने की मन चाहता है।

—तुम्हारी मुँछें, जैसे मैदान पर खड़े दो महुवे के झाड़ू जिसे पकड़कर झूल  
जाने को जी चाहता है।

मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। बोलो तुम्हें मंजूर है शकुन्तला?

—मंजूर है लकिन बाबा ।

—तुम उस बुढ़रू की चिन्ता मत करो। मैं उसे आश्रम के लिये तगडा चन्दा  
देकर मना लूँगा।

पहाड़ी पर एक छोटा-ना मंदिर। मंदिर में भजन गाता हुआ एक साधु।  
दिखने में बूढ़ा लेकिन बत्तीसी मजबूत। पास खड़े दुष्यन्त और शकुन्तला। गन्धर्व विवाह  
के लिये आये ह।

—महाराज, हम विवाह बन्धन में बँधना चाहते हैं, कृपया हमारी शादी  
करवा दीजिये। साधु बोला—मैं सयासी आदमी हूँ, शादी करवाने वाला प्रोफेशनल  
पंडित नहीं हूँ। भगवान की मूर्ति के सामने तुम लोग शादी कर लो, नहीं तो कल के  
दिन मुझे मैं ग्लाही के रूप में घसीटे खाना पकूँगा।

दोनों ने शपथ पूर्वक शादी की और दुष्यन्त ने एक कीमती बनारसी साड़ी धरत में दी।

एक आत्मागाल होटल। अग्रजो धुन पर हेलन टाइप कैबरे चल रहा है। एक टेबुल पर शकुन्तला और दुष्यन्त बैठे हैं। शकुन्तला ब्रूस पा रही है और दुष्यन्त कैबरे देखने में भिड़ा हुआ है। थोड़ी देर बाद उसने कहा—प्रिये तुम कोई बहाना बनाकर काश्मीर चली चलो। चार छः दिन घूम भी आयेगे और हनीमून भी मना लेंगे।

—मो तो ठीक है प्रियतम। लेकिन बाबू को कैसे चकमा दूँ।

—उसका ब्रबन्ध में कर जूँगी—मैं उसे अपने कॉलेज का आनरेरी प्रिंसीपल बना देना हूँ। डोकग खुश हो जायगा।

—इसमें क्या होगा।

—फिर कॉलेज के बच्चों की ट्रिप होगी, जिन करके तुम भी पीछे चिपक जाना।

—तुम कितने अच्छे हो। क्या हम सचमुच काश्मीर जायेंगे।

—हाँ। यदि डायरेक्टर ने चाहा तो।

काश्मीर की ट्रिप के बाद दुष्यन्त फार्म चला गया। शकुन्तला आश्रम में उदास बैठी एक मांजा बुन रही है और गाना गा रही है। एक विरह का गीत जिसे लिखा है आनन्द बख्शी ने और धुन बनाई है लक्ष्मीकान्त प्यारलाल ने।

गाना समाप्त होते ही कण्व ऋषि विपिन गुप्ता टाइप आवाज में बोले—बेटी तुम क्यों उदास दिखाती हो क्या कारण है?

शकुन्तला ऋषि की छानी स चिपटकर रोने लगती है। ऋषि की नकली दाढ़ी के बाल शकुन्तला के कान पर फरफराने लगते हैं और वह कान खुजाने लगती है बाबा कहते हैं—बेटी, मैं जानता हूँ तुम कान क्यों खुजा रही हो। तुम दुःखी हो लेकिन इसकी चिन्ता मत करो। दुष्यन्त बहुत जल्दी वापस लाट आयेगा और फिर तुम्हारा विवाह बड़ी धूमधाम के साथ पब्लिक के सामने होगा। इसकी जिम्मेदारी मुझ पर है।

शकुन्तला रोती हुई बोली—बाबा, ये माँ बनने वाली हूँ दुष्यन्त के बच्चे की माँ।

—तो क्या हुआ। फिल्मों में ऐसा होता ही है। तुमन शायद 'धूल का फूल' फिल्म नहीं देखी। अपने जमाने की यह एक हिट फिल्म है। मेरी माँ तो हिम्मत स काम लो। सब ठीक हो जाएगा।

आश्रम के सामने शकुन्तला बबूल का पौधा लगा रही है। पास ही जूनियर दुष्यन्त खेल रहा है। अचानक पौधा बढ़ने लगता है। बाबा आश्रम में प्रवेश करते हैं। कहते हैं—बेटी दुष्यन्त वापस आ गया है। लेकिन तुम्हें यह जानकर दुःख होगा कि वह विदेश की हवा खाकर तुम्हें भी भूल चुका है और मुझे भी। या नकली आँसू शकुन्तला के गाल पर लुढ़क जाते हैं।

ऋषि बोले—बेटी शकुन्तला, तुम दुःखी मत होओ। उसे किसी का श्राप लगा है।

—किसका श्राप बाबा? कौन है वह निर्दयी जिम्मे मुझे जीते जी बेसहारा कर दिया। मैं भारत की नारी हूँ, अपने दुश्मन को कच्चा चबा जाऊँगी।

ऋषि बोले—वह डायरेक्टर है बेटी।

डायरेक्टर बोला—प्र बाबा, हमारा नाम मत लो। तुम तो फिल्म लाइन में साधुओं का रोल करत-करतें बूढ़ा हो गया है फिर भी डायलाग भूल जाता है।

शकुन्तला बोली—बाबा उसकी एक निशानी मेरे पास है मैं मोहल्ले के



लोगों को जमा करूँगी और पूरे शहर में उमका फजीला करूँगी। देखनी हूँ फिर वह मुझे पहचानने में कैसे इन्कार करता है।

दुष्यन्त अपने फ्लैट से बाहर आ रहा है। शकुन्तला वीर नारी की तरह गेट पर खड़ी है। दुष्यन्त उसे देखकर नाक-भौं सिकोडते हुए कहता है—ए मैडम कौन हो तुम! क्या चाहती हो?

—नहीं पहचाना मुझे? मैं आपकी धर्मपत्नी हूँ। आपने मुझे जय श्री माड़ी सेंटर से यह साड़ी दिलाई थी। क्या सब कुछ भूल गए? हमारा गधर्व विवाह भूल गए? वह बनागसी साड़ी भूल गए?

—कहाँ है वह साड़ी। दुष्यन्त ने गरज कर पूछा।

शकुन्तला मेमने की तरह बोली—गर्जस्टार माहब की लडका उधार लेकर एक शादी में गई है। वह मेरी सहेली है। आज वह साड़ी ले गयी है। कल मैं मुझे दिखाऊँगी।

—सब बकवास है। मेरी कोई शादी-वादी नहीं हुई। यहाँ से तुम फौरन चली जाओ नहीं तो मुझे गिरजाशंकर हवलदार को बुलाना पड़ेगा।

शकुन्तला ने रोते हुए जमा भीड़ से अपील की—भाइयो, आप नो मेरा फेमला कीजिए। राजकुमार दुष्यन्त ने मेरी इजाजत लूटकर मुझे कहीं का नहीं छोड़ा और अब मुझे पहचानने से इन्कार करता है। भीड़ में से एक शैट्टीनुमा मुन्टन्डे व्यक्ति ने समझते हुए कहा—हमारी मानो तो किसी अच्छे वर्काल की मलाह लेकर अदालत की शरण लो। फिल्मों की अदालत में अनोखा न्याय होता है। एक बार उमे कटघर में खड़ा करो फिर देखना फिल्म का वकील कैसे उससे सब कुछ उगलवा लेता है।

शकुन्तला वकील की मलाह लती है। उसका वकील तलाक और रेस्ट्रिक्ट्यूशन ऑफ कान्जुगल राईट्स का स्पेशलिस्ट है। उसे दिलासा देते हुए उत्पल दत्त की टोन में कहता है—तुम चिन्ता मत करो। मुझे वकालत के सारे फिल्मी हथकंडे मालूम हैं। कुछ बचकर नहीं जाएगा। उसे तुमने स्वीकार करना होगा।

मामला दायर हो गया। दुप्यन्त ने एक बहुत बड़ा जानकीदास टाइप वकील लगाया। उसमें कहा, 'ये मामला हाइकोर्ट तक लड़ूँगा। आप फीस की चिन्ता न कर। मैं उस औरत को सबक सिखाना चाहता हूँ।'

अदालत का क्रम। जज साहब मद्रु टाइप अदमी हैं। उनकी आँखें नीली हैं। सर पर वज्रदार विंग पहने हैं। और आवाज बड़ी दमदार है। कुछ लोग अदालत के सामने कुर्मीपो पर बैठे हैं। कण्व ऋषि कर्मडल और भृगुछाला निग सामने वाला पक्ष में बैठे हैं और अदालत की कार्यवाही गौर में देख रहे हैं।

वहम शुरू होती है। शकु तला के वकील कहते हैं—माई लॉर्ड, इस धोखेबाज इन्सान को देखिए।

दुप्यन्त के वकील ने बीच में कहा—आब्जेक्शन मी लॉर्ड। जब तक मामले में यह बात साबित न हो जाए, फरियादी के, वर्कॉल का मेरे मुर्विकल का धोखेबाज कहान का कोई हक नहीं है। जज साहब बोले—आब्जेक्शन सस्टेड। प्रोसीड मिस्टर उत्पल दल, हुप्सीकेट।

—हाँ तो माई लॉर्ड, जरा गार कीजिए। इस भोले-भाले दिग्ब्रने वाले इन्सान ने आश्रम में पलने वाली लडकी को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए उससे भदिर में चुपचाप शादी की। इसे एक बच्चे की माँ बनाया और अब इसे पहचानने में इन्कार करता है। जज साहब ने पूछा—आपके पास इसका क्या सबूत है?

—सबूत है माई लॉर्ड, और सबसे बड़ा सबूत जिसे मैं अदालत में पेश करने की इजाजत चाहता हूँ।

—अदालत इजाजत देती है।

कण्व ऋषि अपनी झोली में बनारसी साड़ी और शकुन्तला के बच्चे को निकाल कर वकील के हाथों में दे देते हैं।

वकील बहस जगिं गखने हुए कहता है—यह रहा सबूत माई लॉर्ड शकुन्तला और दुष्यन्त का बेटा जरा मेरे फाजिल दोस्त गौर से इसे देखे। इसकी सूरत राजकुमार दुष्यन्त की सूरत से कितनी मिलती है।

जज साहब ने बच्चे को गौर से देखा। अदालत में सन्नाटा। पीछे कुर्तियों पर बैठे लोग कानाफूसी करने लगे। जज साहब ने टबिल पर हथौड़ा मारते हुए कहा—आर्डर—आर्डर।

दुष्यन्त के वकील ने बहस का जवाब देन हुए कहा माई लॉर्ड मेरे मुवकिल की जायदाद हड़पने और उसे ब्लेकमेल करने को साजिश इस औरत और इस बूढ़े ने की है। यह बच्चा किसी और का है जिसे मेरे फाजिल दोस्त दुष्यन्त का होना कहकर मेरे मुवकिल का वारिस बनाता चाहते हैं।

जज बोले यह बच्चा अभी छोटा है। जब तक यह बड़ा न हो जाए इसका अमली चेहरा नहीं पहचाना जा सकता। इसलिए अदालत इस फैसले पर पहुँचती है कि मामला पन्द्रह-बीस साल के लिए मुलतवी कर दिया जाए, तभी मच्चा न्याय हो सकता है।

ठहरिय माई लॉर्ड हाँफता हुआ एक आदमी अदालत में घुसना है। वह सीधा बिनेस बॉक्स में दाखिल होकर कहता है मेरे पास इसका सबूत है माई लॉर्ड। एक भाल पहले दुष्यन्त साहब मेरी दुकान में बनारसी साड़ी उधार ले गए थे। क्रेडिट मीमो पर इनके दस्तखत हैं। यह देवी जी भी इनके साथ आयी थीं। उन्होंने मुझसे कहा था कि वे उनकी पत्नी हैं।

जज साहब ने कहा अदालत में वह साड़ी पेश की जाए।

शकुन्तला के वकील ने ऋषि को इशारा किया। व झोले से साड़ी निकाल कर आगे बढ़े।

गवाह न कहा मी लॉर्ड, मैं इन्हे साड़ी उधार नहीं दे रहा था, मुझे साड़ी की कीमत दिलवाई जाए। मैं उधारी का तगाड़ा करने आया हूँ।

उधारी का तगादा आने पर दुष्यन्त के होश ठिकाने आ गए। वह साड़ी की ओर गौर से देखने लगा। अदालत ने पूछा—क्या इस माड़ी को तुम पहचानते हो? साड़ी देखकर दुष्यन्त ने कहा—मे माफी चाहता हूँ मी लॉर्ड। मुझे याद आ गया है कि मैं यह माडा शकुन्तला का दी थी।

अदालत ने कहा—बोलो, अब तुम्हें क्या कहना है? दुष्यन्त बोला—मे शकुन्तला को अपनी पत्नी मानने को तैयार हूँ। दुष्यन्त के वकील ने कहा—मी लॉर्ड भरे मुवक्किल का यह पहला गुनाह है इसीलिए मे अदालत से दरखाम्त करता हूँ कि उसे प्रोवेशन ऑफ आफेन्डर्स एक्ट के तहत छोड दिया जाए।

जज साहब ने फैसला सुनाते हुए कहा—गवाहो क बयान को मद्दे नजर रखते हुए और साड़ी को देखते हुए अदालत इस नतीजे पर पहुँचती है कि शकुन्तला दुष्यन्त की शार्दाशुदा बोवी है आर दुष्यन्त ने उसे नही पहचान कर धांगरेबार्जा का काम किया है। लेकिन हात्मात को मद्दे नजर रखते हुए और फिल्मी अदालत की मान-मर्यादा का बनाए रखने के लिए अदालत दुष्यन्त को बाइज्जत बरी करती है।

अदालत से सभी लांग चले जात हैं। दुष्यन्त और शकुन्तला एक-दूसर को थोडी देर देखते हैं और फिर आपस में लिपट जाते हैं।

शकुन्तला अदालत में पड़ी बनारसी साड़ी को उठाकर चुम लेती है।

## खान साहब-क्रिकेट वाले

खान साहब ने घर पर एक बहुत बड़ी टीम खड़ी की और क्रिकेट में सन्यास लेने वाली मुद्रा में मुझसे बोले—जमाना खराब है भइया। जिनगी की इस पिच पर बॉल बहुत टर्न हो रही है, तुमने अपन बल्ले का किनारा सामने किया नहीं कि समझो खतरा पैकेलियन में ऐसा ब्राओमें कि सब कुछ भूल जाओगे। तुम्हारे पीछे चार-चार खिलाड़ी खड़े हैं वे छाँडेगे नहीं तुम्हें. समझें कुछ?

मैंने खान साहब की ओर टखा। उमर उनकी पचास के आस-पास थी। दाढ़ी कराने से टिम की हुई थी। घर पर अजमेरी लपों। दिखने में पत्रके चमाकौ लगते थे। पेशाना पर सिसजे के निशान। मैंने कहा—चचा, अब तो जाएं दूज कर आइय।

उन्होंने एक बैट्समैन की तरह मुहल्ले में चारा और अपनी नजरें घुमाईं, जैसे देखना चाहते हो। ऊन्होंने बातो का झाड़व मारा तो क्रिकर स पील्डर दौड़ेगा। फिर मेरी ओर आहिस्ता से आए, कुछ इस तरह कि कपिल मनिंदर के पास आता है। कहने लगे—हम तो फाली आन में बच जाएँ वही बहुत है। चा लडाकियाँ और निफट जाएँ तो अपना हज हो गया समझो।

मैंने चुपकी लेतो हुए कहा—खान साहब, कुछ मेडन ओवर फोक लिए होते तो आज यह नौबत नहीं आती।

वे बोले—खुदा बडा मेहरबान है सबका जोड़ा लिखा है. कल फाकक इजीनियर देख गये हैं लडकों को।

मैंने कहा—कौन से इंजीनियर? वे बोले—अरे वही जो ऑयल मिल में फोगमैन है. अपनी जात में तो इसी टाइम के इंजीनियर मिलेंगे. लडकी तो पसन्द

आ गई है, लेकिन मैंने कहा कि जनाब पहले आप टास कर लीजिए कि आप मेरी दुख्तर में निकाह करंगे या टी वी और फ्रिज से।

फिर उन्होंने जेब में दो मुँहवाली डिब्बी निकारी। एक मुँह से दाहिने हाथ के अँगूठे में चूना निकाला और दूसरे मुँह 'गोलका' बीडी की तम्बाकू अपनी बाईं हथला पर मलते हुए बोले—इसीलिए कहता हूँ कि निकाह जो है, वह वन डे क्रिकेट का चोज नहीं है कि जितने अधिक से अधिक रन चाहो बटोर लो। इतर्मानान रखो। क्यामत के दिन जब अम्पायर उँगली उठाएगा, तो क्या जवाब दोगे? कुछ तो खुदा का खौफ रखो दिल में। किम् हदीस में लिखा है कि टी वी या स्क्वटर के बिना निकाह जायज नहीं है। लेकिन कहता हूँ न कि अपना ही पिच जब खराब हो तो किसे दोष दे। जमाने की हवा है साहब! मिर्याँ भाड भी इस मामले में किसी से पीछे कैसे रह सकते हैं।

खान साहब ने हथेली पर रखी तम्बाकू में लगे चूने को ताली मारकर माफ किया और तर्जनी उँगली से तम्बाकू की डठले साफ करते हुए बोले—अख्खुरदार हमारे जमाने में हम तो लाग आन में दूर खड़े थे और मगहूम खालिद ने डॉप थर्डमैन की पोजीशन में खड़े-खड़े पसन्द कर ली लड़की . हम मैदान में इतनी दूर खड़े थे कि देखा ही नहीं कि शर्मिला से मिलती-जुलती है या नहीं . हम तो क्रिकेट की नवाबी में मस्त थे। गौन जोड़े कपड़े में निपट गया निकाह। ऐसा लगा जैम वेन्स्टीडोज छिहत्तर रन में आल डाउन हो गई हो, लेकिन कहते हैं न कि खुदा बड़ा रहमवाला है। आज भी बेचारी घर चला रही है। हम इधर बाहर खाट पर पड़े हैं और वो है कि पैवेलियन से बाहर आने को तैयार नहीं। आर आज देखो अपने वाली को। शादी हुए दो दिन भी नहीं हुए कि घुमा रहे हैं स्क्वटर पर पीछे बिठाकर।

खान साहब थोड़ी देर के लिए रुके। रुकना जरूरी भी था। उन्होंने तम्बाकू की चुटकी निचले होठ में दबाई और अपना मुँह बन्द किया। मुझे लगा कि बिजला की छशाबी से कमेटी कुछ देर के लिए बन्द हो गई है। खान साहब नगरपालिका की नाली तक गये और पिच से तम्बाकू की एक पीक मागकर इस तरह लौटे, जैसे उन्होंने एक चिकि सिगल निकाल लिया हो।

मैंने कहा—चधा, आजकल क्रिकेट बहुत एडवांस हो गया है . फास्ट खेल ही अच्छा माना जाता है . टुचुक-टुचुक सिगल बनाने के दिन लद गये। दमखम

हो तो आजो मैदान में आठ-दस चौके लगाओ दो-तीन सिक्स मारो और नौट जाओ वापस। फास्ट नहीं रहोगे तो पिछड़ जाओगे। पचास ओवर खेलकर बीस रन बनाने के दिन नहीं रहे। विजय हज़ार और चीनू माकंड वाले दिन नहीं हैं मौलाना।

खान साहब जग तन गये। एक तो तम्बाकू धीरे धीरे का असर था ओर दूसरा यह कि हमने पुरान क्रिकेट को जग उनके सामने भीचा कर दिया। वे बोले—फास्ट क्रिकेट में स्टमिना नहीं टिखता बटे मजा तो तब है जब पिच पर दर तक खड़े होकर बॉल की धुलाई करो हमने ये बाल इसी तरह भफेत नहीं किए हैं जिन्दगी का तजुर्बा है हमारा साथ। रवि शाम्जी बने रहोगे, तभी टैम बचोगे अपनी। समझे कुछ?

मैंने कहा—टीम के लिए अब खेलाता कौन है चचा? अपना स्कोर ठीक-ठाक रहे और बॉर्ड वाले खुश रहे।

वे बोले—यही तो बुगई है तुम नये लोगो में। जब तक टीम के साथ अच्छे तालमेल रखोगे, तुम्हारा जगूद बना रहेगा बटे। हमारा टीम का मनोबल गो वैसे ही बहुत गिरा हुआ है। चार दिन की चाँदनी और फिर अंधेरी रात।

खान साहब की फिलामफी मेरी समझ में नहीं आई। मैंने पूछा—चचा, हम तो बन-डे बाले हैं। शाम तक हार-जीत हो जाए। पाँच दिना तक हम नहीं रह सकते। अब आप ही बताइए कि डिफसिव खेल खेलते रहेंगे तो इन मीमित ओवरों में न अपनी पहचान बना पाएंगे और न ही टीम को खतरे से बाहर निकाल सकेंगे।

इस बार मुझे लगा कि मेरी फिलामफी खान साहब को समझ में नहीं आई। वे बोले—बेटे, हम तो इतना जानते हैं कि क्रिकेट जो है धीरज का खेल है। क्रिकेट है तो इसे क्रिकेट की तरह खेला। गिल्ली-डंड की तरह खेलकर क्रिकेट को नीचे मत गिराओ। बड़ी तह जीव का खेल है। आपसी समझ का खेल है। टीम का खेल है। ग्यारह जात के खिलाड़ी होने हैं टीम में। बड़ी जिम्मेदारी का काम है। हिन्दू भी हैं, मुसलमान भी हैं और सिख भी हैं। क्रिकेट में कोई हिन्दू-मुसलमान नहीं होता। क्रिकेट में टीम के लिए सबसे बड़ी चीज होती है बल्लेबाजों की पार्टनरशिप। हमने तो यही सीखा है जिन्दगी में। चाहे जब्बार मियाँ हों या मनमुख भाई, जब भी हमारा साथ रहे, हमने यही समझकर खेला कि हम अपनी टीम के लिए ही खेल रहे हैं, हमें आज भी अपनी पुरानी टीम पर नाज है।

मैंन कहा—चचा, आप तो कह रहे थे कि जिन्दगी की पिच पर बॉल बहुत टर्न ल रही है।

व बोले—सही कहता हूँ बेटे। स्थितियाँ इतनी तेजी से बदल रही हैं कि कब क्या हा जाएगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। किम ट्रेन के नीचे बम रखा है और किम बस को कब और कहाँ रोक लिया जाएगा, खुदा ही जानता है। हम तो अरस्तह से यही दुआ माँगते हैं कि परवरदिगार हमें नेकी के रास्ते पर चला। हमारे दिलों में भार्दचार और माँहब्रत पैदा कर। इस देश की मिट्टी ही हमारा लिय जन्मत है।

खान साहब का सूफियाना अन्दज देखकर मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वं वही खान साहब हैं, जो थोड़ी देर पहले मुस्लिम समाज में बहते हुए दहज की समस्या में परशान थे। मुझे लगा कि खान साहब जिन्दगी के क्रिकेट क अमली खिलाड़ी हैं जिन्हान पिच की समझ के साथ-साथ क्रिकेट को भी समझा है। जो खिलाड़ी टीम के लिए अपने छोटे-मोटे फायदे और नुकसान को भूल जाण, उससे बड़ी कुर्बानी क्रिकेट के लिए और कुछ नहीं हा सकती।

खान साहब भूल गये कि उन्हें अपनी बेटी का निकाह करना है। खान साहब भूल गये कि टॉम के लिए उछाले गये मिक्क के एक तरफ टी वी और दूसरी तरफ फ्रिज है, खान साहब भूल गये कि अभी उन्हें चार लडकियों का निपटाना है।

उन्हे याद रही तः केवल इस मैदान की मिट्टी।

उन्होंने मिर पर रखी अजभरी टोपी का ठीक किया और एक जिम्मेदार बैदसमैन की तरह आगे बढ़ गये।



## आदरणीय

जो महत्त्व पटवारी रिकार्ड में खसरा पाँचसाला का होगा है वही महत्त्व अपने देश में आदरणीय पाँचसाला का होता है। यह पाँचसाला वाला आदरणीय जा होता है, वह झटके में आदरणीय हो जाता है। मार्केट में भले पाँच पैसे की उधारी लोंग न दे, लेकिन उसे पाँच साल का पट्टा मिला नहीं कि लोंग कहन लगते हैं—पूरी दुकान आपकी है। जितना चाहे ले जाइये। बस कृपादृष्टि बनाये रखना;

अपने उधर के लोगों में आदर की यही भावना तो अच्छी है! चुनाव के पहले भले ही पचास गालियाँ दे लेंगे, लेकिन परिणाम निकला नहीं कि आदर में इतना झुक गये हैं कि हमें भी शक होने लगता है कि—“साले ऊपर उठेगे कि जिन्दगी भर झुक ही रह जाएँगे!” इतना आदर देने वाले लोग किसी और देश में नहीं मिलेंगे आपको यह हमारा दावा है। आपको विश्वास न हो तो हमारे विधानसभा क्षेत्र में आकर देख लो। चुनाव परिणाम निकले आज तीन साल से ऊपर हो रहा है लेकिन व अपने जनप्रतिनिधि के आदर में झुके हैं मो झुके ही हैं। कोई उनसे कहता है—“भइया, अब तो ऊपर उठ जाओ हो गया बहुत आदर-सन्कार .. उस आदमी को इतना आदर दोगे तो एक दिन हकबका के मर जाएगा।”

इसी महान परम्परा के कारण अपने देश में बहुत आदरणीय पाये जाते हैं। यह शब्द किसी के आगे एक धक्के में लग जाता है और किसी को उस भर घिसने के बाद भी नमीव नहीं होता। उन लोगों की पीडा लेखक होने के नाते मैं जानता हूँ। मैं एक ऐसे ही दुःखी आदमी को जानता हूँ। घर में खुजा का दिया हुआ सब कुछ है। बाल हैं, जच्चे हैं। छः चक्के वाले हैं। मोका मिलना है तो दो-चार लोगों की सेवा भी

कर देते हैं, लेकिन आदरणीय होने के लिए आज तक तय्य रहें हैं। उनस मिलने का वे कहते हैं—सम्पन्न कर रहा हूँ मित्र कर्म करो, फल की चिन्ता मत करो। अपना तो इसी सिद्धान्त वाले हैं। आज नहीं कल बनेगे आदरणीय। किस्मत में लिखा होगा तो कोई नहीं रोक सकता। बस, मन में लगान है तो जी-जान में भिड़े हैं।

लेकिन मैं जानता हूँ कि वे अपने आपको खुश करने के लिए ऐसा कहते हैं, और शायद इसलिए भी ऐसा कहते हों कि लोग यह न सोचने लगें कि वे आदरणीय होने के लिए मरे जा रहे हैं। अन्दर से कुछ भी हो, रूप में अपने यहाँ के लोगों के साथ ऐसी ही जाने करनी पड़ती है। यह वे भी जानते हैं और लग्न भी जानते हैं। हम तो खैर जानते ही हैं। उनकी नम-नस पहचानते हैं। मोका मिल जाए और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास हो जाए कि अगला इनकी आदरणीय बना देगा तो वे तुरन्त उसके परो में गिर पड़ेगे और कहेंगे—तुम जब तक नहीं कहोगे मैं तुम्हारे पैर नहीं छूँगा—लगे तो दो लात भाग दो। आज तुमन मेरी जिन्दगी की आखिरी इच्छा पूरी का दी कहो तो आज 'कुमार शू सेन्टर' जाकर अपने चमड़े का जूता तुम्हारे लिए सिलवाने का आर्डर दे दूँ, बोलो? इस तरह चुप रहेंगे तो मेरा आत्मविश्वास हिल जाएगा।

एक बहुत ही परमनल किस्सा बताता हूँ आपको। हुआ ऐसा कि एक रात तीसरे पहर जब व घर लौटे, तो खाट पर पड़ते ही उन्हें नींद आ गई। उधर चौथा पहर लगा नहीं कि उन्हें एक सपना आया कि एक सरपच उन्हें बुलाकर गाँव ले गया। वहाँ जाकर सरपच ने बताया कि कुएँ का उद्घाटन उन्हें अपने करकमला से करना है उन्होंने सपने में तुरन्त हाथ पोंछे ताकि कहीं गिरीस-किरीस लगा हो तो लाग शक न करने लगे, कि उनके करकमल इस उद्घाटन के योग्य नहीं हैं।

कुएँ के पास चालला किरीया भण्डार का पण्डाल लगा था। सामने मच बना था जिस पर एक महागजा कुर्सी रखी थी और चार माटी कुर्मियों थी। यह बड़ी कुर्सी थी जिस पर कई चिरजीव और सौ का बंठ चुकी थी। इस बार वे इस महाराजा कुर्सी पर बैठकर उमका कल्याण करने आए थे। सरपच ने पहले पुष्पहार से उनका स्वागत किया तो उन्हें लग कि खुशी के मारे वे कहीं चक्कर खाकर गिर न जाएँ। उनका बस चलता तो वे इस आदर की भावना के लिए सरपच के ही पैर पकड़ लेते। लेकिन उन्होंने विवेक से काम लिया और ऐसा नहीं किया।

गौरव की कला है कि आज आदरणीय

इसके बाद सरपंच रुक गये, गौतम के कोटवार को पास बुलाकर धीरे से काम में पूछा—क्या नाम है इनका जल्दी बता वे कार्यक्रम टोट हो रहा है।

कोटवार को वे कई बार चाय पिला चुके थे इसलिए उनका नाम उस चाय या कोटवार में जताया तो वे 'आदरणीय' के बाद उनका नाम लेकर बोले—हमारे बीच है और वे इस कुर्ण का उद्घाटन करने आए हैं।

महागजा कुर्सी पर बैठ वे अपने नाम के आगे आदरणीय सुनकर इतने मद्गद हो गये कि अब सरपंच यदि यह भी कह देता कि 'उद्घाटन करने के बदले डमी कुर्ण में कूद जाओ' तो वे सचमुच कूद जाते, लेकिन डमी बीच उनकी नींद खुल गई और उनका सपना टूट गया।

सुबह मुझमें चाय पिलाकर बोले—क्यों हो गुरु एक बात तो बताओ।

मैंने पूछा—क्या? वे बोले—क्या चौथे पहर का सपना सच होता है?

एक लेखक होने के नाते उनकी छटपटाहट में समझना है। आप नहीं समझोगे। कभी आदरणीय हुए हो तब समझें ना?

इस ही कहने हैं दाने-दाने पे लिखा है खाने वाले का नाम। कितना मधर्ष कर रहे हैं, लेकिन लोग है कि यह छोटा-सा शब्द उनके नाम के आगे नहीं लगा रहे हैं। यानी कि आदरणीय होने का दाना पाँचमाला पट्टे वाला खा रहा है और वे जहाँ आज से पच्चीस साल पहले थे, वहाँ के वहाँ हैं। पैसा कमा लिया तो क्या, पैसे को चाटे? पैसा तो गली वाली भी कमाली है।

उन्होंने दुबारा जब चौथे पहर के सपने वाली बात पूछी तो मैंने कहा—हाँ, हमारा बाप-दादा तो यही कहते आए थे हो भी सकता है।

वे प्रसन्न हुए बोले—एक चाय और पियो।

उन्होंने छोकरे को बुलाकर कहा—जा रे दो ममोसे भी ला।

आदरणीय शब्द के पीछे महान शक्ति छिपी है इसका अहसास आज मुझे हो रहा था। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि इन देशवासियों को क्या हो गया। साले

बना क्या नहीं देते इस आदमी को आदरणीय? सच कहना हूँ, मेरे बस में होता तो मैं उसे तुरन्त बना देता और कहता—दादा, आज मे मरा खाना-पीना आपके यहाँ

और मेरा विश्वास है कि वे मान भी जाते। इस गेट में क्या बुरा है। वे क्या कोई भी मान जाएगा।

दूसरी घटना यह हुई कि एक दिन कॉलेज के कुछ लड़के उनके पास आए। बोले—आपको क्रिकेट टूर्नामट का उद्घाटन करना है आज सुबह दस बज पढ़ना मेच है।

उन्हे लगा कि हमारे बुजुर्ग बिल्कुल सच ही कहते थे। लो देखो, कल सपना देखा आर आज सच हो गया। कुर्आ नहीं तो किकेट ही सही। अपने का क्या फक पड़ता है। उन्होंने मन-ही-मन मुझे भी धन्यवाद दिया होगा। मैंने भी भाच लिया कि उधर उद्घाटन निपटाकर वे आएँ और मैं समोसा खाने डट जाऊँगा। मैं जानता हूँ कि वे यदि इस पावन बेला पर सो-दो-सौ रुपया चढ़ा भी मँगते, ता वे दे दत।

मे तो सड़क पर आधा घंटे में मडरा रहा था कि वे कब उद्घाटन निपटाकर आएँ आर मैं भा निपट लूँ, लेकिन आदरणीय होने के बाद आदमी जल्दी किसी समारोह से खिम्क नहीं सकता। स्वल्पाहार लेना पड़ता है। थोडा लोगों से मिलना-विलना पड़ता है, तभी तो पता चलता है कि कौन आदरणीय है और कौन स्वल्पाहार में जबर्न उसा है।

बडी देर बाद वे वापस लोट। मुझे भी बहुत भूख लग रही थी। मन बधाई देते हुए पूछा—कैसा रहा कार्यक्रम?

वे गुस्से में बोले—राडको क प्रोग्राम में जाना फालतू हे साले कुछ नहीं समझते।

मैंन फिर पूछा—लेकिन क्या हुआ? कुछ बताइए तो सही।

वे बोले—क्या बताएँ सालो को नाम के आगे आदरणीय तक बोलना नहीं आता उनसे तो गाँव में अँगूठा छाप लोग अच्छे हैं।

मैं समझ गया कि कॉलेज में राडको ने मेरे समोसो पर सकट ला दिया है मैंने साल्वना देते हुए कहा—अब प्रधानमत्री जी नई शिक्षा नीति ला रहे हैं, दुबाग आपके साथ ऐसा नहीं होगा।

वे फिर गुम्से में बाले—दुबारा मोका आने तक हम बचेगे इस दश में?

घातावरण बहुत गर्भीर हो गया था। मैं उनसे यह भी कहना चाहता था दादा, किमी प्रकाश-ब्रजोष्ठ में क्या नहीं घुस जाते? लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा। एक-दो दिन बाद जब नार्मल हो जाँगे तब मैं उन्हें यह सलाह दूँगा तो मग भी कुछ लाभ होगा।

मैंने कहा, "बलता हूँ।" ना भी वे कुछ नहीं बोले कि, 'फिर कथ मिलोगे तभी मैं समझ गया कि धाव बहुत गहरा है। मुझे लगा कि उनका भविष्य अधकारमय हाँ ही जाएगा क्या? मैं तो उनके उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ लेकिन मेरे करने-न-करने से क्या होता है।

कई दिनों तक उनसे इस बीच मुलाकात नहीं हुई। मुझे भी लगा कि वे जरूर किसी गुन्नाडे में लग ह। एक दिन हुआ पसा कि मुझे पॉचसाला आदरणीय के यहाँ जाना पड़ गया। काम आपको नहीं बताऊँगा... टॉप सीक्रेट है। कल के दिन आप इल्ला उडा देंगे तो मग तो कुछ नहीं विगडेंगा अगला बदनाम हो जाएगा।

वहाँ मैंने देखा कि वे पॉचसाला आदरणीय के कान में धीरे-धीरे कुछ बोल रहे थे। उन्हें वहाँ देखकर मुझे लगा कि अब ये आदमी मर्हा लाइन में आया है। जागरूक मतदानाओं के मुँह पर धूकना हुआ यह आदरणीय हो भी जाए, तो कुछ कहा नहीं जा सकता। मैंने भी प्रजातंत्र में कुछ कहना मुश्किल हो है। खुदा करे वह आदरणीय हो जाए तो कुछ लोगों के समासे तो पक जाएँ।



## गधों का ब्लैक

जयपुर में गधों का सम्मेलन हो रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। ऐसे अवसर पर प्रसन्न होना हर भारतीय का नैतिक कर्तव्य है। लेकिन दुःख इस बात का है कि हमारे प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाला गधा वहाँ नहीं पहुँचा। राज्य सरकार को कुछ तो सोचना था कि हमारी वहाँ कितनी बदनामी हो रही होगी। राजस्थान के लोग कहते होंगे—“धिक्कार है एम पी का। पाँच माल में एक गधा भी दँग का तैयार नहीं कर सके।”

हम तो कहते हैं कि आने-जाने का खर्च दे देते तो हम ही चल जाते। बुद्धिजीवी मोचकर सरकार ने मकोच किया होगा लेकिन हमें कोई शर्म नहीं। सरकारी खर्च पर आकाशवाणी कार्यक्रम में जब हम जा सकते हैं तो इस सम्मेलन में जाने में क्या हर्ज है। ऐसे अवसरों पर साहित्यकारों के साथ सरकार को मकोच नहीं करना चाहिए। हम लोग तो सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए ही जीते हैं इस देश में। शान से जाते और राजस्थान के गधों से सद्भावना वार्ता भी कर आते और वहाँ की संस्कृति पर कोई काम करके सरकार में पुरस्कार भी ले लेते।

प्रदेश की राजनीति का हम शिकार हो गये, ऐसा लगता है। दिखने में भले ही हम बगाल-बिहार के लगे, लेकिन प्रदेश के मुख्यमंत्री का प्रमाणपत्र हमारे गले में होता तो हम भी डंके की चोट पर वहाँ जाकर कहते—“हम मध्यप्रदेश के गधे हैं। लो, हमारा सम्मान करो। यकीन न हो तो पीछे खड़े होकर देख लो। हम इतने सीधे हैं कि दुलही तक नहीं मारत। जितना बोझ हर पर लादोगे, हम हँसते हुए ढो लेते

लाकर हमारी किस्मत में कहा है मध्य प्रदेश का प्रातानाधिक्य। हम तो राजधानी में इतनी दूर बैठे हैं कि हमारा नम्बर आने में पहले मुख्य मंत्री के निवास-स्थान पर सिफारिशों चिट्ठियों लेकर एक-मे-एक गधे हाजिर हो जायेंगे। भोपाल जर्मा राजधानी में रहने वालों को ही इसका लाभ मिलेगा यह हम अच्छी तरह जानते हैं। लोग अपने-अपने गधों को खिन्ना-पिलाकर मोटा-ताजा बना रहे हैं ताकि देखते ही मुख्य मंत्री उन्हें सितकट कर लें। हमें भी दोस्तों ने सलाह दी कि कोशिश करने में क्या जाता है। हमारी मानो तो मुख्य मंत्री इन दिनों दुग्गी-झोपड़ी वालों से बहुत प्रभावित हैं इन्सिन्सुम तुम भी किमी दुग्गी-झोपड़ी वाल से एक गधा लेकर राजधानी चले जाओ। सीधे उनके निवास पर जाला। हमारा मुख्य मंत्री बड़े सवेदनशील है। किमी का निराश नहीं करते। वहाँ तो रोज पचासों गधे अपना काम करवाकर लाते रहे हैं।

बतल हमको जम गई। हम गधा खरीदने निकले तो पता चला कि सम्मेलन के कारण दज में गधों के रेट अनाप-शनाप बढ़ गये हैं। ऐसे गधे जो आज तक घर के न पाते थे, उनके रेट भी आममान पर हैं। हम सम्मिलित थे कि सस्ते में मिल जायेगा अपन देश में गधा। डिमांड देखकर रेट बढ़ाना तो हमारी परम्परा है। लोगों को पता चला कि सम्मेलन हो रहा है तो सब गधे अडर ग्राउंड हो गये। एक सज्जन से पूछा तो वे बोले—“तीन हजार ब्लैक चल रहा है—गोल्ड डिलेव्ही।”

हमने सोचा गधा लेने से तो अच्छा है तीन हजार ब्लैक देकर कोई अच्छी चीज ले लेंगे तो कम-से-कम री-मेल वेल्यू तो रहेगी।

घर आकर बताया तो घर वारों ने कहा: “तुम अध्वल दर्जे के मूर्ख हो। तुम्हें ले लेना था। अगर हम तो कहते हैं एक के बदले तीन ले लेना था। अब तो इस तरह के सम्मेलन पूरे देश में कहीं-न-कहीं होते रहेंगे और ब्लैक तो बढ़ता जायेगा। जब ब्लैक पाँच से सात हजार तक बोलचाल पहुँच जाता तो निकाल देते। चार गधों में आधा लाख तो कमा ही लेते।”

हमारी समझ में अब आया कि हमका इस देश में रहकर भी री-मेल वेल्यू का तमीज नहीं है। हम तुम्हें उस सज्जन के पत्न गये। बोले—“अच्छा दादा। द दो एक गधा।”

सज्जन वाले—“गधे किसी की इंतजार नहीं करते बुजूर। वे ता चले गये।”

मने पृछा—“कहाँ?”

वह बोले—“अभी-अभी एक नेता भी आये थे। चार हजार अंजन देकर ल गये। इस गधे से वह बीस हजार न कमा ले तो हमारा नाम बदल देना और हमारे नाम से कोई गधा पाल लेना। बला, अय फूटो यहाँ से।”

समय-समय का फेर है। पहले तो सचिवालय के सामने पचासो गधे चंगते रहते थे लेकिन सम्मेलन का समाचार आते ही उधर एक गधा भी नजर नहीं आ रहा। इसीलिए तो कहना हूँ, मुझे जयपुर भेज देते तो मैं मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर आता। ब्रीटेरियन हूँ। पीने-पान की आदत भी नहीं है। विशुद्ध घास पर ही जीता हूँ। कम खर्च से अपने प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाला मुझसे अच्छा और कौन मिलेगा?

अब तो रोज यही प्रार्थना करता हूँ कि, “या मालिक, मुझे अगले जन्म में गधा बनाना।” गधों के बढ़ते हुए मूल्यों को देखकर यह विचार आया है—आप इसे अन्यथा न लें।

हमारी ता आपस भी सलाह है कि इस दश में जीना है तो गधे की तरह जीवित रहिए; बस आनंद-ही-आनंद है।





## तोता बोला—राधेश्याम

जिम दिन मे मेर तोते मे 'राधेश्याम राधेश्याम' रटना शुरू किया उसी दिन मे मे परेशान था।

दरअमल मरकारी मोकरी मे बहुत-सी बातों का ध्यान रखना पड़ता हे। तोता पालना आमन हे लेकिन इस तोते के कारण कोई लफडा हो जाए तो ग्राहबों के घर क चक्कर काटना नही पोसाता। पता नही कौन-मा ग्राहब किस मंत्री के गुट का हा ओर अपना जहित कर दे।

सुबह-सुबह मास्मान आ गए और तोता-उवाच सुनकर बोले, "कहाँ से पकड कर लए गुप्त इस तोते को?"

मैने पूछा—क्यों, तो वह बोल, "लगातार बिना रुक विधायक जी का नाम लिये जा रहा है ओर तुम पूछते हो क्यों? इतना ता हम भी समझते हे गुरु कि आजकल तुम्हाग गजनीति उठान पर है। हमारा भी जरा खयाल रखना। कही इंटीरियर मे फेक दे ता हमे बचाना। आजकल शर्मा जी की बहुत चल रहो है। हम तो तुम्हारे तोते की बात सुनकर ही समझ गए कि तुम शर्माजी के आदमी हो।"

मैने कहा, "मैं समझा नहीं।"

वह बोले, "अब ज्यादा मत बनी गुरु। गैर दस भाइयों की शिक्षायत लेकर विधायकजी के पास जाते हो ओर कहते हो 'समझा नहीं'।"

'समझा नहीं' उन्होने इस म्याइल में कहा जैसे कहना चाहते हों, तुमस अच्छा तो तोता है जो खुले आम बक रहा है कि वह राधेश्याम वाला हे। बिगाड ला जिसको बिगाटना हे।

उस तोते का किस्सा यह है कि मैं इसे एक देहांत से लाया था। जब वह मेरे यहाँ आया था तब केवल 'तपत-कुरु' ही बोलता था। लोगो ने कहा कि इसे लाल मिर्च खिलाओ तो जल्दी बोलना सीख जाएगा। पिछली बार जब मैं भापाल गया था तो वहाँ के लोगों ने बताया कि भापाल को मिर्च बड़ी असरदार होगी है। मैं वहाँ से एक किलो लाल मिर्च यह मोचकर लाया था कि जितना ताता खाया सो खाया बाकी मैं खा लूँगा। थोड़ी-बहुत अपनी भी बोलने की प्रेक्टिस हो जाएगी। कभी शिक्षक-सम्मेलन वगैरह में जाना पड़ जाता है तो मुक्का बैठने में अपने को भी शर्म लगती है।

मास्साब तोते की तरफ़ इम तरह देख रहे थे जैसे वही उनका सी आर लिखने वाला है। बोले, "गुरु, तुम लक्की हो। एक साला हमारा तोता है सिवाय दाल भात खाने के कुछ नहीं करता। हम तो सिखा-सिखा के मर गए लेकिन ऊँ, आँ भा नहीं करता। दिन-भर साला पिजर में ऊपर-नीचे होता रहेगा लेकिन एक शब्द मुँह से नहीं निकालेगा। कभी-कभी इच्छा होती है कि साले की गरदन मरोड़ दूँ। और देखो तुम्हारा तोता। इसे कहते हैं भई तोता। जब से आया हूँ राधेश्याम के सिवाय दूसरा शब्द ही नहीं बोल रहा है।"

मैंने कहा, "मास्साब भापाल की मिर्ची का असर है वना ये भी मुक्का ही था।"

मास्साब कहना चाहते थे कि अब की भापाल जाओ तो मर लिए भी एक पाव ले आना, लेकिन नहीं बोल। कारण क्या था यह तो नहीं मान्युम लेकिन वे मेरी ओर देखने लगे। बोले, "सुना है ट्रांसफर लिस्ट बन रही है।"

मैंने कहा, "वो तो हर साल बनती है। बाबू लोग सो-पचास मास्टरो का नाम वैसे ही जोड़ देते हैं ताकि गुरुजी लोगो का आना-जाना लगा रहे। इस देश में सबकी गेजी-रोटी लगी है मास्साब।"

नभी पिजर से तोता बोला, "राधेश्याम राधेश्याम।"

मास्साब बोले, "सुना है विधायकजी कुछ मास्ट्रों से बहुत नागज हैं। लगता है कहीं जंगल में फेकेगे। कितनी खुशामद करोगे नेताओं की। खादी का एक कुरा पढ़ने नहीं कि सम्झते हैं मास्टर उनका चैकर हो गया उस दिन नये स्कूल

का उद्घाटन था तो विधायक जी मुझसे कहने लगे कि आपके खिलाफ बहुत शिकायतें हैं। याद जग देखें गहना कहीं हमारा भी नम्बर न लग जाए इस माल।”

मैंने मजाक में कहा, “मास्साब कोई तोता पकड़ लो। आजकल तोनो का ही जमाना है। दो-चार लाल मिर्च डास दो मुँह में। दृष्टान में तो इस साल आपने रिकार्ड तोड़ दिया है।”

वह बोले “ठीक कहते हो गुरु। निवारी मर भी तोना खोजने गए थे इस सडे को। कह रहे थे कोई अच्छा तोता दिखे तो बताना।”

मास्साब ने यह बात इन अदाज से कही कि “पजातन्त्र में बिना तोते के कल्याण नहीं है। जब तक आदमी के पास तोता न हो, उसकी कद्र नहीं है। यदि ठीक से रहना हो तो तोता पालो।”

पता नहीं अचानक मास्साब को क्या सूझा। बोले, “गुरु, इस तोते का पिंजरा अन्दर वाले कमरे में रख दो।”

मने पूछा, “क्यों?”

वह बोले, “कोई शिकायत कर देगा कि तुम राजनीति कर रहे हो। सरकारी नौकरी में रहकर गबनीति को अन्दर के कमरे में ही रखना ठीक है। बैठक में पचास तरह कलोग आते हैं। इसी बात पर कोई शिकायत हो जाएगी तो रिडिपार्टमेंटल इन्क्वायरी में फँस जाओगे।”

मने कहा “इसमें कौन-सी राजनीति है? तोता भई तोता। जो मुँह में आ रहा है, बोल रहा है। और फिर हमने तो नहीं कहा कि राधेश्याम-राधेश्याम कहो। मास्साब, इतनी स्वतंत्रता तो हमारे सचिधान में है। माम्स्ट्री कर रहे हैं इसका यह अर्थ तो नहीं कि एक तोता भी न पाल सके? बड़े माहबो क बगलो पर तो खुले आम तोते लटक रहे हैं। क्या राजनीति केवल माम्स्टिंग के लिए ही है? सिचाई वाला साइब ब्रीफकेस में नोट भर कर सेक्रेटिरियेट में जाता है तब राजनीति नहीं दिखती लोगो को?”

मास्साब बोले, “गुरु तुम भी कहीं मिर्चा-विरची तो नहीं खा गए हो? इतनी तेज बात कर रहे हो कि हमें भी डर लग रहा है। हम तो सनाह दे रहे थे कि राधेश्याम बोलना मिस्रा दिया है वहाँ तक तो ठीक है लेकिन इसका प्रचार मत करो।

बया पता राजनीति में कल क्या हो जाए और तुम तफड़े में पड़ जाओ। वसे मविशाल तो हमन भी पढ़ा है गुरु। लेकिन हम जगह मविधान की लाओगे तो शक्यमी सक्ती म चलना मुश्किल हो जाएगा।'

मास्साब थोड़ी देर के लिए रुके। एक चार मोते की तरफ देखा और बोले, "राजनीति में कौन आदमी कहीं चला जाएगा, उहो कत मकत। लेकिन हमारा कहना इतना ही है कि हमारा ख्याल रखना। बोके की समझ देना कि हमें अपना आदमी ही समझे।"

तमी तोला बान्त, "सधेश्याम. सधेश्याम।"



## कहाँ हो मुर्गीचोर ?

मेरे लिए यह चिन्ना का विषय है कि देश में आज भी मुर्गीचोर हैं। मैं तो समझता था कि आजादी के बाद हमारे यहाँ के चोरो का स्तर मुर्गी से ऊपर उठ गया है। मुझे लोगों को बताने में शर्म लगती है लेकिन कर्म भी क्या? वही तो हमारा राष्ट्रीय चरित्र है। मुर्गी जैसी छोटी चीज पर हम अपनी नीयत खराब नहीं करेंगे तो हमें इस देश का नागरिक कौन कहेगा? इक्कीसवीं सदी में जान को तैयार है हम, लेकिन हमारा स्तर तो देखिए। मैं कहता हूँ—अबे मुर्गीचोर। शर्म नहीं आती ऐसा करने? पहले अपना नैतिक स्तर ऊपर कर फिर चल जाना इक्कीसवीं सदी में।

आप सोच रहे होंगे कि मैं अपने ही सम्काली का बखिया उधेड़ रहा हूँ लेकिन यह भा ना सोचिए कि आपकी पचास रुपए की मुर्गी चोरी हो जाती तो आप क्या करते? नैतिकता और सिद्धान्त की बातें करनी तो मुझे भी आती हैं श्रीमान्। लेकिन मैं पूछना हूँ कि नैतिकता और सिद्धान्त को बात करूँगा तो अण्डे क्या आप दोगे? हमें देशी मुर्गी का अण्डे खा-खाकर मैं इस महान् देश का महान् नागरिक होने का गौरव प्राप्त कर रहा हूँ। भाई लोग ने इस बार इसी मुर्गी पर हाथ साफ कर दिया। मेरा दिल जल रहा है और आप कहते हैं चुप रहें। कैसे हो सकता है यह? मुर्गी जैसे अल्पसंख्यक प्राणी की भी सुरक्षा नहीं रही। बापू के आजादी के सपने चकनाचूर हो गए मेरी इस मुर्गी की चारी के साथ।

सोचता हूँ अखबार में विज्ञापन दे दूँ कि जिम सज्जन ने खाने के लिए या मारने के लिए मेरी मुर्गी चुगाई हो वह अपना नाम और पता जरूर बता दे ताकि मैं उस सज्जन पर कुछ सार्थक माहित्व लोगों को दे सकूँ। लेकिन क्या इस तरह का विज्ञापन देने से कोई व्यक्ति सामने आएगा? इमानदारी का स्तर अपने यहाँ इतना ऊपर उठ गया

ह कि अमला मुर्गीचोर को पुरस्कृत भी करना चाहें तो वह सामन नहीं आया। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? बस, इस कर्म में उदास बैठो हैं। सुरज क्षितिज का पार करना हुआ पश्चिम दिशा की ओर बढ़ रहा है। आकाश पर हल्क गुलाबी रंग की एक पत जमने लगी है। इस गुलाबी रंग में हमारी नैतिकता, हमारा चरित्र, हमारा सबेदा सब कुछ अलग होने को है। कवि हाता ता ऐसी ठोस स्थिति पर एक धारदार कविता लिख देता लेकिन मुझे तो इस क्षितिज पर केवल एक मुर्गी नजर आ रही है जो देश के मुर्गीचोर के हाथों में फड़फड़ा रही है। मैं जानता हूँ वह उम्मे मारकर आज अपनी डायनिंग टेबल पर सजा देगा और अपनी शीर्ष-गाथा में गौरवान्वित हो लेगा।

अनेक कल्पनाएँ आ रही हैं इस मुर्गी को लेकर। मुर्गी याने कि सर्वहारा वर्ग का प्रतीक। मुर्गी याने कि श्रावण की शिकार। मुर्गी याने की एक अन्धकार वर्ग जिस पर झुरा चलाने के प्रति किसी का चिन्तित होने की फुर्सत नहीं है। आप कहेंगे मैं अच्छा खामा व्यंग्य लिखते-लिखते गम्भीर होने लगा। श्रीमान्, मेरी यह मुर्गी मेरे लिए भारतीय संस्कृति का प्रतीक थी। उसके दर अड़े में अच्छे मस्कार की खुशबू आती थी। वह एक मुझ जैसे सभ्य नागरिक के घर में पली थी। इस मुर्गी का चरित्र केवल मैं ही जानता हूँ। दिन-भर पैट के लिए दाने चुगना ही उसकी नियति थी और निश्चित समय पर आर निश्चित स्थान पर अण्डे देना ही उसकी सु-मस्कृत मानसिकता थी। बेचारी आज मुर्गीचोरों से बच नहीं पाई। खुदा मुझे यह दु ख वहन करने की शक्ति प्रदान करे। मेरा अन्तर्मन दु खी है।

गत मुझे एक सपना आया। मुर्गीचोर मेरे कमरे में खड़ा है। मैं उसे देख रहा हूँ। उसका चेहरा ओजस्वी है। तलाट उल्लत है। मर पर बहुत कम बाल हैं। उसमें सफेद कुर्ता और सफेद पाजामा पहन रखा है। चेहर पर सौम्य मुस्कुराहट है, जैसे कहना चाहता हो—एक मुर्गी के लिए इतना परेशान क्यों हो रहे हो?

उसके पहले कि मैं कुछ कहता, उसने कहा, “मैं जनता का सबक हूँ, मेरा योग्य सजा का आदेश दो।”

मैंने पूछा, “क्या तुमने मेरी मुर्गी चुराई है?”

वह बोला, “हाँ, लेकिन यह कार्य मेने जन-हित में किया है। जो काम जन-हित में किया जाना है वह चोरी नहीं कहलाता, जन-सेवा कहलाता है और जो जन-सेवा के लिए शहीद होता है उसे खुदा जन्नत में अच्छी जगह देता है। देखो, तुम्हारी मुर्गी जन्नत के फरिश्तों के बीच कितनी खुश नजर आ रही है।”

क्या हा मुगा चोर

उसने दीवार पर टंगे हिन्दुस्तान के नक्शे पर हाथ फिराया और मैंने देखा कि नक्शा जन्त में तबदील हो गया है। अब जन्त के दृश्य का वर्णन करने लग जाऊंगा तो आप इस रचना को यहीं छोड़कर पुस्तक का पृष्ठ पलट देते और कहेंगे, “मित्र ऐसी जन्त तो नेताओं की कृपा में हम कई सालों में इस नक्शे में देख रहे हैं।”

मैंने मुर्गीचोर से पूछा, “श्रीमान् यह बताइए कि इस देश में मुर्गी जैसे विकामशील प्राणी को अपनी जिन्दगी जीने का मौलिक अधिकार प्राप्त है फिर आपने उसकी स्वतंत्रता का हनन क्यों किया?”

इतनी स्ट्रग हिन्दी सुनकर उसके मन में मेरे प्रति आदर की भावना जागृत होना स्वाभाविक था। भल वह मुर्गीचोर था लेकिन था तो हिन्दीप्रेमी।

वह बोला, “मित्र वास्तविकता यह है कि डाक-बंगले में एक मंत्री जी अपने जन-सम्पर्क दौर में रात्रि विश्राम के लिए रुके थे। उनका पी ए ने मुझे बताया कि मंत्रीजी मुर्गी-प्रेमी हैं। मैंने उन्हें बताया कि इस विधानसभा क्षेत्र में मुर्गीयों की शर्टेंज चल रही है। तमाम मुर्गीयों दाने की तलाश में फलायत कर गई हैं इसलिए मंत्री जी क मुर्गी-प्रेम की रात्रि डाक-बंगले में जीवित रखना सम्भव नहीं है। मेरा जवाब सुनकर पी ए ने मेरे देश-प्रेम को लालकार्य और मुझे बताया कि मंत्रीजी देश के लिए अपना खून फर्माना एक कर रहे हैं तो क्या इस विधानसभा क्षेत्र से उन्हें एक मुर्गी का भी सहयोग नहीं मिलेगा? बस, इसी परेणा में मैंने आपको मुर्गी चुराई है।”

थोड़ी देर रुक कर वह बोले, “आपकी मुर्गी पर मेरी नजर पड़ी और उसका शारीरिक विकास देखकर मैं समझ गया कि इसके दिन फिर गए। मंत्री जी की कृपा से वह सीधे जन्त में आएगी। इसी आदर्श भावना का शिकार यह जन-सेवक हो गया। दखिए आपकी मुर्गी जन्त के फरिश्तों के साथ कैसा फुदक रही है।”

उसने फिर हिन्दुस्तान के नक्शे पर हाथ फिराया और मैंने देखा कि पूरी जन्त इस भित्ति की तरह लात हो गई है और एक फरिश्ता हाथ में तेज छुरी लिये मुर्गी की ओर लपक रहा है।

औख खुल गई। कमरे में कोई नहीं था। दीवार पर देश का नक्शा फड़फड़ा रहा था और मेरी इच्छा फिर से मुर्गीचोर को गालियाँ देने की हो रही थी।

□

## लेखिका का कुत्ता

मिसेज खान उदाम थी। तकलीफ तो इस बात को है कि वह अंगत हों के साथ लेखिका भी है। और जब लेखिका उदाम हॉती है तो पड़ोसियों को तकलीफ हाना है। मुझे भी थी। इसलिए उनसे मिलने को जी मचल रहा था।

मुझे देखकर वह प्रसन्न हुई। बोलो, "आप जानते हो हैं कि मैं उसे कितना प्यार करती थी। जब मैं हजरत भागे हैं मेरा तो खाना हराम हो गया है।"

मेने कहा, "लेकिन कल तो मेरी खान साहब स मुनाकान हुई थी!"

वह बोलो, "मे कुत्ते की बात कर रही हूँ। आपने ना देखा था न?"

मैं कहना चाहता था—देखा ही नहीं था अपने आपको कटवा भी चुका हूँ। कह तो कुत्ते की गाल सील का निशान अभी दिखा दूँ। लेकिन नहीं कहा। यह सोचकर कि इससे मिसेज खान के दु ख का पहाड़ आगे भागे हो जायगा। वह सवेदनशील लेखिका है आर सवेदनशील लेखिका का दुःखी होना कम-स-कम में तो बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा क्योंकि वह सवेदनशील हान के साथ-साथ खूबमूरत भी है।

लेखिकाओं के कुत्ते भी घर से भागते हैं, यह मैं पहली बार देख रहा था। मैं तो ममझता था कि लेखिकाएँ बड़ा सीध-माटा कुत्ता ही पालती हैं, जो केवल दुम हिलाकर ही खुश हो जाना है। लेकिन लगता था कि वह कुत्ता अन्य क्रांतिकारी विचार-धारा में प्रेरित है।

मिसेज खान ने रूमाल निकाल लिया। मैं थोड़ी देर और चुप रहना तो शायद वह रोने लगती। मैंने महसूस किया कि कुत्ते की पीडा उनके चेहरे पर उभर रही थी।



मैने कहा "जी हाँ! बड़ा जानदार था। दरवाजे पर खड़ा रहना था तो लगता था कि घर का मालिक खड़ा है।"

वह बोली, "आप तो देख ही रहे हैं कि मैं कितनी दुःखी हूँ। उसका गम मुझे खाना जो भग्य है। आप जैसे लोग मिलने आ जाने हूँ तो मैं कुछ देर के लिए कुत्ते का गम भूल जाती हूँ।"

ऐसा दुःखद स्थिति में मेरा महत्त्व मुझे खुशी दे रहा था।

वह बोली, "आठ दिनों में अखबार में इशतहार दे रखा है लेकिन कुछ नहीं हो रहा है। ओर हाँ देखिए न अखबार वालों ने भी विज्ञापनों के कितने रेट बढ़ा दिए हैं। पूरे पचास रुपये लग गये। मुझे अच्छी तरह याद है कि पापा ने जब मेरी शादी के लिए विज्ञापन दिया था उस समय केवल पच्चीस रुपये लगे थे।"

शादी का याद करके मिमज खान के चेहरे पर परिवर्तन का लहर उभर गयी। शायद वे थोड़ा देर के लिए अपना दम भूल गयी थीं बोली "मैं लाने वाले का एक सौ रुपये इनाम भी देने की सोच रही हूँ।"

मेरी इच्छा हुई कि मैं कुत्ते को ढूँढने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दूँ। मुझे लगा वास्तव में मिमज खान बड़ी लेखिका हैं।

और एक मेरा कुत्ता है। पत्नी ने प्यार से नाम रखा है, कालू। भला यह भी कोई कुत्ते का नाम हुआ। बिल्कुल आदमी के नाम की तरह लगता है। किमी के सामने नाम लने में भी शर्म आती है। दिखने में काला दूसा। शरीर पर कई जगह बाल झड़ गये हैं जैसे मखमल के कपड़े के रेशे झड़ गये हों। कुत्ता तो परिवार की शान होता है। जब पत्नी उसे प्यार से कालू कहती है तो इच्छा होती है कि सल्ले को दो लात लगाऊँ। पत्नी के सामने दुम हिलाने में तो उसने बड़े से बड़े को भी भात कर दिया है।

मिसेज खान कुत्तों का मूल्यांकन कर रही थीं। और मुझे कोफ्त हो रही थी। कालू याद आ रहा था जा कमबख्त मेरे घर से भागने का नाम ही नहीं लेता था। आखिर मैं भी तो छोटा-मोटो व्यंग्यकार हूँ। घर से भाग जाना तो कम-से-कम साहित्यका ता हमदर्दी दिखाते। मैं मोच रहा था कि घर जाकर श्री कालू जी को दस-बीस डड जमाऊंगा। डडे में तो बड़े से बड़े भूल भी भाग जाते हैं आखिर वह तो कुत्ता है। कम-स कम इसी बहाने साहित्य में कुछ नाम हो जाएगा।

मिसेज खान ने मरी दुखती रग पर हाथ रख दिया। बोली, “आपका कुत्ता भी तो शायद भाम गया था न।”

मे कहना चाहता था—मेरे ऐसे भाग्य कहाँ। लेकिन इमने मैं होनता की भावना में प्रसित हो जाना। ओर एक लेखिका के सामन एसी हरकत करने में मुझे शर्म आ रही थी, इसलिए बोला, “जी हाँ। आपको याद हैं पिछली बार त्रा कवि सम्मेलन हुआ था। मैं यह मोचकर कि व्यंग्यकार का कुत्ता है, कुछ साहित्यिक टेस्ट तो रखता ही होंगा उसे अपने साथ कवि सम्मेलन में ले गया। लेकिन पट्टा वहाँ से जानें कब गायब हो गया। न पूछिए, बॉवो इतना रोई कि क्या कहूँ। कहने लगी आग लग कवि सम्मेलन को। माटी मिले कवियों का मुरदा निकले। मेरे प्यारे कालू को मुझसे छीन लिया। खुदा उनको दोजख नसीब करे।”

“आप ठीक कहते है। इमको केवल आरत ही समझ सकती है कि कुत्ते के लिए उनके दिलों में कितनी जगह होती है। आप ठहर मर्द। आप क्या जानेंगे कुत्ते का दर्द।”

मैं कहना चाहता था—“मर्द कुत्ते का नहा कुत्ते के काटने का दर्द ही समझ सकते हैं।”

मिसेज खान बोलीं, “मेरा टाइगर भौकता था तो पूरा मुहल्ला सहम जाता था।”

वे फिर उदासी की सीढ़िया पर चढ़ने की भूमिका बना रही थीं। और मेरा कुत्ता है, किसी को भीकेगा तो पहल दुम दबाकर घर में घुसेगा और फिर परछी पर खडा होकर ऐसी मरियल आवाज में भीकेगा कि मन्सूबी भी नही डरेगी। क्या करें पत्नी ने उसे ट्रेनिंग ही ऐसी दी है।

मिसैज खान वोलों "मेरा लेखन मफ़ा कर रहा है। कुछ लिख ही नहीं पाता हूँ। कुछ सूझता ही नहीं। जब तक वह सामने नहीं हाता कोई प्लॉट ही नहीं आता दिनाग में।"

वह एसे बोल रहो गीं जैमे उनके बदल उनका कुत्ता ही कहानियाँ लिखत है आर उस पर मॉलिक तथा अप्रकाशित का प्रमाण-पत्र भी तारा देता ह।

मेरी इच्छा नहीं हो रही थी कि कुत्ते पर आधारित इस एगिचर्चा गोष्ठी का छाडकर उठ जाऊँ। लेकिन इमी बीच पत्नी का मदश आया कि जल्दी आआ।

घर पहुँचा। पत्नी मुँह फुलाए बेठी थी। जैसे तो खुदा के फजलो-कगम से उसका चेहरा ही ऐसा है कि कुछ पता नहीं चलता कि किस मूड म है। लेकिन आज चेहर पर फूलन कुछ ज्यादा परमेठ ही थी। बोली, "घटे भर से जहाँ क्या कर रहे थे? मर पाए तो दस मिनट बैठने पर ही जान पर बन आती ह।"

नेने कहा, "मिसैज खान दुःखी हैं। उनका कुत्ता भाग गया है।"

वह तुनक कर वाली, "दूसरो के कुत्तों की पट्टी है। काल सुबह से घर से गायब ह इसकी फिकर नहीं है?"

मैं खुश हो गया। चलो अपना कुत्ता भी समझदार निकला। कम-से-कम मिसैज खान का कुछ तो असर हुआ।

पत्नी बोली, "जल्दी बाजार जाओ। शक्कर आर चाय की पत्ती नहीं है। अभी मुहल्ल की ओरतें पूछने आएंगी। मैंने मुहल्ल मे भवको खबर कर दी है कि हमारा कुत्ता भा भाग गया।"

मैं बाजार जाने के पहल मिसैज खान को यह खुशखबरी सुनाता चाहता था।

जैसे ही उनके घर पहुँचा तो देखा कि मेरा कालू मिसैज खान का गोदी मे लटा था और मिसैज खान प्यार से कह रही थी, "कालू, मैंने तुम्हें पाला होता।"

## एक कुत्ते से साक्षात्कार

इस मुहल्ले के लगभग सभी कुत्ते आत्मनिर्भर हैं। उन्हें गोरो-गोरी के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता। उनकी पूँछ आह्वान की प्रेरित्स भी करीब-करीब मरामग गयी है। भौंकने का कामने से भी व आत्मनिर्भर है। उन्ह किमी पर भी भौंकने का छु है। लेकिन उस बीच इन कुत्तों की समझ भी काफी हद तक विकसित हुई है। उनके सोने के कामने से एक सूची हाती है जिन पर उन व्यक्तियों और पदाधिकारियों के नाम होते हैं जिन पर उन्हें अनिवार्य रूप से भौंकना है। ये कुत्ते इन्हे कंडस्थ कर लेते हैं।

सुक्ष के नाशते मे इन्हें छीछड़ू दिये जाते है। उन छीछड़ू मे हड्डी नहीं होती। कुत्तों के संस्कार अच्छे बनाने के लिए उन्हें समाह म एक बार हड्डी दी जाती है। वेम भी श्रब इन कुत्तों को हड्डीया के प्रति कोई आकर्षण नहीं है। कभी-कभी तो ऐसा हांवा है कि सतस मे पूज्र बार मिनने वाली हड्डी की ओर वे देखते तक नहीं। दोपहर में उन्हें गोशर दिया जाता है। प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा इनक भोजन मे मनुलित रखा जाती है। तब वही जाकर इनको समझ आती है कि किन लोगों पर नहीं भौंकना है। शाम को उन्हें आँगन म बाँध दिया जाता है ताकि वे सड़क के बाहर चलने वाले लोगों को देखे और पहचाने कि आदमी जिनकी प्रकार के होते हैं। शाम के समय व लगभग मौन धारण करते हैं और गभीरता से यातव-प्रवृत्ति पर चिंतन-मनन करने हैं।

उम मुहल्ले के हर घर में एक कुत्ता है। जब भी कोई नया आदमी इस मुहल्ले मे शिरफ होता है ता पहले मकान म कुत्ता आता है। फिर बाद मे क्रिज, टापी आर बीबी-बच्चे दाखिल होते है। लगभग मुहल्ले के सभी घरों मे एक साहब और एक

१३

—

कुत्ता अनिवादी रूप में जाता है जब गौहत्या घर पर मछा हान नो कुत्ता आने शानो री स्थापन करता है। येम साहब यह बताती है कि आने वाला किम आदमी पर नहीं भौकता है।

कुल मिलाकर खान-पाने के मामले से लेकर पूँछ हिलाने आर भोकने तक के मानने में इस मुहल्ले क कुत्ते आत्मनिभ हैं। अपनी-अपनी किम्पते हैं। शहर में यहाँ एक कुत्ते की कॉलोनी है जहाँ भय, सुमस्कृत और मस्कामशील कुत्ते रहते हैं।

### साक्षात्कार के संपादन अंश

- इस मुहल्ले का एकता और अखण्डता के बारे में आप क्या सोचते हैं ?
- इस बारे में मैं अपनी कोढ़ राय नहीं देना चाहता। उतना कह सकता हूँ कि इस मामले में हम आदमियों में अच्छे हैं।
- लेकिन यह देखा गया है कि आप अपनी ही चिरद्वी के लोगों पर ज्यादा भौंकते हैं। क्या इसमें अंदाजा नहीं लगाया जा सकता कि आप कुत्ता-समाज की अखण्डता पर पश्चिचा लमा रहे हैं ?
- दाअमल उन कुत्ता को हम डेय दूग्ध से देखते हैं जो गर्भवियों और मडकों पर बिना किसी आत्मसम्मान के घूमते हैं। कुत्ता का अपना आत्मसम्मान होना है, अपनी पूँछ होना है। संविधान में पूँछ हिलाने की स्वतन्त्रता जरूर है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम किसी भी आदमी के सामने इसे हिलायें। पूँछ के मामले में इमारत मुहल्ले के कुत्ते लागरुक हैं। हम दूसरे कुत्तों पर भौंकते हैं, वह केवल उन्हें यह सिखाने के लिए कि आत्मसम्मान की जिंदगी जीना सीखो।
- आपन पूँछ हिलाने की बात कही है। मैं समझता हूँ, यह नैतिक अधिकार है कुत्तों का। आप उस तरह वस्तुव्य रकार क्या अन्य कुत्तों के इस नैतिक अधिकार पर प्रहार नहीं कर रहे हैं ?
- नैतिकता की बात आदमा सोचते हैं। हम कुत्तों के लिए नैतिकता एक गार-कानूनी चीज है। हम स्वामिभक्ति का ही नैतिकता की परिभाषा मानते हैं।
- आपन स्वामिभक्ति की बात उठाई तो मैं आपसे एक सबलन पगना चाहूंगा।

उन कुत्तों के बारे में आप क्या सोचते हैं जो इस इलाक में स्वामिया के अधीन में दिशाहीन हो रहे हैं?

- आपने अच्छा प्रश्न उठाया है। स्वामिभक्ति हम कुत्तों का पारंपरिक गुण है। हर कुत्ता जन्म पेटा होता है ता उसकी माँ कहती है—बेटा किसी अच्छे मालिक की तलाश कर लेना जो तुम्हें सुरक्षा देता रहे। फिर जब कुत्ता बाल्य होता है तो उसमें दिशा नहीं मिल पाती। वह मुहल्ले के आसपास कुत्तों के साथ घूमने लगता है। गलत दिशा तक भटकता पर धूमता है। उसे लगता है कि स्वामिभक्ति में आजादी बड़ी चीज है। वह स्वच्छंद रहना चाहता है। फिर रात के अंधेरे में एक आदमी शगवत नग में टुक चलाता हुआ जाता है और उसे रोदककर चला जाता है। अब आप बताइए कि आजादी बड़ा चीज है या स्वामिभक्ति? हम इस मुहल्ले में आज वर्सा से रहते हैं। एक सम्मान की जिदगी जी रहे हैं। हमें इस बात का भय नहीं है कि कोई नेज टुक हमें रोद टालेगा। यदि किसी ने हमारी ओर उँगली उठाई तो हमारा स्वामी हमारे लिए उसकी उँगली ताड़ देता है।

- मैं समझता हूँ, आप विषय में हट रहे हैं। बात दिशाहीनता की हो रही थी और आप स्वामिभक्ति की लाइन पर आ गये। मेरा मूल प्रश्न यह है कि कुत्ता समाज की उम् दिशाहीनता की जिम्मेदारी आप किम पर डालते हैं? और, दूसरी बात यह है कि क्या आप यह सोचते हैं कि हमारे इन कुत्तों के हित में किसी स्वामी का होना आवश्यक है?

- मैंने जैसा आपने कहा था कि हर कुत्ता उमीलिया पेटा होता है कि वह एक ऐसा स्वामी तलाश करे जो उसे यह बताये कि कब, कहाँ और किस पर भौंकना है। यह भौंकने की तभी हर कुत्ते में होती जरूरी है। जब हम भौंकते हैं तो हमें अपने स्वामी का सुरक्षा प्राप्त होता है। जब भौंकने के मामले में हमें एक दिशा देता है। अक्सर आपने देखा होगा कि एक विशाल मुहल्ले का कुत्ता कबल अपने मुहल्ले में प्रभावशाली दैर्घ्य से भौंक पाता है। लेकिन, जब वह दूसरे मुहल्ले में जाता है तब उसकी यह भौंकने की क्षमता बहुत कम हो जाती है। कभी आपने सोचा है कि ऐसा क्यों होता

है? यह सब इसलिए होता है कि अपने मुहल्ले के अतिरिक्त उसे दूसरे मुहल्ले में भ्रमण का अभाव नजर आता है।

- मुझे क्षमा करें। अभी आप मूल पंजन पर नहीं हैं।
- हम कुत्तों में आप इससे अधिक और किन्हीं प्रकार की अपेक्षा न करें तो ज्यादा अच्छा है। इस मुहल्ले में हमें यही सिखाया जाता है कि जो कुछ कहो बहुत सोच-समझकर कहो। कुत्ते हो—इसका यह मतलब नहीं कि जेम्स मुँह में आधा भौंक दिया। हमें यह सिखाया जाता है कि बिना सोचे-समझे भौंकने के परिणाम घातक भी हो सकते हैं।
- मैं आपका बहुत समय ले लिया। अंत में आपमें केवल इतना ही पूछना चाहता हूँ कि आप अपनी बिगदरी के नाम कोई संदेश देना चाहे तो मुझे बताये।
- जिन कुत्तों के सामने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। जो कुत्ते अपनी जिम्मेदारी समझते हैं, जो यह भ्रम मूस करते हैं कि उन्हें आदमी की अपेक्षा समाज में ऊँचा स्थान बनाना है, उनसे मैं यही कहना है कि वे यह न भूलें कि वे कुत्ते हैं, और कुत्ता होने के नाते उनके भी कुछ मौलिक अधिकार हैं, जिनका उपयोग उन्हें काफी सोच-समझकर करना है। जो कुत्ता भौंकन का आजादी का मतलब समझ जायगा वह कभी दुःखी नहीं होगा।

साक्षात्कार पूरा करके जब मैं बाहर निकला तो एक लावारिस कुत्ते ने मेरी आर ललचाई नजरो से देखा जैसे कहना चाहता हो—“हमारा साक्षात्कार कब लगे?”

## छूटे हुए कबूतर

पहली बार अपने मंत्री जी न दूरदर्शन पर कबूतर उड़ाए। मन प्रसन्न हुआ। कई दिना से टी वी पर नाना प्रकार के जानवर देखकर थोरियत होने लगी थी। मंत्री जी के हाथा मे कबूतर उडे और दूरदर्शन वालो न कैमरा आभमान म तान दिया। फिर नही कहना कि दूरदर्शन वाला ने शातिदूतो को मही कवरेज नहीं दिया। शेर-चाने देखकर हमारी मानसिकता भी मासाहारी होने लगी थी। इस राजनीति मे कबूतर जेमे प्राणी पर किसा का ध्यान नहीं गया। सब अपनी कुरसी बचाने के चक्कर म रह अचानक जब मंत्री जी ने कबूतर उड़ाए तो लगा जेमे कबूतरों के भावा का पुनर्मुल्यांकन करने क लिए व्यवस्था मे बैठे लोग हडबडा रहे है।

उधर मंत्री जी ने गजधानी मे कबूतर उड़ाए और इधर अपन शहर म एक खेल-प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुए एक उच्च प्रशासनिक अधिकारी ने भी यहा काम किया। उडा दिये कबूतर। याने कि अब व्यवस्था और प्रशासन मे चारो तरफ कबूतर उडान का फेशन चलेगा। हम ईमानदार नागरिक है। जो काम हमारे मंत्री करेगे वही काम हम भी करेगे। जहाँ मौका दिखेगा, उडा देगे कबूतर।

मेर एक मित्र ने कहा, "या, बडे जोगदार कबूतर है। कहीं मे पा गए पुलिस वाले। अपने यहाँ तो लकवा के इलाज क लिए भी कबूतर नहा मिलते।"

मैने कहा, "डॉक्टर काजी साहब के यहाँ से नाग होगे पुलिस वाल। उन्क कबूतर पालने का बडा शौक है। ऊपर से आदेश हुआ होगा कि बडे साहब इस बार कबूतर उड़ाकर समारोह का शुभारम्भ करेगे। एस पी साहब ने थानेदार को वायरलेस पर खबर दी होगी कि दो-चार अच्छे कबूतर भिड़ाकर रखना, बडे साहब के लिए।



शुट हुए कबूतर

कहा ऐसा न ब्रौ कि पश्चात्त में पुलिस की भूमिका सदिग्ध हो जाए और माहबों को ऐसा लगे कि पुलिस दो कबूतर क लायक भी नहीं रही।”

वह बोले “यार, तुम बे-पर की हाँकते हो। इतना बड़ा एस पी क्या ऐसा आदश दगा? एस पी माहब भी जानत हैं कि देश में शांति-व्यवस्था बनाए रखने के लिए कबूतरों की नहीं, पुलिस के जवानों की जरूरत हार्ता ह। कबूतरों के भगेसे रहने क टिन गण थॉस जब तक पुलिस की तानी नहीं चलेगी हमें भी नहीं लगगा कि हम शांति-व्यवस्था में से रहे ह। तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ कि इस तरह कबूतर उड़ा देने से शांति स्थापित नहीं होती। आजादों के बाद हमारी आदतें बदल गई है। अब कबूतर देखकर हमें उनके खून की मारिण करने की इच्छा हार्ता ह। शांति-दूत की दुर्गाति हो रही है बॉस। क्या?”

कार्यक्रम का शुभागम्प हो चुका था और मुख्य अतिथि अपनी आसदी से लागो को समझा रहे थे कि प्रतियोगिताओं और खेलों में आपसी सद्भाव कितना अरुगी ह हार-जीत तो होती ही रहती ह लेकिन सद्भाव कायम रखने में ही लाभ है। दो दल में एक दल तो हारता ही है, लेकिन खिलाड़ी की भावना का पमिचय देना ही हमारी परम्परा रही है। मुख्य अतिथि न लागो का हमारे महान संस्कृति का बाद भी दिलाई अगर बताया कि हम कितने महान हैं। वे प्रकट और बोधा बाइ का उदाहरण देने के मूड में आ गए थे, लेकिन कुछ साचकर उन्होंने बात को इस तरह मोड़ दिया—

मैं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ कि ये खेल आपसी सद्भाव और शांतिपूर्वक निपट जाएँ। आपने मुझे इस अवसर पर कबूतर उड़ाने का अवसर पदान किया, इसके लिए मैं खेल-समिति के सम्मन पदाधिकारियों का आभारी हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप आसमान में उड़ते इन कबूतरों से प्रेरणा लें और अपने जीवन में ऊपर उठने का प्रयास करें। आपको कबूतर से शांति बनाए रखने की प्रेरणा भी लेनी है। इसे न भूले। मुझे विश्वास है कि इन शांति-दूतों को आप खेल में नहीं भूलेगें। जय हिन्द!”

उधर मुख्य अतिथि ने भाषण में जय हिन्द लगाया और इधर मंत्र मित्र बोले, बॉस मुझे रागता है कि आपने प्रधानमंत्री अब हर राज्य में कबूतर उड़ाने का कार्यक्रम कर देंगे। सीयूजी दिग्ग बर्ड ड्रज पर परफेक्ट शांतिदूत। आपका क्या विचार है? ब्लाट डू यू थिंक अबाउट दिग्ग कबूतर कार्यक्रम?”

मने कहा, "मुख्य अतिथि कितनी ऊँची बात का रहे थे और तुमने यह टिप्पणी कर उनकी उच्च भावना का सत्याभाष कर दिया। कभी तो गजनीति से ऊपर उठकर साधा करो। क्या हमने अपने मंत्रियों को कबूतर उड़ाने के लिए विधानसभाओं और लोकसभाओं में भेजा है? कबूतरों को कबूतर ही रहने दी, उमने किसी गजनीति या प्रदेश में मत जोड़ा!"

मित्र ने दृग्ग सवाल किया, "अच्छा वॉस, मान लो कि अपने प्रधानमंत्री ने प्रदेश के मुख्यमंत्रियों को आदेश दे दिया कि हर कार्यक्रम में कबूतर उड़ाना अनिवार्य है बिना कबूतरों के कोई सम्मरोह किमी भा राज्य मे सम्मन्न न हो। फिर क्या होगा?"

मैंने पूछा, 'हर कार्यक्रम से मतलब?"

वह बोले, "मतलब यह कि ऋण माफ कर रहे हैं तो कबूतर उड़ा रहे हैं आग्रण लागू कर रहे है ता कबूतर उड़ा रहे हैं, भूमिहीनी का जमीन के पट्टे बाँट रहे हैं तो कबूतर उड़ा रहे हैं और किमी जेल का उद्घाटन कर रहे हैं तो भी कबूतर उड़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री स्ट्रुक्चली यह आदेश दे दे कि किसी भी प्रदेश में कोई भी मंत्री बिना कबूतर के दौर पर न निकले। पहले देख ले कि कबूतर की व्यवस्था हुई है या नहीं, उसके बाद ही अपनी लालबन्धी वाली गाड़ी में बैठें। अब कहो, कहाँ में आणी इतने कबूतर? अपने काजी साहब का पूरा दड़बा पुलिस वाले ही खाली कर दये क्योंकि अपने यहाँ हफ्ते में दो बार कोई-न-कोई मंत्री आ रहा है।"

मैंने कहा, "अपने पगानमंत्री का देश की चिन्ता है, कानून और व्यवस्था की चिन्ता है, पेटोल-सकट की चिन्ता है साम्प्रदायिक दगा और आतंकवाद की चिन्ता है, और तुम काजी साहब के दड़बे के लिए परशान हो। एक बात अच्छी तरह समझ लो-- जिस क्षेत्र में हमारा मंत्री जाएगा वहाँ का दड़बा आत्र नहो तो कल खाली हाँ ही जाएगा एक मंत्री आता है तो स्वागत-समारोह में हजारों और लाखों रुपए खर्च होते हैं। यह रुपया क्या तुम अपने घर से भरोगे? जो पार्टी के कार्यकर्ता होते हैं, वही चंटे में रुपया जमा करते हैं और मंत्री जी को प्रसन्न करतें हैं। टुकों और चमो में लोगो को बिठाकर लाया जाता है ताकि मंत्री जी को लगे कि इस क्षेत्र में उनके दगाडा जन-समर्थन प्राप्त है। ऐसी स्थिति में काजी साहब तो क्या, किमी का दड़बा नहीं बचेगा।"

झूठे हुए कबूतर

वह बाले, "बाबू कि अब जो भी आदमी थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाने जाएगा उसमें मुर्शी जी कहेंगे पत्रले दो कबूतर लाओ, फिर तुम्हारी रिपोर्ट दर्ज करते होंगे। और जब फरियादी कहेगा कि कबूतर नहीं मिल रहे हैं तो मुर्शी जी उसके सम्मान में आदरसूचक शब्दों का इम्फेण्डल करते हुए कहेंगे--नहीं मिल रहे हैं तो थाने में रिपोर्ट लिखवाने क्यों आ गए? जाओ अपना मुँह काला करो। साले, कानून भी भंग करोगे और बिना कबूतर के पुलिस से तफ्तीश करवाओगे? यहाँ हम मंत्रियों के माँ परशान हैं ऊपर से बड़े साहब ने लिख दिया है कि थाने में कबूतर नहीं मिले तो पुरे थाने की लाइन-अटैच कर दिया जाएगा, और तुम कहते हो कहाँ से लाएँ? पुलिस से काम करवाना है तो कहीं से भी लाओ नहीं ला सकते तो अपने घर बैठो। कोई तुम्हारी रिपोर्ट के बारे में पुलिस विभाग नहीं चल रहा है।"

वह इस तरह सवाद बोल रहा था जैसे कोई मँजे हुए कलाकार हो। मैंने कहा, "तुम तो दूरदर्शन या आकाशवाणी में चले जाओ कबूतर सवाद बाँधा है। मुझे भी लग रहा था जैसे साक्षात् थाने में मुर्शी जी मुझसे कह रहे हों कि कहीं से भी कबूतर लाओ और अपना काम करवाओ।"

अपनी तारीफ सुनकर वे बोले, "बाँस, हम तो इस नाकमी के चक्कर में मार खा गए, नहीं तो आज बहुत बड़े कलाकार होते। फिल्म-लाइन में जाने के लिए हम घर से पैसे लेकर भागने की पूरी मानसिकता बना चुके थे, लेकिन तभी क्या हुआ कि फादर एक्स्पायर कर गए। हमने सोचा कि छोटी-मोटो नोकरी मिल जाए तो घर का खर्च चले, यही सोचकर मास्टर्स की लाइन में आ गए। हमें इतना कमजोर मत समझना बाँस हमारी कल्पनाशक्ति एकदम टाइट है इस मुख्य अतिथि में हम अच्छा भाषण दे सकते हैं। क्या? लेकिन क्या करें। साली यह मास्टरी हर वक्त आडे आ जाती है।"

मैं उनकी बातें सुन रहा था। वे प्रसन्न थे। उनका चेहरे पर वही भाव था कि यदि वे इस मास्टरी के माया-मोह में नहीं पड़े होते तो आज श्री देवी या जयापदा के साथ होते और बच्चों की दश का इतिहास और भूगोल पढ़ाने के बटने डिस्क्री डांस कर रहे होते। उन्हें छेड़ना मुझे अच्छा लग रहा था।

मैंने बात की आगे बढ़ाते हुए उन्हें छेड़ा, "जो बात तो सही है लेकिन मैं

कहता हूँ कि इन कबूतरों का सत्रियो आर राजनीति में क्या फँसा रहे हो? शांतिदूत हैं वचन अपनी औकात क हिमाव से शांति का संदेश दे रहे है।”

इस वर वह बस गरम हो गए। या कहूँ कि ताव रखा गए। जोले, “शांतिदूत हैं तो क्या उन्हें आग में झोक दोगे? पेईचिंग को खल-प्रतियोगिताओ में जो कबूतर उड़ाए गए थे वे मशाल में घूस गए और वहीं पार हो गए। मेरा कहना है कि आप खेल करो, लेकिन इन कबूतरों के भरास हमें सदभावना बनाए रखने का संदेश दोगे तो इस प्रजातंत्र में कबूतरों की पूरी नस्ल ही बगबाद हो जाएगी और हालात यह होगी कि किसी का पेरान्त्रिसिस हा जाएगी तो वह कबूतर के खून की एक बूँद के लिए तरस जाएगा। आखिर इस खेल में कबूतरों का भगिष्य खनर में पड़ जाएगा। हम तो एक ही ढर्रे पर चलने वाले लागे हैं। वस कबूतर उड़ाते रहेंगे और अन्दर में साम्प्रदायिकता चालते रहेंगे। इसलिए मैं कहता हूँ कि पहले अपने-आपको अन्दर से भाफ करो, फिर उड़ाने रहना कबूतर, कान रोकता है तुम्हें?”

वह थोड़ी देर के लिए रुके, चारों तरफ देखन लग। खेल का मैदान अलग-अलग दलों में भरा था और हर बैनर के नीचे गिजलाड़ी बेट थे। सदभावना-संदेश समाप्त होगा और वे मैदान में कूट जाएँगे। इन कबूतरों से उनका ध्यान हट जाएगा। यदि वे अपने खेल में कबूतरों को याद करने रहे तो अपनी जीत का लक्ष्य को भूल जाएँगे। उनका लक्ष्य है सामने वालों का हटाकर सीधे फाइनल में पहुँच जाना। यह फाइनल में पहुँचने की राजनीति में पूरा प्रजातंत्र प्रतिमित है। एशियाड में हमने कितने कबूतर उड़ाए, लेकिन इसके बाद भी क्या हम दगा को रोक सके?

म उनसे आर भी बातें करना चाहता था, लेकिन तभी खेल के मैदान से माइक पर घोषणा हो गई कि टीमें अपने खिलाड़ियों के साथ मैदान में आ जाएँ।

मैंने आसमान की ओर देखा। कबूतर नहीं थे। हो सकता है वे फिर अपने दडबा में छिप गए हो और किसी मजबूत पकड़ में छूट जाने का शुक्राना अदा करने के लिए अपने दडबा को पाक-साफ बनाने की सोच रहे ह।

## नेताजी—बन्दर वाले

नेताजी इन दिना बेकार ह। बेकार इस्तीफा कि वे पिलहाल किस्सी मस्थि के अध्यक्ष नहीं है और जब व अध्यक्ष नहीं होते तो अपन को बेकार ही मानते ह। एक एक कर सभी समितियो के अध्यक्ष पद से उन्हे किक पड गई। अभी तक तो यही होता रहा कि उधर किक पडी और इधर नेताजी दूसरी समिति के अध्यक्ष हो गए। लेकिन इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ इसलिए उनका चिन्तन गभीर हो गया और वे देश के बारे में बहुत गभीरता से विचार करने लगे।

कम में भैयाजी के गजनीतिक गैरेज के सामने से गुजरा तो व अपने गैरेज के सामने एक बन्दर नचवा रहे थे। मदारी डुगडुगी बजा रहा था और बन्दर नेताजी के सामने मगन होकर नाच रहा था। मदारी लकड़ी भामन रखता और बन्दर को आदेश देता—चल बेटा कूट जा। बन्दर कूट जाता। नेताजी उसे देखते और देश के बारे में सोचने लगते—इस देश का क्या होगा?

मैंने नेताजी से कहा—बड़े दिनो बाद आपको गंभीर चिन्तन में देखा है क्या सोच रहे हैं आप?

नेताजी ने मेरी बातों का ओर कोई ध्यान नहीं दिया और मदारी से बोले—  
क्यों रे मदारी . कितने दिनो से नचा रहा है तू इस बन्दर को?

मदारी ने कहा—हुजूर, हम तो खानदानी बन्दर नचाने वाले हैं। वैसे यह बन्दर पिछले पाँच मालो मे मेरे पास है। बडा निष्ठावान है सरकार। जेसा नचवा ला कोई ना—नकुर नहीं करता।

नेताजी कुछ सोचकर बाले—अबे पाँच साल तो हो गए अब छोड इस कायदे से तू हटे अब नहीं नचा सकता।

मदारा बोला—तुजूर कायदा—कानून तो आप नेता लोग ही जाने लेकिन हम तो इतना जानते हैं कि इमी बन्दर का रोजी-रोटी में हमारा बाल-बच्च पल रहे हैं। बड़े-बड़े साहब लोग हमका नाच देखते हैं और पैसा फेकते हैं। और अमली वान तो यह तुजूर कि पाँच साल में यह इतना ट्रेड हो गया है कि आने वाले पाँच साल तक यह बहुत अच्छा नाचैगा।

पाँच साल बाद फिर क्या करगे? नाचने लायक नहीं रहा तो?

नाचने लायक नहीं रहा तो दूसरा बन्दर ले आऊँगा मालिक हमें तो अपनी पूरी जिन्दगी इन्ही बन्दरों के बीच रहना है।

—अबे कहाँ से लाएगा, हमें भी बता?

—सुना है गुजरात में अच्छे बन्दर मिलते हैं। इस बार वहीं जाऊँगा सरकार। कुछ नुगाडमेन्ट तो बिठाना ही पड़ेगा।

महा नेताजी और मदारी की बातों में आनन्द आ रहा था। लगता था जैसे अपने-अपने फन में माहिर दो लोग देश की किसी श्वलत समस्या पर बात कर रहे हों। मैं नेताजी से कहना चाहता था—“इस मदारी की बात में मत आना हो नेताजी। ये बड़ा चाल किस्म का दिखता है।” लेकिन इसके पहले ही नेताजी ने मेरे लिए पीठे पान का आर्डर टेकर मुझे अपनी बैठक में बुला लिया। यहाँ तो नेताजी का राजनीति में अपना अनुभव है। जानते हैं कि हम जेसो का मुँह बन्द करना हो तो मुँह में एक पीठा पान भर दो, बस।

नेताजी की बैठक वाला कमरा नेताओं की तस्वीरों से लबालब भरा था। दीवार पर हर जगह नेता ही नेता टैंग थे। बापू की तस्वीर पर नेताजी ने खादी की माला डाल रखी थी। इस एक माला के कारण ही नेताजी का कमरा गाँधीवाद में महक रहा था। सामने का आलमारी में तीन बन्दरों की मूर्तियाँ थीं। नेताजी का कहना था कि ये मूर्तियाँ वे किमो अभिवेशन में लाने थे।

अब मेरे आर नेताजी के अतिरिक्त बैठक में जो उल्लेखनीय वस्तु थी, वह एक अभिनन्दन-पत्र था जिस नेताजी ने फ्रेम करवा कर एसी जगह टॉग रखा था कि बैठक में आने वाले हर आदमी की नजर पहले उस पर पड़े। यह अभिनन्दन-पत्र नेताजी को सफ़ई कमरा की ओर से दिया गया था।

मैंने वातावरण और नेताजी की चिन्ता की गंभीरता को समाप्त करने के लिए कहा—नेताजी, इस बार आप बन्दरो की समिति के अध्यक्ष क्यों नहीं बन जाते? मेरा विचार से तर शहरी और ग्रामीण दो समितियाँ बना कर किसी एक पर अपनी अध्यक्षता जमा दे? क्यों?

लगता था कि नेताजी ने मेरी इस बात को गंभीरता से लिया है। उनकी आँखों में चमक आ गई। बोले—ठीक ही कहते हैं। इस बार यही सही। लेकिन ये तो बताओ कि बन्दरो की समिति का अध्यक्ष बनकर मैं करूँगा क्या? मेरा मतलब है कुछ तो मानफेस्टो होना ही चाहिए ना?

मैंने कहा—नेताजी, ये बात तो आप छौंड़ दो बन्दरो पर। इस पर उन्हें विचार करना है, आपकी नहीं। मैं तो इतना जानता हूँ कि स्कूप बहुत है। देखिए ना दिल्ली में सरकार उल्लूओं और चमगादड़ों के लिए वातानुकूलित कमरे बनवा रही है। यहाँ तक कि सरकार ने भालुओं और बिल्लियों तक को आवास योजना में शामिल कर लिया है। हम कहते हैं कि वचार भारतीय बन्दरो ने क्या बिगाड़ा है? जब तक बापु ये देश में बन्दरो की इज्जत थी। क्या बापु ने इसी दिन के लिए भारत को आजाद करवाया था? क्या उल्लू और चमगादड़ में भी गया-बीना हो गया अब देश में बन्दर? इमका विराध तो होना ही चाहिए। हम आपसे अपेक्षा रखते हैं कि आप इस मेद्दातिक विरोध का नेतृत्व करें।

बात इतनी गंभीरता में रखी गई थी कि नेताजी फिर गंभीर हो गये। मदार अभी भी अपना बन्दर नचा रहा था और अन्दर नेताजी को किर्मी सस्था के अध्यक्ष होने का पीड़ा कचोट रही थी। वे वर्तमान राजनीतिक परिवेश में जानवरों के मौलिक अधिकारों को लेकर चिन्तित नजर आ रहे थे। मुझे पूरा विश्वास था कि वे इस बार किर्मी मामद स मदारी की गस्ती पर नाचने वाले बन्दरो के हितों और अधिकारों पर कोई गंभीर चर्चा अवश्य करेंगे। इसी बहाने जनचर्चा का कोई नया मुद्दा भी वे जरूर उठाएँगे। जब भी वे किसी सस्था में अध्यक्ष की हैमियत से जुड़े हैं, उन्होंने ऐसा ही किया है।

नेताजी मदारी से कुछ जरूरी सवाल पूछने के लिए बरठक से बाहर आ गए

मदारी ने नेताजी की ओर देखकर कहा—'मिलने मारें—बाप इस बन्दर को लिये कोई फटा-पुगना कपड़ा मिल जाय हुआ'।

फिर मदारी ने बन्दर की ओर देखा और कहा—'चमक बेटा लट वा नेताजी के पगों में हों शायदा'।

मदारी बोला—'बस, अब खड़ा हो जा और दिखा दे अपनी हैमियत'।

बन्दर पिछली दा टोंगी पर खड़ा हो गया और दोनों हाथों से अपना पेट बतप लगा। जैसे कहना चाहता था—'नेताजी, इस पापी पेट का सवाल है'।

नेताजी फिर गंभीर हो गए। उन्हें लगा कि इस बार अध्यक्ष बनने पर उन्हें नई जिम्मेदारियों से जुड़ना पड़ेगा।



## राष्ट्रीय हजामत निगम

महंगाई तेजी से चढ़ रही है। अब तो हजामत भी महंगा हो गई। पूरे बीस रुपये लगते हैं। हमारे दादाजी जब इलाके में आये थे तब उनकी तनख्वाह पाँच रुपये महीना थी। वह पूरे महीने में मुश्किल से एक रुपया खर्च कर पाते थे। एक रुपया बुरे दिन के लिए बचाकर रखते थे और तीन रुपये देश भेज देते थे। चढ़ तो उनकी बचत का प्रवृत्ति का परिणाम है कि आज हम बीस रुपये वाली हजामत बनवा रहे हैं। वे कुछ नहीं बचाने तो हमको आज हजामत के लाल पड जाते।

आजादी के बाद हजामत के मगर में काफी विकास हुआ है। हजामत की शैली भी काफी परिष्कृत हुई है। पहले तो जब माननीय हजामतकर्ता हमारा गली में आते तो हम तुरन्त उन्हें देखकर भाग जाते। पिताजी पकड़ते और माँ दो तमाचे लगाती तब कहीं जाकर हमारी हजामत सम्पन्न होती थी। फिर पीठ पर छितरे अवशेषों को खुजाते दिन बीत जाता। माँ पीट-पीटकर नहलाती तब कहीं हम शुद्ध हो पाते। शैम्पू तो था नहीं, काली मिट्टी से माताजी इतना तेज रगड़तीं कि यह प्रक्रिया हजामत से कहीं अधिक कष्टप्रद होती। अब तो हमारा बच्चा छुट चलकर मैसून जाता है, और माननीय बंधु से पुछता है कि इमामी की क्रोम है या नहीं? अप्टर शेव भी कैंचा होना चाहिए।

यह व्यवसाय इतना लोकप्रिय हुआ अपने देश में कि हर शहर में इस धंधे में रुचि लेने वालों की तादाद में वृद्धि होने लगी। अब तो आलम यह है कि आप जिस गली से गुजरें कोई-न-कोई हेयर ड्रेमर आपके स्वागत के लिए तैनात है। फिर भी हजामत के भाव आसमान को छू रहे हैं। लोग दाढ़ी पर हाथ रखने का पाँच रुपया ले

रहे हैं। और फिर हजामत तो आदमी के लिए 'गैरसिटी' है, कोई तरजरी नहीं। अब लोग चिल्लायेगी नहीं तो क्या करेंगे?

लोगों ने उनका दिवा कॉलेज के लड़कों को। कॉलेज खुलने के बाद अब ता अकबूब लग गया था और काई आन्दोलन इस साल कॉलेज वाला ने अभी तक नहीं किया था तो छात्र सघ अध्यक्ष का भी शरभ आ रही थी। उसने कॉलेज के छात्रों को ललकाय और आन्दोलन छिड़ भया हजामत के बहुत हुए मृत्यों के खिलाफ। छात्र क्रमिक भूख हड़ताल पर बैठ गए। 'चार-चार छात्र पर से खाना खाकर आने आठ घण्टे की भूख हड़ताल पर बैठ जाते। आठ घंटे बाद दूसरी टोली आती और पहली टोली खाना खाने चली जाती। इस तरह भूख हड़ताल सफलतापूर्वक चल रही थी।

छात्रों की माँग थी कि रेड क्रम होने नहिंए, और उन्हें छात्रकसगन दिया जया चाहिए। आम जनता को 'जलम हजामत' की सुविधा प्रदान की जाय। राष्ट्रीय हजामत निगम का गठन किया जाये और हजामत उद्योग को सरकार अपने हाथ में ले।

छात्र आठ दिना तक क्रमिक हड़ताल पर बैठे लेकिन अब तबोजा कुछ नहीं निकला तो विवश होकर उन्होंने राज्य परिवहन निगम की दो बसे जला दीं। फिर नगर में आह्वान किया कि व्यापारी बंधु छात्रों की माँग के समर्थन में एक दिन की हड़ताल करें। व्यापारियों ने डर के मारे दुकाने बंद रखीं। हड़ताल सफल हुई। छात्र वगैरि दूसरी शासकीय संगठित की खोज में लग गया।

छात्र आन्दोलन भड़क उठा। एक नगर से दूसरे नगर यह लहर आग की तरह फैल गई। दूसरे कॉलेज के छात्र मर्यों के अध्यक्ष का पौरुष भी जागा और वे इस आन्दोलन में कूद गए। जिन कॉलेजों के छात्र सघ अध्यक्षों ने इस आन्दोलन का समर्थन नहीं किया उन्हें चुँडियाँ भिजवाई गयीं। सैलूनो और हेयर ड्रेसिंग हालो पर छात्र नैतान हो गये। छात्र एकता जिदाबाद के नारे लगाने लगे और जो आदमी हजामत बनवाने जाता उसकी दुकाई होने लगी। इस व्यवसाय से जो लोग जुड़े थे वे मरुम गए। इज्जतदार लोग चोरी-छिपे रात को बारह बजे के बाद अपने घरों में छिपकर हजामते बनवाने लगे। खासकराह कौन छात्रों से उलझे? कॉलेजों में दाढ़ी और बाल बढ़ाने के फैशन का सूत्रपात हुआ। हजामत बनाने वाला निलेदन करत— भैया किसी को मन बताना—नहीं ता लड़के मेरा घर जला देगे।

स्थान बड़ी नाजुक हो रही थी। सरकार छात्रों के इस आन्दोलन को ओर ध्यान नहीं दे रही थी जो छात्र जगत के लिए अपमान की बात थी। विरोधी नेता छात्रों को समर्थन दे रहे थे। आम सभाएँ हो रही थीं। फिर विधानसभा में विरोधी पक्ष के नेता न प्रश्न उठाया कि नूखा पीढ़ी समाज को एक रचनात्मक दिशा देने के लिए आन्दोलनगत है और सत्ता पक्ष की उदासीनता से कई घर बर्बाद होने की पूरी आशंका है, छात्रों का एक बल मुख्यमन्त्री को अतिम अल्टीमेटम दे आया कि पन्द्रह दिनों के अन्दर सरकार ने इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया तो छात्र विरक्तिखालय परीक्षाओं का बहिष्कार करेंगे और सभ्य स्वामी आन्दोलन की गह पर उतर जायेंगे। पूरे प्रदेश के कॉलेज बन्द कर दिये जायेंगे और लूटमार शुरू हो जाएगी। पूरा जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा, जिसको पूरी जिम्मेदारी सामन की होगी।

विरोधी पक्ष के विना नेताओं को कोई काम नहीं था, वे अचानक सक्रिय हो गए। खुले भर्त्सों पर भाषण श्रोतः—

“हजामत हमारी सस्कृति है। ठहरे इसे बचाना है, क्या क्रिया आज तक सत्ता के लोगो ने? मजदूरों का मूल्य तो सरकार ने निर्धारित कर दिया (लेकिन, कभी सत्ता ने यह भी सोचा कि किस दिन मजदूर हजामत बनवा लेता है उस राज ठसके घर में चूल्हा नहीं जलना। यदि उसी तरह हजामत के बढते हुए मूल्यों पर कोई कारण कदम सरकार द्वारा नहीं उठाया जायेगा तो आने वाले बीस सालों में भारतीय हजामत की सस्कृति का लोप हो जायेगा। सरकार ने कभी यह नहीं सोचा कि ऐसी स्थिति में हम विदेशों में क्या मुँह दिखायेंगे? तो दोस्तो, यह कोई मामूली ममला नहीं है। छात्रों का साथ देना जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है। छात्रों की माँगों विरुद्ध उचित हैं लेकिन सरकार नहीं चाहती कि इस बढती हुई मर्हौगई पर रोक लगई जायें। मैं इस खुले मंच से सरकार से सवाल करता हूँ कि आज तक हजामत पर कोई टेक्स क्यों नहीं लगाया गया? आप गम्भीरता से सोचेंगे तो आपको पता लगेगा कि यह यात्र चोटो की राजनीति है सत्ता पक्ष की। सबसे कम पूँजी का व्यवसाय है यह। बस एक कैंची, उस्तर और कर्षी और आईने की लागत से प्रारम्भ होने वाले व्यवसाय में देश का एक बहुत बड़ा वर्ग जुड़ा है। किमी मान्यता प्राप्त ट्रेनिंग की आवश्यकता नहीं है और न ही सरकार ने कोटि योग्यता रखा इस व्यवसाय के लिए निर्धारित की है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि देश का एक बहुत बड़ा वर्ग राजधानी से लेकर ग्रामीण अंचल तक इस व्यवसाय

मे जुड़ा है। हम जानते हैं कि जिम दिन सरकार इस व्यवसाय के प्रति कड़े कदम उठायेगी। उसका बहुमत समाप्त हो जायेगा। तौ दास्तो, आन्दोलन की भहना का सम्झा और छात्रो का साथ दो। बोलो —भारतमाता की—जय। वन्दे—मातरम्!”

इस व्यवसाय से जुड़े लोगो की गां हालत खराब थी। कई लोग अपनी दुकाने बंद करके चेत गाण। बहुत से लोग पासपोर्ट बनवाकर खाडी के देशो मे जाने की सोचने लगे। वे कॉलेज के छात्रो को देखकर घरो मे छिप जाते। आन्दोलन बहुत उग्र रूप धारण कर रहा था। छात्रो द्वारा घर और सैलून जलाने के समाचार मिलने लगे थे।

केन्द्र से बगबग निर्देश मिल रहे थे कि स्थिति सामान्य है। टी वी पर इस व्यवसाय से जुड़े वरिष्ठ लोगो के विचार बराबर प्रसारित किये जा रहे थे। राष्ट्रीय प्रसारण पर हफते में दो बार यह बताया जाता था कि किस बड़े शहर मे सैलून खुल रहे हैं और लोगो ने बिना किसी भय के हजामते बनवाई। केन्द्र मे मुख्य मंत्री को बुलाया गया फिर केन्द्र ने बहुत सोच-समझकर निर्णय लिया कि राष्ट्रीय हजामत निगम का गठन किया जाये और प्रदेश मे होने वाली हर हजामत पर केन्द्र का नियन्त्रण रहे, ताकि गरीब जनता को बढ़ती हुई महँगाई मे राहत मिल सके। दूरदर्शन और आकाशवाणी स राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करते हुए सरकार ने इस जनहित सम्बन्धी निर्णय की सूचना दी। छात्रों ने पटाखे फोड़े। लोगों को गुलाल लगाया और विजय जुलूस निकाला मिठाइयाँ बाँटी गईं। यह इस वर्ष का पहला छात्र आन्दोलन था, जिसके आग केन्द्र को झुकना पडा।

राष्ट्रीय हजामत निगम के पहले अध्यक्ष ने अपने संबोधन भाषण में लोगो से अपील की—

—“हम कोशिश करेंगे कि भारतीय जनता को कम से कम कीमत पर सक्कारी हजामत उपलब्ध कराई जाये। अभी हम देश के सभी प्रदशों की गजधानियों और प्रमुख शहरों में निगम की उप-समितियों गठित कर रहे हैं। सक्कारी तौर पर व्यवसाय के लिए विधिवत् प्रशिक्षण के लिए सरकार का प्रशिक्षण-केन्द्र खोलने की योजना है जिससे युवा आर शिषित बेरोजगार वर्ग लाभान्वित हो सकेगा। सरकारी तौर पर अभी भरती प्रारम्भ हो गयी है और प्रशिक्षण सम्बन्धी मान्यता प्राप्त नियमों में ढील दी गयी है। केवल अनुभव के आधार पर ही हम काम शुरू कर रहे हैं। हमारी कोशिश रहेगी कि पिछड़ी जन-जाति और अनुमूचित जाति का आरक्षण मिलता रहे।

—“प्रारम्भिक कठिनाइयों के कारण फिल्हाल सरकार ऐसे ही शहर में सरकारी हजामत की व्यवस्था कर रही है जिसकी आबादी पाँच हजार से कम न हो। धीरे-धीरे ग्रामीण अंचलों को भी यह सुविधा प्राप्त होने लगेगी। सरकार ने पूरी हजामत का मूल्य पाँच रुपये चालीस पैसा और दाढी का मूल्य दो रुपये चालीस पैसा निर्धारित किया है। अभी हमें उस्तरो का आयात करना पड़ता है। सरकार द्वारा इस दिशा में शीघ्र ही त्वरित कदम उठाकर अपने देश में भारतीय पद्धति के उस्तरो के निर्माण के कारखानों की स्थापना के लिए विचार करेगी और जब हम उस्तरो के मामले में आत्मनिर्भर हो जायेंगे हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हजामत के इन मूल्यों में और कमी आयेगी।

—“अतः मैं आप सबसे आग्रह करता हूँ कि बिना हजामत केन्द्र में टिकट लिये हजामत न बनवाये। इससे सरकार के बजट पर प्रभाव पड़ सकता है। हजामत केन्द्र सामंतीय और मार्क्सवादी अवकाशों के अतिरिक्त प्रतिदिन आठ घंटे खुले रहेंगे। सरकार कर्मचारियों के लिए प्रतिदिन दाढी बनाने के लिए हमने मासिक पास भी जारी करने की योजना बनाई है। लेकिन वर्तमान में यह योजना केवल ऐसे शहरों में लागू रहेगी जिनकी आबादी पाँच लाख से अधिक है।

—“देश के विकास की जिम्मेदारी आप पर है। इस निगम की सफलता केवल आपके सहयोग पर आधारित है। राष्ट्रीय हजामत निगम की ओर से हार्दिक शुभकामना देने हुए मैं जनता से सहयोग की अपील करता हूँ। जयहिन्द!”

## गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या

“आप चुप हैं। गणतंत्र दिवस पर आप चुप रह तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा कुछ बोलेंगे नहीं?”

“क्या बोलें? समझ लो कि अपनी बोलती बन्द है। स्कूल में देशभक्त लग गणतंत्र दिवस मना रहे हें। बच्चें परेशान कर रहे हैं। नया ड्रेस मिलवा दो, मफेद जूते खरीद दो, लाल मोजे ले दो। तीन मी रूपए की सीधी चपत पड गई इस गणतंत्र पर।”

“आजादी मिली है तो तीन सौ में नही डरना चाहिए आपका। माहबो और इन्मपेक्टों को हजागे रुपया हँसते-हँसते खिला देते हो और बच्चों को नया ड्रेस सिलवा देने के नाम पर इतने उदास हो गए?”

वह चुप हो गए। अपनी दुकान पर रखे मेव गाँठिया के डिब्बो को देखने लग। दिन-भर मिक्शाचर की पुडिया लपेटते हैं लोगों के लिए। दुकान पर नमकीन भण्डार का इतना बड़ा बोर्ड लगवा रखा है कि बोर्ड देखकर ही सेल टेक्म वाला बोर्ड को बाद में, पहले इन्हीं को नीचे उतार दे। जनता शामन में उनका जलेबी भण्डार था। उधर जनता शामन टूटा और इधर उनकी जलेबी टूट गई। जितन उदास मना चले जाने से जनता पार्टी वाले नहीं हुए थे, उमसे अधिक उदास वे ड्रेस मिलवाने के नाम पर हो रहे थे। उन्हे लग रहा था कि गणतंत्र दिवस पर किए जाने वाले इस फालतू खर्च को मेक-अप करने के लिए उन्हें कई किलो सेव-गाँठिया तोलना पड जाएगा। उनके चेहर पर फालतू खर्च की पीडा सरकारी मीयाबीन तेल में गर्म कड़ाही पर उभरते झाग की तरह उभर रही थी।

अचानक सेव-गाठिये निकाल कर वह बोले “हम तो इन मास्टरों और बहनजिया के मारे परशान है . पढाई-लिखाई ता गई भाड मे, ड्रेस-जूते पर भबका ध्यान केन्द्रित हो गया है। आप ही बताइए कि बिना नये ड्रेस के क्या गणतत्र दिवस नहा मनाया जा सकता? जूते? सफेद होने चाहिए। और पोजे? बिल्कुल लाल आदमी के खून की तरह। दिन-भर सेव-गाठिया बेच-बेच कर हमारा खून कितना लाल रह गया है यह सोचने को फिकर किसी को नही ह। तीन भो भपया कुमाने के लिए हमे कितनी जौड-ताड करनी पडती हे, हम ही जानते हैं. बस, हुकुम जारी कर दिया— नया ड्रेस सिलवा कर लाओ नये जूते लाओ चारा तम्फ लाओ-लाओ। मरे सेव-गाठिया वाला। ऐसा गणतत्र भो किस काम का।”

मेने कहा, “कैसे नायगिक है आप? गणतत्र दिवस पर आपको खुशी नहीं होता?”

वह बोले, “हौती है भडया बहुत हौती है। देख रहे हो, खुशी के मारे हमारा वजन सात किलो कम हो गया है। पिछले गणतत्र पर 65 किलो था, इस बार रेलव प्लेटफार्म की मशीन के कथनानुसार हम 58 किलो के हो गए हैं जूते-कपडों का वजन जोडकर। सात किलो सुख गए एक ही साल मे।”

“याने कि आप हर गणतत्र दिवस पर अपने आपको तौलते हैं?”

“अरे भडया, तौलते क्या ह अपनी तसल्ली के लिए देख लेते हैं कि बदन पर इस व्यवस्था के लिए कितना मौस बाकी है। इम मँहगाई और भ्रष्टाचार के मारे जितना बच जाए अच्छा है।”

मेने व्यंग्य-प्रसंग का छोर पकड़ लिया था। बातों का म्लिमला जारी रखते हुए भन कहा, “शरीर पर ज्यादा मौस बचा कर क्या करेंगे? जितना ज्यादा मौस होगा उतने ही चील-कावे आपक पास मँडरारंगे।”

वह बोले, “एक साल मे सात किलो मौस चील-कावे नाँच गए, इम पर भा आपको मतोष नही हुआ? मै पूछता हूँ कि क्या हम ही मिले हैं आपको इस बार गणतत्र दिवस पर व्यंग्य करन के लिए? थोडा-बहुत व्यंग्य तो हम भी समझते हैं गुरु जगन्नाथ प्रसाद मिश्र के इलाके के हैं।”

“याने कि चील-कावे का मन्तव्य समझ गए आप?”

“आपने हम इतना मूर्ख समझ लिया है? चील-कोंवो के बीच जी रहे हैं और मतलब नहीं समझेंगे?”

“समझ गए तो हम बता दीजिए कि किम डिपार्टमेंट के हैं ये चील कावे?”

“अरे साहब सभी डिपार्टमेंट में भर पड़े हैं। य तो गिद्धा की बस्ता है मरकर ने पाल रख है हमारा लिए। अपनी दुकान का बचा बाड़ देखकर कल एक सल-टेक्स ऑफिस का चील उड़ता हुआ आया और दुकान पर बैठ गया। देखन लगा हमारा बदन। हमने कहा— नीच लो दादा तुम भी दा-चाग या पाप तोच लो जख तक बदन में मौम है ले आआ।”

“इस धर गणतंत्र दिवस पर इतने ऊँच विचार आपके मन में कहाँ से आ रहे हे?”

“मात किलो वजन कम हो जाने के बाद ऊँचे विचार नहीं आएँगे तो क्या घटिया विचार आएँगे? सच कह तो हमारी आत्मा बड़ी दुःखी है यह सब देखकर। और जब आत्मा दुःखी होती है तो ऊँच विचार ही आते हैं।”

“ये आत्मा कहाँ से आ गई बीच में इस गणतंत्र दिवस पर?”

“मात किलो मौम कम हो जाने के बाद शरीर में आत्मा ती जध रह जाती है।”

“कमी हे आपकी आत्मा? आपकी आत्मा को दुःखी होने के अलावा और कोई काम नहीं हे? लाल किले पर फहरता झंडा देखकर भी आपकी आत्मा प्रसन्न नहीं होती?”

उन्होंने आज के अखबार को फाड़ कर चार टुकड़े किये और एक ग्राहक के लिए ढाई या ग्राम मेव-गाठिया नीलने हुए बोले, “चालीस रुपए किलो का तेल खान के बाद आत्मा दुःखी ही होगी। जायज काम के लिए रिश्त देने के बाद किसकी आत्मा है जो प्रसन्न होगी? दुःखी लागो का आत्मा को कितना भी खगालो, उसके अन्दर से केवल दुःख ही निकलगा।”

“याने कि आप आदमी नहीं, एक दुःखी आत्मा हैं?”



“हाँ भइया वही समझ ला! तुम्हारे पेट में कुछ दर्द हो तो साफ-साफ बताओ दो-चार सौ ग्राम तुम भी नोच लो इस बदन से तुम्हें भी क्या पछतावा रह कि तुम कुछ नहीं नोच पाए प्रजातंत्र को समर्पित यह माटो का चाटा तुम्हारा कुछ काम आ गया तो हम अपने आपको धन्य समझेंगे।”

“बड़ी नपी-तुली जाने कर रह है आप इस बार।”

“वह इसलिए कि कल ही दुकान पर नाप-तौल जाने साहब आए थे हमने कहने लगे कि हम नकली बाट रखते हैं काँटा मांगत है ग्राहकों का शोषण करने हैं। आप ही बताइए कि एक फव गाठिये में हम कितना शोषण कर लेंगे? वहाँ लाखों रुपये का शोषण हो रहा है वहाँ कोई नाप-तौल वाला नहीं है। डार्ड सौ ग्राम सेव-गाठिये वाले के पाछे सरकार पड़ी है। कहने लगे कि वे हमारा चालान करेंगे।”

“क्या कहा फिर आपने?”

“हमने कहा कि पूरा बाट देख लो एक-एक तौल ले लो थोडा भी फर्क हो तो चालान कर देना। हमारी बात सुनकर वे मुस्कगए। बोले—सरकारी नाकरा कर रहे ह तो फर्क निकालना हम जानते है।”

“जाने कि आपका नाप-तौल के चक्कर में चालान हो ही गया।”

“नहा हुआ चालान। जब तक इस बदन पर माँस है चालान नहीं हो सकता यह हम जानते है। माँसे तीन सौ ग्राम व भी ले गए। हमने कहा—ले जाओ साहब जब मांग ले जा रहे है तो नाप-तौल वालों ने क्या बिगाडा है।”

“मन्सब यत्नी हुआ कि आप बेईमान सिद्ध हो गए।”

“बिल्कुल सिद्ध हो गए भइया। ईमानदारी का ठेका तो चीरा-कीचो ने ले रखा है। सही काम कर रहे ह फिर भी नुचवा रहे है अपने आपको। इसलिए हम कहने हैं कि हमारी आन्धा दुःखी है।”

मेने कहा “फिर इस गणतंत्र दिवस पर बच्चो का क्या होगा? नया ड्रेस मिलाया था नहीं? सफट जूते आँगे या नहीं? नाल मोजे डन्हे मिलेगे या नहीं?”

वे चुप हो गए। बहुत देर तक सेव-गाठिया वाले डिब्बा को देखते रहे। इस प्रसंग को आगे बढ़ाने की मेरी हिम्मत भी नहीं रही।

## ईमानदारी की गोलियाँ

उनके दिमाग में अजीबोगरीब बात पैदा होती रहती हैं। एक दिन मुझसे कहने लगे “यार, मैं एक यंत्र बनाना चाहता हूँ आनेस्टी डिटेक्टर जिसके बदन पर रख दोगे, पता चला जाएगा कि वह आदमी किनना ईमानदार है।”

फिर एक दिन मिलते कहने लगे, “यार, मैंने वो आइडिया द्वाप कर दिया।”

मैंने पूछा—क्या? ता वे बोले, “इसमें बड़ा लफड़ा हो जाएगा कई लोग एक्सपाज हो जाएँगे अभी हम जिन्हें ईमानदार समझ रहे हैं वे सब बेईमान निकल जाएँगे तो हमें दुःख होगा।”

मैंने पूछा, “दुःख किस बात का?”

उन्होंने अपना चश्मा निकाल लिया। अपने कुरते के एक कोने में उम साफ करते हुए बोले “अभी हम यह मोच कर अच्छा लगता है कि अपने यहाँ कुछ ईमानदार लोग बचे हैं। यदि वे भी बेईमान निकल गए तो दुःख ही होगा। इसलिए बेहतर यही है कि हम उन लोगों को ईमानदार समझ कर खुश होने रहें।”

मेरे एक और मित्र हैं जो अपने आपको बहुत ईमानदार बताते हैं। पहले कुछ दिनों विपक्ष की नेतागिरी की और सत्ता पक्ष को बेईमान कहते रहे। फिर आपात्काल लगा और और उनकी खोज प्रारम्भ हुई। वे जेल जाना नहीं चाहते थे, इसलिए तत्कालीन सत्ता पक्ष की पार्टी ज्वाइन कर ली। फिर वे सत्ता पक्ष की ईमानदारी के गुण गाने लगे और उन्हें एक सरकारी पद पर बिठा दिया गया जहाँ वे ईमानदारी से काम करने लगे। वैसे उनकी ईमानदारी पर बहुत लोगों को शक था लेकिन उनके मुँह पर यह बात कहने की हिम्मत किसी न नहीं की। मैंने भी नहीं।

एक शिक्षित बेरोजगार एम ए पास लड़के को नौकरी दिलवाने के हिसलसिले में मैं उनसे मिला था। मैंने उनसे निवेदन किया कि उस गरीब को कोई नौकरी दिलवा दो। घर की जिम्मेदारियों का बोझ उम्र पर है।

वह विचार में पड़ गए। बोले, “ईमानदारी की बात तो यह है कि यदि मैं इस लड़के की सिफारिश कर भी दूँगा तो उस विभाग में काम करने वाले इमे नौकरी नहीं देंगे।”

मैंने कहा, “आपकी इतनी पकड़ है, तमाम मंत्रियों से मित्रता है, और यहाँ तक कि आप मुख्यमंत्री के खास आदमी समझे जाते हैं, फिर कैसे नहीं मिलेगा उस गरीब को नौकरी? आप यदि इस आवेदन-पत्र पर अपनी ओर से एक स्लिप लगा दें तो मेरा विश्वास है कि उसे नौकरी जरूर मिल जाएगी।”

वह बोले “अरे पकड़-पकड़ कुछ नहीं है। सच बात तो यह है कि आजकल लेक्चरर की पोस्ट का ग्रेट दम हजार रुपए चल रहा है। यदि मैं इस आवेदन-पत्र पर अपनी स्लिप लगा भी दूँगा तो मैं जानता हूँ कि सेक्रेटरी उस पर नोट लिख देंगे कि प्रदेश की वित्तीय स्थिति को ध्यान में रखने हुए प्रशासन ने नयी भर्ती पर बैन लगा रखा है इसलिए आवेदन-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जा सकता।”

मैंने कहा, “यानि कि जिस मन्त्र पक्ष की ईमानदारी का गुणगान आप करते हैं उसमें कोई भी काम बिना पैस दिये नहीं होगा . यहाँ तक कि एक छोटी-सी नौकरी भी बिना घूस दिये नहीं मिल सकती।”

वे सतुलित रहे। ईमानदार आदमी किसी प्रकार से विचलित नहीं होता। ईमानदार आदमी की भी यही पहचान है कि आप उसे मुँह पर गालियाँ देते रहेंगे तो वह मुस्कराता रहेगा। लगभग वही मुस्कराहट उनके चेहर पर थी।

वह बोले, “तुम तो भावुक हो गए। भावुकता के दिन अब रहे कहाँ? जरा प्रैक्टिकल हो जाओ। देखो, मैं समझता हूँ तुम्हें।”

थोड़ी देर वे चुप रहे। कुछ सोचते रहे और फिर बोले, “मैं कहता हूँ कि सरकारी नौकरी में क्या धरा है? साहबों की डाँट सुन-सुन कर आदमी का नैतिक मनोबल गिर जाता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम्हारे मित्र को मलाह दो कि वह कोई बिजनेस करे . किसी भूषे में लग जाएगी वो उसकी चिन्तनी सुधर जाएगी।”

“लेकिन बिजनेस करने के लिए रकम की जरूरत होती है छोटे स छोटा बिजनेस करेगा तो भी उसमें दस हजार रुपए लगेंगे।”

“याने कि दस हजार रुपए लगाने ही पड़ेंगे उसे। और ऊपर से यह रिस्क रहेगा कि कहीं घाटा हो गया तो पूरे पैस डूब गए। धंधा नहीं चला तो रकम डूब जाएगी।”

“हाँ।”

“अब यह समझ लो कि वह दस हजार रुपए बंधे में लगा रहा है। ऐसा मत समझो कि वह धूम ट रहा है। दस हजार देगा। कम-से-कम तीस माल नौकरा करेगा। यदि लेक्चरर ही रहा तो उसे नये जेनरमान के हिस्साब से कम-से-कम बार्डम सौ रुपए महीने में मिलेंगे। याने कि साल में छब्बीस हजार चार सौ . आर तीस साल में ।”

फिर उन्होंने बच्चे को बुलाकर केलकुलेटर मँगवाया और बोले, “अब देखो, तीस माल में सात लाख 82 हजार का शुद्ध लाभ होगा उसे . . . वैसे यह रकम और भी अधिक हो सकती है क्योंकि सरकार हर दो-चार साल के बाद सेलरी बढ़ाएगी उसे इन्क्रीमेंट मिलेंगे . लेकिन अपने मात लाख 82 हजार ही मान कर चलते हैं। अब देखो, 7 लाख 82 हजार लाभ के लिए उसने केवल दस हजार की पूँजी लगाई याने कि ।”

उन्होंने केलकुलेटर पर उँगलियाँ चलाते हुए मेरी ओर देखा और थोड़ा देर बाद बोले “सात हजार आठ सौ बीस परसेंट लाभ होता है इतने बड़े लाभांश के लिए दस हजार का इन्वेस्टमेंट बिल्कुल वाजिब है मैं समझता हूँ कि यह अपने देश की गरीब जनता की देयशक्ति के अनुरूप है . यदि वह दस हजार रुपया वापस भी करना चाहे तो. . .।”

वे थोड़ी देर रुके और केलकुलेटर पर आँकड़े निकाल कर बोले, “प्रतिदिन उसे केवल 91 पैसे देने होंगे. बार्डस मो रुपए बेसिक पाने वाले के लिए यह रीपैमेंट आमना ही है बस 91 पैसे प्रतिदिन देते जाओ तीस साल में कर्ज भी पूरा हो जाएगा और कोई लायबिलिटी भी नहीं रहेगी।”

वे मुझे देखकर फिर मुस्कराए बोले, “अब तुम आ गए हो तो ईमानदारी के साथ इत्ना कर सकता हूँ कि दस हजार के काम के लिए तुम केवल आठ हजार

## ईमानदारी की गोश्या:

मेरे पास छोड़ जाओ मैं सक्नेटरी में यह कह सकता हूँ कि मेरा अपना काम है और उस आठ हजार में काना पड़ेगा। इतना तबबि तो मैं व्यवस्था पर तुम्हारे सम्बन्धों का कारण डाल ही सकता हूँ।”

ईमानदारी अभी भी उनके चेहरे से टपक रही थी। उन्होंने जानबूझ कर चेहरे पर रुमाक नहीं लगाया। उन्हें डर था कि रुमाक लगाते ही ईमानदारी की पर्तें साफ हो जाएगी। मेरो और देखते हुए बोले, “ईमानदारी का पापेणाम तुम देख ही रहे हो। मेरे साथ जिन लोगों ने राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया था आज उनके पास करोड़ों रुपया है। कई बगले हैं, बड़े विदेशी बक्को में करोड़ों रुपया जमा है। लेकिन हम तो रहे वैसे ही नगे के नगे। एक मकान शहर में क्या बनवा लिया लोग हमारी ईमानदारी पर ही शक करने लगे। कल ही एक साहब आए थे। पचास हजार रुपया नगद साथ लाए थे। हमसे कहन लगे कि उनका प्रमोशन करवा दे। सिचाई विभाग में एस ई की पास्ट पर उन्होंने मूटकेम हमारी ओर सरका दिया। तो हमने पूछा कि इसमें क्या है? व मुस्कुरा कर कहन लगे—ओ कुछ नहीं, बच्चों के चाकलेट के लिए थोड़ों—सी रकम है। हमने बहुत जिद की तो बाले—बस, पचास हजार है। आपकी सिफारिश रहेगी तो काम जरूर हो जाएगा। हमने उन्हें बहुत समझाया कि यह रकम वे किसी अस्पताल में लगा दें या फिर किसी स्कूल के लिए दो कमर बनवा दें। इम तरह कुछ जनमेवा का भी लाभ ले लें तो मरन के बाद उन्हें मोक्ष भी मिल जाएगा। लेकिन व नहीं माने। बस हँसत रहे और कहन लगे, कि हम बहुत अच्छा व्यंग्य कर लेते हैं।

मैंने पूछा, “फिर क्या किया आपने?”

वह बोले “कुछ करने का समय ही कहाँ था। वे बहुत जल्दी में थे। हमने कहा कि हम कोई आश्वासन नहीं दे सकते क्योंकि आजकल राजधानी के सभी विभागों में लोग केतकुनेट्र लेकर बैठे हैं। ब्रीफकेस भले ही आप छोड़ जाएँ लेकिन हम वादा नहीं कर सकते कि आपका प्रमोशन एस ई की पोस्ट के लिए हो जाएगा। साफ बान तो यह है कि हम हैं ईमानदार आदमी। हम अपने हाथ से एक रुपया भी इसमें से नहीं निकाल सकते। सीधे मंत्रीजी से मिलेंगे और कह देंगे कि यह ब्रीफकेस है और ये फलौं साहब हैं। जमता है तो देख लो और नहीं जमता

हो तो वैसा कहो लेकिन मोच-समझ कर जवाब देना कहीं हमारी ईमानदारी पर बट्टा न लग जाए।”

अचानक वे चुप हो गए। उन्हें कुछ याद आया और बोले, “अरे मैं तो भुल ही गया था। बोलो क्या लोग? गरम या ठंडा? और सुनो, हम तो ईमानदार आदमी हैं, तुम्हें ब्रूस-वूस तो पिला नहीं सकेंगे। हाँ, ठंडा लेना हो तो नमक वाला नीबू का शरबत बनवाते हैं और गरम लेना हो तो चाय पिलावाते हैं। बोलो, क्या चलेगा?”

मैंने कहा, “जी कुछ नहीं। मैं आपके पास जिस काम में आया था वह नहीं होगा यह मोचकर मेरी इच्छा कुछ लेने की नहीं हो रही है।”

वह बोले “हमने कब कहा कि नहीं होगा। हमने तो स्थिति स्पष्ट कर वा ईमानदारी में। सच बताऊँ तुम्हें, अपनी इसी स्पष्टवादिता के कारण हम भुगत रहे हैं हजार दुश्मन पैदा कर लिये हैं हमने। जिसे साफ जवाब दो वही नाराज हो जाता है। लेकिन हम यह मानते हैं कि ईमानदारी में जो मुख है वह कहीं नहीं... दो टाइम की दाल-रोटी निकल रही है यहाँ क्या कम है... कोई तनाव तो नहीं है... कोई डर नहीं है कि सरकार इन्क्वारी कर्माशन बिठा देगी। सपत्नी की जाँच हो जाएगी। जा सीना विपक्ष में तान कर चलते थे वही सीना आज सत्ता में भी तान कर बैठे हैं। मजाल है कोई हमारी ईमानदारी पर उँगली उठा दे।”

उन्होंने मुन्न को बुलाकर कहा, “बेटे, मम्मी स कहो कि दो ग्लास नीबू शरबत बना कर भिजवायें और सुनो ये केलकुलेटर हमारे कोट की जेब में रख देना।”

उनके मुँह से ईमानदारी की बातें सुनते-सुनते मैं थक गया था लेकिन उनके चेहरे पर नाजगी ही थी। वे पिछले कई सालों में इम तरह की बातें कर रहे थे और शायद इमलिए न थके हो लेकिन मुझे लग रहा था कि नीबू के शरबत से मुझे जरूर ताजगी आ जाएगी।

उन्होंने माहौल को सामान्य करने के उद्देश्य में कहा, “और सुनाओ? और कितनी बच्चियाँ रह गईं शादी के लिए? तुम्हारी कामन्ट में तो दहेज-वहेज का प्रॉब्लम ज्यादा नहीं है।”

मुझे लगा कि कहीं वे इस पर भी ईमानदारी का कोई चिंतन मुझ न पिला। इम्प्लिए मैंने वान को पूरी तरह दूसरी दिशा में मोड़ने हुए कहा, “अल्लाह के फक्लो करम में सब निपट जायगा जिन्होंने भेजा है वही निपटायेगा उन्हें।”

वे ठहाका मारकर हैंसे। बोले, “जिदादिल हो इसीलिए इतनी अच्छी हेल्थ बनाई है हमें देखा। बदन पर गोश्त जमा ही नहीं होता।”

शरबत के दो ग्लास आ गए थे। मेरी ओर एक ग्लास बढ़ाने हुए बोले, ला हाजमे के लिए नीबू और नमक का शरबत अच्छा इलाज है मैं तो यही लेता हूँ। पेट भी साफ रहता है और ताजगी भी आती है। और ईमानदारी में कहीं तो मध्यमवर्गीय हर परिवार को यही पेय पदार्थ लेना चाहिए क्यों ठीक है न?”

उन्होंने शरबत का ग्लास मेरी ओर बढ़ाया तो मुझे लगा जैसे वे ईमानदारी का डिटेक्टर मेरी ओर बढ़ा रहे हैं। अचानक मुझे अपने उस सनकी मित्र की याद आ गई जिनमें यह यत्र बनाने का विचार किया था लेकिन बाद में त्याग दिया।

अचानक उन्हें कुछ याद आया। बोले, “हाँ, एक मजेदार बात बताता हूँ क्या एक सज्जन आए था कहने लग कि उन्होंने ईमानदारी की गोलियाँ बनाई हैं।”

उन्होंने मुझे को आवाज देकर कहा, “बेटे, जरा भम्मी से कहो कि हमने जो गोलियाँ की शीशी उन्हें दी थी, भिजवाये।”

मुन्ना शीशी लेकर आ गया तो वे बोले “भई अपने देश में गक-से-एक लोग हैं जैसे भा आयुर्वेद वाले हैं हम लोग मुझ दे गए मेम्पल के तौर पर यह शीशी ओर कहा कि उन्होंने बड़ी साधना की है इन गोलियों के पीछे तो मैंने उनसे कहा कि आपने बहुत बड़ा काम कर दिया है इस दश के लिए ईमानदारी की गोलियों ने देश की नैतिकता को बल मिलेगा।”

मैं समझ गया कि मेरा वही सनकी मित्र आया होगा।

वह बोले, “भई, हमने तो कहा कि हम क्या, देश को उन पर गर्व है हमारे योग्य कुछ सेवा ही नो कहे।”

“कुछ काम उन्होंने?”

‘हाँ। बोते कि उनकी बस आयुर्वेदिक मेडिसिन का पेट्ट कम्बान चाहते हैं और आगे भी ईमानदारी के क्षेत्र में कुछ शोध करना चाहते हैं इसलिए शासन में उन्हें कोई फैलोशिप दिलवा दें और प्रशासन की ओर से यह स्पष्ट जार्ज क्रमा दें कि सरकारी ऑफिसों में काम करने वाले हर कर्मचारी को दिन में तीन गोलियों का सेवन अनिवार्य हो।’

मैं कहना चाहता था कि “उसके बाद आपने कैलकुलटिंग निकाल लिया होगा” लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा। मुझे लग रहा था कि उन्होंने सुबह टायल के खतौर ईमानदारी की एक गोली जरूर निकाली होगी और सोचा होगा कि वे इस ख़ाये या नहीं।

□



## हम ईमानदार हैं

मैं साचता था कि ईमानदार आदमी नहीं मिलेगा इस युग में। लेकिन वे मिल ही गए। कहने लगे, “मुझसे बड़ा ईमानदार आदमी आपको इस देश में नहीं मिलेगा।”

मैंने पूछा, “क्या करते हैं आप?”

वह बोले, “बम जी, ईमानदारी करने हैं। समझ लो कि हर काम ईमानदारी से करना हमारा उद्देश्य है। किसी को गोली भी मारने हैं तो ईमानदारी से ताकि उसे ऐसा न लगे कि हम उसमें प्यार कर रहे हैं और किसी का गला भी काटने हैं तो पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ।”

मैंने कहा, “याने कि आप गला भी काट लेते हैं?”

वे मुस्कुगाए। कहा, “हाँ जी, ईमानदारी में गले को काटने का मजा ही कुछ और है। देखिए ना, लोग ऊपर से बड़े मोहब्बत अतारते हैं और अन्दर-ही-अन्दर गला काटते हैं। हम जैसे नहीं हैं। गोली मारना है तो बस गोली मारना है और गला काटना है तो बस गला काटना है। हम व नहीं देखते कि अन्दर क्या है और बाहर क्या है?”

मैंने पूछा, “इसके अलावा भी कुछ करते हैं आप?”

उन्होंने मुझे धूर कर देखा। बोले, “बहुत कुछ करते हैं जी .. इस देश में सब कुछ पूरी ईमानदारी के साथ।”

इसके पहलें कि मैं उनसे पूछता कि वे क्या-क्या काम करते हैं वे बाले, चोट देते हैं जो पूरी ईमानदारी के साथ। जिसमें पैसा लिया जिसका दारू पिया, जिसका मुर्गा खाया ईमानदारी से उसके चुनाव-चिह्न पर मुहर लगाते हैं जी। हमारी

ईमानदारी का एक नमूना और देखिए हम किसी का काम बगैर पैसों लिये नहीं करते पहले उसे गिनवा लेते हैं फिर काम को हाथ लगाते हैं। हम उन लोगों को तरह नहीं है कि सामने तो बिना पैसों लिये काम कर दें और उधर पीछे के दरवाजे से पच्चीस हजार रुपए रखवा लें।"

"याने कि आपके कहने के अनुसार पिछले दशकाले में पसे लेना बेईमानी का काम है? और जो लोग इस तरह पैसा लेते हैं वे बेईमान हैं?"

"हमने कहाँ कहाँ जो कि वे बेईमान हैं वे भी ईमानदार हैं नभी तो आज सरकार के ऊँच पदों पर हैं। लेकिन उनकी ईमानदारी का तरीका अलग है। वे बेईमानी नहीं करते लेकिन बेईमानों की गैरी जरूर खाने हैं। बर्इमानी के पैसों से अपन बच्चों का इंतजाम करने में प्रसन्न होते हैं, बेईमानों के पैसों से अपनी बीबी को बिदेसों की सूर कराते हैं।"

वे धोड़ी देर रुके और फिर बित्तर से मुझे समझाते हुए बोले "अब देखिए जी, आपने कह दिया कि वे आपका काप कर देंगे, आपको कह दिया कि वे आपको किसी ऊँची पोस्ट पर बिठा देंगे लेकिन यह काम उनके हाथ में नहीं है, ऊपर वाले से कहना होगा। फिर आपसे कहेंगे कि ऊपर वाला पचास हजार माँगता है इसलिए वे दु खी हैं। आपसे यह भी कहेंगे कि ईमानदार अदमी जाकर व इस देश में बर्इमानी के बीच फैसल गये है। उनके हाथ में होना तो व बिना पैसों लिये आपका काम कर दें। अब यदि आप अपनी तरकीबी चाहते हैं तो आप उनसे कहेंगे कि बिना पैसों लिये, काम जमा दें। जो ऊपर वाले के नाम से पचास हजार एक ब्रीफकेस में ले जाकर उन्हें दे देंगे। अब ऊपर वाला कौन है यह तो केवल वे ही जानते हैं। ऊपर वाले ने किन्तों पैसों लिये हैं यह भी केवल वे ही जानते हैं। हम ऐसे नहीं हैं। हम नीचे वाले जरूर हैं लेकिन ईमानदार हैं। समझे आप?"

यें उनसे बात कर ही रहा था कि एक-दूसरे ईमानदार आ गये। बोले, "बाई जी, इससे बचना। ये माला एक नम्बर का बेईमान है। सही ईमानदार तो केवल मैं ही हूँ। इससे पहले कल माले ने एक मर्गज को अस्पताल में पहुँचा कर डॉक्टर से यंत्र रूप से कमीशन के लिये। माला दिन-भर दलाला करता है और अपने आपको ईमानदार खताता है। बोवो भाईजी, क्या दलाली खाने वाला ईमानदार हो सकता है?"

तभी पहले ईमानदार न कहा "अबे चोप्य साले, कमीशन खरते हैं, तेरा बाप का कुछ नहीं खरते। देने वाला देता है और हम ईमानदारी से लते हैं ता तारी डालते क्या फलती है? बेटा, पहले अपने मुँह पर लगी कालिख को साफ करके आ। माने, ग्राहबो को पैसा खिलाकर फाइदारी के मामले से छूट गया और यहाँ आफन ईमानदारी बता रहा है? जिस दिन भुल्लूम ने हेस-केरी के जुर्म में गिरफ्तार कर हजालत में बन्द कर देया था उस दिन कछौं यई भी तेरी ईमानदारी? बाल? चुप क्या है।"

दूसरा ईमानदार ने मन्तुलित होकर कहा "ये मेरा व्यक्तिगत मामला है और व्यक्तिगत मामले का मेरी ईमानदारी से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस देश में लोगों के व्यक्तिगत मामले और ईमानदारी के मामले अलग-अलग होते हैं। सर्वजनिक रूप से मैं आज भा ईमानदार हूँ। कोई मेरी ईमानदारी पर उँगली नहीं ठठा सकता। इट इज माई परसनल मामला।"

"बड़ा आधा परसनल मामला वाला। शप नहीं आती दिन-भर बड़े आफमरों के पीछे चुप हिलता फिरता है और अपन को ईमानदार कहता है?"

दूसरा ईमानदार बोला, "दुम हिंसने से ईमानदारी का कोई सम्बन्ध नहीं है। ईमानदारी अपनी जगह है और दुम अपनी जगह है। मैं नही तरह नहीं कि गुंडागिरी करके ईमानदार बना रहूँ।"

"अबे गुंडागिरी करते हैं ना अपन रूम पर करते हैं और इन्के की चाट पर करते हैं। ये भी हमारा परसनल मामला है, सपझा? कोई हक्षारी ईमानदारी पर कुछ बड़गा तो हम उसकी जुबा र काट देंगे हौं।"

मुझे लगा कि उसकी इस धमकी से दूसरा वाला आदमी कुछ कमजोर पड़ रहा है। मैंने दूसरे ईमानदार से कहा, "आप पीछे मत हटिए। ये तो ईमानदारी की लाडाई है और ईमानदारी के मामले का लेकर पीछे हटना ठीक नहीं है।"

दुसरा ईमानदार नेश में आ गया। बोला, "कौन पीछे हट रहा है? पहले इन्में बोल लेंगे दो। अपने संबंधान में सबको बोलने का अधिकार है। यह अपनी बात पूरी कर लेगा तो मैं इसका जवाब दूँगा।"

पहला ईमानदार बोला, "अबे नू क्या जवाब देगा। मार्केट में एक पैसे की क्रेडिट नहीं है और कहता है जवाब दूँगा। अबे पहले समाज में अपनी इज्जत तो बना,



बट में देना जवाब। जिसका उधार लिया उसी का पैसा डुबा दिया और अपने आपको ईमानदार कहना है? अवे ईमानदार बनने का इतना शौक था तो उधार क्यों लेना है दूसरा से?"

दूसरा ईमानदार अभी भी सन्तुलित था। बोला, "उधार लेने का ईमानदारी से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम अपने विक्रम के लिए दूसरे देशों में उधार लेते हैं इसका यह मतलब नहीं कि हमारा देश बेईमान हो गया। उधार उसे ही भिलाता है जिसकी हैसियत होती है। तुम्हारे जैसे फटीचर आदमी का कौन देगा? ईमानदारी अपनी जगह है और उधार अपनी जगह है। मैं तेरी तरह नहीं कि किसी को कोई भाल दिला दिया और बीच में कमीशन मार दिया। शर्म तो तुझे आनी चाहिए। साले हम काम में कमीशन खाता है और अपन को ईमानदार बताता है?"

पहला ईमानदार इस बार ठहाका लगा कर हँसा। बोला, "अरे बाह र ईमानदार की औलाद। मेहनत की कमाई को कमीशन कहना है? इस कमीशन के लिए कितना खतरा मॉल लेना पड़ता है, कितनी मेहनत करनी पड़ती है, जानता है? अपनी जान जोखिम में डाल कर दो पैसा कमाते हैं और इसे तू कमीशन कहना है? देश में इतने कमीशन एजेण्ट हैं तो क्या वे सब बेहमान हो गए? बेदा कमीशन खाना भी एक आर्ट है। अब मैं भी कहता हूँ कि कमीशन अपनी जगह है और ईमानदारी अपनी जगह है। अब बोल बटा?"

मुझे लगा कि दूसरा ईमानदार ईमानदारी की बातें करते-करते थक गया है। मुझ लग रहा था कि ईमानदारी के मामले में वह पहले आदमी के सामने समर्पण कर देगा। मुझसे यदि कोई कहे कि दिन-भर ईमानदारी की बातें करो तो मच कहता हूँ कि मैं थक जाऊँगा। ईमानदारी चीज ही ऐसी है कि आदमी को बहुत जल्दी थका देती है।

दूसरा ईमानदार बोला, "ठीक है शाम को मिलना तब फुरमत् से बहम करेंगे ईमानदारी पर।"

पहले ईमानदार की छाती फूल गई। उसके चेहरे पर ईमानदारी की विजय थी। उसने मुझसे कहा, "दखा साहब जी मैं अभी भी आपसे कहता हूँ कि केवल मैं ही ईमानदार हूँ। आप मुझ पर विश्वास करने हैं या नहीं?"

मैंने कहा, "मेरे विश्वास करने या न करने से क्या होगा?"

वह बोला "दख्खा साहब जी, हमारे लिए आप ही पब्लिक हो। आगे अपना सिद्धान्त ह कि कितनी भी गुंडागिरी कगे, मारकाट कगे, कर्मीशन खाओ लेकिन पब्लिक को समझा दो कि हम ईमानदार हैं। हमने आपको समझा दिया या नहीं? अब बालो हम ईमानदार हे या नहीं?"

मैंने कहा, "लेकिन जिम तरह आप दोना ईमानदार लड़ रहे थे, मुझे लगा कि आप दोनो ही ईमानदार नहीं हैं।"

वह फिर ठहाकालगाकर हँसा। बोला, "साहब जी, ईमानदारी की लड़ाई ऐसी ही होती हे। हर आदमी दूसरो को बेईमान सिद्ध करके ही अपनी ईमानदारी स्थापित करता हे। वैसे वह आदमी भी ईमानदार ही था लेकिन वह जब तक आपके सामने मुझ बेईमान सिद्ध नहीं कर देता आप उसकी ईमानदारी पर विश्वास नहीं करते।"

मेरा जवाब सुनने से पहले वह आगे बढ़ गया।

शाम की मैंने फिर दो तो को देसी दारू की दुकान पर देखा। दूसरा ईमानदार पहले को समझा रहा था, "अब फ़ाफ़तु बक-बक कर रहा था पब्लिक के सामने। इस तरह पब्लिक के सामने बक-बक करने से हमारी ईमानदारी किभी दिन खतर में पड़ जाएगी। और लागो को पता चल जाएगा कि हम ईमानदार नहीं हैं।"

फिर दोनो ने देसी दारू की बोतल अपने-अपन गिलास में उडेलनी और ईमानदारी से पीने लगे।

## प्लाट खरीद लिया है मकान बनाने के लिए

यह सार्वभूमिक सत्य है कि मकान बनवाने वालों को अपना बना हुआ मकान लोगों को दिखाने की जबरदस्त खुजली होती है। कुछ लोग इस दश में ऐसे भी पाये जाते हैं जो मकान बनाने के लिए जमीन खरीदने के बाद कम से कम सौ पचास लोगों को तो खाली प्लाट ही दिखाते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि वे कितन बुद्धिमान हैं।

ऐसे ही एक बुद्धिमान से मैं परेशान हूँ।

जैसे ही उन्होंने मकान बनवाने के लिए प्लाट खरीदा, मेरे घर के दम चक्कर लगा गए। गनीमत उस दिन में बाहर गया हुआ था। रात देर में लौटा ओर मुझे नोट ठीक से खुली भी नहीं थी कि वे मेरे घर आ गए। बोले, "यार, तुम जंसा कुम्भकरण मँने नहीं देखा। धूप भिर पर चढ़ी है और तुम मा गये हो। अब यह देश तरक्की करगा भी तो कैसे?"

मैंने कहा, "देश की तरक्की के लिए तुम अकेले ही काफी हो। मुझे क्या इस विकासशील कार्यक्रम में घसीटने हो।"

वह बोले, "कल में चक्कर लगा रहा हूँ और तुम हो कि मिल ही नहीं रहे हो। मैंने मकान बनाने के लिए प्लाट खरीद लिया है। चन्ना, तुम्हें दिखाता हूँ।

मैंने कहा "मजन-वजन तो कर लने दो।"

वह बोले, "अरे मारो गोला भजन की शेर भी कही मुँह धोना है। आध घंटे में दो लौट आओगे यहाँ पस ही तो है।"

मैने कहा, "प्रेसर बन रहा है।"

वह बोले, "इसी प्रेशर के नाम से तो पूरा देश माग खा रहा है। ऐन वक्त पर लोगों को प्रेशर आता है। अब देखो ना, उधर कुछ चुनाव के सकेत मिल रहे हैं तो इधर कई लोगों को एक साथ प्रेशर आ रहा है। कल एक जनमोर्चा वाले लोटा लेकर नाते हुए दिखे थे सुबह-सुबह। इतनी जल्दी में थे जैसे लग रहा था कि नामांकन दाखिल करने की अंतिम तारीख में केवल कुछ ही मिनट बाकी रह गए हैं।"

इसके बाद वे तहाका लगा कर हैंने। मुझे हाथ एकड़कर मसीदते हुए बाल, अरं बार चलो जल्दी बाद में निपट लेना। इतना प्रेशर तो इमरजेन्सी में भी नहीं आया था लोगों को।"

अब हालत यह थी कि मैं उनमें बार-बार पूछ रहा था कि प्लाट कितनी दूर है और वे हमेशा कह रहे थे कि 'बस थोड़ी दूर और है' लेकिन कोई चार किलोमीटर तो उन्होंने मुझे पैदल चलवा ही दिया। वहाँ पहुँच कर उन्होंने बताया कि यह प्लाट जो है वह उन्हें किम तरह मिला। भाव कैसे तय हुआ, कितना इब्वास दिया और कितना रजिस्ट्री के मसय दिया। फिर उन्होंने प्लाट के मौदर्य का वर्णन करते हुए कहा 'अब देखो, यदि इस तरफ मकान का दरवाजा डाल दाग तो पूरा शहर दिखेगा एक नजर में लेकिन मैं सोच रहा हूँ दरवाजा इधर डालना बेकार है। मैं तो उस तरफ डालूँगा दरवाजा। अब पूछो क्या?'"

मैने पूछा—क्यों? तो वह बोले, "अपने को शहर देखकर क्या करना है।"

मेरी इच्छा हुई कि इस माँके पर मैं उनका सम्मान कर ही दूँ। एक तो सुबह में जल्दी उठा दिया और अब पीछा ही नहीं छोड़ रहा है। तेरे दरवाजे की ऐसी तेसी मुझे जल्दी घर जान दे। लेकिन वे थे कि मुझे छोड़ ही नहीं रहे थे। बाले, "अब देखो इधर खिडकी रहेगी। इसमें फायदा यह है कि हवा आयेगी।"

मेरी इच्छा दो तमाचे मारने की हुई। मूर्ख, खिड़की से हवा नहीं आयेगी तो क्या जानवर आयेगे? लेकिन उन्हे तो नगा चढा हुआ था प्लाट का। बोले, "उधर चलो तुम्हें दिखाता हूँ।"

वे मुझे घसीट कर दक्षिण दिशा की तरफ ले गए जहाँ एक भैंस-थान था। बोले 'इसीलिए मैं खिडकी उधर ————— उधर लगाने से गोनर की वध अन्वये'।

जब मकान बनाना तो सोच-समझ कर और आगे-पीछे देखकर बनाना चाहिए। मान लो इधर लगा दी तुमने खिडकी जैसे ही सुबह-सुबह खिडकी खोलोगे, एक घंटे नित्यकर्म से निवृत्त होती हुई दिखेगी याने कि सुबह की शुरुआत ही गलत हो गई अब इधर खिडकी लगाने से क्या फायदा इसलिए मैंने तय कर लिया है कि खिडकी तो उधर ही लगेगी।”

मं चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा तो वे झल्ला गए। बाले, “यार कुछ तो मलाह दी तुम्हें प्लाट दिखाने लाया हूँ और तुम हो कि कुछ बोल ही नहीं रह जा? अच्छा, ये बताओ कि यदि खिडकी इधर लगा भी दे तो क्या हर्ज है? मे इसलिए कह रहा था कि मकान में इस तरफ एक भी खिडकी नहीं है। बताओ खिडकी देना जरूरी है क्या?”

मैंने कहा, “बिल्कुल जरूरी नहीं है। मैं तो कहता हूँ एक भी खिडकी मत डालो। अब, चलो जल्दी, मेरी महनशक्ति जवाब दे रही है।”

वे बोले, “अरे बड़े विचित्र आदमी हो यार। पाँच मिनट में महनशक्ति जवाब दे गई तुम्हारी। हमे देखो, इस प्लाट के लिए कितने चक्कर लगाए तब कहीं जाकर मिला हमे। पचास लोग लगे थे सौदा खराब करने के लिए। लेकिन जिसकी किम्मत में भूमि-योग लिखा जाता है, उसे कोई नहीं टाल सकता।”

मैंने पूछा, “इस प्लाट के आसपास कोई तलाब-बन्याब है या नहीं?”

वह बोले, “अपन तो कुँवा खुदवा लेगे पहने। इसमें फायदा यह होता है कि मकान बनवाते समय पानी की झल्लत नहीं रहती। जो मलब्रा निकलता है उसमें प्लिथ प्लेन हो जाती है। इस कोने में कुँवा बनाऊँगा लेकिन सोचना है कि यहाँ जमीन का सरफेस कुछ हाई होगा। और सैप्टिक टैंक भी पान पड़ेगा। क्यों?”

मैंने कहा, “सेप्टिक टैंक किधर है?” वह बोले, “अभी तय नहीं किया है लेकिन सोचना है कि कुवे में जग दूर ही रखूँ। तुम बताओ किधर ठीक रहेगा?”

मेरी इच्छा हुई कि इन आदमी को सेप्टिक टैंक में धकेल दूँ और मैं तालाब से त्रिपट कर आ जाऊँ। इसलिए मैंने कहा, “यार, तुम यहाँ बैठ कर सोचो कि सेप्टिक टैंक किधर रहेगा - मैं क्या करणम से आता हूँ”



वह बोले, "चम थोड़ी देर और ममझ लो। इधर मे एण्ट्री हुई, सीधे बैठक म यहाँ एक छोटा दरवाजा। फिर उससे लगा हुआ बारह-अट्टारह का हॉल। इधर एक बेडरूम। यहाँ ओपन स्पेस महिलाओं क लिए चावल घोंघरह चुनने के लिए। फिर इधर डायनिंग। उससे लगा हुआ गेम्टरूम और उसके सामने बेडरूम। इस बेडरूम म बाथ-न्नेट अटैच करने की सोच रहा हूँ। क्यों ठीक रहेगा या नहीं? भइ रात के टाइम बाहर निकलना ठीक नहीं है। अन्दर निपट ले तो अच्छा है। क्या?"

मेने लगभग कराहने हुए कहा, "अच्छा ई। चलो अब चले।"

वह बोले, "लेकिन यदि इम हॉल को यहाँ से इधर शिफ्ट कर दे और इधर लेट-बाथ डाल दे तो केसा रहेगा?"

मेने कहा, "बिल्कुल ठीक रहेगा।"

"और यदि इस गेस्टरूम को किचन के पास ले आएँ तो?"

"बिल्कुल ठीक रहेगा।"

"और यदि किचन को यहाँ से हटाकर इम बेडरूम के राइट माइड म डाल दे तो?"

"वो भी ठीक रहेगा।"

"और यदि इस बेडरूम से भी लेट-बाथ अटैच कर दे तो?"

"बिल्कुल ठीक रहेगा।"

"लेकिन यहाँ लेट-बाथ डालने मे पाब्लम यह रहेगा कि गेस्टरूम में जो आदमी सोया है वह डिस्टर्ब हो जायेगा। घर के बाल-बच्चे डमी तरफ से जायेगे। क्यों?"

"हाँ जायेगे।"

"इमलिए सोचता हूँ कि गेस्टरूम यहाँ से निकाल कर पीछे की तरफ डाल दूँ केसा रहेगा?"

"बिल्कुल ठीक रहेगा।"

"और यदि गेस्टरूम इधर हॉल के पास रख दें तो?"

"वो भी ठीक रहेगा।"

डम बार वे भड़क गए। खोल, "अजीब आदमी हो यार, जाँ पूछता हूँ ठीक रहेगा' ही कहते हो। मैं पूछता हूँ यार कि तुम्हारे पास विवेक नाम की कोई चीज़ भी या नहीं? अपन यहाँ डमो जात पर तो पूरा देश मार खा रहा है। जो अगला कह बस वही ठीक है। अपना दिमाग तो लगाना नहीं है किसी को। मैं पूछता हूँ बताओ सैप्टिक टैंक कहाँ बनेगा?"

मैन गुर्रस में कहा, "तुम्हारे सिर में यार में प्रेशर के मार परेशान हूँ और तुम मुझे छोड़ ही नहीं रहे हो। तालाब पूछता हूँ तो चेकूम वगैरे हो।"

वह बोले, "एक बात कहना हूँ समझो डम। प्रेशर को बर्दाश्त करना सीखो। हमें देखो, ऑफिस में प्रेशर, घर में अलग प्रेशर। उधर नेताओं का प्रेशर इधर बच्चों का प्रेशर। ऊपर में यह मकान बनवाना है। इसे कहते हैं प्रेशर और तुम हो कि बस अपने ही प्रेशर में परेशान हो। दस मिनट रोककर खाँ यात। अब दखा इधर जो बेडरूम है वह भीसथान से लगा हुआ है। अब बताओ, इसे कहाँ सिफ्ट करो?"

मैन कहा "नहीं मालूम।" वह बोले, "अच्छा यदि इस हॉल को सेन्टर में डाल दे तो?"

मैन कहा "बिल्कुल ठीक रहेगा।"

"और यदि इसे गेम्बरूम में मिला दे तो?"

"तो भी ठीक रहेगा।"

इस बार उन्होंने मुझे इस तरह देखा जैसे वे मुझे कच्चा चबा जायेंगे। बाले "अच्छा चलो, बाद में सोचेंगे। तुम जल्दी मचा रहे हो तो मेरा भी दिमाग काम नहा कर रहा है!"

इसके बाद की स्थिति यह थी कि वे रोज शाम को मेरे यहाँ आ जाते थे कहते, "यार चलो, प्लाट की तरफ घूम आते हैं।"

एक-दो बार मैंने बहाना बनाया लेकिन वे मुझे जबरदस्ती पकड़कर ले गए। वहाँ जाकर उन्होंने मुझे कई बार गेम्बरूम, बेडरूम और सैप्टिक टैंक में पटक। और अब तो हालत यह है कि डर के मारे मैं शाम को घर पर ही नहीं रहना। पता नहीं

यह भूत कब मुझे पकड़ ले। वे घर पर आते और मेरा पता पृच्छते। मने घर वालों को समझा दिया था कि वे उन्हें यह न बताएँ कि मैं कहीं भिल्लूंगा। मेरी हज़लत यह थी कि मे दबे छिपे रात को हम बजे घर आता और चुपचाप सो जाता। सुबह वे अगते और पृच्छते। मेरे बच्चे कह देते कि पापा रात-भर घर नहीं आए हैं।

लेकिन वे निराश नहीं हुए। मुझ ही निराश होना पड़ा। मैंने एक माह की अर्नर्लीव के लिए आवेदन पत्र दिया और लिखा कि इन दिनों मैं मानसिक रूप से परेशान हूँ इसलिए अपने गाँव जाना चाहता हूँ।

छुट्टी मेकनन हो गई और मैं बच्चों सहित गाँव चला आया।

एक माह बाद जब मैं लौटा तो वे मुझे स्टेशन पर ही मिल गए। बोले "यार अघानक क्या हो गया था? पिताजी तो टीक रहे ना? तुम बिना कुछ बताए चले गये ना मुझे चिंता हो रही थी। कोई पाब्लम तो नहीं है? मैं तो महीने-भर मे तुम्हारा गस्ता देख रहा हूँ। रोज स्टेशन आता हूँ। शाम को घर पर रहोगे ना?"

मैंने पूछा, "क्यों? कोई ख़ाम बात?"

वह बोले, "वा अपना मकान बन रहा है ना एक बार आपको दिखा देता मैंने कुछ चेंज किया है मैं शाम को पाँच बजे आता हूँ वान च हुई कि उधर से भेसथान दट गया है। नगरपालिका वालों ने हटवा दिया वहाँ से। इसलिए हुआ ये कि पूरा नक्शा ही बदलना पड़ा शाम को चलकर दिखाना हूँ तुम्हें अब स्पेटिक का पाब्लम नहीं है। उसी तरफ डाटा दिया है जिधर भेसथान था। खिडकियाँ भी निकाल दा है उस तरफ तुम दरवाजे तो खुल हो जाओगे ऐसा नक्शा लगावा है कि पूरी फेसिलिटी अन्दर ही अन्दर बाहर झाँकने तक की जरूरत नहीं। अच्छा, मैं शाम को आता हूँ।"

अब कुल मिलाकर स्थिति यह है कि गेज ब्रेडरूम से निकल कर लेटबाथ और वहाँ से निकलकर किचन में जाता हूँ। वहाँ से हॉल में आता हूँ। कभी यह खिडकी खालता हूँ और कभी वह दरवाजा बन्द करता हूँ। उनके मकान के बारे में वे जितना नहीं जानते, उससे अधिक मैं जानने लगा हूँ। कभी-कभी वह मुझमें पृच्छते हैं, "क्यों यार वो दरवाजा किधर खुलता है?" मैं तुरन्त कहता हूँ, "ओपन स्पेस की तरफ।" वह पृच्छते हैं "तुम्हारे अपन ने यह विप्टो किमर लार्ड खी" मैं कहता हूँ, "भेसथान

की तरफ।" वे पूछती हैं, "पहले यह मेडिक टेक डालने का अपना प्लान कहाँ था?" मैं कहता हूँ, "तुम्हारे सिर में।"

वे हँसने लें। कहते हैं, "तुम हास्य अच्छा करते हो। जिन्दगी में हँसने-बालने का सिवाय बचा ही क्या है। मेरी मानो तो एक मकान तुम भी बनवा ही लो। जिंदगी का क्या भरोसा।"

मैं सोचता हूँ कि अब इतने लोग पेशानियों में जी रहे हैं तो मैं भाग कर कहाँ जाऊँगा? यही सचकर मैं उनका खतरा हुआ मकान काफी साहस आर धैर्य के साथ देख रहा हूँ। जब हम देश में इतने रोगों को बर्दाश्त कर रहे हैं तो आखिर उन्हारे क्या बिगड़ना है?

## बन रहा है उनका मकान

उसे देखता हूँ तो लगता है जैसे यह आदमी पागल हो जायेगा। भरो दुपहरी में फिर पर पंछा लपेटे इधर से उधर भागता रहता है। रात में बराबर सोता नहीं। चौंक कर उठ जाता है। गिट्टी, रती, पत्थर, लोहा, मीमेंट और छड़ के अलावा काई दूसरी ब्रान करता नहीं। उधर अपने पा एम कामगज नगर में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित कर रहे थे और इधर यह आदमी भगत मिस्त्री का समझा रहा था कि कितना रक्षा बॉल्डर देन के बाद डी पी सी धारना है।

इसे कहते हैं समर्पण भावना। एक मकान क्या बनवा रहा है दीन-दुनिया का भूल गया। उस दिन एक भिखमगा 'मिले माई आप' बोल कर खड़ा नहीं हुआ कि उसने तुरन्त बच्चे से कहा, "दे दे रे इसको एक गिलास मुरम।"

बाद में उसे याद आया कि भिखमगा मुरम खा जायेगा तो पुलिस वाले उसे पंग्रसान करेंगे। लेकिन किया भी क्या जा सकता है। उसकी विवशता थी। उसकी आदत थी कि जिम् काम को हाथ में लो, उसमें डूब जाओ। मकान बनवाने का काम लिया है तो उसमें इतना इबना ही पडता है। एक रात नींद में उठकर चिल्लाने लगा, पकड़ो पकड़ो। चोर सीमेंट बोरा चुगकर भाग रहा है।" कहने का मतलब यह है कि मकान बनवाने के पीछे वह बेधुन हो गया है।

सुबह मजदूर करने के पहले एक चक्कर मकान का लगाता है। वहाँ जाकर देखता है। थोड़ी देर इधर-उधर घूमता है और फिर वापस आ जाता है। उस हर गंज यही डर रहता है कि भगत मिस्त्री दृमग ठीका पकड़ लेगा तो उसका मकान अधुग रह जायेगा। मंत्री और मिस्त्री का कोई धरोसा नहीं, कब किधर चले जायें।

जिम्ह दिन उसके मकान की प्लिथ भुरी हुई उसके दूसरे दिन स वह साजा, भर्गई बीजा, हल्दू आदि का नाम गटने लगा। कौन-गी लकड़ी मस्ती पडेगी, रबर और है, फास्ट गार्ड का घर कहाँ है, सुन्दर बठई कितने बजे घर पहुँचना है, एक चौक मं कितन फिट लकड़ी लगती है, और होलफॉर्म कर्नासस्ता मिलता है आदि महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर उसने अपने आपको केन्द्रित कर लिया।

उस दिन पान टेले पर उससे मुलाकात हो गई। मैंने मीठा पान लिया और एक रुपये का नोट महती जी को दी। महती जी न कहा, “हो गया।”

मैंने कहा, “क्यो? कल तक तो मीठा पान पचहरन पैसे का था।”

महती ने कहा, ‘पान के भाव बढ़ गय हैं। मुषागो महंगी हो गई। कथा महंगा हो गया। उतरी महंगाई बढ़ रही है कि क्या कहे।’

मकान मास्टर ने पछा कधे पर लटकाया और कहा, “ठीक कहते हो महती जी। देखो, सगई एक सौ चालीस रुपया फिट हो गई। अब कोई मकान बनवाये तो बनवाये कैसे। बीजा जेम्मा लकड़ी जिम्को कुता नही सूँधता था, अनाप-शनाप भाव पर बिक रही है। मैं ना कहता हूँ कि महंगाई कम कहना है तो फरले सगई-बीजा का रट उतारो। सरकार आवास सुविधा की बात करती है लेकिन सगई-बीजा का भाव नहीं उतारती। अब तुम हो कहे, कोई मकान कैसे बनवाए?”

मैंने कहा, “जडीसा मे बीजा मस्सा है। दो नम्बर का माल अच्छा मिलता है।”

मेरा इनना कहना ही मेर लिए घातक हो गया। उमन महती को झाडा और मुझे पकड लिया। पछा, “कहाँ मिलेगा?” मैंने कहा, “कही भी मिल जायेगा।”

एक दिन ऐसा हुआ कि रात को बारह बजे किमी ने मेरा दरवाजा खटखटया। मैंने दरवाजा खोला तो देखा कि मकान मास्टर खड़े हैं। मुझे देखते ही बाने, “आपने कहा था कि उड़ीसा मे लकड़ी सस्ती है। मुझे दो-चार लोको के नाम बना दीजिए। मैं कल जाऊँगा।”

मैंने कहा, “मुझे नहीं मालूम।”

वह हँसा। बोला, “बता दीजिए। मैं किसी को नही बताऊँगा।”

मैंने फिर कहा, “कह दिया ना कि मुझे नहीं मारूँगा।”

वह बोला, “आपको मालूम है। समझ लीजिये कि आपका ही मकान बन रहा है बत्ता दीजिए ना। सब कहता हूँ मे किसी से नहीं कहूँगा।”

मेरी इच्छा हुई कि इस आदमी को दो तमाचा मारकर भगा दूँ। खापोखा मर्ग नींद खगाव कर रहा है। लेकिन उसका चेहरा देखकर लगा कि दो तमाचा मारूँगा तो वह कहगा “लगे तो दो तमाचा और मार लो लेकिन बता दो कि लकड़ी कहीं सम्ती मिलनी है।”

वह सोचकर मैंने कह दिया “अच्छा सुबह बत्ता दूँगा।”

सुबह चार बजे फिर किसी ने दरवाजा खटखटया। मैंने आँखें मलते हुए दरवाजा खोला तो मकान मास्टर बोले, “आपने कहा था ना कि सुबह बताऊँगा। इसलिये मैं आया हूँ।”

मैंने मोचा, सागा ये आदमी है या भूत। मैंने कहा, “सुबह का मतलब है सात बजे।” वह बोला, “तीन घंटे में क्या फरक पडता है। अभी बत्ता देते तो मे भी एक नींद मार लेता।”

लोग कहते हैं कि मकान बनवाना परेशानी का काम है लेकिन मैं कहता हूँ कि मकान बनवाने के बदले मकान बनवाने वाले में मिलना अधिक परेशानी का काम है। सुबह र्भ तो देर तक सोता रहा और वह माढ़े छः बजे मे मेरे मकान क चक्कर लगाने लगा। घर वालो ने कहा कि सो रहे है तो वह बोला “जरा उठा दो, मुझे जरूरी बात करनी है।”

घर वालो ने मुझे उठाया और बताया कि कोई आदमी मुझमे जरूरी बात करना चाहता है। मैंने उठकर देखा तो मकान मास्टर खडा मुस्करा रहा था। मुझे देखते ही बोला, “आपने कहा था ना कि सात बजे बताऊँगा। सवा सात हा रहा है।”

मैंने पीछा छुडाने के लिए दाँ-चार उल्टे-सीधे नाम बता दिये।

फिर आश्चर्य हुआ कि वह सम्ती लकड़ी पिडा आया। मुझसे एक हफ्ते बाद मिला। बोला, “आपने मही गस्ता बताया। अब एक समझ्या और हल कर दीजिए मेरी।

इसके पहलू कि मैं कुछ कहता उसने कहा, "कुँवा नहीं जम रहा है। आप मेरे साथ चल कर मुझे भमझा दीजिये कि कुँवा कहाँ खुदवाऊँ।"

मैंने कहा, "मुझे कुँवे का अनुभव नहीं है।" वह हँसा। बौला, "भज्ज मत कीजिए। आपकी सब अनुभव है। समझ लीजिए कि आपका ही मकान बन रहा है। बाल-बच्चे नहायगे और आपको दुआ देगे। थोड़ा चलिए ना मेरे साथ।"

मुझे लगा कि यह आदमी कहीं कुँवा खुदवाकर उमम कूद मत दे। कोई ठिकाना नहीं है। मकान के पीछे इतना पागल हो गया है कि कुछ कहा नहीं जा सकता यही साचकर मैंने कहा, "कुँवे के चक्कर में मत पड़ो। नगरपालिका क नल स काम चला लो।"

उसने कहा, "मैंने सब हिलाब लगाकर देख लिया। कुँवा ही सस्ता पड़ता है। हर मौके पर साथ देना है।"

उसका मन रखने के लिए मैं उसके साथ गया। वहाँ जाकर देखा तो उमने एक इच जगह भी नहीं छोड़ी थी। पड़ोसी की दीवार से लगाकर दीवार बनाइ थी मैंने कहा, "कुछ जगह छोड़ देते तो कुँवा भी बन जाता।"

उसने कहा, "जगह नहीं है, इसीलिए तो आपको लाया हूँ। आप सरकारी विभाग में काम करते हो। बिना जगह के भा फाइल में कुँवा निकाल देते हो। अपना मकान समझकर मेरे लिए भी कुँवा निकाल दो। बस यही किन्ती है आपस।"

अब मुझे लगा कि यह आदमी पागल नहीं है। अपने लिए सुविधाएँ जुटा रहा है। जब प्रजातंत्र में सभी लोग अपनी सुविधाओं के लिए परेशान हैं तो इस आदमी का एक मकान के पीछे परेशान होना वाजिब है।

उसने पूछा, "मुख्यमंत्री को दगड्बास्त देने से काम बनेगा? ऐसा कुछ हा तो पकड़ता हूँ किसी जी को। और मैं भी चला जाता हूँ कांग्रेस में।"

मैंने पूछा, "कुँवा अपने लिए बनवा रहे हो या दूसरो के लिए?"

इस धर वह मुस्कराया। बाला, "कुँवा भई कुँवा जिमके भी काम आ जाए। आप तो अपना मकान समझकर हमे सलाह दो। 'बलाओ किधर' से निकलेगा कुँवा?"



बन रहा है उनका मकान

मे जानता हूँ वह जिसके पीछे पड़ जायेगा, उसे निपट कर ही रहेगा। वह कुँवा खोदकर ही दम लेगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। कहीं मैं भी जगह निकालूँगा। उसे इस बात की चिन्ता नहीं है कि यह किसके काम आएगा।

अपन डम् मकान के लिए वह कुछ भी कर सकता है, यह मैं भी महमम कान्ता हूँ और भर साथ कई लोग महमस करते हैं। लोग उमे भले ही पागत कहे वह अपनी जिद पूरी करके ही रहेगा। जिद से मरा मतलब उमक मकान मे कुवे से है आय अन्यथा न ममझे।



## पागलों के सान्निध्य में

इन दिना हमारे यहाँ दो पागल स्थायी रूप स चौक पर डेग डालकर बेटे हैं। दोनों पुरुष पागल हैं। महिला पागलों का अभाव हमारे यहाँ कभी भी नहीं रहा लेकिन उनका मन हमारे शहर में लगा नहीं। आती है और चली जाती है। पिछले चुनाव के समय एक महिला पागल आई थी। उम्मीदवारों को देखकर जोर का ठहाका लगाती थी और फिर जमीन पर थूककर चली जाती थी। कुछ बोलती नहीं थी। महिलाओं की यहाँ विशेषता मुझे पसंद आती है—बोलती कुछ नहीं लेकिन अपनी अदाओं में भव-कुछ कह जाती हैं। चुनाव-प्रचार चलता रहा और महिला थूकती रही, ठहाके लगाती रही। वह क्यों ऐसा करती थी, किसी की समझ में नहीं आया।

मेरे एक मित्र ने मुझसे पूछा, “यार, तुम ही बताओ कि वह ऐसा क्यों करती है?”

मैंने कहा, “वह इस व्यवस्था पर थूकती है। देख रहे हा सना में चुनने के लिए लोग पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। विधानसभा में जायेंगे तो इससे कई गुना कर्मचारियों के तबादले करवाकर और लाइसेंस परमिट दिलवाकर वसूल कर लेंगे।”

वह बोले, “तो इसमें थूकने की क्या बात है? यह तो हमारा चरित्र है। हम इनवेस्टमेंट करते हैं तो उसके रिटर्न की अपेक्षा भी रखते हैं। यह व्यावसायिक प्रवृत्ति हमारे खून में है। इसमें उन चुनाव लड़ने वालों का क्या दोष?”

मेरे मित्र ने बात सही कही थी। अब राजनीति उद्योग हो गई है। आजादी के बाद प्रारम्भिक दशक में जो राजनीति के मूल्य थे, वह नहीं रहे। गिरावट आ गई

हैं इन मूल्यों में। लेकिन पागलों की स्थिति वही है जो आजादी के साथ-साथ थी। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि हमारे शहर में एक पागल नगा घूमता है। किसी में बात नहा करना। कपड़े दो तो फेंक देता है। इस पर टिप्पणी करते हुए मेरे मित्र ने कहा, 'यार हम आदमी से किसी कपड़े की दुकान का उद्घाटन करवा दो!'

इसके बाद मित्र रॉम में जानना हूँ वे इसलिए हैं क्योंकि ऐसा कहकर उन्होंने अपनी बात में व्यंग्य पैदा कर लिया था। यह प्रामाणिक इसलिए था कि 'उम्मी' शाम हमारे शहर में एक कपड़े की दुकान का उद्घाटन हमारे विधायकों के कार्यक्रमों में सम्मिलित होने जा रहा था।

मैंने कहा, "जिसे तुम पागल समझ रहे हो, वह पागल नहीं है। मुझे यह बताओ कि शहर में नगापन कहाँ नहीं है? हर चीड़ियों सेंटर में श्री-एक्स फिल्म चल रहा है। हमारे सम्स्कार दृषित हो रहे हैं। केवल कपड़े पहन लन में हम अपने नगेपन को छेकने का ढोंग रचते हैं। अब यदि पागल नगा घूमता है तो इसमें क्या घुसाई है?"

वह समझ गया कि मैं व्यंग्य को नहीं समझ रहा हूँ। बोले, "यार, मैं तो समझता था कि तुम्हारी समझ व्यंग्य के मामले में अच्छी है। इतने नास्तो से व्यंग्य लिख रहे हो और छोटा-सा व्यंग्य-संकेत भी नहीं समझ सके?"

मैं समझ रहा था कि वे कपड़ा की दुकान, विधायक और पागल को मिलाकर यह बताना चाहते थे कि हमने इस बार जो जन-प्रतिनिधि चुना है, वह पागल है। लेकिन उनमें माफ-साफ यह कहने का साहस नहीं था क्योंकि वे सरकारी नौकरी में थे। विधायक जी को पता चलना कि वे ऐसा कमेंट कर रहे थे तो तुरन्त उन्हें प्रदेश के दूसरे छोर पर भेज दिया जाएगा और कहा जाएगा, "लो बेटा, अब देखो हमारा पागलपन। ले जाओ अपने बाल-बच्चों को वहाँ और भुगतो अपने व्यंग्य पर।"

मैंने कहा "मित्र, माफ-साफ कहाँ कि तुम किस पर व्यंग्य कर रहे हो?"

वह 'हे-हे' कर हँसने लगे। बोले, "यार, मैं तो मजाक कर रहा था। तुम्हें व्यंग्य लिखने की प्रेरणा देने के लिए मैंने यह कहा था।"

मैंने कहा, "दूसरे को प्रेरणा देना अपने देश में आमान काम है। मैं कहता हूँ कि माफ-साफ कहो कि अपना जन-प्रतिनिधि पागल है।"

वह बोले "मेरे एसा नहीं कह सकता। इस बार हमन जिस व्यक्ति को चुना है, वह बहुत योग्य है।"

मेरे समझ गया कि वे मुझमें डर रहे हैं। मेरी गण्टत है कि व्यंग्य में जो सवाह लिखता हूँ, वे ऐसे ही लोगों के बातें हैं। उनके इस बात का डर था कि कहीं यदि मेरे उन कठिन सवाह का उल्लेख जंगल में कर दिया ता वे विधायक जी की जेब-लिटर में आ जायेंगे। आजादी के बाद सम्कारी नौकरी करने जालो का यह वैयक्तिक कर्तव्य है कि जन-प्रतिनिधियों का गूट-बुक्स में रहे।

ठीक उसी समय चौमारे का दूसरा पागल हमारे पास आ गया। उन्होंने यह आशय था कि वह अखिरे फाड़कर लोगों को चेष्टा था; और उनके बाद कहना था 'हमजाने सूरज की ओलाव जाले किजडे।' 'इस तीस शब्दों के अलावा उसके मुँह में और कोई शब्द हम लोगों न आत तक नहीं सुना।

मेरे मित्र से पूछा, "बनाआ, यह पागल एसा क्यों कहता है?"

मित्र चुप हो गये। शायद उन्हें इन शब्दों में जर्म आने लगी थी। वे कुलीन परिवार के थे। पिछले कई सालों से सरकार में काम में थे। बोले, "पागल है इसलिए जो मन में आला है कह देता है। उसकी बातों पर हमें ध्यान नहीं देना चाहिए। अपने सविधान में पागलों के लिए चट्ट बूट है। यदि ऐसा नहीं होता तो कानि आ जाती। हम पागला को अपने में अलग मजबूत हैं।"

मेरे तुरन्त कहा "शायद इसलिए पागलों का बाट देने का अधिकार नहीं है।"

वह फिर हँसे। बोले, "इस बात पर व्यंग्य लिख दो, पत्र आ जायेगा।"

मेरे उनय कहा, "उस बार तुमने अपना चोट किसे दिया था?"

वह फिर डर गये। उनके मेरी बातों पे डर लगत लगा था क्योंकि उनके चट्टे पर ऐसे भाव आ गये थे कि मैं उनके व्यक्तित्व में मामलों की छान-बीन करत लगा हूँ। बोले, "छोटी डार फालतु बाते अच्छा बताओ कि तुमने पागलों पर छोड़े व्यंग्य लिखा है?"

मैं समझ रहा था कि मेरी बात को वे फालतू बात क्यों कह रहे हैं। पिछले चुनाव में उन्होंने जिम डम्पीटवार के प्रति अपनी हमदर्दी जाहिर की थी, वे हाग गये थे। अब वे यह भ्रष्टाचार करना नहीं चाहते थे। शायद उनका मन में इस बात का डर हो कि कहीं अपने विधायक जी को फता चल जाए कि उन्हें अपना वोट निगेधी डम्पीटवार का दिशा हैं, तो वे तकराफ म पड सकते हैं। सरकारों का काम तो तकराफ में डालने का यही जंचूक अन्व है। इन दिनों जा छोटे-छोट लोग मरत की दन्तली कर रहे हैं, वे ऐसे ही लोगों की तलाश में रहते हैं। उनमें से एक उनके पास आयेगा और कहेगा, "तमने सुना है कि आप सामकौय कर्मचारी होकर राजनीति में भंग लग रहे?"

यह सवाल सुनकर उनका पाशामा होला ही जाएगा, यह बात मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ। हम स्थिति में वे किस तरह निपटेंगे यह अलग बात है। यह भी हो सकता है कि वे हांटे कार्यकर्ताओं के लिए अपनी तरफ सफाई महाना बांध दें ता फिर उनके पैर पकड़ ले।

वाक्पकर्ता कहेगा, "आपक खिल्लाफ बडी शिकायत है आप बिना ऐसे लिय किसी का काम नहीं करते। विधायक जी से मेरी बात जुड़ थी आपक बार में। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हें सटी जानकारी दूँ। कहिए, आपका क्या कहना है?"

इस तरह की भूमिका कि पीछे क्या होता है, यह आप और हम अच्छी तरह जानते हैं। पिछले कई माली में ऐसा ही होना आया है। सरकारों जमला लोखो मपए बन्द के रूप में देता है जिससे मंत्री अपना स्वागत करवाते हैं, छोटे कार्यकर्ता मपरा अन्तित्व बनार रखते हैं। पिछले दिनों एक मंत्री जी आए थे (नाम में पचास गेट वनवान का जिम्मा एक अधिकारी ने लिया। दूसरे अधिकारी ने डिना को व्यवस्था कर दी। उनके द्वारा ने हजारों रुपया नगद दे दिया और कहा कि मंत्री जी पहली बार हमारे नगर में आ रहे हैं, उनके स्वागत में कोई कर्म नहीं आनी चाहिए, लग तो पना और ले जाना।

मैं समझता हूँ, ठेकेदार दो हजार देगा आर बीस हजार का घमण्ड करेगा। हम लोगों पर ही मंत्रियों के स्वागत का भार होता है। वे सबसे आगे होते हैं। अधिकारियों को नाकरी करनी है, सना में रहने वालों का प्रसन्न रखना है। वे गेट नहीं बजाएँ तो

कब गेट क बाहर हा जाएँगे पता ही नहीं लगेगा। डिनर म मंत्री जी आर उनक चमचों का अच्छा खाना नही खिलवाएंगे तो प्रशासन मे उनका खाना-पीना बंद हो जाएगा।

पागलो का प्रसंग चल रहा था और बीच में व्यवधान के लिए आपस क्षमा चाहता हूँ। आ जाइए फिर से उन्हीं पागलो पर जिनमे मैंने बात प्रारम्भ की थी।

मित्र मेरी ओर देखते रहे और भोचने रहे कि जाने में क्या कहने वाला हूँ मैंने कहा, "अभी तक तो पागलो पर कोई व्यंग्य मैंने नहीं लिखा है, सोचना हूँ इस बार कुछ लिख दूँ। क्या तुम मेरी मदद करोगे?"

वह बोले "केमी मदद? क्या तुम मुझे पागल समझते हो? या, थोड़ा बहुत व्यंग्य तो हम भी समझ लेते हैं। कुछ नहीं बोल रहे हैं, इसका यह मतलब नहीं कि तुम हमें कुछ भी कहते रहो और हम चुपचाप सुनते रहे। हमने भी अपनी माँ का दूध पिया है। कायर मत समझना हमें। डमी चौक पर धर लेग तुम्ह और

मैं समझ रहा हूँ, इसके बाद वे कहना चाहते थे, 'और लगाएँगे दो जूते।' लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कहा। उन्हें इस बात का डर था कि मैं धाने में उनके खिलाफ एफ आई आर दर्ज करवा दूँगा मागपीट की। पुरुह से कुछ भी कहो लेकिन हाथ मत चलाओ। इसी में सरकारी कर्मचारी की वीरता है। वह यह भी जानते थे कि धाने में रिपोर्ट दर्ज हो गई तो दारोगा साहब उनसे अच्छी रकम भुना लेंगे। डिपार्टमेंट की रिपोर्ट की एक प्रति मैं ही भेज दूँगा तो बड़े साहब उनसे कुछ न कुछ मँगवा लेंगे। इस तरह के अनेक डर उनके मन में थे। माँ का दूध पीने का दावा वे जरूर कर रहे थे, लेकिन डरे हुए मन में।

मैंने कहा, "तो ठीक है। मैं तुम पर ही व्यंग्य लिखूँगा। तुम कायर नहीं हो। बहादुर कर्मचारी हो। समझदार हो, और अपने जन-पतिनिधियों को पागल कहते हो। मैं यह भी जानता हूँ कि पिछले चुनाव में तुमने किसे वोट दिया है। अपने व्यंग्य में मैं यही बातें लिखूँगा। फिर चाहो तो मुझे धर लेना चौक पर।"

वह तुम्हें बोले "अरे याग, यह बात नहीं है। थर्ड, तुम तो नाराज हो गए मैं तो राह के इन पत्तों के साथ कह रहा था जो टैपले पर बैठे हैं। उनके बारे में

ऊछ लिखो। तुम तो मेरे मित्र हो इसलिए तुमसे मजाक कर रहा हूँ। देखो दादा, वचा के लिखना जो भी लिखना हा। तुम तो जानते हो हम सरकारी नोकर हैं। ममझते सब हे नेकिन खुलकर बोल नही सकते।"

मुझे उस महिला पगल की याद आ गई जो उम्मीदवारो को देखकर थूक देती था और ठहाके लगाती थी। मैं कहता हूँ वह हम पर ही थूकती थी, हमारे गिरते हुए चित्र पर थूकती थी हमारे मित्र की तरह कायर लोगों पर थूकती थी, हम जैसे मौकापरस्त मतदाताओ पर थूकती थी, ब्रह्मानी नेतिकता पर थूकती थी। वह पगल होकर पसन्न थी और हम जैसे लोग लेखक होकर दुःखी हैं।



## सच के उद्घाटन पर

पिछले दिन हमारे यहाँ एक कपड़े की दुकान का उद्घाटन हुआ। दुकानदार हमारे पास आए और बोले—उद्घाटन आपके का—कमलौ से करवान का बिचा ह आशा ह आप निराश नहीं करगे।

हमने सोचा कि हम जैसे नगरे लोग जिस दिन कपड़े की दुकान का उद्घाटन करेंगे तो देश कहाँ जाएगा? हम नो यही जानते हैं कि आज हम पट पायस क काप इञ्जत मिल रही ह। हम तो नगे थ, नग ह और नगे रहेग। यह नो हम देश की महानता ह कि हमे इञ्जत मिल रही ह। जिस तरह विदेशो मे लोग मर्ची वाले मार्चनिक रूप से स्वीकार कर लेते हे उसी तरह हमारी इच्छा हुई कि दुकानदार स कह—देखो भाई साहब, हम नगों से कोई उद्घाटन मत करवाओ। जिसका उद्घाटन हम करंगे यह भी नंगा हो जाएगा।

लेकिन हम यह सोचकर चुप रह गए कि अपने देश मे अभी राजनाति कम वालों की इञ्जत इमीलिए बची है कि 'कनफेसन' यहाँ नहीं है।

हमने कहा—उद्घाटन तो आप किसी मंत्री मे करवा लेते तो अच्छा था मैं तो बहुत छोट आदमी हूँ। और आप नो जानते ही है कि मने ही आप उद्घाटन मुझसे करवा ले लेकिन मी रुपये का कपड़ा मुझे उधार देने के पहले आप मी बार सोचेंगे। क्या?

सज्जन जग झेप गए बोले—भाईजी, आप भी कैसी बात करत है। क्या हम आपको नहीं जानते? हमारी जान हाजिर है आपके लिए और आप हैं कि कपड़े की



बात कर रहे हैं। लगे ता पूरी दुकान ले जाइए। आपको मना करेंगे तो क्या हम इस शहर में रह पाएंगे?

आपको सच बताता हूँ कि ये जो मेट है ना, एकदम मौकापरम्य है। जब मैं चुनाव में खड़ा हुआ था तो वह भर विरोधी का सपोर्ट कर रहा था। आज मैं जीत गया ना मुझमें उद्घाटन करने आया है। हम नगों को मिलाते आया है कि कपड़ा क्या पहनते हैं? अरे बाह में मेट। सोचना हागा हम उद्घाटन करने के लिए मर जा रहें हैं।

लेकिन मैंने उसमें ऐसा कुछ नहीं कहा। जब अपने देश में सच बोलने के लिए कड़े कानून लागू कर दिए जाएंगे तब मैं उससे वह बात कहूँगा। जब एसा कोई कानून ही नहीं है तो सच बोलकर क्यों अपनी फजीहत करवाएँ।

मैंने कहा—अच्छा मेट उद्घाटन करने तो आ जाऊंगा लेकिन तुम्हें किसी दूसरे को अध्यक्ष बनाना हागा। मैं अकेला नहीं आऊँगा।

आप सोच रहे होंगे मैंने ऐसा क्यों कहा। दरअमल मैं अपने चाहने वालों की लाबी बना रहा हूँ। किसी बड़े अगदमी को अपने साथ फिट कर लूँगा तो मौके पर मेरा साथ देगा। सच कहता हूँ मैं देश सेवा या जन सेवा का भावना से राजनीति में नहीं आया हूँ। आप फिर सोच रहे होंगे कि आज भैयाजी को क्या हो गया कि जो भी बात करत है विल्कुल कनफेम्भन के मूड में कर रहे हैं। बात ऐसी है कि पिछले कई सालों में झूठ बोलकर मैं कुठित हो गया हूँ। अब सोचना हूँ कि कुछ माल सच बोलकर भी देखूँ। लेकिन हिम्मत नहीं हो रहा है। सच बोलना बहुत मुश्किल काम होता है।

मैंने उद्घाटन का आमंत्रण स्वीकार कर लिया। मेट ने मुझे धन्यवाद दिया। फिर धार से कान में पृच्छा:अध्यक्षता के लिए किसे बुला लूँ?

मैंने भी लगभग उसी स्टाइल में एक नाम बता दिया।

मैंने दुकान का उद्घाटन किया। बहुत लाग आए थे। बड़े अफसर सरकारी नौकर अफसरों की चहकती बीबियाँ। मैंने फीता काटा। लोगों ने तालियाँ बजाईं। लो, इम दश में कपड़े की एक और दुकान खुल गई। अब कोई नगा नहीं रहेगा। लेकिन जो नगे रहने के लिए ही इम देश में पैदा हुए हैं उनके लिए कपड़ा क्या और दुकान क्या

शुभकामनाएँ देते हुए मैंने कहा: दोस्तो, यह प्रमन्नता की बात है कि आज नगर में एक कपड़े की दुकान खुल गई। स्वतंत्रता के बाद हमने कपड़ों के मामले में बहुत प्रगति की है। सच कहा जाए तो आजादी के बाद ही हमें कपड़ पहनने की तमीज़ आई है। आज विदेशों में हमारे कपड़ों की धूम है। मैं इस विश्वास के साथ इस दुकान का उद्घाटन कर रहा हूँ कि अब जनता को अच्छी से अच्छी और ऊँची से ऊँची वस्तुओं का कपड़ा यहीं मिलने लगेगा। सेठजी बहुत परिश्रमी हैं। उन्होंने श्रम का महत्त्व समझा है। कभी पर कपड़े का गट्टा लेकर उन्होंने यह व्यवसाय प्रारम्भ किया था और आज वे इस विशाल दुकान के मालिक हैं। मैं कामना करता हूँ कि उनकी दुकान खूब चल ताकि दश कपड़ों के मामले में आत्मनिर्भर बने।

तालिबों बर्जी: मैं झूठ बोल रहा था इसलिए तालिबों बज रही थीं। पिछले कई सालों में देश में ऐसा ही हो रहा है। हम सच से झूठ बोलते हैं और लोग तालिबों बजाते हैं। फिर स्वल्पाहार हुआ। लोगों ने कोमती कपड़े खरीदे। गल्ला तोड़ो स भर गया।

सेठजी ने मुझे कहा—भैयाजी, आपके लायक तो

मैंने बीच में ही कहा—सेठजी हम नेता तो बस खादी पर ही जीवित हैं। जिस दिन हम लोग पाँच सौ रुपये मीटर का कपड़ा पहनने लगेगे, तब बापू की आत्मा हमें धिक्कारगी कि हम उनके सिद्धान्तों पर नहीं चल सके।

सेठ ने सर कलफ लगे अक सफेद खादी के कपड़ों की ओर देखा फिर मुस्कुराने लगा। मुझे लगा मैंने इस उद्घाटन अवसर पर उसकी भी इच्छा हो गयी थी कि वह भी एक बार सच बोलें।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। सच बोलने के लिए बहुत बड़ा कलेजा चाहिए। सच बोलकर भूखो मरने में अच्छा है चुप रहना चाहिए। वह भी सच बोलने लगा तो हम जैसे नये लोग देश का विकास कैसे करेंगे?

## अलविदा हो थानेदार साहब !

लगभग तीन साल तक पूरे शहर का उन्होंने शुद्ध पुरुष की तरह रौंदा और अब इस नगर से विदा ले रहे थे। स्वभाव तो उनका वैसा भी सुकोमल था लेकिन पुलिस की नौकरी में आने के बाद गालियाँ मीख जाने के कारण वह जग प्रभावशील लगने लगे थे। जब पहली बार हमारे शहर में आये तो हमें लग था जैसे कोई अनाथ आश्रम की बेमहारा बालिका चदा लेने आ गयी है। उन दिनों उनके चेहरे पर एक मामूलियत थी जो पुलिस में भगती होने से पहले हर ममझदार आदमी में होती है। जब कोई महिला थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाने आती तो पहले वह गर्म से लाना हो जाते और बाद में बड़ी हिम्मत करके उसे कम तज्जन की गाली देकर बताते कि वह इस नगर में थानेदार है।

कभी-कभी वह सिल्क का कुरता पहनकर बाजार में निकलता तो हर सब्जी बेचने वाला लडका उन्हें ललचाई नजर से देखता। इत्र के भी वह शौकीन थे, बीच बाजार में जब घहमहता हुआ थानेदार निकलता तो लोग कहते—कहाँ बेचारा पुलिस की नौकरी में फँस गया। इसे तो किसी हम्म में होना था।

किसी तरह उन्होंने अपने आपको पुलिस में एहजस्ट कर ही लिया। पहले घर में गालियाँ देने को प्रैक्टिस की और जब बाद में गालियों के मामले में उनका आत्मविश्वास बढ़ा तो खुले रूप से थाने में प्रयोग करने लगे। लेकिन एक बात तो जरूर थी। जब वह थाने की कुरसी पर बैठकर किसी का पुलिस स्टार पर गालियाँ देते तो उनका चेहरा या तो दीवार की ओर होता या फिर खिडकी से बाहर सड़क पर चलने वालों की ओर होता। मुँह के सामने गालियाँ देने के मामले में अभी भी वह अन्य पुलिस-कर्मियों की अपेक्षा तन्नीस ही थे।

अचानक एक दिन बड़े साहब को आदेश आ गया। वह अपनी अदालत अनुसार प्रतिवर्ष देने की प्रक्रिया कर ली रहे थे कि बड़े साहब का आदेश आज लिफाफा देखकर मजबूत रूप से को कागज की ओर एक गानी देकर लिफाफा खोल दिया तो पता चला कि वे अब इस नगर के धोरेदार नहीं रहे।

उन्होंने पश्चिम भारतीय जनसंस्थिति को बुनाकर इस यु खद घटना से अलगत करवाया। जनसंस्थिति लक्षण उसी युद्ध में खड़े रहे जैसे कहना चाह रहे हो—  
आना—जाना तो लगा ही रहता है। जिसका जाना—पानी इस मिट्टी में उतर गया उसे भगवान् भी नहीं रोक सकता। जो होता था सो हो गया। अब बोरिंग—विस्तर बॉन लेना चाहिए। यदि हममें पुलिस का धाई-धाय है तो हम बकाया आपकों पर तक पहुँचा देंगे।

धाने में सन्नाटा छा गया था। सिपाही 413 अपने थड़ा—सुमन अर्पित करने धानेदार मरुत के पाम आया। उमने धानेदार का ओर देखा और बिल्कुल अब-तब गने क मझल में खड़ा हो गया। लेकिन बर राया नहीं। पुलिस में भगती होने वाला आत्मो गता नहीं हमें ग दृष्टि को मलाह है। जब यहला बाग सिपाही बना था तब ने कहा था—“बेटा, पुलिस में चल रहे हो तो याद रखना पुलिस वाला अपन बाप का भी नहीं होता।”

धानदार बोले—“हम तो जा रहे हैं। हो सके तो जान-गाने हमारे विदाइ के लिए कुछ इतजाम कर दो।”

413 ने जनसंस्थिति की मलाह ली। जनसंस्थिति न कहा—“विदाई ममागेह तो जागदार होगा। मुलाओ सले आकितमगे को।”

शाम को पन्द्रह-बोस पाकिटमार लड़के धाने में आ गये। उनकी तलाशी ली गई। चार सौ तेरह रुपये पन्द्रह पैसे जप्त हुए। फिर दूसरे दिन नगर के आठ-दस लोग को दफा 157 में गिरफ्तार करने के लिए बुलाया गया और उनसे विदाई ममागेह के लिए आदरपूर्वक चंदा माँगा। उन्होंने श्रद्धापूर्वक चंदा दिया। धानेदार ने शपथ प्रदर्शन किया। वरु भट्टी के यहलवानो ने खारे-मोटे का इतजाम करवा दिया। अब कवल कमी थी न पुष्यहार की। धानेदार बोले—“वी मे घर मे बनवा के ले आऊँगा।”

वर्गस्थिति ने मलाह दी कि अश्वसता किमी प्रतिष्ठित मुलाजिम से करवा

लेते हूँ, तो इस समारोह की गरिमा बढ़ेगी। नौभाग्य से एक प्रतिष्ठित अभियुक्त उपनयन भी हो गये। थाने के गामन भौभूलि बेलाम किगया भण्डार का पत्राल लग गया।

सबसे पहले आश्रमक ने थानेदार का परिचय दिया। कहा—“ये जो हैं बहुत सीधे थानेदार हैं हमका कई बघर कहत रहे कि पुलिस जो है बड़ी ईमानदार है सो हम बी वाले कि क्या कहते हैं साहब जो जो है सो हम तो इनका बोले आप तो चाल कर दा मय लोकेन नही न मने तो उनमे अच्छे थानदार तो हमन कहा नही दखे। अन तो जा हो गे हूँ हमसे जा गलती हुई हो थाने-पाने क मामले न तो हमको क्षमा करना बहुत भले आदमी रहे इतने साल चलो खु फिर भी किसी को गाली तक देना नही जाने हम सब पुलिस वाले दु खी हैं भगवान तकको अच्छे रखे जहाँ जा रहे हे वो भी इलाका अच्छे बी हे हमार भोसिया वहाँ है वं कहते हैं कि लोग घर म जाकर वे जाने हैं और क्या कहे हम ता पुलिस वाले हैं कोई नेता थोडे ही हे कि बोलते चले जाये टम तो इतना हो कहते हैं कि देरा-सेवा और जप-भक्ति करना हे तो कगे लेकिन अपन बात-वर्षों को भी देखो उका पेट और तो भरना है हम तो थाने की तरफ म. सब मिपाही लोगोन की तरफ म और मुझो जी की तरफ से साहब की नकली के लिए प्रार्थना करते हैं वों जहाँ कही भी रहे बस . फूल फले जप हिन्द।”

किन्तु नियमानुसार अध्ययन भी लगभग जनम्पतिसिंह के स्तर का ही भाषण दिया।

थानेदार साहब आभा-पदर्शन के निच खड़े हुए। बोल—“मं तो जा रहा हूँ अब इस शहर की जनता को नुम लोगों के भगमे छोट रहा है। मुझे उम्मीद है कि वरस्यलि जैसे अनुभवी लोगों के कारण लोगो को मेरा अपाव नही खटकेगा। मेरी आप लागो से बिनती है कि जेमा महयाय आप लागों ने मुझे दिया बेलाम ही नय थानेदार साहब को भी देते हूँ। हर पुलिस वाला भाई-भाई है। मिल-बाँटकर काम करोगे तो किसी को कष्ट नहीं होगा।”

विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। रागग माउड मार्क्स का पौगा बजने लग-  
खोल मेरा ताता आं चाबी वाला।”

## पोस्ट मास्टर की अंतर्कथा

हमारे पोस्ट मास्टर जो हैं बिलकुल अतर्देशीय व्यक्तित्व वाले हैं—पहला मांड धुट्टी पर, दूसरा मांड कमर में और तीसरा मांड शर्टन पर। तीनों को मिलाकर आप चिपका दीजिए तो लगेगा जैसे कोई अनर्देशीय पत्र लाल डिब्बे से निकलकर चप फी रहा है। उनकी आदत है कि वह एकनॉनजमेट की तरह चिपक जाते हैं। मैंने उनसे कई बार कहा—“आपकी यह गजिस्टर्ड प 'डी' टाइप हरकत मुझे अच्छी नहीं लगती।”

वह कहते हैं—“पोस्ट मास्टर तो सरकारी सुदामा है। एक मुट्ठी कापल में ही प्रसन्न रहता है। जा आता है, गाली देकर चला जाता है और हम हैं कि हम जिन्दगी की मनिआर्डर की तरह जा रहे हैं।”

लिखने में हमारे पोस्ट मास्टर साहब कोई विशेष सुन्दर नहीं हैं। मैंने भी पोस्टल डिपार्टमेंट का सुन्दरता से क्या लेना-देना? आदमी पोस्ट ऑफिस इसलिए आता है कि अपने रिश्तेदारों को बताए कि वह कुशलपूर्वक है। बहुत दूर आ तो साल छः महीने में एक दिन यह भी बता देता है कि फलाने की शादी जम गई या फलाना अब नहीं रहा। इसके अलावा पोस्ट ऑफिस की कोई सार्थकता नहीं है। जब पोस्ट ऑफिस का महत्व इतना सीमित है तो पोस्ट मास्टर का सुन्दर न होना पोस्टकार्ड लिखने वाले के लिए कोई महत्त्व नहीं रखता।

हम लोगकों का तो पोस्ट ऑफिस से जन्म-जन्मांतर का रिश्ता है। कम-कम मैं तो पोस्ट ऑफिस की कृपा पर ही जीवित हूँ। हमारे यहाँ एक डॉक्टर लतीफ भी हैं। होता ऐसा है कि जब पोस्ट मास्टर की मुझ पर विशेष कृपा होती है तो उनके मेडिकल बिल मुझे भिजवा देते हैं और मेरे प्रेम-पत्र दबाखाने में डलवा देते हैं। यह

तो मिमेज लतीफ काफी समझदार है इसलिए इस पोस्टल कृपा के बाद भी डॉक्टर साहब का भना आदमी ही समझती है और डॉक्टर साहब भी इस मामले में भले हैं कि साफ-साफ कह देते हैं कि यह पत्र लतीफ घोषी का है। लेकिन जब हजार-चारह सौ रुपये का मेडिकल बिल भरे पास आता है तो मेरी श्रीमती कहती हैं—“तुम्हारी हकत जानती हूँ। बताओ किसका इलाज करवा रहे हो?”

मैं जब पोस्ट मास्टर साहब को उनके इस कृत्य की जानकारी देता हूँ तो वह कहते हैं—“पोस्ट मास्टर भी आदमी हाता है। उम्रसे भी भूल ले सकती है।”

मैं कहता हूँ—“मुझे पहली बार पता चला कि पोस्ट मास्टर आदमी होता है। जिस विभाग में ऊपरी कमाई की एक नूँद भी न हो, वहाँ आदमी भी क्या होगा?”

पोस्ट मास्टर साहब गोल-गोल चर्मो से अपनी गोल-गोल आँखें लगभग बाहर निकालकर कहते हैं—“हमारी तो यही कामना है कि भगवान हम स्वर्ग में पोस्ट ऑफिस सुपरिन्टेण्डेंट बना दे।”

मैं कहता हूँ—“ऐसा मत कहिए हम नरक वालों का तो ख्याल रखिए। आप तो वहाँ मजे से अप्सराओं के बीच बैठे टी एम ओ करने रहेंगे और हम नरक की आग में दहकते रहेंगे। लेखक और पोस्ट ऑफिस के पुराने सम्बन्धों का कुछ तो ख्याल कीजिए। क्या आपका स्वर्ग जाना बिलकुल तय है?”

वह बोल—“पोस्ट मास्टर स्वर्ग नहीं जायेगा, तो क्या पिचाई विभाग का साहब जायगा? इतनी ईमानदारी से लोगों की गाली खा रहे हैं ता केवल इसी दिन के लिए कि आग चलकर हमें आगम मिलेगा।”

मैं कहता हूँ—“एक काम कीजिए थोड़ा-बहुत धराधार इधर भी शुरू कर दीजिए। रसीद टिकिट जो आती है उसको देवा दीजिए। जा लेने आए उमको कहिये कि रसीद टिकिट नहीं है। मैं आपसे बीस पैसे की टिकिट पच्चीस पैसे में ले लिया करूँगा। आखिर आपके भी बाल-बच्चे हैं।”

पोस्ट मास्टर साहब उदाम हो गये। बोले—“कर भी लते लेकिन हेड आफिस वाले तीन महीने से रसीद टिकिट भेज ही नहीं रहे हैं।”

मैंने कहा—“हेड ऑफिस वालों के भी तो बाल-बच्चे हैं। मजा करने दीजिए उनको। चलिए, चाय पीकर आते हैं।”

रास्ते में मैंने उनसे कहा—“एक बात गभीरता से कहना है। आप स्वर्ग जाकर वहाँ यह आवेदन-पत्र जरूर लगा दीजिएगा कि पोस्ट ऑफिस की एक त्राक नरक में भी होनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आपका बहुत जल्दी वहाँ ट्रांसफर हो जायेगा। आपकी परमनेरिक्टो स्वर्ग के लिए नहीं है। आप अप्सराओं के बीच बैठने तो मुझे शर्म आयगी।”

वह बोले—“शर्म तो मुझे भी आयगी। आपसे तो कह देता हूँ कि नला हाफ चाय पिलाओ, अप्सराओं से कैसे कहूँगा?”

मैंने कहा—“मच बताइए, वहाँ का पोस्ट ऑफिस आपको कैसा लगता है?”

वह बोले—“अनाथ आश्रम की तरह।”

मैं जानता हूँ उन्हे स्वर्ग का वातावरण मूट नहीं होगा। अनाथ आश्रम का आदमी हम लेखकों के साथ ही रहने का हकदार है।

चाय पीने के बाद फिर वह पोस्टल सर्विस की मुद्रा में स्थापित हो गए अपने शरीर को तीन जगह में मोड़ा और अंतर्देशीय पत्र की तरह लाल डिब्बे में घुस गये।



## बलिहारी गुरु आपकी

वे गुनगभीर थे और मेरे गुरु भा। दिखने में भी मानसिक रूप से मेरे गुरु का लगने थे। मेने ज्ञान पाने के लिए उन्हें गुरु बनाया था। उनके बिना ज्ञान कहीं म पाता वे बहुतों को बना चुके थे। इस बार मुझ बनाया।

तो, गुरु की महिमा कोई ऐसी-वैसी नहीं होती। काफी एभी-तमी होती है तब शुरू होती है। और एक बार शुरू हो गयी तो जल्दी खत्म नहीं होती। अपरपर होती है। इसलिए उनकी महिमा साहित्य में ही लिख रहा हूँ। वैसे तो हमेशा उनका आग्रह रहा है कि लिखने और गालियाँ देने के मामले में कभी कजूसी मत करो। खाने की बात और है। इस मामले में वे कजूम हैं। बहुत कम खाते हैं। कहीं छुपकर खा लेते जागे तो मुझे नहीं मालूम। मैं उनका मुडित चला हूँ। वे मेरे बाल वाले गुरु हैं। बाल वाला और बाल-बच्चे वाला की प्राइवेट लाइफ में दखल देना अच्छी बात नहीं है।

हुआ ऐसा कि गोविन्ददास आ गये गुरु के साथ। मेरे हाथ चरण-स्पर्श के लिए खुजान लगे। लेकिन बड़ी दुविधा थी प्राथमिकता देने की। किसके पैरों पर गिरूँ ?

गुरु बोले—गोविन्ददास के चरण छुआ। कल तुम्हारा इटरव्यू है। ये साक्षात्कार समिति के अध्यक्ष हैं। इनके चरणों की रज बड़ो पावरफुल है। तुम्हें हिन्दी का मास्टर बना देगी।

मैं गोविन्द भाई के चरणों में लेट गया। उनका हिन्दी प्रेम फसफसाये जा रहा था। हिन्दी प्रेम के इस चक्रवात में उनके स्कूल में एक हिन्दी मास्टर की जगह खाली हो गयी। लगे हाथ मैंने भी आवेदन दे दिया था। मुझे क्या पता था कि हिन्दी इतनी लोकप्रिय हो जायेगी कि किलो के हिसाब से उनके चरणों में आवेदन जमा हो जायेगे।

गुरु ने कहा—रिक्रमड कर दो। मास्टर बनकर हिन्दी का प्रचार करेगा।

मैंने कहा—आपके दक्षिणपंथी चलो को फ्री में पढाऊँगा। गर्भारता में रह रहा हूँ, किसी इटरव्यू की लालच में नहीं।

मैंने गुरु भी हिन्दी के प्रति गंभार हो गये। इस गोविंद के आगे हिन्दू का विकास के लिए मुझे पटक दिया।

बहुत देर तक मैं उनके चरणों में पड़ा रहा तो गुरु बोले—कुछ चरणानु मिलेगा?

गोविंद मुस्कुराये। कहा—वरी आपका चला है तो मिलेगा बाबा क्या नहीं मिलेगा?

बलिहारी गुरु आपकी। ज़्यादा चरण थे। एम ए के बाद हिन्दी में पी एच डी करूँगा और डॉक्टर सेवा चरण त्रिपाठी को गड़ड़ बना लूँगा।

इटरव्यू हुआ। मैं सूर, तुलसी, बिहारी, केशव, जायसी सबसे भिड़ने की मुद्रा में आ गया था। भारतेन्दुजी सपने में आये। कहा—चिता मत करो। कल सुबह उठकर गुप्ताजी के पास चले जाना।

मैंने पूछा—कौन गुप्ताजी?

वह बोले—गुप्ताजी का नहीं जानते? हिन्दी की मास्टरी क्या करोगे? किसी गधे से पूछ लना कि 'भारतेन्दु साहित्य समिति' के सचिव कौन है, बस।

मैं गुप्ताजी से बिना सपने का रिफरेंस देते हुए मिला। वह बोले—इन दिनों मेरी गोविंददास से नहीं पट रही है। मेरी चिट्ठी लेकर जाओगे तो भारतेन्दु की सील देखकर ही वह तुमको रिजेक्ट कर देगे।

मैंने कहा—मैं मास्टरी के लिए नहीं हिन्दी की सेवा-भावना में आपके पास आया था।

गुप्ताजी बोले—बड़ी ऊँची भावना है। मास्टरी मिल जायेगी तो और एक दो फुट और ऊँची हो जायेगी। इस बहाने चलो सुनो एक कविना मेरी।

उन्होंने डायरी निकाल ली। कविता चली। चलती गयी। मीला लकी। दूर

दूर तक फैली घाम की तरह। कहीं खत्म होने का नाम ही नहीं लेती थी। पूरे तरह भारतेन्दु युगीन।

मैंने कहा—आपको कविता में 'अंतिम हे' बोलने की बुरी आदत नहीं है, यह अच्छी बात है। हमारे उधर तो हर कवि इस आदत से लाचार है।

गुमाजी समझ गये। पिछले कई सालों में भारतेन्दु साहित्य के निर्विरोध मंचिव बनते आ रहे थे। बोले—जाओ, इटरव्यू देकर हिन्दी के योद्धा की तरह सौटना। तुम्हारा बाल-बोंका नहीं होगा। मेरी दुश्मनी गोविन्ददास में है हिन्दी में नहीं। मैं एक पत्र लिख देता हूँ। जो मञ्जन तुम्हें सबसे बेवकूफ दिखे उसको यह पत्र दे देना। वही मग दोस्त है—गोविन्द का खास आदमी। नियालाजी की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। हिन्दी समृद्ध होगी। जय हिन्दी—जय नागरी।

अब सोचता हूँ कितन उम्मीदवार मैदान में हैं गुरु पद के लिए। गुमाजी को गुरु मानता हूँ तो असली गुरु चुग मान जायेंगे। चुग मानने की इस भारतीय परम्परा से लोहा लेते हुए मैं किसान लोहा भण्डार तक आ गया। देखा तो गुरु लाहे का हथौड़ा खरीद रहे थे। मैं समझ नहीं सका कि यह प्रगतिशील विचार उनका मन में अचानक कैसे आ गया। मुझे देखकर उन्होंने हथौड़ा अपने हाथ में ले लिया। बोले—चादर लाये हो?

मैंने कहा—किसलिए?

बोले—हथौड़ा किन्तु बाँधकर ले जाओंगे?

बड़ी अध्यात्म की बातें कर रहे थे गुरु आज। वे जब मूड में होते हैं तो अक्सर अध्यात्म की ओर ही मुड़ जाते हैं। उनमें अधिक मवाल करों तो नाराज हो जाते हैं। फिर भी मैंने पूछ ही लिया—गुरु, यह हथौड़ा किसलिए ले जा रहे हैं? वे गुस्से में बोले—हिन्दी के सर पर मारने के लिए। तुम्हें किन्तु कहा था गुमाजी के पस जाने को?

मैंन किम्बदा शुद्ध हिन्दी में बताना दिया। गुरु भी भारत-भूमी की कद्र बख्शे थे। कथा—उनकी आत्मा से मेरी मुलाकात कल हुई थी।

मैंने पूछा—'कहाँ' या 'कौनसे'—गाइड फिल्म में मैं अग्र में था। तब लोअर में बैठे थे। सजदीक से चर्चिता रहमान को देख रहे थे।

'पिया तोमे नेना लागे रे 'जाने क्या हों जब आग रे।'

तो आपने इटरज्यू था एमटीजी का। मेरी जिन्दगी का सधर्षणय क्षण। घुमावदार रास्ता था और मेरे हाथों में भुपा जो का गत्र और गोविन्ददासजी का चरण मूल की एक फुडिका थी। मेरे आगे एक नंबी कनार था। हिन्दी प्रेमियों की जो मेरी तरफ हिन्दी की सेवा करने के लिए मर जा रहे थे। इटरज्यू के कमरा में बस गोविन्ददासजी हिन्दी की स्पर्शाका बाँट रहे थे और मैं धक्के खाता हुआ कई घंटों में लाइन में खड़ा था। हिन्दी की दुर्दशा देखकर अश्रु आ गये अँधूरे में।

कोई तीन घंटे बाद मेरा नजर आया। नंबीजी लोगों का नजर जरा देर में ही आता है। गोविन्ददासजी ने मेरी ओर देखा और अपना दाहिना पैर खुलाने लगा। मैंने अपनी नजर हिन्दी साहित्य में मुझे के पीछे घिरी हुई नायिका का तरंग झुका ली। मैं समझ गया। अहिदीभाषी होकर हिन्दी की सेवा कर रहे थे। पूछा—'तुमसे बाप क्या बना है?'

मैंने सोचा था महादेवी पर कुछ पूछूँगे। उनके आँसू मेरी जुबान पर थे। मैंने कहा—'तेकेदागी करता है। ईंट बनाता है।'

यह खोल—'अच्छा-अच्छा, तुम ईंट वाला का लडका है क्या वो जो कर्म हमारा पक्का दास्त है या हम उसके साथ बहुत रसी खेला ईश नद बनाता, बड़ा प्रार्थना वाला धधा है।'

मेरी इच्छा ईंट का खराब पत्थर से देने की हुई लेकिन चुप रह गया क्योंकि फादर 'कभी-कभी पत्थर का खदान का भी ठेका ले लेता थे।'

फिर पाँच मिनट तक शून्य काल रहा।

गोविंददासजी ने इटरव्यू लेने वाले हिन्दी प्रेमियों के कान में कुछ कहा और मे हिन्दी का आदर्श मास्टर हो गया। इटरव्यू ने आन वाली अनेक हिन्दी प्रेमों निराश हो गये। मने अकेले हिन्दी के विकास का बीड़ा गुजरी की कृपा में उठा लिया। मरा हिन्दी के लिए बस इतना ही योगदान है। बीड़ा मारने था तो उठा लिया। कोई गलती तो नहीं की। गुरु का आभारी हूँ कि उन्होंने मही गोविंद बताकर मुझे हिन्दी सेवा का श्रम प्रदान किया। अब गौज आपको चित्तम शुद्ध हिन्दी में भरता हूँ। गुजराती का पत्र और भास्तेन्दुजी का सपना अभी भी मेरे पाम मुद्रित है। दरअसल इटरव्यू लेने वाले ने कोई भी हिन्दी प्रेमो सज्जन मुझे ऐसा न दिखा जो इस पत्र को प्रहण करण को पाता मखता हो। सभी एक जैसे लग रहे थे। किसे देता।

और सच बात तो यह है कि पत्र की जरूरत ही नहीं मंडी। गोविंददासजी के चरण ही काफी थे हिन्दी सेवा के लिए।



## पतझड़ के बहाने

अपने देश में बजट और पतझड़ आगे-पाछे आते हैं। कभी ऐसा होता है कि उभर विपक्ष ने कोई नया टैक्स लगाया, और इधर पतझड़ ने दरख्त में कड़ा-अड़े ओये, सम्हल जा तैरा बाप आ गना ताले मरिट्यामेट करके धर दूँगा।

दरख्त भी जानता है कि उमें साल में एक बार तो झड़ना ही झड़ना है। वह यह भी जानता है कि कितने भी आवेदन वह इस पतझड़ को देगा कि उसकी भाली हालत इस भाल ठीक नहीं है, कि वह पतों में ऑक्सिजन भी खींच नहीं पाया है, कि यह चलने वालों को वह छाया भी नहीं दे पाया है या कहेगा कि कि दादा इस बार कुछ सब्जी दे दो, लेकिन पतझड़ जो है वो मानने वाला नहीं है। वह आयेगा और उसे झडाकर इस तरह चला जायेगा, जैसे यह उसके नैतिक धर्म में शामिल हो और अपनी मर्यादता सिद्ध करने के लिए उसका ऐसा करना नितात आवश्यक हो।

इसीनिम इस बार जब दिल्ली, भीपाल से होना हुआ पतझड़ इस दुबल-पतले दरख्त के फाम आकर खड़ा हुआ, तो दरख्त ने आत्मसमर्पण की टोन में कहा— आइये पिताजी, हम कब से आपकी प्रतीक्षा में खड़े हैं ...कहिय तो हम अभी झड़ जाये या कहे तो दो-चार दिन तक जाय।

ज्ञाता यह भी है कि अपने टंग की चिडिया अडे देना भी जानता है। उसको एक बहुत बुरी आदत यह होती है कि वह तिनके जमा करके घोसला बनाती है। इस दरख्त पर जो चिडिया थी वह तिनको के साथ परिवार नियोजन के पोस्टर का एक टुकड़ा भी ले आई थी, लेकिन इसमें क्या फायदा? हरामजादी में चार अडे दे दिये एक

साथ और फटाफट फाड़ दिये चार बच्चे। मार्च महीने में बच्चे फोड़ेगी तो बच पायगी पतझड़ से? हाँ, मैं आपसे ही पूछ रहा हूँ। व्यंग्य पढ़ रहे हो और कल के दिन 'जागलखी' में दो लाइन की चिट्ठी भ्रम दोगे कि लतीफ बोधी अपनी छवि का खयाल करें। अरे यार ऐसी-नेसी में गई छवि हम कहते हैं कि उन बच्चों का क्या होगा जब यह पतझड़ दरख्त के सार पत्ते झडा देगा? क्या घासला बच पायेगा? अब तुम व्यंग्य के जागरूक समीक्षक हो तो बताओ व्यंग्य आगे कैसे बनगा? दरख्त बनकर पतझड़ को पिताजी कह लोगे भरे साली चिडिया और भरे साले चिडिया के बच्चे, उधर पतझड़ गया और इधर तुमने धडाधड़ नई कॉपलें उगाकर अपने आपको एडजस्ट कर लिया। तिनकवाली चिडिया की बात जिम् दिन सोचोगे, तब पता चलेगा गुरु कि व्यंग्य कहाँ से पैदा होता है।

मे व्यंग्य को आगे बढ़ाने की सोच हा रहा था कि मेरे एक समीक्षक मित्र आ गये—बोले—बीड़ी फिल्लाओ यार।

मैंने कहा—हिन्दी समीक्षा की दुर्गीत क्यों बना रहे हो? एकदम बीड़ी में उतर गये?

वे बोले—हम उतर नहीं है भइया हम उतार दिया है इन व्यापारियों ने सिगरेट मार्केट से गायब है बजट आ रहा है ना

मैंने छोटे राजा का बडल जेब से निकाला। दो बीड़ियाँ एक साथ सुलगाकर उम हवा में लहराया और उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा—तो टेक्स लग जायेगा इस साल सिगरेट पर?

—बिल्कुल लगेगा और तबियत से लगेगा सरकार विकास के काम किसमें करेगी देश में? सरकार भी जानती है कि सिगरेट पर कितना भी बढ़ा 'स्वास्थ्य' 'लिए हानिकारक' का लेबल लगा दे, हिन्दुस्तानी आदमी आठ-दस कगोड़ दे ही दगे सरकार को सिगरेट के नाम पर।

—याने कि तुम नकारात्मक सोच वाले हो। मैं कहता हूँ कि यह क्यों नहीं सोचत कि तुम अपनी एक सिगरेट में देश में एक पुल बना रहे हो—सूखे खेतों के लिए पाँच सिगरेटें फूँक कर सिचाई योजना तैयार कर रहे हो। व्यापारियों को क्यों गाली देते हो? आखिर उनके भी तो बाल-बच्चे हैं। मार्च लगेगा तो फल्ली तेल तो बढ़ेगा

हो। वह सब। लेकिन अपने तन्त्रों को धार्मिकता के रूप में खिलाना पायेगे। वे नहीं भी चाहें। जब लेखक ने ईमानदारी नहीं की तो न्यायालय में वहाँ से गृहीत।

जैसा कि हिन्दी समीक्षकों की आदत होती है, वे तनक गये। बोले—एक नहीं आती, अपने को व्यापककार कहते। व्यापकता का तलब नाटक की सरकार की अकालत कर रहे हो। व्यापारियों का गंधधर हो गये हो?

उत्तराने में सामने एक राक्षस कई रख दाग दिये। यदि उनको छोट गऊ जीन्डी को कृपा से खींसी नहीं आती, तो वे दो-चार और इसी तरह का प्रश्न दाग। निगरेट पीनेवाले समीक्षकों को यह सुविधा रहनी है कि उन्हें खींसी नहीं आती और इसलिए वे धारापत्र हिन्दी लेखकों की गून्नाओं पर प्रश्नचिह्न लगात हुए धारापत्र कहते जाते हैं। मेरा विश्वास तो यही है कि हिन्दी के समीक्षकों को बीन्डी ही पीना चाहिए। इससे हिन्दी बेचारी का उद्धार हो होगा ही, हम जैसे नाई व्यंग्य लेखक तर जायें।

मे यह भांजाना था कि, अब वे व्यवकात दिध मनिने परकक लम्बा भाषण भी देगे और यह भांजतयेगे कि मुझे व्यंग्यकार होने के नाते क्या लिखना चाहिए? ये बात और है कि वे व्यंग्य लिखना नहीं जानते। उनका कहना भी सही है। हिन्दी समीक्षक को क्रिप्टिक लेखन से क्या लेना-देना। उसका काम है समीक्षा करना इसलिये आप लाख सिग गटक लीजिए। ये यह सिद्ध कर देगे कि आज का व्यंग्य-लेखन नकाशामक है। आपित वम का पंधधर नहीं रहे, और मयमे जतिम और अच्छी आदत हिन्दी के समीक्षकों में यह होता है कि ये दो-चार विदेशी लेखकों के नामों का उल्लेख अपनी बलते में दौरान कर कर करते हैं।

बीन्डी का उसका बंद हुआ तो वे बोले—स्टेट्स में देखो। सरकार खाने को चटपुर् अपने देश में बेची जा रही कीमत से कम दाम पर दर्ता है। यहाँ चावल चार रुपये किलो है तो आप निश्चित मानिये कि अमेरिका से हमसे कम दाम में ही मिलेगा। सरकार नहीं चाहती कि नेमोसिटीज पर कोई टेन्म लगे और एक अपनी सरकार है। हम चाहे सूखकर काँट हो जायें, लेकिन टैक्स नयेगा तो रोमरों की बीजा पर सभ में एक बार झाड़ा के रख देनी है हमें।

झड़ाने का उल्लेख हुआ तो मुझे याद आया कि यतदाह पर मैंने जो व्याप्य शुरू किया था, वह तो अधूरा ही रह गया है।



मने कहा—गुरु मुझे बताओ कि यह व्यंग्य आगे कैसे बढ़ेगा?

वे बोले—दिखाओ हम भी देखें कि आखिर तुमने क्या तीर मार दिया है हम व्यंग्य में।

मेन चार पेरटाफ़म जो अभी थोड़ा देर पहले लिख थे, उनके हाथों में दृष्टये उन्होंने उमने पढ़ा और बोले—गार, एक वीडो और पिलाआ।

म समझ गया कि वीडो के बहाने वे अपना व्यंग्य साहित्य का साहित्य मुझ पर मारन की भूमिका बना रहे हैं। वे व्यंग्य पर अपनी बात शुरू करने हा बाले थे कि फिर 'डाट राजा की कृपा में उन्हें ख़ासी आ गई। बोले—साती बाबा के मान बही ता दिक्कत है। एन वक्त पर गल को खरखराकर पूरी वैचारिकता को नष्ट कर देते हैं। लेकिन क्या करें, बजट वाले इस देश में इसका कोई विकल्प भी ना नहीं है।

मने कहा—मुझे यह बताइय कि इस व्यंग्य को आगे कैसे बढ़ाया जाये? इस निहितिया पर आकर मेरी कलम अटक गई है।

वे बोले—तुम बर्भकली गलत हो इस व्यंग्य में तुम्हारे मिथ्यत्व आई मान प्रतीक गलत है अब जो व्यंग्य का ट्रीटमेंट हागा वह पूरे का पूरा वेग क्या कहते है, उमने गड्डमड्ड हो जायेगा इसलिये तुम एक काम करो, इस व्यंग्य को नष्ट कर दो। तुमने जो पतझड़ की फैंटमी स बात शुरू की है वह भी पूरी तरह गलत है। पतझड़ को विन मंत्रालय से कनेक्ट करना गलत है और खासकर उस समय यह त्रिकुल गलत हा जाता है जब दरख्त यह कहता है कि 'पितार्जी, कहिये तो हम अभी छड जाये' व्यवस्था के प्रति समर्पण का यह ममझौता तुम्हारा लेखकीय प्रतिबद्धता को मदिग्ध कर देता है। हमे मघर्ष करना है उस व्यवस्था में यह नहीं कि पतझड़ आया तो हम झड गये। इसे आगे ही बढ़ाना है तो इस तरह बढ़ाआ कि दरख्त पतझड़ के सामने सोना तानकर खडा हो गया। इससे एक वर्ग मघर्ष की खोरी तुम्हारे व्यंग्य में स्टबलिश हागी।

मैने पूछा, फिर क्या हागा? क्या उमके पने बच जायेगे इस मार से?

वे बोले—बच या न बच यह सोचना लेखक का काम नहीं है। लेखक का काम है मघर्ष की भूमिका का निर्माण करना और गही बात चिडिया की, तो तुमने परिवार नियोजन के प्रचार की भावना के कारण उसे एक असहाय घरेलू बनाकर रख

दिया है भारतीय नारी के पति तुम्हारे व्यंग्य में यह भावना एकदम पुष्ट है चिरिया का काम है चोंच मारना परन्तु मैं टकराकर लड़तुलान हो जाना ये मस कि तुम्हें उसे खड़े और बच्चों में उलझा दिया, सार्वक व्यंग्य मखेदना से गड़ी बना।

मैंने पूछा— फिर उन बच्चों का क्या होगा? इस पत्रअड में क्या होगा उन बच्चों का भविष्य?

वे बाले—एक बीडी और पिताओ।

मैं समझ गया कि बीडी के बदले फिर व नयना पण्डित्य झाडने की प्राम्ना बनायेगे ओर यह पत्रअड अधुग ही रह जायेगा।

□

## अपन तो लेखक हैं

पहले लेखक के बारे में जान लीजिए फिर यह व्यंग्य बने या न बने।

कद छोटा। चाल बड़े हुए। चेहरे पर दाढ़ी। लम्बा मोटे कपड़े का कुरता। सकरी घेर का अतीगढी पाजामा। कन्धे पर लटकता शील्य। झोले में कुछ पुरानी पत्रिकाएँ, मुड़े-मुड़े फुलस्क्रेप कागज। आँखें मिर्चमिर्चाने की आदत। चाल ठीक-ठीक, हर चीज को उलका देखने की आदत। उनके शब्दों में बड़ 'आब्जरवेशन' काई भी बात प्रारम्भ करने के पहले कहना-- 'अपन तो लेखक हैं' "

कहानी लिख कर मेरे पास लाए थे। बोले, "भई, अपन तो लेखक हैं कत देखा और आज लिखा।"

मैंने पूछा "क्या देखा?"

वह बोले, "वही, जो सब देख रहे हैं। लेकिन मैंने कहा न कि अपन तो लेखक हैं इस तरह किष्पी आदमी का खुन हो जाए तो अपनी संवेदना तो जागती।"

मैंने कहा, "तो आपको संवेदना जाग ही गई।"

वह बोले, "हाँ। बिल्कुल जाग गई। सेंट परसेट जाग गई। भई, लेखक हैं तो अपने पास जगाने के लिए संवेदना के अतावा और न ही क्या?"

उन्होंने अपनी आँखें मिर्चमिर्चाने की आदत पर यकीन डाल-वन उठा ली। उसे पहले देखा और दो-चार बार ऊपर का बटन दबाकर रिफ्लेक्ट-बाहर किया

और फिर उस टेबल पर रख दिया। टेबल पर अखबार रखी थी। उसे भी उठाया। उल्टे पलट कर देखा और फिर उसे अपनी जगह पर रख दिया।

मैन कहा, "फिर क्या हुआ?"

व बोले, "बस, पिस दी रात को एक कहानी। अपन ना लेखक है, अपन को कुछ दिखना भर चाहिए।"

"जिसका खून हुआ वह कौन था? मेग मतलब है हिन्दू था या मुसलमान?"

"आदमी था जी। अपन का क्यो हिन्दू-मुसलमान के लफड़े में पड़ना! इन्सान पढ़ते आदमी होता है। अपन तो लेखक हैं, इम्बलिया आदमी की बात करते हैं हिन्दू-मुसलमान के चक्कर में घे रहते हैं जिन्हे अपनी नेतागिरी चलानी है। अपन ना लेखक हैं, एक आदमी को मृत हुए देख भए ले, पचास कहानियाँ लिख देगे अलग अलग ऐगल में। हिन्दू या मुसलमान मरगा तो कहानी में उतनी जान नहीं होगी जितना एक आदमी के मरने पर होगी।"

"खून क्या हो गया आदमी का?"

"अपन को इस लफड़े में क्यो पड़ना? खून तो रोज तो रहे हैं। कारण कुछ भी हो, अपनी संबेदना जगाने के लिए इतना ही काफी है कि खून हा गया। होगा काई चक्कर। कोई रजिश होगी। रजिश के बिना खून ना नहीं हाता ना। लेकिन अपन तो लेखक हैं, रजिश नची बनायेगे। लिखेगे कि आदमी बिल्कुल बेकुसूर था। जैसा कि आम आदमी होता है। न उसका समाज में लेना-देना और ना राजनीति में। अपने रास्ते पर जा रहा है। किमी ने उसका खून कर दिया। याने कि कहानी में व्यवस्था का जिम्मेदारी है। आदमी सुरक्षित नहीं है, बस।"

"किमी आतकवादी ने खून कर दिया होगा?"

"अपन क्यो कहे कि खून करने वाला आतकवादी था? भई, अपन ना लेखक है। कोई कमिटमेंट की बात क्यो करे? आतकवादी हा ना ठीक और न ही ता ठीक।"

"याने कि आपका भी डर है आतकवादियों की डिट-लिस्ट में।"

"हाँ बिल्कुल डर है। बाल-बच्चे हैं, परिवार का जिम्मेदारी है। भई हम

तो इतना जानते ह कि हमे साहित्य को समृद्धि देना है। हमारे कहानी पढ कर किसी शताकवादी के दिमाग मे यह बात जम गई कि हम उनके खिलाफ ह तो अपना नम्बर लग जायेगा। और जब नम्बर लग गया तो हम साहित्य का कैसे समृद्धि देगे? इसलिए मारी। जम्मदारी व्यवस्था पर छातो। अपन बिल्कुल सेफ। भई अपन तो लेखक ह, पहल अपनी सेफ्टी देखेगे। अपना काम ह सवेदना को जगाव रखना। हमने जगा दी आर लिख दी कहानी। वाकी अगला जाने।”

“फिर क्या हुआ?”

“एक गोली चली कही स। आदमी को लागी। वह गिर पडा सडक पर। छटपटाने लगा। खून बहने लगा सडक पर। मडक लाल हो गई। बस, हमने देखा। हमारी सवेदना जाग गई।”

“गोली किधर से चली?”

“सच बताये, हमने नहीं देखा। हम तो सडक पर बिछरा हुआ खून देख रहे थे। अपन तो लेखक हैं, इमलिए खून की बात करेग। आदमी का खून। कितना सस्ता हो गया है इस देश मे? अपने पास दो ही बाने है, आदमी और देश। अपनी सवेदना का भत्र इतना ही है।”

“भीड जमा नहीं हुई?”

“हुई थी। लोग मग्ने वाल को पहचानने की कोशिश कर रहे थे। किसी ने कहा कि नोकरी करता है। किसी ने कहा, अपन शहर का नहीं है।”

“आपने पहचाना उमे?”

“भई, अपन तो लेखक हैं। व्यक्ति मे अपन को क्या लेना-देना। कोई भी हो अपन तो बात को व्यापक सन्दर्भ मे लेते हैं।”

“लेकिन जब भीड मे उसे पहचानने की बात चल रही थी तो आपको ध्यान दना था।”

“भीड व्यक्ति को पहचानती है, आदमी को नहीं। भीड की पहचान कभी पामाणिक नहीं होती। भीड, भीड हती है। भीड को दृष्टि लेखक की दृष्टि से हमेशा अलग हांती है। व्यक्ति को पहचानने या नहीं पहचानने मे हमेशा भीड का एक स्वार्थ होता है। अपन तो लेखक है इस भीड के तफडे मे क्या पड।”

“जिसने गोली चलाई उसी पहचाना थोड ने?”

“हम क्या जाने। कह दिया ना कि थोड मे हम हमेशा दुः ही रहते हैं।

“आपने पहचाना गोली चलाने वाले को?”

“हम क्यों पहचाने? उसे पहचान लेते तो पुलिस हमें परेशान करती। थाने में बुलाती, प्रछताछ करती। हमारा टाइम वेस्ट होता। भई, अपन तो लखक है, थाना कचहरी से दूर ही रहते हैं। हम तो बस सड़क पर बिखरा खून ही दाब रहे थे। खून को पहचान लिया हमने कि यह आदमी का ही खून है। इत में ना एक जानदार कहल बन जाती है।”

फिर उन्होंने झोले में से कुछ कागज निकाले। बेतरतीब कागजों को समझा और उमका क्रम जमाने हुए अपनी रचना प्रक्रिया पर बोले, “भई, अपन ना लेखक है दुकडो में कहानी लिखते हैं और बाद में उसकी एडिटिंग कर लेते हैं। अब यहाँ कहानी देखो। हमने बात इस तरह शुरू की है कि हम बाजार जाने के लिए थाला माँग रहे हैं। अब तुम इस झोले को मामूली मत समझो। झोला एक पत्तीक है देश का। इस झोले में बहुत कुछ है। आदमी की पूरी जिन्दगी यह झोला भरने में बीत जाती है। यह झोला ही आम आदमी का पेट है। अब हमने सोचा कि पहल झोले पर दो तीन परेग्राफ लिख डालो। इसे किसी भी कहानी के आगे जोड़ दोगे।”

मैं झोले पर कुछ कहना चाहता था। वे समझ गए। बोले “ये धूँपापछी बाद में करना। इसमें हमारा कान्सन्ट्रेशन खराब होता है। तो देखा दूसरा पेम हम भडक से चल जा रहे हैं। बायीं तरफ चल रहे हैं। हाथ में झोला है। अब तुम इस बायीं तरफ की गंभीरता में लो। चलने का भी गंभीरता में लना है। कहानी में एक-एक शब्द बड़ा मूल्यवान होता है। हाँ, हम चल रहे हैं। सामने देखते हुए। मोच भी रह है।

मैंने पूछा, “क्या मोच रहे है?”

वे बोले, “वही जो सभी मोच रहे है आजकल। यह ‘माच’ शब्द भकेत है। पाठक को विचार देने के लिए मैंने जान-बूझ कर इसे कहानी में डाला है। मापान्य पाठक इसका अर्थ यही लगायेगे कि लखक सोच रहा है कि आज कौन-सी सब्जी खरीदी जाए। सब्जी के भाव इतनी तेजी से बढ़ रहे है कि मोचना पड़ता है। अब ज़ा प्रबुद्ध पाठक होंगे वह साचेगे कि लेखक देश के बारे में सोच रहा है। बायीं तरफ भी

चल रहा है और सोच भी रहा है कि इन वर्तमान स्थितिया में विकल्प का क्या रास्ता है। झोला तो मैंने पहले ही समझा दिया है। अब यह विकल्प है पट, देश और आदमी की सोच के सन्दर्भों का।”

वे थोड़ी दूर रुके। अखि मिचमिचाने लगे। मुझ लगा कि वे जल्द देश क बारे में ही साच रहे हैं।

थोड़ी दूर के घाद बाल “ भई, अपन तो लेखक हैं। आ भये चौराहे पर। अब तुम चौराहे को मामूली मत समझना। यही चौराहा तो ऊहानी में अपली है। हम किम रास्ते पर मुड़ना है, कौनसा रास्ता भई हे। हम खडे हो गये चौगह पर। फिर सोच रहे हैं। इत में खून हो गया। हमने साचा कि अब दान बन गई। जगाओ अपनी मवेदना। सो हमने तुरन्त सवेदना को जगाया। मब्नी खरीदी और भर आ गये और लिख दी यह कहानी। किसी भी बड़ी पत्रिका में छपेगो तो दो भा रुपये मिल जायगे। भई अपन तो लेखक हैं, अपन को और चाहिए भी क्या एक कहानी के दो सौ बन जाएँ बस।”

मैंने कहा, “याने कि उस बेकुसुर आदमी के खून की कीमत सिर्फ दो सौ रुपया है?”

वे बोले, “यह खून की कीमत नहीं है। यह हमारी सवेदना की कीमत है जो आदमी के खून से जुड़ी है। अपने देश में हजारों लोग रोज मर रहे हैं लेकिन सवेदना किमके मन में जाग रही है? भई, अपन तो लेखक हैं जब मरने वाले क प्रति सवेदना जगा रहे हैं तो क्या दो सौ रुपये के भी हकदार नहीं हैं? भई, अपन तो लेखक हैं और इतना जानते हैं कि अपने यहाँ आदमी के इस खून से अच्छी रकम बन सकती है। जब इतने लोग इस खून को धुना रहे हैं तो लेखक ने क्या बिगाडा है?”

उन्होंने अपनी कहानी को झोले में वापस डाला और आँखे मिचमिचाते हुए सडक पर आ गये।

व्यग्य बना? जी हाँ, मैं आपसे ही पूछ रहा हूँ।

## सीनियर का बसन्त

जिन्हगिरी क पेशे मे आने के बाद लोगो को उनके पमीन स भी 'लीग्ल फ्लेवर' आने लगी थी। इस महक से वे कई लोगो को अपनी आग आकर्षिक कर लर थे। उनकी जेबे अधिनियमो और सगिताओं स ठमाठम भरी रहती थी। उन्होन जब मे हाथ डारता नहीं कि आप समझ जाइए कि वे कुछ बंधानिक आपतिथीँ निकाल क आप पर फेकेंगे और आपका कूट-परीक्षण किए बिना आपकी नही छोडा। प्रकिया मे जब तक वे आपको पूरी तरह से कूट नहीं लेंगे उन्हे आत्मिक भरोप नहा मिलेगा।

मे तो उन्हे सीनियर ही कहता था क्यकि वे मुझसे हर मामले मे दरिष्ठ ही थे। उनकी खुगक भी मुझसे अधिक थी। जब तक वे आठ-दस नजीरें खा नहीं लेते थे, उन्हें डकार नहीं आती थी। यही उनका रोज का भोजन था। मरी स्थिति यह थी कि मैं एक कम-लॉ पढ़ता था तो मेग पेट गडगडाने लगता था।

वे मुझे हम-पेगा न समझ कर मित्र ही समझते थे और इसका कारण यह था कि जिन्हगिरी क अतिरिक्त उन्हे साहित्य मे भी लागव था। वे कविताएँ लिखत थे। विशेषकर होला, दीवाली, वसंत पंचमी क अवसर पर तो यह लिखत ही थे। केवल लिखत ही नहीं थे, अपनी रचनाएँ छपने के लिए भजा भी करते थे। कविताओं के लिए उन्होंने उपनाम रखा था—जिन्हगीर।

इस वार जब पत्रिकाओ ने बसन्त अंक की शोपणा की तो वे कविता लिखत के लिए छत्रपट्टने लमे भिक्षा ब्री जमानत का आवेदन-पत्र दे रहे ह तो ठसम भी प्रार्थन



वाले हिस्से में एक मुक्तक मार ही देने थे। यह तो उनका टाइफिड काफी समझदार था कि इम प्रेयर का गद्य में रूपांतर कर देना था। बलवं के एक मामले में तो उन्होंने पूर तक कविता म ही दिए। बाद में जो आदेश पारित हुआ, वह भी काफी काव्यमय ही था। जिन लोगों के लिए उन्होंने जिरह की थी, वे जब वापस लौटेंगे तो जरूर कोई महाकाव्य लिखेंगे जिसका शीर्षक होगा—'अधे सफर की कविताएँ' या प्रार्थनाशील ढंग में ल तो होगा 'ये मलाखे क्यों नहीं बालती?'

एक दिन मुझमें कहने लगे—बमल अक के लिए तुमने अपनी रचना भेज दा या नहीं?

मैंने कहा—कहाँ सीनियर मूड ही नहीं बन रहा है। इन नकवजनों से चाँछा झूटे तो कुछ साहित्य-सेवा भी करे।

वे बोले—अपराध-प्रवृत्ति मानवीय प्रक्रिया है। जब तक आदमी रहेगा, अपराध रहेगा। हमें देखो, इतना व्यसन रहने के बाद भी हम नीज-त्यूँहारों पर कविता लिख ही लते हैं। इन चोर-उकैनों के पीछे तुम क्यों अपना साहित्यिक कैरियर खराब कर रहे हो।

उसके बाद उन्होंने जेब में हाथ डाला तो मैं समझा कि वे इलाहाबाद 1977 या मद्रास 1952 निकालेंगे लेकिन इसके बदले उन्होंने एक समस निकाला जिसकी पीठ पर उन्होंने बसन्त की एक कविता लिखी थी।

फिर वे कुछ गभीर हुए। बोले—सुनो।

चण्डि हान के नाते वे मुझे प्रेरणा देने के लिए ही कविता सुना रहे थे। मुझमें इतना आत्मम नहीं था कि उनकी कविता की समीक्षा कर सकूँ। फिर भी जब उन्होंने कविता सुनाना प्रारम्भ किया तो मुझे लगा कि जरूर वे किसी को आज महाकाव्य लिखने के लिए भेजाएँगे।

उन्होंने पहले समस को उलट-पुलट कर देखा—इस बार बसन्त पर एक अच्छा ऐगल निकाला है मैंने, सुनो—

किमी कागज़ से मुक्त होकर  
जब तुम आते हो बसन्त



## सीनियर का बसन्त

त्रिरहगिरी के यज्ञ में आने के बाद लोगों को उनके पसीने से भी 'लागत फनेवर' आने लगी थी। इस महक में वे कई लोगों को अपनी आर आकर्षिक कर ले थे। उनकी जेबे अधिनियमों और महिदाओं में ठमाठन भरी गृही थी। उन्होंने जब से हाथ दाल्य नहीं कि आप समझ जाइए कि वे कुछ वैधानिक आपत्तिश निकाल कर आप पर फेकेगे और आपका कूट-परीक्षण किए बिना आपको नहीं ठादग प्रक्रिया में जब तक व आपको पुरा तरह से कूट नहीं लगे, उन्हें आत्मिक सतोष नहीं मिलेगा।

म तो उन्हें सीनियर ही करता था क्योंकि वे मुझसे हर मामले में चरिष्ठ हो थे। उनकी ग्बुग्व भी मुझसे अधिक थी। जब तक वे आठ-दस नज़ीरें खा नहीं लत थे, उन्हें डकार नहीं आती थी। यही उनका गोज का भोजन था। मेरा स्थिति यह थी कि मैं एक केम-लॉ पढता था तो मेरा पेट गडगडाने लगता था।

व मुझे हम-पेशा न समझ कर मिव हॉ समझते थे और इसका कारण यह था कि त्रिरहगिरी के अतिरिक्त उन्हें साहित्य से भी तगाव था। वे कविताएँ लिखते थे। विशेषकर हौली, दीकाली, वमन पचनी के अवसर पर तो वह लिखते ही थे। केवल लिखने ही नहीं थे अपनी रचनाएँ छपने के लिए भेजा भी करत थे। कविताओं के लिए उन्होंने उपनाम रखा था—त्रिरहगीर।

इस बार जब पत्रिकाओं में बसन्त अक को घोषणा की तो वे कविता लिखन के लिए छुटपटने लगे। किसी को जमानत का आवेदन-पत्र दे रहे हैं तो उसमें भी प्रार्थना

वाले हिस्से में एक मुक्तक मार ही देते थे। यह तो उनका टाइपिस्ट काफी समझदार था कि इस प्रेयर का गद्य में रूपांतर कर देता था। बलव के एक भागले में तो उन्होंने पूरे तर्क कविता में ही दिए। बाद में जो आदेश पारित हुआ, वह भी काफी काव्यमय ही था। जिन रोगों के लिए उन्होंने जिरह की थी, वे 'जब वापस लौटेंगे तो जरूर कोई महाकाव्य लिखेंगे जिसका शीर्षक होगा—' अंधे सफर की कविताएँ' या प्रगतिशील ढंग में ले तो होगा 'ये मलाखे क्यों नहीं बोलती?'

एक दिन मुझमें कहने लगे—बसन्त अंक के लिए तुमने अपनी रचना भेज दी या नहीं?

मैंने कहा—कहाँ सीनियर भूँड ही नहीं बन रहा है। इन नकबजना में पीछा छूटे तो कुछ साहित्य-सेवा भी करें।

वे बोले—अपराध-प्रवृत्ति मानवीय प्रक्रिया है। जब तक आदमी रहगा, अपराध रहेगे। हमें देखो इनका व्यसन रहने के बाद भी हम नीज-ल्यौहाग पर कविता लिख ही लेते हैं। इन चोर-डकैतों के पीछे तुम क्यों अपना साहित्यिक कैरियर खराब कर रहे हो।

इसके बाद उन्होंने खेव में हाथ डाला, तो मैं समझा कि वे इलाहाबाद 1977 या मदास 1952 निकालेंगे लेकिन इसके बदले उन्होंने एक समस निकाला जिमकी पीठ पर उन्होंने बसन्त की एक कविता लिखी थी।

फिर वे कुछ गंभीर हुए। बोले—मुनो।

विरह होने के नाते वे मुझे प्रेरणा देने के लिए ही कविता मुना रहे थे। मुझमें इतना साहस नहीं था कि उनकी कविता की समीक्षा कर सकूँ। फिर भी जब उन्होंने कविता मुनाना प्रारम्भ किया तो मुझे लगा कि जरूर वे किसी को आज महाकाव्य लिखने के लिए धमकाएँगे।

उन्होंने पहले समस को उलट-पुलट कर देखा। बोले—इस बार बसन्त पर एक अछूता ऐगल निकाला है मैंने, मुना—

किमी कारागार में मुक्त होकर

जब तुम आत हो बसन्त

मैं काँप जाता हूँ भय से  
 कैसे झेल पाऊँगा तुम्हें  
 मेरी संवेदनाओं के फूल  
 भूल गए हैं खिलना  
 मेरी प्रार्थना है बसन्त  
 तुम  
 अकेले में मत मिलना  
 कलिन में, कूलन में, कछारन में  
 मत बगरना मेरे भाई  
 वहाँ कुछ भी नहीं रहा तुम्हारे लिए  
 लोगो ने  
 चारा तरफ नाजायज कब्जे कर लिए हैं  
 जहाँ होती थी कभा  
 अमली, मींगरे और गुलाब की क्यारियाँ  
 छीले-भट्टरे वालो ने तेरे लगा लिए हैं अपन  
 में काँप जाता हूँ भय से  
 तुम्हारे स्वागत के नाम से काँप जाता हूँ मैं  
 क्या जवाब दूँगा तुम्हें  
 जब तुम मेरा कूट-परीक्षण करोगे  
 मेरी मानोगे?  
 मरने दो हरियाली को  
 जगन दो फूलों को  
 मस्ती के माहौल को दूर भगा दो,  
 ओ भाई बसंत  
 इनके खिलनाफे स्टे का आवेदन लगा दो।

## सीनियर का बसंत

मेरी ओर देखकर वे बोले—कैसी लगी? कहाँ भेज दूँ छपने? किमी बड़ों पत्रिका में चलेगी?

मैंने कहा—सीनियर, कविता इतनी जानदार है कि कहाँ भी छप जाएगी।

वे बोले—किसी पत्रिका का नाम भी बताओ। मुझे तो आजकल की पर-पत्रिकाओं का टेस्ट ही नहीं भालूम। अपने जमाने में तो सरस्वती आर चाँद ही निकलती थीं। सच कहूँ, इस पेशे में आकर मेरी प्रतिभा सड़ गई है, दूसरी लाइन में चला गया होना तो आज तक मुझ पर कोई गोघ प्रबन्ध हो जाता।

मैं उनके सामने कुल मिलाकर जूनियर ही था। मैं अपना राय ब्यक्ति करते हुए कहा—इसे 'रेवेन्यू निणय' में क्या नहीं भेज देत। रेवेन्यू लाँ पर इसने बहिया हिन्दी साहित्य में कोई कविता नहीं हो सकती।

वे बोले—साहित्य की इतनी अच्छी पकड़ होने के बाद तुम जिरहखोरी के पेशे में क्यों सड़ रहे हो। मेरी मानो, अभी भी कुछ नहीं बिगडा है। दूसरी लाइन में चले जाओ।

उसके बाद उन्होंने जब मैं हाथ डालकर फिर एक समय निकाला तब मैंने समझा गया कि इन्हें बसन्त पर अपना सीनियर की देवारी पूरी है।



## मूर्ख होने का प्रमाणपत्र

अब हम हम अपनी उपलब्धि ही कहेंगे कि अपने यहाँ स्वयं को बुद्धिमान समझने का मौलिक अधिकार हमें प्राप्त है। अब यह आप पर निर्भर है कि आप स्वयं को विद्वान समझते हैं या मूर्ख। परम्परा यही है कि अर्थात् तक हमने किसी को मूर्ख समझते हुए नहीं देखा। जो लोग जन्म में ही मूर्ख पैदा होते हैं और जिन्हें मूर्खता विगमनन हक से प्राप्त होती है, वे भी अपने-आपको विद्वान ही समझते हैं। यही 'समझ लेने की आजादी' महत्त्वपूर्ण है जिसमें सविधान कहीं जाइ नहीं आता है। यह सुविधा नहीं होनी तो कई लोग केवल इसलिए आत्महत्या कर लेते क्योंकि वे मूर्ख हैं।

यही कारण है कि मैं किसी का मूर्ख नहीं मानता। कर्मियों को जाबादी में जरूर कुछ प्रतिशान मूर्ख होंगे, लेकिन उनके पास भी विद्वान होने का प्रमाणपत्र जरूर होगा। यह इसलिए कि अपने यहाँ प्रमाणपत्र आसानी से मिल जाता है। आप अदालत में पेशी पर नहीं जाना चाहते, सिर्फ बीम रुपये खर्च कीजिए। कोई भी डॉक्टर यह प्रमाणपत्र दे देगा कि आप बीमार हैं और आपका एक हफ्ता आराम करना जरूरी है। आपका ऑफिस में छुट्टी मारने का मन हो रहा हो तो तुरन्त किसी डॉक्टर को पकड़ लीजिए, बीस रुपये थमाइए और आगम से घर पर बैठिए और दिन भर टी वी देखिए। घर में बच्चे न हो तो टी वी सी आर मॉगवाकर गन्दी फिल्म भी देखी जा सकती है। कुछ डॉक्टर ऐसे होते हैं जिनके रेट कुछ अलग-अलग होते हैं। लूज-मोशन का रेट बीम रुपया। पीलिया के प्रमाणपत्र का रेट तीस रुपया। हार्ट अटैक का रेट सौ रुपया। अपनी इच्छानुसार बीमारी पसन्द कीजिए और छुट्टी लेकर मौज कीजिए। अब जिन डॉक्टरों ने अलग-अलग बीमारियों के प्रमाणपत्रों के अलग-अलग रेट निर्धारित किए हैं उन

भा विद्वान ही कहना चाहिए, वर्ना प्रमाणपत्र के लिए उपयोग में लाए जाने वाले कागज का रट तो केवल पच्चीस या अधिक-से-अधिक पचास पैसा होता है, चाहे तो इसे मूज करवा लीजिए या टाइट।

वैसे हर आदमी अपने-आपको विद्वान ही समझता है, लेकिन यह भी सच है कि यदि सरकार कोई योजना बनाकर मूर्खों का पच्चीस हजार रुपए देने की घोषणा कर दे तो अपने यहाँ अम्सी प्रतिशत लोग बुद्धिमानी छोड़कर मूर्ख हो जाने के लिए तत्काल तैयार हो जायेंगे, और किसी भी राजपत्रित अधिकारी से अपने मूर्ख होने का प्रमाणपत्र प्रस्तुत कर देंगे। यह इसलिए कि सरकार की सभी योजनाओं में रिकार्ड में प्रमाणपत्र होना ज़रूरी है। जाति-प्रमाणपत्र, आय-प्रमाणपत्र, निवास-प्रमाणपत्र सभी में तहसीलदार के हस्ताक्षर ज़रूरी हैं। आपको जाति तहसीलदार ही प्रमाणित करता है। अब यदि सरकार ने 'शिक्षित मूर्ख-स्व-रोजगार योजना' के अन्तर्गत आपको पच्चीस हजार दिए, तो इसमें तहसीलदार की भागीदारी निश्चित रूप से होगा। अपने का मूर्ख प्रमाणित करवाओ और पच्चीस हजार ले जाओ। तहसीलदार से आप निपटो, सरकार का कोई लेना-देना नहीं है।

मे उल्ले के साथ कहता हूँ कि जो आजादी के बाद में ही अपने को विद्वान समझते हैं, वे भी इस योजना का लाभ उठाने के लिए मूर्ख हो जायेंगे। सत्ता और राजनानि का लाभ लेने के लिए जिम तरह साधु-सन्त झगकते कर रहे हैं, उम्मी से आप हमारा चरित्र का अन्दाजा लगा सकते हैं। कोई हमें पच्चीस हजार दे दे, हम मूर्ख कहलाने के लिए तैयार है। पच्चीस हजार के नाम से मूर्खों की भीड़ लग जायगी तहसीलदार के कार्यालय के सामने। यह भी तय है कि इनमें से अधिकांश भताआ और मत्रियो क रिश्तदार ही होंगे। पिछले दिनों एक समाचार आया था कि सरकार कोठियों को पाँच एकड़ कारशतकारी ज़मीन मुफ्त में दे रही है। 'कोठी उद्धार योजना' के अन्तर्गत कोठी अस्पताल में प्रमाणपत्र लेने वालों की लम्बी लाइन लग गई थी। लोग कोठी होने का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए विधायकों और मत्रियो की मिफारिशों के जुगाड में लग गए थे।

पिछली सरकार ने शिक्षित बे-रोजगारों का बराजगारी-भत्ता देने की योजना बनाई थी। तहसीलदार से प्रमाणपत्र लो और सौ रुपया महीना सरकार से मुफ्त में ले

लों। आवेदनपत्रों के साथ तहसीलदार का प्रमाणपत्र भर होना चाहिए कि आपको या आपके पालक को वार्षिक आमदनी गरीबी रेखा से नीचे वाली है।

एक बेरोजगार हीरो हॉन्डा में मेरा पास आया। उसके हाथ में बेरोजगारी भत्ते का आवेदनपत्र था। मैंने पूछा, "तुम्हें बेरोजगारी-भत्ते की क्या जरूरत पड़ गई? खाते-पाने घर के हो तीन-तीन दुकाने चल रही हैं दा जीपे हैं, बंगला है

वह बीच में ही बोला "सो तो है। लेकिन जब अपनी सरकार ही मूख ह तो उसका फायदा उठा लेना चाहिए। मां रुपया महोना मिल रहा है तो लाने में क्या नुकसान है? भरा सिगरेट-खर्च निकल जायेगा।"

मैंने कहा, "लेकिन तुम्हारे परिवार की आय तो काफी है यह वाक्य तो गरीबी रेखा से नीचे वालों के लिए है।"

वह बोला, "मैं जानना हूँ, इसलिए आवेदनपत्र में मेने लिखवा दिया है कि मैं अपनी माँ पर आश्रित हूँ और वह रोगी के बर्तन साफ कर तीन सौ रुपय महीना कमाली है। मेने पटवारी में आयु प्रमाणपत्र ले लिया है और इसी आधार पर तहसीलदार से भी प्रमाणपत्र ले लूँगा। विधायक जी का पत्र मेरा फायदा है ही पता पवका। और जब सरकार ही अपना खजाना खाली करन पर तुल्य है तो इसमें हमारा क्या दोष?"

मैंने पूछा, "लेकिन क्या तहसीलदार प्रमाणपत्र दे देगा? वह तो तुम्हें और तुम्हारे परिवार को अच्छी तरह जानता है?"

उसने कहा, "विधायक जी का पत्र किस दिन काम आयेगा? अब आप नो जाने किस जमाने की बात कर रहे हैं। मुझे एक हजार रुपया दीजिए मैं आपको मरु का प्रमाणपत्र त्वाकर आपको दे देता हूँ। अपने यहाँ क्या नहीं मिलता। बस पैसा और थोड़ा-भा टेक्ट चाहिए।"

उसने गली स्टार्ट की और तेज गति से आगे बढ़ गया। बात मूर्खों और बुद्धिमानों की चल रही थी। मैं एक सज्जन को जानता हूँ जो बड़ा-मूर्ख है। मूर्खता को ओज उनके चेहरे पर-चावीसो घंटे समकता रहता है, लेकिन वे जब भी बात करते हैं तो अपने-आपको विद्वान समझकर ही करते हैं। राजनीति की बात है बेईमानी की हो या भिन्न गि ते हुए पर और भ्रष्टाचार की हो वे अपनी विद्वत दिखाने में रुकी



पीछ नहीं रहते। एक दिन मुझे कहने लगे, “मुझे अनन्ता प्रधानमंत्री बना दे तो मैं एक दिन से कश्मीर समस्या हल कर दूँगा।”

क्या ऐसी बात करने वाले को आप विद्वान कहेंगे? पहली बात तो यह कि प्रधानमंत्री बनने की कुव्वत नहीं है। फिर क्या प्रधानमंत्री ऐसे ही बन जाते हैं? अपने गजा साहब से पूछिए कि प्रधानमंत्री बनने के लिए उन्हें क्या नहीं करना पडा। प्रधानमंत्री बनने के चक्कर में अपने भडयाजी का रिकार्ड इतना खराब हो गया कि आज तक इसके परिणाम में भुगत रहे हैं, याने कि न आप प्रधानमंत्री बनेगे और ना ही कश्मीर समस्या हल हागी।

मैंने कहा, “फिर तो आप पंजाब में चुनाव लड़ लीजिए। अभी कई स्थानों पर चुनाव रद्द हुए हैं और सरकार ने चुनाव स्थगित भी कर दिए हैं। मौका अच्छा है प्रधानमंत्री बनने का।”

वह बीच में ही बोले, “अजीब मूर्ख आदमी हैं आप। क्या हम भी अपने-जैसा मूर्ख समझते हैं? पंजाब में चुनाव लड़कर क्या हमें मरना है? देखते नहीं वहाँ चुनाव लड़ने वालों की क्या हालत हुई है?”

मैंने कहा, “फिर बिना लोकसभा का चुनाव लड़े आप समद में जायेंगे कैसे? और आपकी स्थिति इतनी अच्छी भी नहीं है कि बिना चुनाव लड़े आपको प्रधानमंत्री बना दिया जाए।”

वह बोले, “यार, हम तो आपका विद्वान आदमी समझते थे लेकिन आप तो बिल्कुल मूर्ख निकले। जब हमारी बात ही आपको समझ में नहीं आ रही है तो बहम करना बेकार है।”

उन्होंने मुझे मूर्ख होने का प्रमाणपत्र दिया और आगे बढ़ गए।

कुछ दिनों बाद जब उनसे दुबारा मुलाकात हुई तो मैंने मजाक में उनसे कहा, “सुना है, प्रदेश सरकार मूर्खों को पच्चीस हजार रुपया दे रही है।”

वह बोले, “कहाँ मुना आपने?” मैंने कहा “अभी राजधानी से एक मित्र लौटे हैं कह रहे थे कि वहाँ योजना का प्रारूप तैयार हो रहा है। मुख्यमंत्री मूर्खों के बारे में गम्भीर हैं।”

वह बोले, "हो सकता है। नई सरकार है कुछ भी कर सकती है। मूर्खों को भी मतदान का अधिकार है। हो सकता है सरकार वोट-बैंक बनाने के लिए ऐसा सोच रही हो।"

थोड़ी देर कुछ सोचने के बाद वह बोले, "यदि ऐसा हुआ तो प्रक्रिया क्या होगी?"

मैंने कहा, "वही जो शिक्षित बेराजगारों को भत्ता दिए जान के लिए निर्धारित है। पटवर्गी से प्रमाणपत्र लें, नगरपालिका या निगम से लिखवाओ कि आप मूर्ख हो और स्थायी रूप से इस प्रदेश में इमी शहर में निवास कर रहे हैं। फिर एक जपथपत्र दो और अपने मूर्ख होने का प्रमाणपत्र देकर मूर्ख-राशि सरकार से ले लो। लेकिन यह सब आप क्यों पूछ रहे हैं?"

वह बोले "अपने लिए नहीं पूछ रहा हूँ मैं जनता की सेवा करता हूँ। इस योजना का प्रचार करूँगा और अधिक-से-अधिक मूर्खों को इसका लाभ दिलवाऊँगा।"

दूसरे दिन वे मुझे नगरपालिका में मिल गए। मुझे देखकर मैंसे जौर बोले, "आप भी आ गए प्रमाणपत्र लेने? चलो अच्छा हुआ एक में दो भले। कई जब सरकार ने ही पच्चीस हजार देने का सोच लिया है तो हम क्या करें। जग नगरपालिका-अधिकारी से पता लगाओ कि कोई कागज आया ऊपर से? मे सोचता हूँ प्रमाणपत्र बनवाकर रख लेने में क्या मुकामत है। क्यों?"

मैंने कहा, "पच्चीस हजार देना तो आपका अपमान करना है। आप तो पचास हजार के लायक हैं।"

वे अपनी चिद्वन्ना पर मुस्कराकर आगे बढ़ गए। उनके चेहरे पर वही ओज था जो चौबीसो घंटे रहता है।

## क्षमा कीजिएगा

इन दिनों 'क्षमा कीजिएगा' वाले से पूरा शहर परेशान है। पता नहीं ये आदमी किम नक्षत्र में पैदा हुआ है। बात शुरू करेगा तो कहेगा—क्षमा कीजिएगा। फिर दाब-बाब बोलेगा और कहेगा—क्षमा कीजिएगा। थोड़ी देर चुप रहेगा। कुछ साचेगा और कहेगा—क्षमा कीजिएगा। कभी-कभी तो 'क्षमा कीजिएगा', कहने के बाद ही वह सोचता है कि अब क्या कहना है। गस्ता चलत किमी का भी पकड़ लेगा और कहेगा—क्षमा कीजिएगा।

इसी धर-धर में मैं फँस गया। पान खाने निकला था कि य 'क्षमा कीजिएगा' वाले दिख गए। दिखने में तो बुद्धिजीवी लगते थे लेकिन बाद में पता चलेगा आपको भी, किम टाइप के बुद्धिजीवी थे। मैंने पान की दुकान पर एक जोड़ा बनारसी का आर्टर दिया तो वे बोले—क्षमा कीजिएगा देश की हालत बहुत खराब है।

मैंने कहा—इसमें आपको क्षमा करने की कौन-सी बात है? क्या आपने हालत खराब की है?

वे बोले—क्षमा कीजिएगा, आप मेरा मतलब नहीं समझे। मैं बहुत स्पष्टवादी हूँ।

—क्या मतलब है आपका?

—क्षमा कीजिएगा बहुत गौर करने का भावना है। इसे इतना लाइटली मत लीजिए। क्षमा कीजिएगा एक बात बता देता हूँ कि हम बहुत कठिन दौर से गुजर रहे हैं।

में चुप रहा यही भोचकर चुप हो गया था कि मैंने उनके प्रश्न का उत्तर दिया नहीं कि वे मुझे एक और 'क्षमा कीजिएगा' टिका देंगे।

वे बोले—क्षमा कीजिएगा आप मेरा बात को गंभीरता में नहीं ले रहे हैं

वो तो मे बिना कुछ कहें वहाँ में खिसक गया नहीं तो वह मुझसे क्षमा माँग माँगकर समझा ही देता कि देश की हालत कितनी गंभीर है। उसकी एक आदत में मुझे एलर्जा हो गई थी कि 'क्षमा कीजिएगा' कहने के बाद वह अपना मुँह शीलक की तरह बनाता था, आँखें गोल-गोल घुमाता था, चारों तरफ देखता था और बात को इतनी जोर से चबाता था कि किमो की भी इच्छा उसे क्षमा कर देने की होती थी और 'क्षमा करो माले का' और आगे बढ़ने वाली भावना जागृत हो जाती थी।

बम्बई में ट्रेन या टाउन बस में जब खूबमूक्त माहिलाएँ 'एक्सस्प्रेस मी कहकर भुस्फुरती है तो अगला आपसे आप रास्ता दे देता है, और एक अपना 'क्षमा कीजिएगा' वाला है। भीड़ में जिससे कहना यही उसे दो धक्का मारेगा। उसमें 'क्षमा कीजिएगा', कहा और जवाब मिलेगा—अबे अक्षा है क्या देखता नहीं मामने कितने लोंग खडे हैं तब क्षमा माँग लेने से भीड़ कम हो जाएगी क्या?

मैं खिसक रहा था कि वह मेरे पीछे लग गया। थोड़ी देर तो मेरे पीछे-पीछे चलता रहा, बाद में जब रास्ता सुनसान हो गया तो उसने कहा—क्षमा कीजिएगा।

मैंने कहा—मुझे मालूम है देश की हालत बहुत खराब है।

वह बोला—क्षमा कीजिएगा। वह बात नहीं है। बात यह है कि

मैंने बीच में ही कहा—जाता हूँ। हम बहुत कठिन दौर में गुजर रहे हैं

इसके बाद उधर से 'क्षमा कीजिएगा' का रिप्लाई नहीं आया तो मैं समझ गया कि अब वह किसी दूसरे आदमी को पकड़ेगा। लेकिन नहीं, वह चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चलता रहा।

आगे चौराहा था। मैं दाहिनी तरफ मुड़ा तो वह बोला—क्षमा कीजिएगा देश गलत रास्ते पर जा रहा है।

एक बार मेरी इच्छा हुई कि इस आदमी को पास बिठाकर उसकी पूरी बातें सुनीं। हो सकता है वह फेयरफैक्स वाले मुँह पर कुछ कहे या अपने रक्षामंत्र के बारे

मे कोई टिप्पणी दे। लेकिन मैंने यह सोचकर उसे लिफ्ट नहीं दी कि साला इतने अहम मसले के आगे क्षमा की जिज्ञासा लगा कर पूरे घटनाक्रम को सीगियमनेस की एसी-तेमी कर देगा। दग्गसल अन्दर ही अन्दर मुझे अब इन शब्दों से घृणा होने लगी थी। इस आदर्मा को किसी मन पर भाषण देने के लिए खड़ा कर दो तो क्षमा माँग-माँगकर ही वह इस देश को विक्रामशील राष्ट्र सिद्ध कर देगा।

मैं सोच रहा था कि इस आदर्मा पर जरूर व्यंग्य लिखूँगा, लेकिन फिर सोचने लगा कि इसमें विसर्गात की बात कहों है। बेचारा सीधे-सीधे क्षमा माँग रहा है। जहाँ क्षमा होती है वहाँ तो करुणा का भाव होता है। हाँ, इस करुणा के पीछे यदि कोई दर्द छिपा हो तो उसकी पीडा का रज्जाकन अक्षय एक अच्छे कैरेक्टर सटायर को जन्म दे सकता है। लेकिन ऐसी कौन-सी स्थिति पैदा की जा सकती है जो इस चरित्र को सार्थक बनाए।

चौराहे के पास जिस सड़क की आर मैं मुड़ा था, उस पर एक पुलिया बनी हुई थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह पुलिया पर बैठ गया था। शायद सोच लिया हो कि मुझे देश के हालात में कोई दिलचस्पी नहीं है, यही सोचकर उसने मेरा पीछा छोड़ दिया हो।

मैं थोड़ी देर के लिए रुका, एक मिग्रेट सुलगाई और उसकी तरफ देखने लगा। पहले तो वह देखता रहा और बाद में उमन अपना मुँह दूसरी दिशा में घुमाकर मेरी ओर पीठ कर दी। जैसे कहना चाहता हों—जाओ मैंने क्षमा कर दिया। जिस आदर्मी के लिए देश और मिग्रेट में कोई अन्तर न हो, उसमें बात करने में तो अच्छा है उसकी तरफ पीठ कर लो।

यह तो मैं सोच रहा था। एक लखक होने के नाते कई तरह की बातें आती हैं मन में। किसी स्थिति को देखकर ही विचार बनते हैं। बम्बई की खूबसूरत महिलाओं के साथ मन में बहुत हल्के-फुल्के विचार ही आते हैं जबकि 'क्षमा की जिज्ञासा' वाले के साथ जब देश जुड़ जाता है, तो मेरा ऐसा सोचना मुझे ख्याभाविक लगा।

मैं उसके पास आ गया। उसे गर्भांगत से देखता रहा। मैं चाहता था कि वह बात शुरू करे। देश की हालत पर कुछ कहे, सही-गलत गस्तों के अन्तर की बात कहे तो मैं उससे बात करूँ और अपने व्यंग्य के लिए कुत्त — तथ्य निम्नत रन्तू

वह मेरी ओर देखता रहा। उसके चेहर पर पीलापन था। चौगहे पर जो गद्दा पीले रंग की रोशनी थी उससे आसपास के वातावरण में भी पीलापन झलकने लगा था। यही तो इस सोडियम लैम्प की विशेषता है। हा सकता ह, उसके चहर का पालापन मुझे इस रोशनी के कारण ही अधिक पीलापन लग रहा हो।

मैं थोड़ी देर के रुका रहा। मैंने भी निश्चय कर लिया था कि इस बार भी बात उसकी तरफ से प्रारम्भ होगी तभी मैं जवाब दूंगा और उसकी हर बात को गंभीरता से सोचूंगा। शायद उसे मेरे पहलू के व्यवहार में दुःख हुआ था। मुझमें नाराज हो सकता था।

कोई पाँच मिनट तक हम दोनों चुप रहे। बाद में मैं जाने लगा तो उसने कहा—क्षमा कीजिएगा आपका पास पाँच का नोट होगा? मैंने क्लन से कुछ नहीं खाया है।

मैंने पेंस का जेब में हाथ डालें और बिना कुछ उत्तर दिए उसी रास्ते पर भुड़ गया जिस पर खड़े होकर थोड़ी देर पहले मैंने मिमरेंट की थी।

‘क्षमा कीजिएगा’ वाले में पूरा शहर परेशान तो होगा ही क्योंकि इस शहर में मुझ जैसे ही लोग रहते हैं।



## चीर-घर

जब मे मोनीजी का चीर-घर बनाने का टेडर पाम हुआ है, उनकी जिदगी में नया मोड आ गया है। सुबह-शाम वे चीर-घर में ही दिग्बने हे, जहाँ मिलने के केवल चीर-घर के अलावा कोई बात नहीं करत।

मोनीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के पहले आपको यह बताना जरूरी हे कि वे काफी चुस्त-दुस्त और मासपेशी प्रधान व्यक्ति हैं। जब भी वे कचहरी आते हे में उन्हें देखकर प्रसन्न होता हूँ, उन्हें चाय पिनाता हूँ, पान खिलाता हूँ।

एक बार वह मुझे बोले, "मोधी साहब, आप मुझे देखकर प्रसन्न क्यों हात हूँ?"

मैंने कहा, "दरअसल इस कचहरी में सैप मुर्दा किम्म के पक्षकारों को देख-देखकर आँखें पक गई है जो भी आता है उदास चेहरा लेकर ही कचहरी आता हे। आप जैसे स्वस्थ तांग आत हूँ तो मन प्रसन्न हो जाता है कि चलो कोई तो मोटा-तावा आदमी कचहरी में आया!"

मोनीजी हँसे या कहिए कि अपनी ब्रेन्थ की गारिफ सुनकर फूल। मैं 'फूले' शब्द का पयोग जान-बूझकर इसलिये नहीं कर रहा हूँ कि व पहलने से ही काफी फूले हुए हूँ। कमर 45 इंच में कम नहीं होगी। जिम् आदमी की कभर का घेरा इतना हो, उसके बदन की मासपेशियों का अटाजा आप लगा सकते हैं। कहने का मतलब है कि वे काफी मटन-दार व्यक्ति हैं। एक रान पन्द्रह किलो में कम तो नहीं होगी। अपने देश में इतना स्वस्थ आदमी देखकर किसे प्रसन्नता नहीं होगी?

मैंने मजाक में उनसे कहा, “सौनोजी, आप तो विदेश चले जाओ खूब पैसा कमाओगे।”

उन्होंने पूछा—“वो कैसे?”

मैंने कहा, “आप किसी मौना बाजार में स्टॉल लगा लें। वहाँ हम विकासशील देश का इतना स्वस्थ आदर्श देखने के लिए विदेशों भ्रमण लगा दें। एक डॉक्टर टिकट खरीब तो माना-माल होकर अपने देश लौटोगे।”

वह बड़ी गभीरता से बोले “कहना आपका सही है लेकिन मैं तो हम चीर-घर के बारे में सोच रहा हूँ, टेंडर पास हो चुका है... जब तक चीर-घर पूरा नहीं होगा, मैं विदेश जाने की नहीं सोच सकता एक बार काम पूरा हो जाये फिर पाय-पाट बनवा लेंगे, क्यों ठीक है ना?”

मैंने पूछा, “लेकिन आपने चीर-घर के लिए ही क्या डेटर भरा? कोई बड़ी-सी इमारत का टेकर लेते तो कुछ बचला था। इस छोटे में चीर-घर में क्या बचता?”

वह बोले, “अपने नगर की गरिमा बढ़ाने के लिए ही मैं यह ठेका लिया है, अपना गुराना चीर-घर देखा है? कितना गढ़ है ऊपर से पचास फुट छपर टूटी है। खिड़की दरवाजे का ठिकाना नहीं है। इस गढ़ चीर-घर में हमारा सम्माननीय मृतकों का चीर-फाड़ हो, यह मुझे अच्छा नहीं लगा, आखिर मरने वाले तो यही कहने का कि क्या अपना घर इतना गढ़ा होता है कि आदमी को मरने के बाद अच्छा-सा चीर-घर भी नहीं बनता। हमारा नरिक कतक्य है कि हम मृतकों की सुविधा के लिए इतनी सम्मान जतन भावना तो रखें, मरने ही लोगों के दस्तखत कग्वा कर शासन से नया चीर-घर बनवाने का आदेश निकलवाय है इसके पीछे मेरी भावना काम कर रही है।”

मैंने कहा, “फिर तो आपकी भावनाओं का मैं स्वागत करता हूँ। लेकिन परा मुझसे है कि इस चीर-घर का नाम किसी जीवित नेता के नाम से ही रखा जाए। “श्रीमान फनाना स्मृति चीर-घर” साथ में आपका नाम भी लिखा जाना चाहिए।”

अपने नाम का उल्लेख सुनकर अपने सार्विकी फिर गभीर हो गए। दार्शनिक मुद्रा में बोले, “अपने देश के टेकेदार केवल चीर-घर बनाने में ही अपनी निष्ठा रखते हैं, हम अपने नाम का कोई भीह नहीं है। पर विचार से किसी नेता के नाम से ही इसका नामकरण हो तो अच्छा रहेगा।”



इसके बाद उन्होंने कई नाम सुझाए। पहले अखिल भारतीय स्तर के नेताओं का उन्होंने स्मरण किया और बीच-बीच में कुछ आर्चलिक नेताओं के नाम भी बले आए जिनके कारण उनका टेडर पास हुआ था।

मैंने प्रसंग को टालते हुए कहा, "अभी तो आपका चीर-घर अधूरा है पूरा बन जाने दीजिए फिर सोचेंगे, अभी आपका क्या प्रोग्राम है?"

वह बोला, "अपना क्या प्रोग्राम रहेगा बस चीर-घर को तगफ ही जाना है प्लास्टर चल रहा है नजर के सामने काम हो तो अच्छा है बाद में शिकायत हो कि प्लास्टर उखड़ कर मृतकों के शरीर पर गिरन लगा है, तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

मैंने कहा, "सरकारी इमारतों का प्लास्टर ऐसा ही होता है। साहबों के घरों में गिरता रहता है। जब वे शिकायत नहीं करते तो मुझे क्या लगे?"

सोनीजी ठहाका मारकर हँसते बोलें, "मैं ब्यग्य ममझ गया अब आप मेरे चीर-घर पर कुछ लिख डालो, अपनी भी पब्लिसिटी हो जाये जरा कायदे से।"

मैंने उन्हे यह कहकर टाल दिया कि जब काम पूरा हो जायेगा तब लिखूँगा।

कल सोनीजी मंग पाय आए। बोले, "चीर-घर कम्पलीट है अब आप लिख डालिये इस पर कुछ लेकिन एक बात कह देता हूँ मेरा ध्यान रखना बहुत पसीना बहा है मेरा इस चीर-घर में।"

मैंने पूछा—उद्घाटन के लिये किसे बुला रहे हो?

वह बोले, "क्या चीर-घर का भी उद्घाटन करवाना पड़ेगा?"

मैंने कहा, "यह तो अपने यहाँ की परम्परा है देश के हर निर्माण-कार्य का श्रेय सरकार को है। जो भी सरकारी भवन बनता है, बिना उद्घाटन के बंद पड़ा रहता है। अपने यहाँ जेल बनी थी देखा नहीं कितने दिनों बाद इमका उद्घाटन हुआ। तब जाकर कहीं जेल चालू हुई।"

सोनीजी मंभीर हो गए, बोले, "यह तो कठिन काम है, उद्घाटन के लिये मुर्दा भिड़ाना पड़ेगा।"

मैंने मजाक में कहा, "किमी अच्छे नेता को पकड़ लो ऐसे मंस्थानों का उद्घाटन उनके द्वारा होना चाहिए।"

वह बोले "देखता हूँ लेकिन आप लिख रहे हो ना चीर-घर के बारे में?"

मेने उन्हें आश्चर्य किया लेकिन अब सोच रहा हूँ कि क्या लिखा जाए? चीर-घर से क्या व्यंग्य पैदा किया जा सकता है। सोनीजी को डम्प चीर-घर में कहाँ फिट किया जाए कि बात पैदा हो और उनका सम्मानजनक स्थान भी बना रहे। चीर-घर का उद्घाटन किम पक्ष के नेता स मार्वक होगा? ऐसे कई भवाल मन में पैदा हो रहे थे।

दो दिन इसी तरह निकल गए।

तीसरे दिन सोनीजी प्रसन्न मुद्रा में आए। बाले, नेता तय हो गया अब आप जल्दी लिख दीजिए।

मेने नेताजी का नाम और यह पुछा कि भाजपा वाला है या कांग्रेस वाला तो वह बोले, "उन्होंने कहा है कि नाम गुप्त रखा जाए।"

म समझ गया कि सोनीजी ब्रंडल मार रहे हैं। अपने देश का नेता ऐसा कभी नहीं कर सकता। उद्घाटन भले ही देर से हो लेकिन बधाई विज्ञापनों के लिए अपना नाम पहले ही दे देता है ताकि लोगों को स्वागत करने का अवसर मिले।

रात में मुझे सपना आया कि मेरी लाश चीर-घर में पड़ी है। चीर-घर के प्रवेश द्वार पर लाल फीता लगा हुआ है। सोनीजी दाँडधूप में लगे हैं। सरकारी गार्डियो की लाईन लगी है। एक एम्बेसेडर में नेताजी उतरे, लोगों ने उन्हें फूल मालाएँ पहनायीं। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर पोस्टमार्टम की तैयारी में हैं। नेताजी ने फीला काटा। लोगों ने तालियाँ बजाईं। फिर डॉक्टर साहब ने नाईफ़ नेताजी के हाथों में दते हुए आग्रह किया कि चाकू चलाकर ये इस मुर्दे के पोस्टमार्टम के साथ ही चीर-घर का उद्घाटन सम्पन्न करें। नेताजी ने मरी और देखा। मैं पजातत्र का मतदाता था। जिंदा नहीं था इसलिए उनके काम का नहीं था। उन्होंने चाकू मेरे सीने पर रख दिया। मैं जानता था कि अब इस चाकू की नीलामी होगी। यह चाकू वीम हज़ार में जायेगा। नेताजी भाषण देगे और बढ़ती हुई आवादी, एकता-अखंडता और आनकवाद में चीर-घर के महत्व पर प्रकाश डालेंगे, अपने सोनीजी की जगन, निष्ठा और मृतकों के पति सम्मान की भावना का आटा करते हुए विदा हो जाएंगे, फिर चीर-घर चलागा। मरी तरह अनेक लाश इस चीर-घर में फाँदी जायेंगी। मृत्यु के कारणों की बारीकी से जाँच होगी। कई दृश्य के

आरोपी दोषमुक्त होंगे। लेकिन मुझ जैसे लोगों का क्या होगा जो केवल उद्घाटन के लिए मरे हैं, चीर-घर के लिए मरे हैं, नेताजी के लिए मरे हैं उनकी ख्याति और सम्मान के लिए मरे हैं, उनका चाकू नीलाम करवाने के लिए मरे हैं, चीर-घर की भार्यकता को स्थापित करने के लिए मरे हैं।

सपना देर रात तक चलना रूढ़। ओर बीच-बीच में सोनीजी मुझे बराबर याद दिलाते रहें कि मुझे चीर-घर पर जल्दी लिखना है। और सोनीजी के इस सार्वक चयास को प्रजातांत्रिक मूल्यों से जोड़ते हुए अपनी भव्य परम्पराओं को जीवित रखना है। देश में होने वाले हर उद्घाटन में अपनी सशक्त भागीदारी निभाना है।

□

## बिजली वाले की बारात में

बहुत दिनों तक दूभरो के प्रभुज सुभारणे के बाद आखिर बिजली वाले का शादी मय हो गई। नाम तो उनका तिवारी था लेकिन वे 'बिजली वाले' के नाम से शहर में माने जाते थे। पिशाजी बिजली विभाग में आफिसर इन्चार्ज थे। खुद सभी विभाग में क्लर्क थे। छोटा भाई शहर में बिजली फिटिंग का काम करता था। घर में सब-कुछ जंच कर ही किसी के घर बैठने जगहों तो तोड़ते समय एक-दो प्लग आर वायर मार ली थीं। छोटे बच्चों को हिदायत थी कि जब भी किसी के घर खलने जाओ, मौके का ताक में रहो और एक बल्ब लेकर ही न लौटो। यानि कुल मिलाकर पूरा परिवार बिजली विभाग की सम्पत्ति था। साहित्य में जो जगह प्रतिबद्धता ही होती है, बिजली विभाग में वही जगह तिवारी जी की थी।

लड़की वाले जब तिवारी जी को देखने आय तो तिवारी जी अपना मन स्वचरिपेयर कर रहे थे। होने वाले समूह ने पूछा—“लड़का नहीं दिख रहा है।” सभरी उहाका मारकर हैमें बोले—“वो क्या स्वचरि मुधार रहा है।”

लड़का वाले जरा झंप गये। वे लोग उन्हें मैकेनिक समझे थे। तिवारी जी उसी गन्धता के साथ स्वचरि मुधारत रहे। थोड़ी देर बाद जब लाइन चालू हो गई तो वह अपने होने वाले समूह की ओर देखकर मन ही मन अफस होने वाली पत्नी के स्वभाव का अंदाजा लगाने लग। पिता ने कहा—“पर दूओ वेटे।”

तिवारी जी ने टेस्टिंग होल्डर उनके पैरों के पास रखकर होने वाले समूह जी के पैर हुए और एक झटके-में डम तरह टटे जैसे उनके पैरों में 440 वाल्ट का करंट बह रहा हो।

लडका पगल आ गया।

बाबूजी बहुत जिद करते रहे कि लडकी देख तो लो, अपने घर के लालक हे या नहीं लेकिन घर की माँ-बहनो की राय थी कि यहाँ जाने पर एडजस्ट हो ज़रूरी। दुसरा उर यद भी या कि लेट करने पर निवारीजी आजीवन कुँवारे रह सकत थे। यह उनका दखल रिस्ता था जो क्रियान्वित हो रहा था। पहले तो लडकी के बाप तिवारी जी को उनका सीटर पेंडकर ही रिजेक्ट कर चुके थे।

बहुत लज्जते-शर्माते निवारी जी ने मुझे बताया कि उनको शादी जय गई हे। जब दूध आज़ाद हुआ था तब वे पैदा हुए थे और आजादो की बत्तीसवीं वर्षगांठ पर उनको शादी तय हुई थी। मैंने कहा, “या तुम तो इम कदर शर्मा रहे हो जैसे कोई लडका अगमनी है।” वह बोले—“बहुत दिनों से करट तरीक हा रहा था। आज चायरिंग वैक हो गई। तभी मैं कहता था कि त्रिन ज्यो ल्यावा आ रहा हे।”

मैंने कहा—“भारत में ते चतंगो या नहीं?” वह बोले—“आप तो मेर सोम्ट है। आपका नहीं ले जाईंग तो वहाँ क्रेट्रेक्ट फार्म में गवाही कौन देगा?”

निवारी जी पहली बार हैमन हुए दिखे। एक मीरिंगस किस्म को हैरी आ मालमपुरमी के समथ या घर में लची पैदा होने पर बाप क चेहरे पर हॉरी हे। फिर उनके चेहरे पर वही भाव आ गये जो बिना आंग्रिज किये मानसून के गुजर जाने पर होते हैं।

जब से तिवारी जी की शर्दी पक्की हुई, उनके जीवन में नया मांड आ गया था। वे गत का नौद में ‘फ्यूज बनाओ और कनेक्शन जाओ’ बडबडाते लगे थे। कभी-कभी विजली के खभे पर भी नौद में चढ जाया करते थे। परवाचे परेशान हो गये। ऑफिस में उनकी जिनती भी एल बची थी। सब नी ज चुम्मे। चोल्लज अठन करने के उपाय किये गये लेकिन जब भारत जाने का कबल एक दिन बचा तो निवारी जी आपसे आप नारमल हो गये।

भारत की तैयारी होने लगी। बँड वाल आ गये। बाबूजी बोले—“ट्रायल के लिए एक धुन बजाओ।” बँड वाले ने बजाया—“ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना।”

बिजली विभाग की मेटाडोर आ गई। पीले रंग की गाड़ी में हल्का बल धोती पहन कर तिवारी जब ड्राइवर की सीट के पास बैठे तो लगा रहा था जैसे मेटाडोर का रंग चाटकर वे बैठे हैं। पीछे में जानवरों की तरह बिजली विभाग के आरमी बंद गए। फिटर और वायरमैनो से गाड़ी भर गई। ये ही केवल सभ्रात नागरिक था जो उनकी बारात में जा रहा था। बाबूजी मुझे बोले—“गाड़ी में घुम जाओ।” मैंने बड़ी मुश्किल से अपना सर गाड़ी में डाल दिया। मेरा घड़ गाड़ी के बाहर लटक रहा था। लगा था जैसे विक्रमादित्य बैताल को कंधे पर लिए तिवारी जी की बारात में जा रहे हो।

जाने किस मज्जन को दिया आ गई कि उन्होंने सही मलामत मरा घड़ गाड़ी में डाल दिया।

मेटाडोर के पीछे बिजली विभाग का डम्पर था जिसमें महिलाएँ बैठे सांहर गा रही थीं। कभी-कभी डम्पर की आवाज अधिक सुरीली लगती थी

उसके पीछे बिजली विभाग की ट्रक थी जो बिजली के पोल हाता था उस पर बैठे बाल जमे थे। तिवारी जी के कुछ नजदीकी गिस्तेदार जो मेटाडोर में नहा घुस पाये थे, ट्रक में जमे थे। हम बैठे बालों में परेशान थे और बैठे बाले उनसे परेशान थे।

बागत जाने-जाते अचानक रुक गई। पता चला कि ट्रक में बैठे एक बच्चे ने ब्लागेनट पर पेशाब कर दिया। बैठे बाला ने कहा—“यह हमारा अपमान है। हम नहीं जायेंगे।” बाबूजी समझाने लगे—“अरे बच्चे ने पेशाब कर दिया। मैंने किया हात तो बात और थी। चलो हम धुलाई का पैसा समझी में दिलावा दगे।”

मेटाडोर में बैठे बिजली मैकेनिक ताब खा रहे थे, बोले—“नहीं जाते तो न जायें। हम बैठे बजा लेंगे। समझ क्या रखा है बिजली वाला को। लाइन काट द्या तब पता चलेगा, हॉ।”

बड़ी मानमनोव्वल के बाद उदास मन से बैठे बाले तैयार हुए। बंड मास्टर ने मन-ही-मन कहा—‘बलो बेटा। वहाँ ऐसी धुन बजाएँगे कि तुम भी क्या बाद खोजेंगे।’ और हुआ भी ऐसा। उन्होंने जो धुने बजायी वो आज तक किसी की शादी में नहीं बजी होगी। मुझे तो लगा था जैसे मैं किसी की शवयात्रा में शामिल हो गया हूँ।

बागत का स्वागत हुआ। ऐसा स्वागत मैंने पहली बार देखा। लड़की पसल वाले इतने मजबूत किस्म के आदमी थे कि मेरी पसलियाँ आज भी दर्द कर रही हैं। कुछ बागतियों को तो अस्पताल भेजना पड़ा। एक-एक आदमी दस-दस बारातियों से गले मिल रहा था। कुछ लोगों ने आवाज उठाई कि इस तरह गले मिलते रहोगे तो बारात में काई भी आदमी इस लायक नहीं बचेगा कि दुल्ह की घोड़ी के पीछे हो।

भगवान ने हमारी सुन ली। गले मिलने का कार्यक्रम समाप्त घोषित हो गया।

बारातियों ने चैन का साँस ली। बाबूजी मेरे पास कराहते हुए आए। बोले—

तुम फोन जाओ और कुछ पहलवान किराये पर लाओ। बारात विदा होते समय हमारी ओर से समझी में पहलवान गले मिलेंगे।”

×

^

×

बारातियों को जंगल जगह ठहराया गया था वह पुराने महल का वह हिस्सा था जहाँ जमींदार साहब का अम्बल था। लेकिन उस इस बुरी कदर मजाया गया था कि लगता ही नहीं था कि हम अम्बल में बैठे हैं।

बारातियों ने एक नजर चारों ओर डाली और देख लिया कि मारने लायक क्या है।

अन्दर दाखिल होते ही स्वागत के लिए नाई तैयार बैठा था। जिन बारातियों ने अपनी दाढ़ियाँ बनवाई वे अम्बल में भीथे कैमिस्ट की दुकान पर डेटाल लेने पहुँच गये। जिन लोगों ने मालिश करवाई वे घायल चीते की तरह दरियों पर पसर गये। कुल मिलाकर दूसरा स्वागत अपेक्षाकृत कम हिसात्मक रहा।

भाजन हुआ। राड्ड की मजबूती मुझे अभी भी याद है। बाबूजी के दाँतों की दाँतों में हिल रहे थे वे वहाँ शहीद हो गये। बाबूजी बोले—“यह तो शगुन है। बच्चा जिदगी भर खुश रहेगा।”

बाबूजी ने बड़ी डिफाल्ट के साथ उम्हड़े हुए दाँतों को उस जगह गाड़ दिया जहाँ चोड़े दाँत खाते थे। बाबूजी हम लोगों से बोले—“अर बागत में आये हो तो जरा मौज-मस्ती कर लो।” लेकिन दाढ़ियाँ बनवाकर और मालिश करवाकर हम लोग इतना थक गये थे कि आराम करने के पक्ष में थे।

गोधूमि बेला में बागत निकली।

दरवाजे पर सजी हुई घोड़ों देखकर कई लोगों को अपने पुगने दिन की पत्नियाँ याद आ गई। हम सब बागती दूल्हे की प्रतीक्षा में पान और तम्बाकू खाते-ते बड़ी मुश्किल में घोड़ी की सजावट के अनुरूप सज हुए तिवारी जी आए। उन्होंने फर्क सड़क पर चलती हुई सभ्रात महिलाओं को देखा और बाद में घोड़ी की ओर देखकर बोले—“मैं नहीं चढ़ूँगा। मुझे डर है यह कहीं गिर न दे।” बाबूजी ने बहुत समझा कि घोड़ी अनुभवी हैं। कई दूल्हों का पार कर चुकी है। लेकिन तिवारी जी के मन जो डर बैठ गया था उसे बाबूजी नहीं निकाल सके।

मैंने धीरे से तिवारी के कान में कहा—“यार, अभी घोड़ी से डगमे लजिदगी कैसे कटेगी।” तिवारी जी बोले—“अपाहिज बनकर जिदगी काटन से अच्छा है घोड़ी पर न बैठा जाये। तुमने देखा था? अपने दुवेजी जब बागत लेकर लौटे तो दोन पैरो में प्लास्टर बँधा था।”

घोड़ी चाले ने भी समझाया। हाने वाले मसूर जी ने भी समझाया। लेकिन तिवारी जा नहीं माने। बाबूजी बोले—“घोड़ी चाले को आधा किंग देकर रवाना कर दो।” लेकिन घोड़ी वाला भी खानदानी था। बोले—“पैसे पू लगेगे।” बाबूजी बोले—“ठीक है घोड़ी आगे-आगे चलाओ। दूल्हा पीछे जीप में चलेगा।”

तुरन्त लोकल बिजली विभाग की जीप बुलाई गई तब तिवारी जी अगली सीट पर बैठे। खाली घोड़ी बारत में सबसे आगे थी। पीछे तिवारी जी और हम घोड़ा की अहिस्ता चाल के साथ आगे बढ़ रहे थे।

बागत मडप में पहुँची तो होने वाले मसूर ने तिवारी जी के मालो स कहा—“बारातियो का स्वागत करो।”

भगदड़ मच गई। कई बागती भागने लगे तो बाबूजी ने कहा—“स्वागत बहुत हो गया। अब जल्दी से फेरे निपटाइये।”

पंडितजी श्लोक पढ़ने लगे और बीच-बीच में भाषण देकर ममझते थे कि सुखी प्रसन्न-बिजन के लिए क्या अनिर्घर्य है वयू पृथ्व में नै प्रसन्न में जब



फेरो मे आगे थी नो लगता था जैसे उनके पीछे कोई थछटा फरे लगा रहा हो। और जब तिवारी जी आगे हुए तो लगा जैसे काई पावर हाऊम उनका पीछा कर रहा है।

इस बीच एक दुर्घटना और हो गई थी जा मैं आप लोगो को बताना भूल गया अचानक लाइट बंद हो गई। मसुर जी ने जल्दी से गैस बर्नियों बुलवाई। पता चला कि मडप से दूल्हा भी नटागट है और ममधो जी भी। बाद में पता चला कि समधी जी पयूज गुधार रह थे और दूल्हा पाल पर चढा पोल पयूज चेक कर रहा था।

कुल मिलाकर एक रोमाचक अनुभव लेकर हम लोग वापस लाटे थे। दहेज के अन्तावा तीन ट्यूब लाइट, मान बल्ब, अट्टागह प्लग और नेरह होल्डर बारातियो के परिश्रम स दहेज मे जुड गये थे।

आदी के बाद तिवारी जी मे पहली मुलाकात हुई। मैंने कहा—यार भाभीजी से नहीं मिलाओगे?

‘वह बाले—क्या मिलाऊँ। एक फेज गायब है।



## बेगानी शादी में अब्दुल्ला

शादियाँ बहुत हुई इस साल। सब अगने वालों की थी। बहुत दिनों में बेगानी शादी का इच्छा मन में थी। मैंने एक मित्र से पूछा—क्या गुरु! इस साल काइ बेगान शादी नहीं हुई?

व बोले—एक-दो हुई थी। तुम दिल्ली गए थे नव।

—उधर अब्दुल्ला दिखा?

—सौन अब्दुल्ला? अब्दुल्ला फतवावाला या लफंडी की दालवाला?

—मेरा मतलब है अब्दुल्ला दीवाना। मैंने सुना है कि वह अक्सर बेगानी शादी में जरूर दीवाना होता है।

वह ईसा। बोला—ममझ गया। उसकी बात कर रहे हो ना? वह तो था जनवामे स जहाँ महिलाएँ था वही घूम रहा था।

मे उदाम हो गया। उसने कारण पूछा तो मैंने कहा—या फिर मैं निस का गया।

वह बोला—चलो अभी दिखा देने है अपने पड़ोस में ही तो रहता है  
मैंने पूछा—क्या काम करता है?

वह बोला—बस वही। अब्दुल्ला और क्या करता।

वह ठहाका लगाकर हँसा। मैंने सोचा कि भूकदम मूर्ख आदमी है। इसमें शक्य तो कहीं पैदा ही नहीं हुआ। मैंने कहा—हँसने की क्या बात है इसने

उसने हास्य की री-डबल करने हुए फिर एक ठहाका लगाया। मैंने फिर कारण पूछा तो उसने कहा—ठहाका लगाकर मैंने मैं सामन वाला नरवम हो जाता हूँ। तुमने अपने महाराज को नहीं देखा? मैंने की बात हो या न हो, इनके जोर का ठहाका मारते हैं कि सामन वाला चुटने टक देता है।

—लेकिन यह तो मूर्खता है।

—तो मैं कब कह रहा हूँ कि बुद्धिमाना का काम है।

फिर थोड़ी देर चुप्पी गयी। अचानक बिना किसी बात के वह फिर हँसा तो मैं अमहल गया कि मेरा दोस्त भी मूर्ख है। मैंने की कोई बात ही नहीं थी। अंतिम बार मैंने फिर कारण जानना चाहा तो उसने कहा—हिन्दी साहित्य में हास्य की कमी है, इसलिए हँस रहा हूँ।

मैंने सोचा, बड़ा उजबक किसम का आदमी है। कहीं की बात की कहौँ लाकर पटक रहा है। बेगाना शादी, अब्दुल्ला, हास्य और हिन्दी साहित्य सब का कॉकटेल बनाते हुए उसने कहा—तुम सोच रहे हारो कि मैं मूर्ख हूँ विल्कुल ठीक सोचते हो। मूर्ख आदमी ही ठहाके लगा सकता है देश में। जिस दिन बुद्धिमान हो जाओगे—हँसी गुम हो जाएगी। हँसोगे तो हेल्थ बनेगी। पट के ऊपर चर्बी जमेगी। शादी की है तुमने?

जो आदमी रोज मरे घर आता है और जानता हो कि मैं संतान-प्रधान व्यक्ति हूँ और वह मुझमें पूछे कि मैंने शादी की है या नहीं, उस आदमी को आप क्या कहेंगे? यह सवाल सुनकर मैं ठहाका लगाकर हँसा।

मैंने कहा—तुम्हें देखकर मेरा भी मूढ़ हिन्दी साहित्य में हास्य की कमी दूर करने का हो गया।

वही बोला—तब ठीक है, मैं तो कुछ और समझा था।

—क्या समझे थे?

—बस वहीं।

देखा आपने? एक लेखक को कोई प्लेट मिल जाए और वह उस पर कुछ लिखना चाहे तो कितनी दिक्कतें खाने आती हैं? मेरे दोस्त जैसे दस-बीस लोग इस

दश में हो जाएँ तो साहित्य का सन्तानाश कर देंगे। कहीं का हास्य और कहीं का व्यंग्य। अब यदि बेचार आलाचक्र अभी भी यह कहते हो कि हिन्दी में हास्य की कमी है तो क्या गलती करते हैं? मोचा था कि इस बार 'शादियों के मौसम में अब्दुल्ला दीवाना पर व्यंग्य लिखूँगा। एकदम नये किम्म का प्लान है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कहीं आप यह न समझने लगे कि मे हमेशा पटिया प्लान पर ही लिखता हूँ। बिल्कुल चरित्र-पधान व्यंग्य बनेगा श्रीमान। बस अब्दुल्ला भर मिल जाए। अब बहुत कुछ तो मेरे इस दौम्त पर डिपेड करता है। अब आप ये मत कहना कि ये वाक्य ही गलत न। इधर दृष्टी तरह का वाक्य-त्रिन्यास चलता है। हेन्थ का डाउन होना, राज अप-डाउन करना, रिगाइन दे देना, सपोज करना आदि।

कल एक अफसर मिल गए। बाले सपोज करो कि अपने प्रधानमंत्री न मन्त्रि-पद से इन्तोफ्त दे दिया।

मेने कहा—क्यो सपोज करें?

—नहीं, य बात नहीं। सिर्फ सपोज करना है।

—अच्छा चलो सपोज कर लिया। फिर?

—अब सपोज करो कि अर्जुनसिंह प्रधानमंत्री बन गए।

—मैं ऐसा सपोज नहीं कर सकता।

—देखो, सिर्फ सपोज करने की बात है।

—अच्छा चलो कर लिया। फिर?

—अच्छा अब सपोज करो कि,

मेने सपोज कर लिया कि ये भी मूर्ख आदमी है। इसका जन्म हिन्दी के व्याकरण के भाथ अनैतिक कार्य करने के लिए ही हुआ है। 15 मिनट की अवधि में उसने मुझे पच्चीस बार सपोज करवाया।

यत्र उदाहरण मेने इसलिए दिया कि कहीं आप यह न समझने लगे कि 'डिपेड करना' गलत है। शादी का मौसम है तो कई लोगों पर डिपेड करना पडता है-

मैंने दोस्त से कहा—यार, फालतू बात छोड़ो मुझे बताओ कि अब्दुल्ला कहा मिलेगा।

वह तत्काल बोला—वो तो दिल्ली चला गया। प्रधानमंत्री पर मकद है ना इधर कैसे रहेगा।

—अच्छा तो मुझे वेगानी शादी के बारे में ही कुछ बताओ। किपकी थी?

—बस उम्मी की?

—कैमे हुई?

—बस, जैसे हांती है?

—बाजा बजा?

—खूब बजा।

—कौन बजा रहा था?

—अब्दुल्ला, और कौन बजाएगा?

—तुम ना अभी कह रहे थे कि वह अनवासे में महिलाओं के पास था।

—वो अब्दुल्ला दूसरा है भइया। तुम तो ममल रहे हो कि देश में एक ही अब्दुल्ला है।

—ये कहाँ से आ गया?

—आएगा कहाँ से यही पैदा हुआ है।

—उसका इम वेगानी शादी में क्या लेना-देना?

—बस वही।

अब आप बताइए कि लेखक क्या अपना माथा फोड़गा? ऐसे आदमी में क्या प्रामाणिक तथ्य निकालेगा? इमीलिए लोग कहते हैं कि व्यंग्य लिखना कठिन काम है। देश में ऐसे कठिन लोग रहेगे तो हिन्दी साहित्य में ऐसी ही स्थिति व्यंग्य की रहेगी कितना बढिया प्लॉट उठाय था मैंने व्यंग्य के लिए। वेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना। लेकिन क्या लिख? इस टोपट पर डिपेंड कर रहा था तो वह भी गोल बात करता है।

मने भगिम को जिशा करता हुए पूछ्य—कुछ पहचान तो बताओ या अन्दरुल्ले  
की।

वह फिर हँसा। बिष्णुल्ले महाराज की तरह उभाका लगाकर बोला—'सभत  
करो' वाले साहब को जानने से।'

—मैं बगानी शादी की बात कर रहा हूँ।

—तो मैं कहीं अपनी शादी की बात कर रहा हूँ। बोलो जानत हो कि नहीं?  
मने बोला—जानता हूँ।

—जानते हो तो घर जाओ और कुछ लिखा। मर साथ साक्षात्को कन  
से कुछ नहीं मिलेगा।

मने इच्छा हुई कि उसकी गदम पकड़ कर पछूँ—वरा मने कही तु ही  
तो अन्दरुल्ले नहीं है?

## फोटो वाला लेटरपेड

कल ही डाक में एक कवि मित्र का पत्र आया। इस पत्र में उल्लेखनीय बात यह थी कि उनके लेटरपेड पर उनका फोटो भी छपा था। इसके पहले वे मुझे पोस्टकार्ड ही लिखते थे। तैम्रें फिटने कई महीनों से उनका कोई पोस्टकार्ड नहीं आया था लेकिन मुझे लगता है कि गृहदिव्य में उनकी स्थिति लेटरपेड छपवाने की वा गई थी जो इस वराने उन्होंने मुझे लेटरपेड भी दिखा दिया और मेरा सम्मन करते हुए इस बात की जानकारी भी दे दी कि उनकी रचनाएँ कहीं-कहीं छप रही हैं। उनकी रचनाओं के बाग में मेरे विचार चाहे जैसे हों लेकिन उसकी फोटो के बारे में मेरे विचार हमेशा अच्छे रहे हैं। मैं तो इसे साहस का काम मानता हूँ। मेरी इच्छा भी कई बार हुई कि अपने लेटरपेड पर अपना फोटो छपवा लूँ लेकिन हिम्मत नहीं हुई। और वह इसलिए नहीं हुई कि मैं बाल समय से पहनने सफ़ेद हो गए। लेटरपेड पर सफ़ेद बाल वाला निस्तेदक यथावशील नहीं हो सकता, यह मैं जानता था। मैं अंकलनुमा लेटरपेड जब किसी के पास पहुँचेगा तो चर्चा उसे अच्छा लगे या न लगे, मुझे तो बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा। मेरे बाग में साहित्य-जगत में निश्चित रूप से धारणा बन जाएगी कि मैंने बाल धूप में ही सफ़ेद किए हैं। फिर दूसरी दिक्कत इस बात की थी कि चंहरें-मेहरे से मैं लेखक नजर ही नहीं आता। लेखकों और कवियों के चेहरे कुछ अलग तरह के होते हैं जो जोटो में अलग और प्रत्यक्ष रूप में बिल्कुल आमग होते हैं। जब सही तालमेल ही नहीं बैठता तो फोटो छपवाने से क्या फायदा? यही सोच कर मैं यह विचार त्याग दिया। लेकिन मित्र के इस लेटरपेड से मेरी इच्छा फिर से भडक गई है। "छपवा ही लिंगा जाए लेटरपेड पर फोटो 'देखा जाएगा'" वाले विचार मन में आने लगे हैं।

लेटरपेड एक प्राथमिक सूचनापत्र होता है। हमारे वहाँ एक स मन ऐरो हैं जिनके लेटरपेड के एक पृष्ठ के तीन-चौथाई त्रिस्त्र मे उनके भूतपूर्व होने की सूचना संगृहीत है। उनको ऐसी सम्झाएँ हैं, जिन्हें मे वहाँ जानता, उनका या तो वे अध्वन रह चुके हैं या फिर सचिव, उपाध्यक्ष या ऐसे ही और कुछ। मैं उनके लेटरपेड में भी बहुत पभावित हुआ था। मुझे इस बात का गर्व था कि अपने अभियान में मे लोग थे है जो केवल किसी सम्झा में भूतपूर्व हो जाने के लिए ही पैदा हुए हैं। मैंने उन्हें भी स्लाह दी थी कि वे लेटरपेड पर अपनी फोटो छपवा लें।

मेरा इस राय पर इन्ट्रीय गभोरतापूर्वक विचार किया और बोले, "फाटा तो छपवा लेना लेकिन लेटरपेड में जगह तो नहीं है। पिछले महीने चार सम्झाएँ बन्द हो गई हैं जिनका मैं सारक्षक था। जब मुझे इसमें भूतपूर्व सरक्षक भी छपवाना पड़ेगा, तब ही कहीं कहीं खालों में जाह"।

उन्होंने अब लेटरपेड मेरी ओर बदला। पिछली बार मैंने जो लेटरपेड देखा था उसका अपेक्षा यह अधिक समझ लगा। अब पृष्ठ पर केवल धाँदी-सी जगह रह गई थी जिसमें कुछ लिखा जा सकता था। मैंने कहा, "यह जगह खाली है... यहाँ छपवा लीजिए।"

वह बोले, "हद करने को याग थी दो-सो जगह खाली रखी है पत्र लिखने का और तुम कहते हो वहाँ अपनी फोटो छपवा लूँ। छपवा लूँगे तो पर कहाँ लिखूँगा?"

मैंने कहा, "आपको पत्र लिखने का जगह भी क्या है? अब तो बस यह लेटरपेड का एक पृष्ठ भेज दिया करें। तोग ममझ जाँगे कि आप क्या लिखना चाहते हैं।"

मेरी इस बात में वे नायज हो गए। बोले, "हम ममझते थे कि तुम क्या कहना चाहते हो। इनकी ममझाओं के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष हैं इसका यह मतलब नहीं कि हम केवल संदा खाकर ही जी रहे हैं। बोलो यहाँ मतलब है या तुम्हारी बात का? तुम ममझते हो हम केवल संदा उगाहन के लिए ही इस लेटरपेड पर लोगों को पत्र लिखने हैं?"

मैंने कहा, "मेरी बात का आयय यह नहीं था।"

वे बोले, "वह नहीं था ता क्या था?"



## फोटो वाला लेटरपेड

मैंने उनकी ओर देखा। वे अपने लेटरपेड क पृष्ठ में खाली जगह की स्टडी कर रहे थे। अभी-अभी जो चार संस्थाएँ उनकी कृपा में मृत हुई थीं, उनके भूतपृव होने के नाते वे चाहते थे कि इस लेटरपेड में उन संस्थाओं का उल्लेख हो जाए।

मैंने कहा, “दरअसल आपका व्यक्तित्व केवल इस लेटरपेड के कारण ही है मैं सोचता हूँ कि आप इतनी संस्थाओं का क्रियाकर्म सम्पन्न कर चुके हैं कि आपका नाम गिनीजबुक में आ जाएगा। आप इस लेटरपेड का साइज बड़ा दोबारा और इसका पृष्ठ अखबार साइज का कर दीजिए। अभी तो आपकी उम्र काफ़ी है। पाँच-दस सालों में यह अखबार साइज लेटरपेड भी आपको छोटा पढ़ने लगेगा।”

वह बोले, “छोटा तो आज ही पड़ सकता है। मैंने कई संस्थाओं के नाम पहले से छोड़ रखे हैं।”

मैंने कहा, “यह अहसान आपने इस लेटरपेड पर क्यों किया? उन बेचारी संस्थाओं ने आपका क्या बिगाडा था? आपने उन्हें गौरवान्वित क्यों नहीं दान दिया?”

वे बोले, “बात यह है कि उन संस्थाओं के उल्लेख से मेरी छवि धूमिल होने की संभावना है। मैं नहीं चाहता कि मात्र लेटरपेड के कारण ही मेरी छवि धूमिल हो।”

मैं उन महान् संस्थाओं के नाम जानने के लिए उत्सुक था और यह भी जानना चाहता था कि देश में ऐसी कौन-सी संस्थाएँ हैं जो इस संस्थाप्रेमी सज्जन की संस्क-पब्लिसिटी से बची हुई हैं। मैंने कहा, “कुछ विस्तार से बताइए मैं आपसे कुछ सीखना चाहता हूँ।”

वह बोले, “सन् 86 में मैं जुआड़ी मध का अध्यक्ष था, उमरी वर्ष युवा चंग समिति का भी गठन हुआ तो उसका भी भार मेरे कंधों पर आ गया। बाद में 87 में अखिल भारतीय डकैत मध बना। वहाँ भी मैं था। सफाई कमिशनर यूनिशन में भी पदाधिकारी रहा। फिर 88 में कुछ बलात्कारी लोंगा न बलात्कार संरक्षण समिति बनाई। उसमें उन्होंने मुझे संरक्षक बना दिया। और इस वर्ष तो स्थिति यह है कि अनेक लोग अनेक तरह की समितियाँ बना रहे हैं। पुलिस अत्याचार मुक्ति समिति, उठापटक मध, भद्राफोड समिति आदि। अब ऐसी समितियों का नाम यदि अपने लेटरपेड पर दूँगा तो मेरी छवि धूमिल होगी या नहीं? बोले?”

मैंने कहा, "इमोजिनिए तो मैं आपको सलाह दे रहा हूँ कि अपने बदरफ्त पर अपना फोटो जरूर छपवा लीजिए। चेहरा स आगे काफी शक्ति भंगर आते हैं इमोजिनिए लोग सम्बन्धों के नामों के साथ आपकी फोटो देखकर यह राय जरूर बसाएंगे कि शरीफ आदमी गलत जगह फँस गया है।"

व मुझुरार। बोल, ' तुम्हारा सलाह पर विचार करेंगा। फिलहाल तो ये नेटवर्क म जगह नहीं है।'

फोटो का महत्व मैं समझता हूँ। प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी पेले की केवल फोटो में ही सारी चिट्ठियाँ उनके घर पहुँच जाया करती थी। लोग लिफाफे पर उनको फोटो लगा दिया करते थे, बस। मैंने भी विभिन्न प्रयास किए थे, एक लिफाफे में अपना ही एक दो पत्र लिखा और उस पत्र में अपना ही पता दिया और फिर लिफाफे के ऊपर अपनी फोटो चिपका कर दूसरे शहर में उसे पोस्ट कर दिया। लेकिन वह पत्र मुझे नहीं मिला। जैसा ने कहा, "फोटो के साथ केवल पिन काग़ज़ ही लिख देने तो बात ठम जाती।" बाद में पोस्टमास्टर जनरल में एक लिफाफा भया जिसमें यह पत्र था बिना पर मैंने अपना पता लिखा था और उस पर टिप्पणी लिखी थी, "ये वाले का पता अधूरा होने के कारण भजन वाले को वापस।"

कहने का मतलब यह कि अपनी फोटो के वार से मैंने जो उच्च विचार बना रखे थे, वो हम जो साहब न ध्वस्त कर दिए। डाक-तार विभाग ने यह धारणा भी बना ली होगी कि मुझमें बड़ा बुद्धिमान आदमी इन देश में और कोई नबा नरार।

पिछले दिनों फोटो छपवाने के मामले में एक सज्जन व क्रांतिकारी कार्य किया। वैसे नेटवर्क पर कई मित्रों के फोटो मुझे देखने को मिलते थे। फोटो भी होते थे और उनका परिचय भी होता था कि वे देश के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं या प्रसिद्ध कवि और सुप्रसिद्ध लेखक हैं। ऐसे मित्रों के पत्र पाकर मैंने सूची बना ली कि देश में कौन प्रसिद्ध लेखक, कवि हैं। अलावा ना नाहित्य और बड़े लेखकों की किताबें पढ़ कर यह तय करने की अपेक्षा कि कौन-कौन प्रसिद्ध साहित्यकार हैं, मुझे यह काम आसान लगा। इस दिशा में नया मोड़ दिया था उस सज्जन ने और यह था कि विजिटिंग कार्ड पर ही उन्होंने अपनी फोटो छपवा ली थी। अब देखिए इसका लाभ। आपने अपना विजिटिंग कार्ड अगभर की टेबल पर भेजा। वह फोटो देखकर तुरन्त निर्णय से लेना

## फोटो वाला लैटरपेड

कि इम सज्जन को अन्दर बुलाना है या बाहर म ही खिसका देना है। वा फिर फोटो देखकर वे विचार कर सकते हैं कि उन्होंने आपका कहाँ देखा है। सही जगह पर दख्य हो तो बात और है वनां वे कुछ भी सोच सकते हैं और उक्त समय भी बर्बाद नहीं होगा।

उस सज्जन से मेरी मुलाकात अचानक हा गई। इसक पहले मैं उनम कभी नहीं मिला था। उन्होंने जेय से अपना फोटोयुक्त विजिटिंग कार्ड निकाला और बोले, 'म आपमे परिचित हूँ कभी घर पर आइए यह रहा भग काड।'।

मेन कार्ड देखकर कहा, "यह काड आपका हाँ है ना?"

वह बोल, "विल्कुल। लेकिन आपन यह सवाल क्या क्रिया?"

मेन कहा, "फोटो मे आप काफी जवान और सभावशाला व्यक्तित्व के धनी लग रहे हैं।"

मैं नहीं जानता कि वे मेरी इम टिप्पणी से प्रमन्न हुए या नहीं लेकिन मैंने देखा कि वे 'मोग भी लोगों को अपना विजिटिंग कार्ड द ग्ने थे। यह मेरी मूर्खता हा है कि फोटो देखकर मैं व्यक्ति का आकलन करने लग जाता हूँ। दरअसल फोटो फोटो होता है। उममे बहुत-सी बातें ऐसी होती है जो मेरी नगो आँखे देख नहीं पातीं। अखबागे मे छपे फोटो देखकर मे लोगो का विश्लेषण करने लगता हूँ, जबकि इसा नहीं करना चाहिए। जब फोटो छपी है और उसके साथ पूरे जानकारी छपी है ता मुझे विश्वास कर ली लेना चाहिए। बहुत से लोग कर रह हैं लेकिन मैं एसा क्यों नहीं कर पाता यह तो मैं भी नहीं जानता। फोटो की यह राजनीति मुझे सूट नहीं होती। फोटो और व्यक्ति मे मुझे बड़ा अन्तर नजर आने लगा है। ऐसा क्यों होता है, मैं लोगों के दुहरे चरित्र को फोटो देखकर क्यों नहीं पचा पाता, यह मैं नहीं जानता।

और अन्त मे उस कवि मित्र को धन्यवाद जिसका लैटरपेड देखकर मैंने यह रचना लिखी। लेकिन कवि मित्र इस मुगालते मे न रहें कि उनके लैटरपेड मे छपीं फोटो के कारण ही यह व्यंग्य बना है। दरअसल इम हफ्ते मुझे दो पत्र और मिले हैं जिममे लोगो ने अपनी फोटो लैटरपेड के पृष्ठ पर छपवा रखी हैं और फोटो में वे काफी धक्कड नजर आते हैं।

## मुँह की दुर्गन्ध तो रहेगी

इधर हमारा हवाब भाई इसलिए परेशान है कि बीमारियों ठीक से चल ही नहीं रहें हैं शहर में। कहीं गए ते दिन जब एक बार हैजा आता था तो हजारों रूपया की दवाइयाँ दिवती थीं। बीमारियों का उस स्वर्णयुग को याद कर हवीब भाई उदास हो जाते थे। कुछ-कुछ डंगू और फलू न अपना यागदान हवीब भाई की आर्थिक स्थिति बढाने में दिया था। उन सम्पन्न बीमारियों का ही आशीर्वाद है कि आज नगर में हवीब भाई की दवाई की दुकान न केवल अपनी पहचान रखती है बल्कि हवीब भाई की तरह काफी मोटी भी हो गई है।

हवीब भाई ने हमसे कहा—याग, क्या हो गया साली बीमारियों का एक नहीं आ रही है एक महीने में ग्लूकोज को एक बाटल नहीं बिकी—उल्टी-दस्त बिल्कुल नहीं चलेंगे क्या।

मैंने कहा—हवीब भाई, आप यह भोच कर खुश होत हो कि कोई बीमार पड़ जाए। दूसरों के दुःख में खूश होना अच्छी बात नहीं है।

वे बोले—ये ता हम भी जानते है। लेकिन एक बात बताओ कि कोई बीमार नहीं पड़ेगा तो हमारा भदटा बैठ जाएगा ना। एक साख की दवाइयाँ हैं स्टॉक में सब की एकमायरी डेट खत्म हो गई तो समझो कि हम ता गए बारह के भाव से, ये दवाई का दुकान बन्द करके जाना पड़ जाएगा हमको भी फकीर बन कर कहीं।

हवीब भाई की बातों में मुझे बहुत बड़ी फिलामफी नजर आई। सचमुच हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए ही जीने वाले लोग होकर रहे गए है। अपने व्यक्तिगत

रोग के लिए लोगों को बीमार देखना हमें अच्छा लगता है। यह रोग बीमार लोगों का रोग है। हम शरीर से भी बीमार हैं और मानसिकता से भी। स्वस्थ बने सोचना हमें अच्छा नहीं लगता। ऐसे देश में बीमारियों के न होने से हबीब भाइ का चिन्तित हो जाना स्वाभाविक है। हबीब भाई की जगह मैं हाता और मेरी भी कपन बेचन की दुकान हाती तो मैं भी खुदा से गेज दुआ करता कि वह दो-चार पाहक रोज भजे मेरी दुकान पर। यह पेट हम पर इतना हावी हा गया है कि अपने शिवाय दुगम क बार में कुछ सोचने की नहीं रता।

हबीब भाई बोले—यार, इस पर कुछ लिख दो मजा आ जायगा। लेकिन हमारी दुवाई की दुकान का नाम जरूर लिखना इसमें हमारा एडवर्टाइजमेंट होता है।

अब लेखक और बीमारियाँ के बारे में क्या लिखें? हमें तो समाज की विमर्शितियाँ पकड़ने की बीमारी है। यह बीमारी हमारे साथ नहीं होती तो हमारी यह दुकान भी बंद हो जाती।

मैं एक सज्जन को जानता हूँ जिन्हें अजीब किस्म की बीमारी है। उनका मुँह बन्द ही नहीं रह सकता। और अब तो यह बीमारी इतनी क्रान्तिक हो गई है कि उनका मुँह बन्द हो जाएगा तो वे चल बसेंगे। बात चाहे राजनीति की हा था नगर की किसी दुर्घटना की हो उस पर मुँह खोलना वे अपना कर्तव्य समझते हैं। मविधान में अपने विचार व्यक्त करने का जो मौलिक अधिकार हमें मिला है उसका सबसे अधिक लाभ उन्होंने ही उठाया है। यदि आपने उन्हें अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया तो समझ लीजिए कि वे अपनी शुक के माध्यम से नाना प्रकार क जीवाणु आप तक निःसंकोच पहुँचा देगे। उनकी खास विशेषता यह है कि उनके मुँह से दुर्गन्ध अच्छी आती है। मैंने एक बार इस महक का रहस्य जानना चाहा तो वे मुझसे बोले—मुँह में पाथरियाँ हा गया है।

मैंने कहा इसका इलाज क्यों नहीं करवाने? देखिए कितनी दुर्गन्ध आ रही है आपके मुँह से।

वे कुछ दर गभीर हो गए। उनका मुँह अन्दर ही अन्दर विचार का गदा था कि बातों को कहाँ से गति दी जाए। मेरे मनाल पर उन्होंने चिन्तन किया और बोले—

थकी आहत तौ अपने यहाँ के लीयाँ में बुरी हैं अरे भई दाँत मेरे सड़ हैं दुर्गन्ध का मुँह से आती है तो दूसरा को क्यों तकलीफ़ होती है माफ़ करना भाइया, हमने वा ऐसे लोग भी देखे हैं जो ऊपर से नीचे तक दुर्गन्ध में सगबोर रहते हैं लेकिन लोग उनसे घटो विपके रहते हैं। मच बाल तो यह है कि हमसे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है तो तुम्हें हमारे मुँह से दुर्गन्ध आ रही है आज हमें बन जाने दो मिनिस्टर फ़िर देखना ये दुर्गन्ध कहाँ जाती है हमसे मुँह मटाकर घंटो जाते करत रहोगे अपने मतलब का। समझे ?

दुभाग्य मे ये बातें हबीब भाई की दवाई को दुकान के सामने ही हो गयी थी। जब ते वायुमंडल की शुद्ध हवा में अपना योगदान देकर आग बढे ता हबीब भाई हमसे बोले—साला बाल करता है ना बहुत बस्साला है इच्छा होती है कि दो जूते मार दूँ साले को।

मैंन कहा—तौ मार क्यों नहीं देत ?

हबीब भाई बोले—अपना ग्राहक है ना थार महीने में पच्चीस-तीस रुपये की दवाई ल जाता है अपनी दुकान से ग्राहकों को जूता मांगे तो अपनी दुकान कैसे चलेगी, बोलो।

अपनी दुकान चलाने की सबको फिकर है। किसी के मुँह की दुर्गन्ध का एहसास हमें उम्र समय तक नहीं होता जब तक उस दुर्गन्ध में कहीं न कहीं हमें लाभ मिलता रहता है। यह दुर्गन्ध समाज को हो सकती है। यह दुर्गन्ध बीमारी का संकेतों की टायु स्वच्छ वायुमंडल में धोतकर हजारों लोगों को बीमार कर सकती है हमें इसकी चिन्ता नहीं है। हमें चिन्ता केवल इस बात की है कि उन मरने वालों में हमारा कोई रिश्ता है तो उस केवल लाभ का रिश्ता है। वे बीमार रहे और हमारी दुकान चलाते रहें यही हमारी मोच का स्तर है।

यदि हबीब भाई उस दुर्गन्ध फैलाने वाले में प्रमन्न है तो इसमें उनका दोष नहीं। अदालतों में जब बलात्कार का मुलजिम पहली बार आता है तो कानून के रक्षक यह सोचकर खुश होते हैं कि उन्हें लाभ दिलाया जाता आ गया है। मुक्ति को छुड़ाना वकील का नैतिक कर्तव्य है। वह खुश होता है और अपने कर्तव्य के प्रति हमेशा मग्न रहता है। उसकी क्लायन्टेज का सवाल है। एक बार बन गई तो उम्र भर साथ देगी।

डॉक्टर उस वक्त खुश होता है जब नगर में कोई वायरस आ जाता है। पुलिस उस समय पसन्त होंती है जब किसी बड़े घर की लड़की का अपहरण होता है और लड़की का बाप अपनी प्रतिष्ठा के लिए पुलिस को खुशामद करता है। हमारी प्रसन्नता के मार पैमाने अपने व्यक्तिगत लाभ ही होते हैं। सरकार को यदि शराब के ठेके से करोड़ों रुपये की आय होती है तो यह कहना बेमानी लगता है कि शराब में दुर्गन्ध आती है शराब से कई घर बरबाद होते हैं, शराब प्राणों के लिए घातक है।

अब हमारे हबीब भाई इसलिए परेशान हो कि शहर में वॉमरिया टोक नहीं चल रही है तो उनकी परेशानी वाजिब ही लगती है। आखिर वे भी तो हमारे इसी समाज के अंग हैं।



## जूतियों के बहाने

बड़े लोगों का सम्मान किस बहाने कहा हो जायेगा कोई नहीं कह सकता। वे कथक नृत्य का कार्यक्रम देखने आए थे। मिम्क का कुना और कले पर पशमोना शॉल, परी में जरीदार जूतियाँ किसी के तासिक कार्यक्रम को देखने या सुनने के लिए उन तीन नौजा क अलावा चेहरे पर एक पागड़ी दर्शक या श्रोता का भाव होना चाहिए। शाल के मामले में वैसे भी धनी हैं। दिन भर भाव-भाव के अलावा उन्होंने कुछ किया भी नहीं है। मौक़ा पड़ने पर भाव देने हैं और दिखात भी हैं। फ़न मिलाकर बड़े लोगों में जो लगन होने चाहिए, वे अब क सब उनके आन्ध ठसा-ठसे भर हैं।

लो हुआ यो कि "धिया भोगी मैं नहीं माखन खायो" के अर्थ जैसे ही तबाने पर थाप पड़ी, उभर तनकी जरादार जूतियों पर किसी ने थाप सात दी। वे बोल, पान और भाव धनिया देखते रह या यूँ कहना सही होगा कि जिमीर होकर देखते रह लेकिन मन कर रहा था कि एक बार गली पर जा कर बघई बात कर ली ले। मरनेट पोषीगत जरा टाईट चल रही थी। लेकिन वह फिर अचानक याद आ गया कि वे कथक देख रहे हैं, केवल देख ही नहीं रहे हैं, एक बड़े आदमी की तरह देख रहे हैं। उसे उन्होंने चहरे पर पूरी तरह मुग्ध होने के भाव बनाए और जैसे ही नृत्य सम पर अग्य बोले—वाह! क्या बात है!

वे नई अच्छे कार्यक्रमों में विशेष रूप से आमंत्रित होते हैं इसलिए उस जुमले उन्हें बंध रखने पड़ते हैं और थोके पर उनका सही जगह सही उपयोग करना पड़ता है। पिछली बार शोभ में गिरावट आ गई और उनके मुँह से यह क्य भा



है।' निकल गया था। उनके पार्टनर ने उन्हें याद दिलाया कि वे जयर मार्केट की बात कर रहे हैं, कत्थक की नहीं। बड़े लोग हैं। ऐसी हसीन भूल उनके खाने में सम्मान जमा कर ही देती है। मुनीम जी लोगों का कहते हैं—मालिक कितने भोले हैं—उन्हें मुनाफे और घाटे का ध्यान ही नहीं रहता—शेयर गिरने पर लाखों का नुकसान हो गया लेकिन मालिक कहते हैं—बयर बात है।

मैं इस तरह की फालतू बातों में आपका समय नष्ट करना नहीं चाहता, लेकिन बड़ लोगों की फालतू बातों में रस लेने को जो परम्परा अपने यहाँ है—उसे नकारना भी ठीक नहीं है। और यदि आप इसे फालतू बात कहते हैं तो मैं समझता हूँ कि आपसे फालतू आदमी और कोड नहीं हो सकता। हम लेखक हैं इसलिए जानते हैं कि किमी कथानक में फालतू चीजों का कितना महत्त्व होता है। दरअसल आपको जो चीजे फालतू लगती हैं वे फालतू हैं या नहीं इसका निर्णय समीक्षक करता है और अपने यहाँ फालतू बातों की सही समीक्षा करत वक़्त अनेक स्थापित समीक्षक हैं।

कत्थक कोई डेड घटे चला, चक्करदार पगन से लेकर लखनऊ घराने के अदाज में जयपुर शैली तक उनके चहरे के भाव बड़े लोगों की तरह ही थे। नृत्यांगना के चेहरे पर पसीने का बुँद उभर आई थी। उन्होंने महसूस किया कि नाचना परिश्रम का काम है। साधना मेहनत से ही आती है। चलिए, उन्होंने कम-से-कम ऐसा सोचा तो सही। बड़ लोग हैं, जाने क्या-क्या माँघते हैं इस परिश्रम और मेहनत के बारे में। कत्थक देख रहे हैं, कोई बिजनेस नहीं कर रहे हैं—या ऐसा सोचने में हर्ज ही क्या है?

कत्थक समाप्त हॉन के बाद इस कहानी की शुरुआत होती है। अभी तक आपने जो पढ़ा सब फालतू था। मैं पहले ही कहा है कि हम लेखक कभी-कभी बड़ी फालतू बात लिखते हैं और इन फालतू बातों को बाद में एक रीजनिंग देकर अपने को लेखक सिद्ध करते हैं, लेकिन आप इस बात का चिन्ता न करें।

वे गरिमामय ढँग से उठे। बड़े लोगों के उठने-बैठने में भी एक गरिमा होती है। इसे आप भले ही न समझे लेकिन वह आदमी जरूर समझ लेगा जो बड़े लोगों के साथ उठता-बैठता है। बड़े लोगों के साथ उठने-बैठने वालों का भी सम्मान होता है और यह सम्मान मूल रूप से किसी बड़े आदमी की जड़ से ही जुड़ा हाता है। कुछ लोगों का सम्मान जब समाज में कम होने लगता है तो वे कुछ दिनों के लिए बड़े लोगों

के साथ उटने- बैठने लगते हैं। इस तरह क्विस्टिंग डोज लेकर वे फिर वापस अपनी मही जगह पर आ जाते हैं।

सभागार के काने में जब उन्हें अपना ज़रीदार जूतियाँ नजर नहीं आईं तो एक बार बहुत ही थोड़ी दूर के लिए उनके चेहरे पर चिंता की हल्की-सी लकीर उभरी लेकिन वह लकीर इतना हल्की थी कि लोग देख ही नहीं पाए। मैं उनके बहुत पास था। दरअसल बड़े लोगों के पास रहने का भी अपना अलग मोह है। कुछ फालतू किस्म के लोग उसे 'ठसना' कहते हैं। मैं कहता हूँ कि मुर्ख हैं वे लोग। मुझे बताइए कि आज ऐसा कान है जो किसी से नहीं उभा है। भोका देखकर और अपने मतलब स उसने वालों की कमी नहीं है, ये बात मैं भी जानता हूँ और आप भी जानते हैं। साहबों के साथ उसने का मोह किसे नहीं होगा? बड़े अधिकारियों के साथ उसने की इच्छा किसे नहीं होगा? लेकिन क्या आप इसे ठसना फरेंगे? कोई अच्छा शब्द नहीं मिलता आपको? आपका हिन्दी इतना लचर हो गई है? किसी बड़े आदमी के साथ रहने का भी आप 'ठसने' के नजरिये से ही देखते हैं? हट हो गई कितन गिर गये हैं मानव मूल्य। कितनी कुटा भर गई है आपके अन्दर!

वह बोल, "इतना अच्छा कन्थक कभी नहीं हुआ इस नगर में। इस लड़की को कोई अच्छा ब्रेक मिल जाए तो वह देश का नाम गैशन करेगी।"

फिर उनके चेहरे पर एक हल्की-सी लकीर उभरी। वे सोच रहे थे कि उन्हें 'गैशन' शब्द का उपयोग नहीं करना चाहिए था। बड़े लोग इसी तरह शब्दों को तोलते हैं कौन-सा शब्द कब और कहाँ सही बैठता है जिसमें उनका सम्मान लोगो में बना रहता है, इस बात की चिंता हर बड़ा आदमी करता है। अपने प्रधानमंत्री जी जब टी वा पर बोलते हैं तो कितने नये-तुले शब्दों का उपयोग करते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि बड़े लोगो का सम्मान किस बहाने कहाँ हो जायेगा कोई नहीं कह सकता।

कुछ और लोग जो कन्थक की चर्चा कर रहे थे, बिल्कुल चुप हो गए। अब जो फुसफुसाहट हो रही थी वह इस प्रकार थी—

—एक हजार से कम की तो नहीं होगी?

—क्या बकते हो मोने और चाँदी का काम हुआ था उस पर जयपुर के फ्लोर कसींगटों ने नन्हें ही एक साल पहले आई है नक़्क़ा था

—उनका नाम लेन प्लेन से आदमी यहाँ आया था। मैं तो उस दिन उनके साथ ही था। क्या पैंग है उनका बड़े लोगों की बात ही आर है।

—तो फिर पांच हजार मानकर चले।

—अरे भाई साहब पाँच हजार तो केवल नाम लेने में ही लगा गए। तुम उन्हें आज तक जोटा आदमी ही समझ रहे हो। मेरे सामने उन्होंने कहा था कि मोने का काम सहायता चाहिए। वे इसी तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जुतियाँ बनवा रहे हैं।

—फिर तो चमड़ा भी विदेश का ही होगा? क्यों?

—नहीं, चमड़ा अपने देश का है। पर सामने उन्होंने कहा था कि वे स्वदेशी चमड़ा ही अपने पैरों के लिए पसंद करते हैं।

—क्या जमाना था गया है भाई अब तो हम देश में जुतियाँ भी सुरक्षित नहीं हैं।

मैं उनकी बात सुन रहा था। पिछले दिनों कुछ इसी तरह मेरी चप्पले भी चर्रा हो गई थी। मैं सकट की इस घड़ी में कार्यकर्ताओं की बैठक में भईशाजी का उद्बोधन सुनने गया था। मेरा उद्बोधन हो गया। तीस रुपये की चप्पल थीं! उस समय भी मैंने ऐसा ही सोचा था कि कितनी पिगवट आ गई है भ्रान्तीय चरित्र में। हमारी पार्टी में गुमा कौन हो सकता है जिमकी गजर मेरी नई चप्पल पर उद्बोधन के पहल से थी। मैं सोचने लगा कि कौन व्यक्ति उद्बोधन के बीच में ही उठा था। कौन बाहर गया था। लेकिन मुझे कुछ याद नहीं आया। मैं सोच रहा था कि पार्टी कमजोर नहीं होनी चाहिए। इससे देश टूट जायेगा। इसलिए ध्यान से सुनो उद्बोधन, भईशाजी का। कभी-कभी ज्यादा निष्ठा दिखाने से तीस रुपये की चपन पड़ जाती है, वह मैंने पहली बार जाना। इस सकट की घड़ी में मैं जितना दुःखी हुआ था, शायद हो कोई हुआ हो इस मार्मिक उद्बोधन में।

वे थोड़ी देर खड़े रहे। क्लासिक नृत्य की बातें करते रहे। कलाकारों का सही सम्मान न होने से दुःखी होते रहे। चित्त भी व्यक्त का। लेकिन केवल चंदरे के भावों से। बोलते कुछ नहीं।

चर्चा अभी भी चल रही थी।

—इतने अच्छे कार्यक्रम में प्रतियोगिता को आमने नही देना चाहिए।

—साले, जुता पर नीयत ख़राब करते हैं मुझे माला दिख जाये तो अभी धानेदार से कहकर उसे बन्द करवा दूँ।

—ता एक काम करते हैं चलो थाने चलाकर एफ आई आर डलवा दें

—इसी धमचागिरी में तुम बर्बाद हो रह हो। उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं है और तुम्हे एफ आई आर की पड़ी है। चुप रहो। बड़े लोग ऐसी छोटी चोरा पर ध्यान नहीं देते।

—उतनी कामती जूतियाँ ठठ गई और तुम डम्मे छोटी चोरी कहते हो? मत कहता हूँ चोर पकड़ में आ जायेगा। वह सोने के तार निकाल कर बेचने जायेगा ही

—तुम तो ऐसी बात कर रहे हो जैसे वह तुम्हारे पास ही बेचने आवेगा चोर अब पहले जैसे चार नहीं रहे। जूतियाँ गतो रात कहाँ चली जायेंगी यत्र पुलिस भी नहीं जान सकती।

लगभग सभी लोगों को पता चल गया कि जरीदार जूतियाँ कोई ने गण कत्थक की चर्चा कोई नहीं कर रहा था। तबले आगे गायन की बात कोई नहीं कर रहा था। लोग कितनी जल्दी भूल गये कि कत्थक एक गृन्थ ही नहीं साधन है। हमारे देश की कला है बिना पर हमें गर्व है।

व कत्थक की बारीकियों पर बाले करने हुए नगे पैर अपनी काग तक आ गए। हवाईबन ने दरवाजा खोला। उन्होंने कलाकागे की टोपी हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कार की पिछली सीट पर बैठ गए। उनके चेहरे पर एक कलाप्रेमी के भाव थे और हमें लग रहा था कि वे कत्थक से बहुत प्रभावित हैं और इस कार्यक्रम में बेहद प्रसन्न हैं।

जूतियों की फिरक हम उस छोटे लोगों को होती है। बड़े लोगों की चर्चा हम करें, यही बड़े लोगों का सही सम्मान है। इमीलिए कहता हूँ बड़े लोगों का सम्मान किस बहाने कहाँ हो जायेगा, कोई नहीं कह सकता।

## नेताजी के जनाजे में

मंत्रिमंडल का विस्फार हान क पहरो ही नेताजी चल गये। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना अलेहे राजेऊन।

उन्होंने मक़द के समय पार्टी को क़न्धा दिया था। फिर उनकी पार्टी की सरकार बनी। वे सरकार को कन्धा देते रहे। आज लोग उन्हें कन्धा देने जमा हो रहे थे।

नेताजी अल्पसंख्यक वर्ग के थे। राजनीति के साथ जब यह शब्द जुड़ता है, तो मुख्यमंत्री भी ध्यान देने हैं। उन्होंने कहा था—इस बार जरूर आप को लेंगे अभी आलाकमान से बात करना बाकी है आप थोड़े दिनों तक संगठन का काम देखिए।

और संगठन का काम देखते-देखते ही उनकी रूह कब्र हो गई। मौत का फरिश्ता आया और उन्हें ले गया पूरे राजकीय सम्मान के साथ। यही आलाकमान का हुजूम था। सिर-आँखा पर। उसके सामने हम सिर्फ नत-मस्तक ही हो सकते हैं, और नेताजी की हो भाषा में कहे तो मियादा ही बन सकते हैं।

जनाजा जोहर की नमाज के बाद निकलेगा। कुछ लोग छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस में आने वाले हैं। मुख्यमंत्री के मवेदना मन्देश की भी परीक्षा है। दिल्ली में भैया जी ने हार्ट-लाइन पर शोक व्यक्त किया है, और कहा है कि अल्पसंख्यकों के लिए यह एक अफ़सस है बिसे सहने-करने की शक्ति ईश्वर प्रदान कर। जिला पार्टी के अध्यक्ष

और कोषाध्यक्ष व्यक्तिगत रूप से मिलना आ चुके थे। अखबारा में अलमबद इक दुखद रिश्तन का समाचार आ चुका था, इसलिये कोई गिन्ता की खान नहीं थी सहकारिता, विद्युत, भाड़ा, मिचाई, लोक निर्माण पाथमिक स्वास्थ्य कृषि शिक्षा विभाग जंगल डिपार्टमेंट पुलिस आदि से लेकर नगरपालिका तक सभी प्रभागी-अधिकारी एक बार आ चुके थे। कृषि विभाग वाले भापाल ग्रेड इसलिये नहीं आ सके। नगरभर सभी विभागों ने अपनी श्रद्धाजति दे दी थी स्थानीय मान्यता यह थी कि ये सारे विभाग अब तक नेताजी के कान्ठों के नीचे थे। ट्रॉम्फर से लेकर प्रमोशन तक। नेताजी ने हर अधिकारी को अपना बहुमूल्य कम्बू दिया था।

नेताजी अंतिम समय तक खादी क कपड़ा में रहे। बैटुक में लोभान आ उदबन्ती का मिला-जुटा मुआँ अभी तक था। कुछ लोग आयतल कुरसी पड रहे थे एक सफेद चादर में मय्यत को ढाँक दिया गया था। बड़े भाई साहब ने गिरफ्त रूपल बाँध रखा था। जो लोग बैटुक में आते उन्हें छोड़े भइया डबडबाई आँखों से देखते जैसे कटना चाहते हों—हमारा तो सब कुछ गूट गया अब मंत्रिमण्डल का विस्तार हो भी जाये तो क्या।

नेताजी की बैटुक में इन फानी दुनिया का एहसास होता था। बाहर आँगन में कुछ कुर्शियाँ रखी थी। दो चारपाइयाँ भी लगी थी। जिम पर थुनूस भाई अण्डे वाले इदरिस भाई उदबन्ती वाले, निजाम भाई प्रेस वाले और बाबा मिन्नी जमे थे। याकूब भाई चक्की वाले, नजीर भाई और काजी साहब दूसरी खाट पर थे। कुर्शियों सगकारी विभाग के अच्छे लोगों के लिए थीं, जिम पर झुरशी साहब एक साब, खान साहन नवाब मिर्था और तौर्कार बाबू बैठे थे।

मैं और बब्बू मिर्था अस्लाम अरैकुम करत हुए इन कुर्शियों की ओर बढ़ गये। खाटवालों ने हमें धूरकर देखा। मेरी बात तो समझ में आती थी, लेकिन बब्बू मिर्था का खाट से कुर्मी का बढ़ता स्तर लोगों की नागवार गुजर रहा था। अब हम उन्हें क्या बताते कि सभी को एक दिन उसी रास्ते पर चना है

नेताजी के जाने में

कुरेशी साहब मड़ी जाने मुझ देखकर बोलें—आइए, इधर आइए मैं जानता था। आप आयेगे ही, इसीलिए आपके वास्ते कुर्सी खाली रखी है।

वात दरअसल यह थी कि वे बहुत दूर से बाहर अकेले बैठे-बैठे बोग हो गंहे थे, और उन्हें अपने लायक मुस्लिम जमान में वात करने वाला कोई आदमी नहीं मिल रहा था।

मैंने कहा—सुनाओ कब तक निकलेगा जनाजा?

वे बोले वह तीर उम्मी दिन निकल गया, जब अध्यक्ष का चुनाव हुआ था मड़ी में। ईमानदारी में काम किया तो इनका नतीजा यह हुआ कि माला ने मुझे आउट ऑफ डिविजन पादूर्ना में फेक दिया अब हालात तो तुम देख ही रहे हा मड़ी को। रोज व्यापारी था खरीदी बंद कर गंहे हैं। किसान परेशान हैं मो अलग। अब हम लोग भीमवाले हो जाते हैं दब के गंहे तो भी यही हाल है।

मैंने उन्हें आद दिलाया कि मैं नेताजी के जमाने की वात कर रहा हूँ। कुरेशी साहब चुप हो गये। बब्बू मियाँ न भेगे ओर देखा और जेब में गोला बीड़ी का कट्टा निकालकर मिट्टी के तेल वाला लाइटर जलाने में लगे हो गये।

तब तक याकूब गुरुजी भी आ गये। बब्बू मियाँ उन्हें देखकर बोले—क्या हो गुरुजी, बच्चो की छुट्टी कर दी क्या?

जैमी गुरुजी की भीतर ही मुस्कुसने की आदत थी, वे कुछ इन्मी म्टाइल में अल्पसंख्यक मुदा में हँसे। बोले—जब मे मरकार ने दस धन दो धन तीन प्रणाली शिक्षा जगत में लागू की है, बस छुट्टी ही समस्या। लड़को के दिमाग में कुछ घुसता ही नहीं। ईमान में, हम इस नवी शिक्षा नीति के नाम से परेशान हैं। अभी तक सरकारी किताबे छपकर नहीं आई हैं। अब छुट्टी न दे तो क्या अपना सिर पीटें?

मैंने कहा—डॉ. ओ. माहबब से ठीक पेट नहीं है या नहीं?

वे बोले—पेट के रखना पड़ता है। उनका लिए तो मैं खून माफ़ हूँ, लेकिन इधर अपने वाली से गलती हुई नहीं कि तुम्हें ट्रांसफर आर्डर मिल जाता है, पेट लग है, इसलिए डरकर और दबकर सरकारी नौकरी में लगे हैं।

बात चल रही थी कि मछली बाने माहबब अस्पलाम अनेकुम कहने हुए इसी तरफ आ गए। अब्बू मिश्रा ने कहा—यार मछली साहब, एकाध दिन हमको था खिलाओ यार मच्छी-वच्छी। हम भी ता देखे सरकारी मच्छी का टेन्ट।

मछली माहबब बोले—अरे क्या मित्रलायें तुमको अपने बड़े आफिसरों में बचे तक भा। अपना डिपार्टमेंट भी इनका खींचवा ही जायेगा, इसको मुझे उम्मीद नहीं थी। जनता जाये भाड़ में, वगैरह उनके पेट में मच्छी डालते रहें।

बाहर का माहौल देखकर लगता भी नहीं था कि लोग नेता जी का रंग में आये हैं। अन्दर बैठक में अभी भी लोभान और उदवर्ती की खुज्राव आ रहा थी देखा तो अपने वाले नेताजी आ रहे थे। सब लोग खड़े हो गये। वही बात तो हम लोगों में अच्छी है। जैसे अपने नेताजी जनता शासन में मंत्री रहे। ये बात अलग है कि अब जनता पार्टी नहीं रही, लेकिन अपना काम के लोग अभी भी अपने नेताजी का इज्जत करते हैं।

पहले वे बैठक में गये। वहाँ थोड़ी देर सत्ता का उम्र मैयत को देखा और दोनों हाथ सामने बाँधकर कुछ पढ़ते रहे। जनता शासन में जब वे विधान सभा में किसी पत्र का उत्तर देते, तो भी अपने दोनों हाथ सामने बाँध लेते थे। जनता पार्टी रहते-लिप्लाह में चली गई, लेकिन उनकी यह आदत अभी भी बना है। मान्दना देने के लहजे में उन्होंने बड़े भइया के कंधे पर हाथ रखा और बाल—भौंते तो बगहकत है एकदि।सभी को जाना है हिम्मत से काम लो और खुदा पर भरोसा रखो।

बड़े भइया कुछ नहीं बोले। अभी भी वे अपनी आँखें मिचमिचा रहे थे जैसे कहना चाहते हो—क्या भरोसा रखे खुदा पर? हमारा तो सब कुछ बरबाद हो गया हम लुट गये।



अब अपने नेताजी हमारे बीच आ गये थे। मुझे लगा जैसे प्रतिपक्ष ने सरकार को एक श्रद्धाञ्जलि दी और जराता के बीच आ गया।

बच्चू मियाँ अभी तक चुप थे। अपने नेताजी को देखकर उन्होंने मुझे कहनी मारी और धीरे में कहा—अपने नेताजी से कुछ बात कर लो यार, जनपद की कुछ जमीन और मिल जाती, तो मैं अपनी दुकान बढा लेता।

अब बाहर सब लोग अपने नेता जी को घेरकर बैठे थे। खाटवालों ने अपनी खाटे पास सरका ली थी। कुछ और सरकारी विभाग वाले भी आ गये थे। मौन का एहसास केवल बैठक में ही हाता था। अपने नेताजी ने मोअज्जम साहब को बुलाकर कहा अब गुस्ला की तैयारी कीजिए। चक्क काफी हो चुका है।

मुझे देखकर नेताजी बोले—क्या निरख रहे हो आजकल? बहुत दिनों से कोई अच्छा व्यंग्य नहीं देखा तुम्हारा?

मैंने कहा—आप ही कोई अच्छा-सा प्लेट बताइए ना?

वे बोले—इस भ्रष्ट व्यवस्था में प्लेट की क्या कमी? सरकार के हर महकमे में भ्रष्टाचार की जडे भजबूत हो रही हैं ऊपर से दिखने वाली चमक-दमक के पीछे एक खोखलापन रह गया है। मैंहगाई इम कदर बढ़ रही है, कि साँस लाना भी मुश्किल है और ऊपर बैठे लोग विदेशों में घूम-घूमकर अपनी छवि बना रहे हैं। मैं कहता हूँ कि हमें इसके विकल्प के लिए एक सही प्रतिपक्ष की जरूरत है। हम भी मंत्री रहे जनता शासन में हमारी भी सरकार रही, लेकिन रेल किराया और कीमतें हमने नहीं बढ़ने दीं। स्वच्छ प्रशासन का दावा करने वालों को शायद नहीं मालूम कि अस्पताल से लेकर राजधानी तक, बिना पैसों दिये कुछ काम नहीं हो रहा है। आज हम होते तो

मैंने बीच में ही कहा—मही बात तो यह है कि जनता पार्टी को ही कन्थ दे दिया आप लोगो ने।



सलीफ़ घोषो

जन्म - 28 अक्टूबर, 1935

शिक्षा - बी ए, एल एल बी

प्रकाशित व्यंग्य कृतियाँ—

निकाने चहरे, उड़ते उल्लू के पख, मृतक म  
 शमा-याचना साहित्य, घामार न हाने का दुख, तीसरे बन्दर  
 का कथा, सफ़ेद लाल जदवादा मेरा श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ  
 बब्बू मथों का ब्रिस्तान में, किस्सा दाही का, जूते का टट  
 सान का अण्डा, मुदानामा, मेरा माँत क बाद चारा न हान  
 का दुख, बुद्धजोषों का चप्पल, बधाइयों के देश ने लूटारा  
 का टिकट, व्यंग्य का जुगलबन्दा, सडे हुए दाँत क्षमा  
 करना हम दुखा हैं, जान का दुकान, बुद्धिमानों से बचा,  
 मेरा मुञ्ज आताथ हो जाना, नोर-क्षीर, ईमानदारी की  
 गालियाँ, टूटा हुई यों पर चिंतन खबरदार व्यंग्य व्यंग्य  
 पसंग, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, व्यंग्य चरित्तम्, मत्री हो  
 जाने का सपना तथा यज्ञ-स्तत्र

संपत्ति— तत्कालत क साथ स्वतंत्र व्यंग्य लेखन

पता— रुबी-9 कालेज रोड,

महामुन्द, म प्र -403445

SBN 8 7056-115-9